

**ON EDUCATION**

- Talks to Students -

Chapter 1 On Education

**शिक्षा संवाद**

एक

छात्रों से वार्ता

**9 - शिक्षा**

You know, you live in one of the most beautiful valleys I have seen. It has a special atmosphere. Have you noticed, especially in the evenings and early mornings, a quality of silence which permeates, which penetrates the valley? There are around here, I believe, the most ancient hills in the world and man has not spoilt them yet; and wherever you go, in cities or in other places, man is destroying nature, cutting down trees to build more houses, polluting the air with cars and industry. Man is destroying animals; there are very few tigers left. Man is destroying everything because more and more people are born and they must have more space. Gradually, man is spreading destruction all over the world. And when one comes to a valley like this - where there are very few people, where nature is still not spoilt, where there is still silence, quietness, beauty - one is really astonished. Every time one comes here one feels the strangeness of this land, but probably you have become used to it. You do not look at the hills any more, you do not listen to the birds any more and to the wind among the leaves. So you

मेरी समझ में यह घाटी विश्व की सुंदरतम घाटियों में से एक है जिसमें आप रहते हैं। उसका एक विशेष परिवेश है। क्या आपका ध्यान इस ओर गया कि विशेष रूप से सायंकाल तथा उषाकाल में कितनी अद्भुत शांति यहां परिव्याप्त है, जो वादी के भीतर तक रच-बस गयी है? मुझे लगता है कि यहां चारों ओर विश्व की प्राचीनतम पहाड़ियां हैं और मानव ने उन्हें अभी तक बरबाद नहीं किया। जहां कहीं भी आप जाएं, शहरों में या कहीं भी, मानव प्रकृति को नष्ट कर रहा है। अधिकाधिक मकान बनाने के लिए वृक्षों को काट रहा है, कारों तथा उद्योगों से आबोहवा को दूषित कर रहा है। मनुष्य जीव-जन्तुओं को नष्ट कर रहा है, चीते तो अब शायद कम ही बचे हों। मनुष्य प्रत्येक वस्तु को नष्ट कर रहा है, क्योंकि अधिकाधिक मनुष्य जन्म लेते जा रहे हैं और उनके लिए जगह चाहिए। धीरे-धीरे मनुष्य सारे विश्व में विनाश ही ला रहा है। और जब कोई किसी ऐसी घाटी में आ पहुँचता है, जहां बहुत कम लोग हैं, जहां प्रकृति अभी नष्ट नहीं हुई, जहां अभी भी शांति है, एक खामोशी है, सौंदर्य है, तो वास्तव में ही आश्चर्य होता है। हर बार जब कोई यहां आता है, इस भूमि के अनूठेपन को महसूस किये बिना नहीं रहता, परंतु संभवतः आप उसके आदि हो गये हैं। अब आप इन पहाड़ियों की ओर नहीं देखते, पक्षियों के कलरव को, पत्तों के बीच से गुज़रती हुई हवा को अब और नहीं सुनते। धीरे-धीरे आप उनसे उदासीन हो गये हैं।

<p>have gradually become indifferent.</p>	
<p>Education is not only learning from books, memorizing some facts, but also learning how to look, how to listen to what the books are saying, whether they are saying something true or false. All that is part of education. Education is not just to pass examinations, take a degree and a job, get married and settle down, but also to be able to listen to the birds, to see the sky, to see the extraordinary beauty of a tree, and the shape of the hills, and to feel with them, to be really, directly in touch with them. As you grow older, that sense of listening, seeing, unfortunately disappears because you have worries, you want more money, a better car, more children or less children. You become jealous, ambitious, greedy, envious; so you lose the sense of the beauty of the earth. You know what is happening in the world. You must be studying current events. There are wars, revolts, nation divided against nation. In this country too there is division, separation, more and more people being born, poverty, squalor and complete callousness. Man does not care what happens to another so long as he is perfectly safe. And you are being educated to fit into all this. Do you know the world is mad, that all this is madness - this fighting, quarrelling, bullying, tearing at each other? And you will grow up to fit into this. Is this right, is this what education is meant for, that you should willingly or unwillingly fit into this mad structure called society? And do you know what is happening to religions throughout the world? Here also man is disintegrating, nobody believes in anything any more. Man has no faith and religions are merely the result of a vast propaganda.</p>	<p>शिक्षा केवल पुस्तकों से सीखना नहीं है, किन्हीं तथ्यों को रट लेना नहीं है; बल्कि यह सीखना भी शिक्षा है कि देखा कैसे जाय, पुस्तकें जो कहती हैं उसे सुना कैसे जाय, कि जो वे कह रही हैं सच है कि झूठ। यह सब शिक्षा का ही अंग है। परीक्षाएँ पास करना, कोई डिग्री एवं पद प्राप्त कर लेना, विवाह करना तथा घर बसा लेना ही शिक्षा नहीं है; बल्कि यह भी है कि हम इस योग्य हों कि पक्षियों के गान को सुन सकें, आकाश को निहार सकें, वृक्षों की अदभुत खूबसूरती तथा पहाड़ियों के रूप का अवलोकन कर सकें तथा उनके एहसास में शामिल हो पाएं, सच में सीधे तौर पर जुड़ सकें उनसे। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं सुनने का, देखने का, यह बोध दुर्भाग्य से गायब होता जाता है; क्योंकि आपकी अपनी चिंताएं होती हैं, आप और अधिक धन, बढ़िया कार, ज़्यादा या कम संतान चाहते हैं। आप ईर्ष्यालु, महत्त्वाकांक्षी, लालची तथा द्वेषपूर्ण हो जाते हैं। इस प्रकार आप पृथ्वी के सौंदर्य के बोध को खो देते हैं। आप जानते हैं कि विश्व में क्या हो रहा है? आप सामयिक घटनाओं का अध्ययन कर रहे होंगे। युद्ध हैं, विद्रोह हैं, राष्ट्रों के बीच फूट पड़ी है। इस देश में भी फूट है, विभाजन है, आबादी बढ़ रही है; निर्धनता है, गंदगी है और खासी लापरवाही, कठोरताइ। मनुष्य जब तक स्वयं पूर्णतया सुरक्षित है तब तक इसकी परवाह नहीं करता कि दूसरे पर क्या बीत रही है। और आपको इसी सबमें ढलने की शिक्षा दी जा रही है। क्या आप जानते हैं कि यह संसार पागल है। यह सब लड़ाई, झगड़ा, धमकाना, एक-दूसरे की चीर-फाड़--सब कितना बेहूदा है। और आप इसी में ढलने के लिए बड़े होंगे। क्या यह सही है, क्या यही है शिक्षा का मतलब कि आप स्वेच्छा से या अनेच्छा से इस विकिप्त संरचना का, जिसे समाज कहा जाता है, हिस्सा बनें? और क्या आप जानते हैं कि विश्व के तमाम धर्मों में क्या हो रहा है? यहां भी मनुष्य विघटित हो रहा है, अब कोई भी किसी बात में विश्वास नहीं करता। मनुष्य में अब विश्वास नहीं रह गया और धर्म केवल एक व्यापक प्रचार का परिणाम मात्र बनकर रह गया है।</p>
<p>Since you are young, fresh, innocent, can you</p>	<p>आप अभी तरुण हैं, तरों-ताज़ा हैं, मासूम हैं, तो क्या</p>

<p>look at all the beauty of the earth, have the quality of affection? And can you retain that? For if you do not, as you grow up, you will conform, because that is the easiest way to live. As you grow up, a few of you will revolt, but that revolt too will not answer the problem. Some of you will try to run away from society, but that running away will have no meaning. You have to change society, but not by killing people. Society is you and I. You and I create the society in which we live. So you have to change. You cannot fit into this monstrous society. So what are you going to do? And you, living in this extraordinary valley, are you going to be thrown into this world of strife, confusion, war, hatred? Are you going to conform, fit in, accept all the old values? You know what these values are - money, position, prestige, power. That is all man wants and society wants you to fit into that pattern of values. But if you now begin to think, to observe, to learn, not from books, but learn for yourself by watching, listening to everything that is happening around you, you will grow up to be a different human being - one who cares, who has affection, who loves people. Perhaps if you live that way, you might find a truly religious life.</p>	<p>आप पृथ्वी के चहुं ओर के सौंदर्य को देख सकते हैं, स्नेह को सहेज सकते हैं, क्या उसे आप संजोये रख सकते हैं? क्योंकि यदि आप ऐसा नहीं करते तो जैसे-तैसे आप बड़े होंगे, आप समाज के अनुरूप ढल जायेंगे, क्योंकि जीने की वही सर्वाधिक सरल विधि है। जब आप बड़े होंगे, तो आपमें से कुछ विद्रोह भी करेंगे; परंतु वह विद्रोह भी समस्या का उत्तर नहीं देगा। आपमें से कुछ समाज से दूर भागेंगे परंतु उस भागने का भी कोई अर्थ न होगा। आपको समाज को बदलना है, परंतु लोगों की हत्या करके नहीं। समाज है आप और मैं। जिस समाज में हम रहते हैं उसे आपने और मैंने ही बनाया है। इसलिए आपको स्वयं को बदलना है। आप इस भयानक समाज के अनुरूप नहीं ढल सकते। तो फिर आप क्या करेंगे? और आप इस अनुपम घाटी में रह रहे हैं; क्या आपको भी कलह, भ्रांति, युद्ध, घृणा से भरे इस विश्व के बीच फेंका जाने वाला है? क्या आप भी इन तमाम प्राचीन मूल्यों को स्वीकार करने, उनके अनुरूप ढलने जा रहे हैं? आप जानते हैं कि ये मूल्य क्या हैं अर्थात् धन, पद, सम्मान, शक्ति, क्या है। यही सब है जो मनुष्य चाहता है और समाज चाहता है कि आप मूल्यों के इसी प्रारूप के अनुरूप ढलें। परंतु यदि आप, विचार करना, निरीक्षण करना, सीखना आरम्भ करें--सीखना पुस्तकों से नहीं वरन् स्वयं विश्व में जो चारों ओर हो रहा है उसे देखकर, सुनकर--तो आप एक ऐसे भिन्न प्रकार के मनुष्य के रूप में विकसित हो सकते हैं जिसे दूसरों की परवाह है, जिसमें स्नेह है, जो लोगों से प्रेम करता है। यदि आप उस प्रकार से जियें तो संभवतः आपको एक सच्चा धार्मिक जीवन प्राप्त हो सकता है।</p>
<p>So look at nature, at the tamarind tree, the mango trees in bloom, and listen to the birds early in the morning and late in the evening. See the clear sky, the stars, how marvellously the sun sets behind those hills. See all, the colours, the light on the leaves, the beauty of the land, the rich earth. Then having seen that and seen also what the world is, with all its brutality, violence, ugliness, what are you going to do?</p>	<p>अतः प्रकृति को देखें, इस अम्लिका वृक्ष को, बौर फूटते आम कुज्जों को देखें और सबेरे तड़के तथा ढलती संध्या में पक्षियों का कलरव सुनें। स्वच्छ आकाश को, तारों को देखें; कितने अनुपम सौंदर्य के साथ सूर्य उन पहाड़ियों के पीछे अस्त होता है। उन तमाम रंगों को, पत्तियों पर पड़ती रोशनी को, भूमि के सौंदर्य को, समृद्ध पृथ्वी को देखें। उस सबको देख कर और यह भी देख कर कि अपनी तमाम कुरूपता, हिंसा एवं पाशविकता के साथ यह विश्व क्या है, तब आप क्या करेंगे?</p>
<p>Do you know what it means to attend, to pay attention? When you pay attention, you see</p>	<p>क्या आप जानते हैं कि ध्यान-अवधान देने का क्या अर्थ</p>

<p>things much more clearly. You hear the bird singing much more distinctly. You differentiate between various sounds. When you look at a tree with a great deal of attention, you see the whole beauty of the tree. You see the leaves, the branch, you see the wind playing with it. When you pay attention, you see extraordinarily clearly. Have you ever done it? Attention is something different from concentration. When you concentrate, you don't see everything. But when you are paying attention, you see a great deal. Now, pay attention. Look at that tree and see the shadows, the slight breeze among the leaves. See the shape of the tree. See the proportion of the tree in relation to other trees. See the quality of light that penetrates through the leaves, the light on the branches and the trunk. See the totality of the tree. Look at it that way, because I am going to talk about something to which you have to pay attention. Attention is very important, in the class, as well as when you are outside, when you are eating, when you are walking. Attention is an extraordinary thing.</p>	<p>होता है? जब आप ध्यान देते हैं तो आप वस्तुओं को कहीं अधिक स्पष्टता से देखते हैं। आप पक्षियों के संगीत को कहीं अधिक स्पष्टता से सुनते हैं। आप विभिन्न ध्वनियों के बीच अंतर कर लेते हैं। जब आप किसी वृक्ष को बड़े ध्यान से देखते हैं तो आप उस वृक्ष के समग्र सौंदर्य को देखते हैं। आप पत्तों को, टहनी को देखते हैं और देखते हैं कि हवा कैसे उनके साथ खेल खेलती है। जब आप ध्यान देते हैं तब आप अद्भुत स्पष्टता से देखते हैं क्या आपने कभी ऐसा किया है? ध्यान कुछ एकाग्रता से भिन्न है। जब आप एकाग्र-चित्त होते हैं तब आप प्रत्येक वस्तु को नहीं देखते। परंतु जब आप ध्यान दे रहे होते हैं, तब आप बहुत कुछ देख पाते हैं। तो अब ध्यान दें। वृक्ष को देखें और देखें उन परछाईयों को, पत्तों से गुजरती वो हल्की-हल्की हवा। पेड़ के उस आकार को देखें। इस वृक्ष को दूसरों के अनुपात में देखें। उस प्रकाश के स्वरूप को देखें जो पत्तियों से छन-छन कर आ रहा है, टहनियों पर और तने पर पड़ रहा है। वृक्ष की समग्रता को देखें। उसे बस इसी प्रकार से देखें, क्योंकि मैं कुछ ऐसी बात करने जा रहा हूँ जिस पर आपको ध्यान देना होगा। कक्षा में भी और जब आप कक्षा में हों या बाहर, भोजन करते हुए या टहलते हुए, ध्यान तो बड़ा आवश्यक है। ध्यान एक अद्भुत शय है।</p>
<p>I am going to ask you something. Why are you being educated? Do you understand my question? Your parents send you to school. You attend classes, you learn mathematics, you learn geography, you learn history. Why? Have you ever asked why you want to be educated, what is the point of being educated? What is the point of your passing examinations and getting degrees? Is it to get married, get a job and settle down in life as millions and millions of people do? Is that what you are going to do, is that the meaning of education? Do you understand what I am talking about? This is really a very serious question.</p>	<p>मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ। आपको शिक्षित क्यों किया जा रहा है? क्या आप मेरे प्रश्न को समझ रहे हैं? आपके माता-पिता आपको विद्यालय भेजते हैं। आप कक्षाओं में आते हैं; गणित, भूगोल, इतिहास सीखते हैं। क्यों? क्या आपने कभी प्रश्न किया है कि क्यों आप शिक्षित होना चाहते हैं, शिक्षित होने का क्या अर्थ है? परीक्षाएं पास करना, डिग्रियां लेना, क्या अर्थ है इस सब का? क्या बस यही अर्थ है कि विवाह करें, नौकरी प्राप्त करें और कहीं घर बसा लें, जैसा कि लाखों लोग करते हैं? क्या यही आप करने जा रहे हैं, क्या शिक्षा का अर्थ बस यही है? क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? यह वास्तव में एक बड़ा गंभीर प्रश्न है।</p>
<p>The whole world is questioning the basis of education. We see what education has been used for. Human beings throughout the world - whether in Russia or in China or in America or</p>	<p>सारा विश्व ही शिक्षा की बुनियाद पर प्रश्न उठा रहा है। हमें पता है कि किस बात के लिए शिक्षा का उपयोग किया जा रहा है। विश्व में हर जगह, चाहे वह रूस हो या चीन, अमरीका हो या यूरोप अथवा यह देश, मनुष्यों</p>

<p>in Europe or in this country - are being educated to conform, to fit into society and into their culture, to fit into the stream of social and economic activity, to be sucked into that vast stream that has been flowing for thousands of years. Is that education, or is education something entirely different? Can education see to it that the human mind is not drawn into that vast stream and so destroyed; see that the mind is never sucked into that stream; so that, with such a mind, you can be an entirely different human being with a different quality to life? Are you going to be educated that way? Or are you going to allow your parents, society, to dictate to you so that you become part of the stream of society? Real education means that a human mind, your mind, not only is capable of being excellent in mathematics, geography and history, but also can never, under any circumstances, be drawn into the stream of society. Because that stream which we call living, is very corrupt, is immoral, is violent, is greedy. That stream is our culture. So, the question is how to bring about the right kind of education so that the mind can withstand all temptations, all influences, the bestiality of this civilization and this culture. We have come to a point in history where we have to create a new culture, a totally different kind of existence, not based on consumerism and industrialization, but a culture based upon a real quality of religion. Now how does one bring about, through education, a mind that is entirely different, a mind that is not greedy, not envious? How does one create a mind that is not ambitious, that is extraordinarily active, efficient; that has a real perception of what is true in daily life which is after all religion.</p>	<p>को समाज के, अपनी-अपनी संस्कृति के अनुरूप ढालने के लिए शिक्षित किया जा रहा है, ताकि वो सामाजिक व आर्थिक व्यवहार की धारा के अनुरूप हो पायें; ताकि हजारों वर्षों से जो विशाल प्रवाह चला आ रहा है उसी की धारा में वह भी खो जाए। क्या यही शिक्षा है या फिर शिक्षा इससे पूर्णतया भिन्न है? क्या शिक्षा यह ख्याल रख सकती है कि मानव मन कहीं इस विशाल प्रवाह में बह न जाए, नष्ट न हो जाए; आपको देखना होगा कि मन इस प्रवाह में कभी न बह पाए, अतः ऐसे मन से आप एक बिलकुल ही भिन्न प्रकार का जीवन जीने वाले एक अलग ही व्यक्ति होंगे। क्या आप इस प्रकार शिक्षित होने जा रहे हैं? या फिर अपने माता-पिता को, समाज को यह छूट देंगे कि वो आपको निर्देशित कर सकें ताकि आप समाज के प्रवाह के अंग बन पायें। वास्तविक शिक्षा का अर्थ है कि मनुष्य का मन, अर्थात् आपका मन, सिर्फ गणित, भूगोल और इतिहास आदि में ही कार्य-कुशल न हो, बल्कि साथ ही साथ इस बात को समझने में भी समर्थ हो कि कभी किसी सूरत में भी सामाजिक धारा में ही बह कर न रह जाए। क्योंकि वह धारा जिसे हम जीवन कहते हैं, एकदम भ्रष्ट है, अनैतिक एवं हिंसक है, लोभी है। यही धारा हमारी संस्कृति है। अतः प्रश्न यह है कि सही प्रकार की शिक्षा कैसे लाई जाये ताकि मन हर प्रकार के लालच का, सभी प्रभावों का, इस सभ्यता तथा संस्कृति की पाशविकता का सामना कर सके। हम इतिहास के एक ऐसे मोड़ पर आ गये हैं जहां हमें एक नवीन संस्कृति का, एक पूर्णतया भिन्न प्रकार के जीवन का सृजन करना होगा, जो उपभोक्तावाद तथा उद्योगवाद पर आधारित न होकर धर्म के वास्तविक स्वरूप पर आधारित हो। अब शिक्षा के द्वारा एक ऐसा मन कैसे उत्पन्न किया जाए जो पूर्णतया नवीन है, मन जो न तो लोभी है, न ही ईर्ष्यालु? एक ऐसा मन कैसे विकसित किया जाए जो महत्त्वाकांक्षी न हो, जो असाधारण रूप से सक्रिय एवं निपुण हो। जिसके पास नित्य-प्रति के जीवन में जो सत्य है, उसकी सही समझ हो, जो कि वास्तव में धर्म है।</p>
<p>Now, let us find out what is the real meaning and intention of education. Can your mind, which has been conditioned by society, the culture in which you have lived, be transformed through education so that you</p>	<p>अब हम इसका पता लगायें कि शिक्षा का वास्तविक अर्थ और मनोरथ क्या है। क्या आपका मन, जो समाज द्वारा, उस संस्कृति द्वारा जिसमें आप रहते हैं संस्कारबद्ध किया गया है, शिक्षा के द्वारा इस प्रकार परिवर्तित हो सकता है कि आप किसी भी दशा में</p>

<p>will never under any circumstances enter the stream of society? Is it possible to educate you differently? 'Educate' in the real sense of that word; not to transmit from the teachers to the students some information about mathematics or history or geography, but in the very instruction of these subjects to bring about a change in your mind. Which means that you have to be extraordinarily critical. You have to learn never to accept anything which you yourself do not see clearly, never to repeat what another has said.</p>	<p>समाज की इस धारा में प्रवेश ही न करें? क्या आपको भिन्न तरह से शिक्षित करना संभव है? "शिक्षित" शब्द के वास्तविक अर्थ में; केवल ऐसे नहीं कि अध्यापकों द्वारा छात्रों में गणित, इतिहास अथवा भूगोल के विषय में कुछ सूचनाएं भर दी जायें, वरन् इन्हीं विषयों की शिक्षा देते हुए आपके मन में एक परिवर्तन लाना। जिसका अर्थ है कि आपको असाधारण रूप से समीक्षक होना पड़ेगा। आपको सीखना होगा कि उस वस्तु को कभी भी स्वीकार न करें जिसे आपने स्पष्ट रूप से स्वयं न देखा हो, और दूसरों की बात को कभी न दोहराना, यह भी आपको सीखना होगा।</p>
<p>I think you should put these questions to yourself, not occasionally, but every day. Find out. Listen to everything, to the birds, to that cow calling. Learn about everything in yourself, because if you learn from yourself about yourself, then you will not be a secondhand human being. So you should, if I may suggest, from now on, find out how to live entirely differently and that is going to be difficult, for I am afraid most of us like to find an easy way of living. We like to repeat and what other people say, what other people do, because it is the easiest way to live - to conform to the old pattern or to a new pattern. We have to find out what it means never to conform and what it means to live without fear. This is your life, and nobody is going to teach you, no book, no guru. You have to earn from yourself, not from books. There is a great deal to learn about yourself. It is an endless thing, it is a fascinating thing, and when you learn about yourself from ourself, out of that learning wisdom comes. Then you can live a most extraordinary, happy, beautiful life. Right? Now, will you ask me questions?</p>	<p>मेरे विचार से आपको अपने आप से ही इस तरह के प्रश्न पूछने चाहिए और वह भी कभी-कभी नहीं बल्कि हर रोज़। स्वयं पता लगायें। प्रत्येक वस्तु को सुनें, पक्षियों के कलरव को, गाय के रंभाने को। खुद ही से सीखें, क्योंकि यदि आप अपने विषय में अपने से ही सीखते हैं तो आप सदा नवीन, मौलिक बने रहेंगे। मेरा तो यही सुझाव है कि आज ही से पता लगायें कि पूर्णतया भिन्न प्रकार से कैसे जिया जाता है; परंतु यह है कठिन, मुझे तो लगता है कि अधिकांश लोग जीवन की एक आसान राह ढूंढते हैं। जो दूसरे कहते और करते हैं, हम उसी को दोहराना तथा उसी का अनुगमन करना चाहते हैं, क्योंकि बस वही आसान है, अर्थात् किसी पुराने या नवीन ढर्रे के अनुरूप ढलना। हमें इसका पता लगाना होगा कि कभी किसी के अनुरूप न ढलने एवं निर्भय जीवन जीने का क्या अर्थ है। यह जीवन आपका है, अन्य कोई आपको सिखाने वाला नहीं, न कोई पुस्तक, न कोई गुरु। आपको स्वयं अपने से सीखना है, न कि पुस्तकों से। अपने बारे में सीखने के लिए बहुत कुछ है। वह तो अंतहीन है, बहुत ही गज़ब की रचना है, और जब आप खुद अपने से अपने बारे में सीखते हैं तो उस सीखने से ही गहरी समझ आती है। तब आप एक अत्यंत अद्भुत, सुखी, सुंदर जीवन जी सकते हैं। ठीक? अब क्या आप मुझसे कुछ प्रश्न करेंगे?</p>

<p><b>Student:</b> The world is full of callous people, indifferent people, cruel people, and how can you change those people?</p>	<p><b>छात्र :</b> विश्व कठोर, उदासीन और क्रूर लोगों से भरा है और आप इन लोगों को कैसे बदल सकते हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> The world is full of callous people, indifferent people, cruel people, and how can you change those people? Is that it? Why do you bother about changing others? Change yourself. Otherwise as you grow up you will also become callous. You will also become indifferent. You will also become cruel. The past generation is vanishing, it is going, and you are coming, and if you also prove callous, indifferent, cruel, you will also build the same society. What matters is that you change, that you are not callous, that you are not indifferent. When you say all this is the business of the older generation, have you seen them, have you watched them, have you felt for them? If you have, you will do something. Change yourself and test it by action. Such action is one of the most extraordinary things. But we want to change everybody except ourselves, which means, really, we do not want to change, we want others to change, and so we remain callous, indifferent, cruel, hoping the environment will change so that we can continue in our own way. You understand what I am talking about?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> विश्व कठोर, उदासीन और क्रूर लोगों से भरा है और आप इन लोगों को कैसे बदल सकते हैं? यही है न? आप दूसरों को बदलने की चिंता क्यों करते हैं? अपने को बदलें। अन्यथा जब आप बड़े होंगे तो आप भी कठोर हो जायेंगे। आप भी उदासीन हो जायेंगे। आप भी क्रूर हो जायेंगे। पुरानी पीढ़ी खत्म हो रही है, जा रही है, और आप आ रहे हैं, यदि आप भी कठोर, उदासीन और क्रूर सिद्ध हुए तो आप भी उसी प्रकार का समाज बनायेंगे। मुद्दा तो यह है कि आप बदलें ताकि आप कठोर न हों, उदासीन न हों। जब आप कहते हैं कि यह सब पुरानी पीढ़ी का किया-धरा है तो क्या आपने उन्हें देखा है, आपने उनका निरीक्षण किया है, आपने उनके विषय में अनुभव किया है? यदि आपने ऐसा किया है तो आप कुछ करेंगे। अपने को बदलें और एक्शन में परख करें उसकी। ऐसा एक्शन, ऐसा कर्म, एक अनूठी वस्तु है। परंतु हम अपने को छोड़कर बाकी सबको बदलना चाहते हैं। जिसका वास्तव में अर्थ है, कि हम बदलना ही नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि दूसरें बदलें। इसी लिए हम कठोर, उदासीन और क्रूर बने रहते हैं और यह आशा करते रहते हैं कि वातावरण बदले ताकि हम अपने तौर-तरीकों में बने रह सकें। क्या आप मेरी बात को समझ रहे हैं?</p>
<p><b>Student:</b> You ask us to change, what do we change into?</p>	<p><b>छात्र :</b> आप हमें बदलने को कहते हैं। तो हम किस में बदलें?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> You ask us to change, what is it we change into? You cannot change into a monkey, probably you would like to, but you cannot. Now when you say, "I want to change into something" - listen to this carefully - if you say to yourself, "I must change, I must change myself into something", the "into something" is a pattern which you have created, haven't you? Do you see that? Look, you are violent or greedy and you want to change yourself into a person who is not greedy. Not wanting to be greedy is another form of greed,</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप हमसे बदलने के लिये कहते हैं, हम किसमें बदलें? आप एक बंदर में तो नहीं बदल सकते। शायद आप ऐसा चाहें, परंतु ऐसा कर नहीं सकते। अब जब आप कहते हैं, "मैं किसी दूसरी वस्तु में बदलना चाहता हूँ" तो इसे ध्यान से सुनें--यदि आप अपने से कहते हैं, "मुझे बदलना चाहिये, मुझे अपने को किसी दूसरी वस्तु में बदलना चाहिये" तो यह "किसी दूसरी वस्तु में" एक ढर्रा है जिसे आपने बनाया है, क्या नहीं बनाया? क्या आपने गौर किया? देखिए, आप हिंसक या फिर लोभी हैं और खुद को एक ऐसा आदमी बनाना चाहते हैं जो लोभी न हो। लालची न होने की इच्छा भी</p>

<p>isn't it? Do you see that? But if you say, "I am greedy, I will find out what it means, why I am greedy, what is involved in it", then, when you understand greed, you will be free of greed. Do you understand what I am talking about?</p>	<p>एक दूसरे प्रकार का लालच है, क्या नहीं है? आप देख पा रहे हैं? परंतु यदि आप कहते हैं, "मैं लालची हूँ, मैं पता लगाऊंगा कि इसका अर्थ क्या है, मैं क्यों लालची हूँ, लालची होने का मतलब क्या है" तो जब आप लालच को समझते हैं तो उससे मुक्त हो जाते हैं। आप समझ रहे हैं मैं क्या बात कर रहा हूँ?</p>
<p>Let me explain. I am greedy and I struggle, fight, make tremendous efforts not to be greedy. I have already an idea, a picture, an image of what it means not to be greedy. So I am conforming to an idea which I think is non-greed. You understand? Whereas if I look at my greed, if I understand why I am greedy, the nature of my greed, the structure of greed, then, when I begin to understand all that, I am free of greed. Therefore, freedom from greed is something entirely different from trying to become non-greedy. Do you see the difference? Freedom from greed is something which is entirely different from saying, "I must be a great man so I must be non-greedy?" Have you understood?</p>	<p>थोड़ा और स्पष्ट करते हैं। मैं लालची हूँ और लालची न होने के लिये मैं संघर्ष करता हूँ, बड़े प्रयत्न करता हूँ। मेरे पास पहले से ही एक विचार, एक तस्वीर, एक प्रतिमा है कि लालची न होने का क्या मतलब है। तो मैं एक विचार के अनुरूप ढल रहा हूँ जो मेरे ख्याल में अ-लोभ है। आप समझे? पर यदि मैं अपने लालच को देखता हूँ, समझता हूँ कि मैं लालची क्यों हूँ तथा अपने लालच के स्वभाव को, उसकी संरचना को समझता हूँ तो जैसे ही मैं उस सबको समझने लगता हूँ, मैं लालच से मुक्त हो जाता हूँ। इसलिए लालच से मुक्त होना तथा लालची न होने का प्रयत्न करना दो पूर्णतया भिन्न बातें हैं। क्या आप इस अंतर को देखते हैं? लालच से मुक्ति एक ऐसी वस्तु है जो यह कहने से पूर्णतया भिन्न है कि "मुझे एक महान व्यक्ति होना है इसलिये मुझे लोभमुक्त होना चाहिये।" क्या आप समझे?</p>
<p>I was thinking last night, come and gone. Trees have died and new trees have grown. Different children have come, passed through his school, have become engineers, housewives and disappeared altogether into the masses. I meet them occasionally, at an airport or at a meeting, very ordinary people. And if you are not very careful, you are also going to end up that way.</p>	<p>पिछली रात मेरे मन में आ रहा था कि मैं पिछले चालीस वर्षों से प्रायः इस घाटी में आया करता हूँ। अनेक लोग आये और गये। कई वृक्ष सूख गये और कई नये उग आए। कई बच्चे आये, स्कूल से पास हुए, इंजीनियर बनें या गृहिणियां और फिर लोगों की भीड़ में पूर्णतया खो गये। मैं कभी-कभार उनसे मिलता हूँ, किसी हवाई अड्डे पर या कभी किसी मीटिंग में--बड़े साधारण लोग। और यदि आप बहुत सावधान नहीं हैं तो आपका भी वही हाल होने वाला है।</p>
<p><b>Student:</b> What do you mean by ordinary?</p>	<p><b>छात्र :</b> साधारण से आपका क्या अर्थ है?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> To be like the rest of men; with their worries, with their corruption, violence, brutality, indifference, callousness. To want a job, to want to hold on to a job, whether you are efficient or not, to die in the job. That is</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> बाकी लोगों की तरह होना; वही चिंताएं, वही भ्रष्टाचार, वही हिंसा, पाशविकता, उदासीनता, कठोरता आदि के साथ होना; एक नौकरी की चाहत लिए, फिर उसे बचाए रखने की चाहत, चाहे आप</p>

<p>what is called ordinary - to have nothing new, nothing fresh, no joy in life, never to be curious, intense, passionate, never to find out, but merely to conform. That is what I mean by ordinary. It is called being bourgeois. It is a mechanical way of living, a routine, a boredom.</p>	<p>कुशल हों या न हों, और उसी में मर-खप जाना। यही है साधारण होना--कुछ भी नवीन नहीं, ताज़ा नहीं, जीवन में कुछ मज़ा नहीं; उत्सुकता नहीं, जोश, उत्साह, कभी कुछ खोजना नहीं, बस लकीर के फकीर। यही है साधारण से मेरा मतलब। उसे बुर्जुआ होना कहा जाता है। यही है जीने का एक यांत्रिक तरीका, एक बँधी-बँधायी दिनचर्या, एक ऊब।</p>
<p><b>Student:</b> How can we get rid of being ordinary?</p>	<p><b>छात्र :</b> हम साधारण होने से कैसे बच सकते हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> How can you get rid of being ordinary? Do not be ordinary. You cannot get rid of it. Just do not be it.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप साधारण होने से कैसे छुटकारा पा सकते हैं? बस साधारण न हों। बचने का सवाल ही कहां उठता है। बस साधारण हों नहीं।</p>
<p><b>Student:</b> How, Sir?</p>	<p><b>छात्र :</b> लेकिन कैसे, सर?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> There is no "how". You see that is one of the most destructive questions: "Tell me how"? Man has always been saying, throughout the world, "Tell me how". If you see a snake, a poisonous cobra, you do not say, "Please tell me how to run away from it". You run away from it. So in the same way, if you see that you are ordinary, run, leave it, not tomorrow, but instantly. Since you will not ask any more questions. I am going to propose something. You know people talk a great deal about meditation, don't they?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> "कैसे" का प्रश्न ही नहीं। देखिए, "मुझे बताइये, कैसे?" यह एक सर्वाधिक विनाशकारी प्रश्न है। दुनिया भर में मनुष्य सदा यही कहता आया है कि "मुझे बताइये, कैसे?" यदि आप एक सर्प को देखते हैं, एक काले, विषैले सर्प को, तो आप यह नहीं कहते, "कृपया मुझे बतायें कि उससे दूर कैसे भागा जाय।" आप बस भाग लेते हैं। ठीक उसी तरह यदि आप देख लेते हैं कि आप साधारण हैं तो भाग लें, छोड़ें उसे, कल नहीं, बल्कि तुरंत। अब चूंकि आप और प्रश्न नहीं करने जा रहे, मैं एक प्रस्ताव पेश करूंगा। आप जानते हैं कि लोग 'ध्यान' के विषय में बहुत चर्चा करते हैं। करते हैं न?</p>
<p><b>Student:</b> They do.</p>	<p><b>छात्र:</b> करते हैं।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> You know nothing about it. I am glad. Because you know nothing about it, you can learn about it. It is like not knowing French or Latin or Italian. Because you do not know, you can learn, you can learn as though for the first time. Those people who already know</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप उसके विषय में कुछ नहीं जानते। मुझे प्रसन्नता है। क्योंकि आप उसके विषय में कुछ नहीं जानते, अतः सीख सकते हैं। वह उसी तरह है जैसे आप फ्रेंच, लैटिन या इटालियन न जानते हों। तो क्योंकि आप नहीं जानते, इसलिए आप सीख सकते हैं; उसी प्रकार सीख सकते हैं जैसे मानो पहली बार कुछ</p>

<p>what meditation is, they have to unlearn and then learn. You see the difference? Since you do not know what meditation is, let us learn about it. To learn about meditation, you have to see how your mind is working. You have to watch, as you watch a lizard going by, walking across the wall. You see all its four feet, how it sticks to the wall, and as you watch, you see all the movements. In the same way, watch your thinking. Do not correct it. Do not suppress it. Do not say, "All this is too difficult". Just watch; now, this morning.</p>	<p>सीख रहे हों। वो लोग जो पहले से ही जानते हैं कि ध्यान क्या है, उन्हें पहले भूलना पड़ता है और तभी सीखना हो पाता है। अंतर देखा आपने? चूंकि आप नहीं जानते कि ध्यान क्या है तो आइये सीखते हैं उस विषय में। ध्यान के विषय में सीखने से पहले यह देखना पड़ता है कि आपका मन कैसे कार्य करता है। आपको अवलोकन करना होता है, ठीक वैसे ही जैसे किसी छिपकली को देखते हैं, दीवार पर चढ़ते हुए। आपने देखा कैसे उसके चारों पैर दीवाल से चिपके रहते हैं और यह सब देखते हुए आपको उसकी हर गति दिखाई पड़ती है। उसी तरह अपने विचारों को देखें। उनमें संशोधन न करें। दमन न करें उनका। ऐसा न कहें “यह सब बहुत कठिन है”। केवल देखें; अभी, इसी समय।</p>
<p>First of all sit absolutely still. Sit comfortably, cross your legs, sit absolutely still, close your eyes, and see if you can keep your eyes from moving. You understand? Your eye balls are apt to move, keep them completely quiet, for fun. Then, as you sit very quietly, find out what your thought is doing. Watch it as you watched the lizard. Watch thought, the way it runs, one thought after another. So you begin to learn, to observe.</p>	<p>सर्व प्रथम पूर्णतया स्थिर बैठें। आराम से, पालथी मार लें, बिलकुल अडोल, आंखें बंद करें और देखें कि क्या आप उन्हें स्थिर रख सकते हैं। समझे? आपकी पुतलियां घूमना चाहेंगी, उन्हें पूर्णतया शांत रखें, बस खेल-खेल में ही। तब, जब आप पूर्णतया शांत बैठते हैं, पता लगायें कि आपका विचार क्या कर रहा है। उसी तरह उसका अवलोकन करें जैसे आपने छिपकली को देखा था। विचारों को देखें, कैसे दौड़े चले जाते हैं, एक के पीछे दूसरा। सो यूं आप सीखना शुरू करते हैं, निरीक्षण करना।</p>
<p>Are you watching your thoughts - how one thought pursues another thought, thought saying, "This is a good thought, this is a bad thought"? When you go to bed at night, and when you walk, watch your thought. Just watch thought, do not correct it, and then you will learn the beginning of meditation. Now sit very quietly. Shut your eyes and see that the eyeballs do not move at all. Then watch your thoughts so that you learn. Once you begin to learn there is no end to learning.</p>	<p>क्या आप अपने विचारों को देख रहे हैं--कि कैसे एक विचार दूसरे विचार का पीछा करता है; विचार ही कहते हैं “यह विचार अच्छा है, यह विचार बुरा है?” जब आप रात्रि में सोते हैं, और जब टहलते हैं, तब भी अपने विचार का अवलोकन करें। केवल देखें, उसका संशोधन न करें, और तभी ध्यान की शुरुआत होगी, आप सीखेंगे उसे। अब बिलकुल शांत बैठें। अपनी आंखें बंद करें और देखें कि पुतलियां बिलकुल न हिलें। अपने विचारों का अवलोकन करें ताकि आप सीख सकें। एक बार जब आप सीखना प्रारंभ कर देते हैं, फिर उसका कोई अंत नहीं।</p>
<p><b>Talk To Students</b></p>	
<p><b>Chapter 2 On The Religious Mind And The Scientific Mind</b></p>	<p>२- धार्मिक मन और वैज्ञानिक मन</p>

<p>Early this morning I saw a beautiful bird, a black bird with a red neck. I do not know what the bird is called. It was flying from tree to tree and there was a song in its heart, and it was a lovely thing to behold. I would like this morning to talk to you of a rather serious matter. You should listen carefully and if you want to, perhaps later on, you may be able to discuss it with your teachers. I want to talk about something which concerns the whole world, about which the whole world is disturbed. It is the question of the religious spirit and the scientific mind. There are these two attitudes in the world. These are the only two states of mind that are of value, the true religious spirit and the true scientific mind. Every other activity is destructive, leading to a great deal of misery, confusion and sorrow.</p>	<p>आज सबेरे तड़के मैंने एक सुंदर पक्षी को देखा, एक लाल गर्दन वाला काले रंग का पंछी। मैं नहीं जानता कि उसका नाम क्या है। वह एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर उड़ रहा था, उसके हृदय में कोई गीत था, और सचमुच ही, बहुत ही प्यारा था वो। आज की सुबह मैं किसी गंभीर विषय पर बात करना चाहूंगा। आप ध्यान से सुनें और फिर यदि आप चाहें, तो बाद में, उस पर आप अपने अध्यापकों से विचार-विमर्श कर सकते हैं। मैं कुछ ऐसे विषय पर बात करना चाहता हूँ जो पूरे विश्व से जुड़ा है, जिसके बारे में समस्त विश्व चिंतित है। यह प्रश्न है धार्मिक भावना एवं वैज्ञानिक मन का। विश्व में ये दो अभिवृत्तियाँ हैं। मन की केवल ये ही दो अवस्थाएँ हैं जिनका कुछ महत्त्व है अर्थात् सच्ची धार्मिक भावना और सच्चा वैज्ञानिक मन। अन्य सब गतिविधियाँ तो विनाशकारी हैं, अत्यधिक कष्ट, भ्रान्ति तथा दुख की ओर ले जाने वाली।</p>
<p>The scientific mind is very factual. Discovery is its mission, its perception. It sees things through a microscope, through a telescope; everything is to be seen actually as it is; from that perception, science draws conclusions, builds up theories. Such a mind moves from fact to fact. The spirit of science has nothing to do with individual conditions, with nationalism, with race, with prejudice. Scientists are there to explore matter, to investigate the structure of the earth and of the stars and the planets, to find out how to cure man's diseases, how to prolong man's life, to explain time, both the past and the future. But the scientific mind and its discoveries are used and exploited by the nationalistic mind, by the mind that is India, by the mind that is Russia, by the mind that is America. Scientific discovery is utilized and exploited by sovereign states and continents.</p>	<p>वैज्ञानिक मन तो सटीक तथ्य से जुड़ा होता है। खोज ही उसका ध्येय है, उसकी दृष्टि है। वह वस्तुओं को माइक्रोस्कोप से या दूरबीन से देखता है; प्रत्येक वस्तु को वैसे ही देखना होता है जैसी कि वो है; उस निरीक्षण से ही विज्ञान अपने निष्कर्ष निकालता है, सिद्धांत बनाता है। ऐसा मन तथ्यों के अनुरूप ही चलता है। वैज्ञानिक भावना का व्यक्तिगत संस्कारों से, राष्ट्रवाद से, नस्ल से, पूर्वाग्रहों से कुछ मतलब नहीं होता। वैज्ञानिकों का कार्य ही है पदार्थ की खोज करना, पृथ्वी, सितारों और ग्रहों की संरचना का पता लगाना, यह ढूँढना कि मनुष्य की बीमारियों को कैसे दूर किया जाय, कैसे उसकी आयु में वृद्धि की जाय, भूत अथवा भविष्यकाल की व्याख्या कैसे की जाय। परंतु वैज्ञानिक मन और उसकी खोजों का उपयोग व दुरुपयोग राष्ट्रवादी मन द्वारा किया जाता है, उस मन द्वारा जो भारतीय है, रूसी या अमरीकी है। वैज्ञानिक खोजों का उपयोग और दुरुपयोग प्रभुता-सम्पन्न राज्यों तथा महाद्वीपों द्वारा किया जाता है।</p>
<p>Then there is the religious mind, the true religious mind that does not belong to any cult, to any group, to any religion, to any organized church. The religious mind is not the Hindu mind, the Christian mind, the Buddhist mind, or the Muslim mind. The religious mind does not</p>	<p>फिर एक धार्मिक मन भी होता है। एक सच्चा धार्मिक मन, जो किसी सम्प्रदाय का, किसी वर्ग का, किसी धर्म का, किसी संगठित चर्च का नहीं होता। धार्मिक मन न तो हिंदू है, न ईसाई, न बौद्ध न मुस्लिम। धार्मिक मन किसी भी ऐसे वर्ग का नहीं जो अपने को धार्मिक कहता है। धार्मिक मन वो नहीं है जो चर्च, मंदिर या मस्जिद</p>

<p>belong to any group which calls itself religious. The religious mind is not the mind that goes to churches, temples, mosques. Nor is it a religious mind that holds to certain forms of beliefs, dogmas. The religious mind is completely alone. It is a mind that has seen through the falsity of churches, dogmas, beliefs, traditions. Not being nationalistic, not being conditioned by its environment, such a mind has no horizons, no limits. It is explosive, new, young, fresh, innocent. The innocent mind, the young mind, the mind that is extraordinarily pliable, subtle, has no anchor. It is only such a mind that can experience that which you call God, that which is not measurable.</p>	<p>में जाता है और न ही वो मन धार्मिक है जिसके कुछ विश्वास हैं, कोई रुढ़ियां हैं। धार्मिक मन पूर्णतया अकेला होता है। वह ऐसा मन है जो चर्च के, रुढ़ियों, विश्वासों और परम्पराओं के झूठ को देख चुका है। क्योंकि वो राष्ट्रवादी नहीं होता, इर्द-गिर्द के संस्कारों से बंधा हुआ नहीं होता, इसलिए ऐसे मन की कोई सीमा नहीं होती; वह असीम होता है। वह विस्फोटक होता है, नवीन, तरुण, ताजा तथा मासूम होता है। ऐसा अबोध मन, तरुण मन, जो अद्भुत रूप से लचीला है, सूक्ष्म है, उसका कोई आश्रयस्थल नहीं होता। केवल ऐसा ही मन उसे महसूस कर सकता है, जिसे आप ईश्वर कहते हैं, जिसका कोई ओर-छोर नहीं।</p>
<p>A human being is a true human being when the scientific spirit and the true religious spirit go together. Then human beings will create a good world - not the world of the communist or the capitalist, of Brahmins, or of Roman Catholics. In fact the true Brahmin is the person who does not belong to any religious creed, has no class, no authority; no position in society. He is the true Brahmin, the new human being, who combines both the scientific and the religious mind, and therefore is harmonious without any contradiction within himself. And I think the purpose of education is to create this new mind, which is explosive, and does not conform to a pattern which society has set.</p>	<p>सच्चा मनुष्य वही है जिसमें वैज्ञानिक भावना तथा सच्ची धार्मिक भावना साथ-साथ रहती है। तभी मनुष्य एक अच्छे विश्व का निर्माण करेंगे--यह विश्व न तो साम्यवादी होगा, न ही पूंजीवादी, न ब्राह्मणों का और न ही रोमन कैथोलिकों का। वास्तव में सच्चा ब्राह्मण वही है जिसका कोई धार्मिक सम्प्रदाय नहीं, कोई वर्ग नहीं, कोई सत्ताधिकार नहीं, जिसकी समाज में कोई पद-सत्ता नहीं। वही सच्चा ब्राह्मण है, नया मानव जिसमें वैज्ञानिक तथा धार्मिक मन दोनों का मिलन है और इसलिए उसके अंदर कोई अंतर्विरोध नहीं, वह सामंजस्यपूर्ण है। और मेरे विचार से शिक्षा का प्रयोजन इसी नवीन मन का सृजन करना है, जो कि विस्फोटक होता है और जो समाज द्वारा स्थापित किसी ढांचे में नहीं ढलता।</p>
<p>A religious mind is a creative mind. It has not only to finish with the past but also to explode in the present. And this mind - not the interpreting mind of books, of the Gita, the Upanishads, the Bible - which is capable of investigating, is also capable of creating an explosive reality. There is no interpretation here nor dogma.</p>	<p>धार्मिक मन सृजनशील होता है। उसे न केवल अतीत का ही अंत करना होता है वरन वर्तमान में भी विस्फोट करना होता है। धार्मिक मन पोथियों की, गीता, उपनिषद् या बाइबिल की व्याख्या करने वाला मन नहीं है; वह खोजने की क्षमता रखता है। और एक विस्फोटक यथार्थ का सृजन भी कर सकता है। यहां न तो कोई व्याख्या है और न कोई रुढ़ि-सिद्धांत ही है।</p>

<p>It is extraordinarily difficult to be religious and to have a clear and precise, scientific mind, to have a mind that is not afraid, that is unconcerned with its own security, its own fears. You cannot have a religious mind without knowing yourself, without knowing all about yourself - your body, your mind, your emotions, how the mind works, how thought functions. And to go beyond all that, to uncover all that, you must approach it with a scientific mind which is precise, clear, un-prejudiced, which does not condemn, which observes, which sees. When you have such a mind you are really a cultured human being, a human being who knows compassion. Such a human being knows what it is to be alive. How does one bring this about? For it is imperative to help the student to be scientific, to think very clearly, precisely, to be sharp, as well as to help him uncover the depths of his mind, to go beyond words, his various labels as the Hindu, Muslim, Christian. Is it possible to educate the student to go beyond all labels and find out, experience that something which is not measured by the mind, which no books contain, to which no guru can lead you? If such an education is possible in a school like this, it will be remarkable. You must all see that it is worthwhile to create such a school. That is what the teachers and I have been discussing for some days. We have talked of a great many things - about authority, about discipline, how to teach, what to teach, what listening is, what education is, what culture is, how to sit still. Merely to pay attention to dance, to song, to arithmetic, to lessons, is not the whole of life. It is also part of life to sit still and look at yourself, to have insight, to see. It is also necessary to observe how to think, what to think and why you are thinking. It is also part of life to look at birds, to watch the village people, their squalor - which each one of us has brought about, which</p>	<p>धार्मिक होना और उसके साथ-साथ ही एक स्पष्ट, निश्चित और वैज्ञानिक मन का होना, यह बड़ा ही कठिन काम है, एक ऐसा मन जिसे भय नहीं है, जिसे स्वयं अपनी सुरक्षा से सरोकार नहीं। बिना अपने को जाने, अपने विषय में सब कुछ जाने बिना अपने शरीर, अपने मन, अपनी भावनाओं को जाने बिना यह जाने कि कैसे मन काम करता है, कैसे विचार काम करते हैं, यह सब जाने बिना आपका मन धार्मिक नहीं हो सकता। और उस सबसे पार जाने के लिए, उस सबको बेपर्दा करने के लिए, आपको एक वैज्ञानिक मन से काम लेना होगा जो सटीक है, स्पष्ट है, बिना किसी पूर्वाग्रह के; जो निंदा नहीं करता, निरीक्षण करता है, देखता-परखता है। जब आपके पास ऐसा मन होता है तभी आप एक सभ्य मनुष्य होते हैं, एक ऐसा मनुष्य जिसमें करुणा है, दया है। ऐसा ही मनुष्य जीवित होने का अर्थ समझ पाता है। तो यह सब करें कैसे? छात्र की सहायता करना अत्यावश्यक है ताकि उसका मन वैज्ञानिक हो सके, स्पष्ट, सटीक और सूक्ष्मता से सोचने वाला, मन की गहराइयों को बेपर्दा करने में भी उसकी सहायता करनी पड़ती है ताकि वह शब्दों से आगे जा सके, हिंदू, मुसलमान और इसाई आदि के अपने लेबलों से आगे। क्या छात्र को इस प्रकार शिक्षित कर पाना संभव है कि वह सभी लेबलों के परे जा सके और पता लगा सके, महसूस कर सके उसे जिसे मन माप नहीं सकता, कोई पुस्तक अपने में समा नहीं सकती, जिस तक कोई गुरु आपको ले जा नहीं सकता? यदि इस प्रकार के स्कूल में ऐसी शिक्षा संभव हो सके तो वह अनूठी बात होगी। आप सभी को यह देखना होगा कि इस प्रकार के विद्यालय का निर्माण कितना मूल्यवान है। पिछले कुछ दिनों से अध्यापक और मैं इसी पर चर्चा करते रहे हैं। हमने कई विषयों पर चर्चा की--सत्ताधिकार, अनुशासन, कैसे पढ़ाया जाय, क्या पढ़ाया जाय, सुनना क्या है, शिक्षा क्या है, संस्कृति क्या है, शांत कैसे बैठा जाये। केवल नृत्य, संगीत, गणित और दूसरे पाठों पर ध्यान देना ही समस्त जीवन नहीं है। शांत बैठना तथा अपने आप को देखना यह भी जीवन का हिस्सा है, गहरे में देख पाना, अवलोकन करना। यह देखना भी आवश्यक है कि विचार कैसे किया जाय, किस पर विचार किया जाय तथा आप विचार कर क्यों रहे हैं। यह सब भी</p>

<p>society maintains. All this is part of education.</p>	<p>जीवन का हिस्सा है--पक्षियों को देखना, गांव के लोगों को, उनकी गंदगी को देखना जिसे हममें से प्रत्येक व्यक्ति ने उत्पन्न किया है, जिसे समाज बनाये रखता है। यह सब शिक्षा का अंग है।</p>
<p><b>Talk To Students</b></p> <p><b>Chapter 3 On Knowledge And Intelligence</b></p>	<p><b>३- ज्ञान तथा प्रज्ञा</b></p>
<p>You are here to gather knowledge - historical, biological, linguistic, mathematical, scientific, geographical, and so on. Apart from the knowledge that you acquire here, there is collective knowledge, the knowledge of the race, of your grandfathers, of your past generations. They all had a great many experiences, a great many things happened to them, and their collective experience has become knowledge. Then there is the knowledge of your own personal experiences, your own reactions, impressions, your own tendencies and inclinations, which have assumed their own peculiar forms. So there is scientific, biological, mathematical, physical, geographical, historical knowledge; there is also the collective knowledge of the past which is the tradition of the community, the race; then there is the personal knowledge which you yourself have experienced. There are these three kinds of knowledge - scientific, collective, personal. Do they collectively make for intelligence?</p>	<p>आप यहां ज्ञान संचय करने आये हैं--ऐतिहासिक, जीव-वैज्ञानिक, भाषा-शास्त्रीय, गणितीय, वैज्ञानिक, भौगोलिक, आदि सभी प्रकार का ज्ञान। इस ज्ञान के अलावा जिसे आप यहां प्राप्त करते हैं, एक सामूहिक ज्ञान भी है अर्थात् प्रजाति एवं नस्ल का ज्ञान, आपके दादा-परदादाओं का, बीती हुई पीढ़ियों का ज्ञान है। उन्हें कितने ही अनुभव हुए, कितनी ही चीजें उनके साथ घटित हुई और उनका सामूहिक अनुभव ज्ञान बन गया। फिर आपके अपने निजी अनुभवों का ज्ञान है, आपकी अपनी प्रतिक्रियाएं, प्रभाव, आपकी अपनी प्रवृत्तियां तथा रुझान; इन सभी ने अपने-अपने निश्चित रूप धार लिये हैं। अतः एक तो वैज्ञानिक, जीव-वैज्ञानिक, गणितिय, भौतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक ज्ञान है; फिर, अतीत का एक सामूहिक ज्ञान है जो उस समुदाय, नस्ल की परम्परा होती है; इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत ज्ञान होता है जिसका स्वयं आपने अनुभव किया होता है। इस तरह ज्ञान तीन प्रकार का होता है--वैज्ञानिक, सामूहिक, व्यक्तिगत। क्या वे सब मिलकर बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा लाते हैं?</p>
<p>Now what is knowledge? is knowledge related to intelligence? Intelligence uses knowledge, intelligence being the capacity to think clearly, objectively, sanely, healthily. Intelligence is a state in which there is no personal emotion involved, no personal opinion, prejudice or inclination. Intelligence is the capacity for direct understanding. I am afraid this is rather difficult, but it is important, it is</p>	<p>तो ज्ञान है क्या? क्या ज्ञान का बुद्धि से संबंध है? बुद्धि ज्ञान का उपयोग करती है, बुद्धि यानि स्पष्टता से सोचने-समझने की योग्यता वस्तुनिष्ठ रूप से, समझदारी से, स्वस्थ चिंतन की क्षमता। बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा वह अवस्था है जिसमें व्यक्तिगत भावनायें, व्यक्तिगत मत, पूर्वाग्रह अथवा रुझान शामिल नहीं होते। बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा प्रत्यक्ष रूप से समझने की क्षमता है। मुझे भय है कि यह कुछ कठिन होता जा रहा है परंतु यह महत्वपूर्ण है और आपके लिये यह अच्छा होगा कि आप दिमाग पर</p>

<p>good for you to exercise your brain. So there is knowledge, which is the past continually being added to, and there is intelligence. Intelligence is the quality of the mind that is very sensitive, very alert, very aware. Intelligence does not hold on to any particular judgement or evaluation, but is capable of thinking very clearly, objectively. Intelligence has no involvement. Are you following? Now, how is this intelligence to be cultivated? What is the capacity of this intelligence? You are living here, being educated in all the various disciplines, in various branches</p> <p>of knowledge. Are you also being educated so that intelligence comes into being at the same time? Do you see the point? You may have a very good knowledge of mathematics or engineering. You may take a degree, enter a college and be a first class engineer. But at the same time, are you becoming sensitive, alert? Are you thinking objectively, clearly, with intelligence, understanding? Is there a harmony between knowledge and intelligence, a balance between the two? You cannot think clearly if you are prejudiced, if you have opinions. You cannot think clearly if you are not sensitive; sensitive to nature, sensitive to all the things that are happening around you, sensitive not only to what is happening outside you but also inside you. If you are not sensitive, if you are not aware, you cannot think clearly. Intelligence implies that you see the beauty of the earth, the beauty of the trees, the beauty of the skies, the lovely sunset, the stars, the beauty of subtlety.</p>	<p>जोर डालें। इस प्रकार एक और ज्ञान है जो अतीत है, जिसमें निरंतर कुछ जोड़ा जा रहा है, और दूसरी ओर प्रज्ञा है। समझदारी, प्रज्ञा उस मन का लक्षण है जो बहुत संवेदनशील है, एकदम सतर्क और सजग है। प्रज्ञा किसी विशेष निर्णय अथवा मूल्यांकन को पकड़े नहीं रहती, वरन् बहुत स्पष्ट रूप से, वस्तुनिष्ठ रूप से सोचने में सक्षम होती है। प्रज्ञा कहीं उलझती नहीं। क्या आप समझ रहे हैं? तो, कैसे इस प्रज्ञा को पोषित किया जाये? इस बुद्धिमत्ता की क्या क्षमता है? आप यहां रह रहे हैं, ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में, विभिन्न विषयों में आपको शिक्षित किया जा रहा है। तो क्या आपको इसलिये भी शिक्षित किया जा रहा है कि उसके साथ ही साथ प्रज्ञा भी जगे? क्या आप इस मामले को समझ रहे हैं? हो सकता है आपको गणित का अथवा इन्जीनियरिंग का बहुत अच्छा ज्ञान हो। आप कोई डिग्री ले सकते हैं, किसी कालेज में प्रवेश कर सकते हैं और एक प्रथम श्रेणी के इन्जीनियर बन सकते हैं। परंतु साथ ही साथ क्या आप संवेदनशील हो रहे हैं, सतर्क? क्या आप बेलाग रूप से, स्पष्टता से सोच पा रहे हैं, बुद्धिमत्ता से, समझदारी से? क्या ज्ञान और बुद्धि में कोई तालमेल है, क्या दोनों में कोई संतुलन है? यदि आप पूर्वाग्रह से पीड़ित है, निश्चित मत में बंधे हैं, तो आपके चिंतन में स्पष्टता नहीं हो सकती। आप स्पष्टता से सोच नहीं सकते, यदि आप संवेदनशील नहीं हैं--प्रकृति के प्रति संवेदनशील, सभी वस्तुओं के प्रति जो आपके चारों ओर घटित हो रही हैं, उसी के प्रति नहीं जो बाहर हो रहा है वरन उसके प्रति भी जो अंदर घट रहा है। यदि आप संवेदनशील नहीं हैं, जागरूक नहीं हैं तो स्पष्टता से सोच नहीं सकते। बुद्धिमत्ता है यानि कि आप पृथ्वी के सौंदर्य को, वृक्षों के सौंदर्य को, आकाश के सौंदर्य को, सुंदर सूर्यास्त को, तारों को तथा सूक्ष्मता के सौंदर्य को देख सकते हैं।</p>
<p>Now, is this intelligence being gathered by you here in this school? Are you gathering it or only gathering knowledge through books? If you have no intelligence, no sensitivity, then knowledge can become very dangerous. It can be used for destructive purposes. This is what the whole world is doing. Have you the</p>	<p>तो क्या यहां इस स्कूल में इस 'प्रज्ञा' का संजोना हो पा रहा है? या आप केवल पुस्तकीय ज्ञान का ही संग्रह कर रहे हैं? यदि आपके पास बुद्धिमत्ता नहीं है, संवेदनशीलता नहीं है, तो ज्ञान बड़ा खतरनाक हो सकता है। उसका उपयोग विनाश के लिये हो सकता है। यही तो है जो सारा संसार कर रहा है। क्या आपके</p>

<p>intelligence that questions, tries to find out? What are the teachers and you doing to bring about this quality of intelligence, which sees the beauty of the land, the dirt, the squalor, and is also aware of the inner happenings, how one thinks, how one observes the subtlety of thought? Are you doing all this? If not, what is the point of your being educated?</p>	<p>पास वह बुद्धिमत्ता है, समझदारी है, जो प्रश्न करती है, खोजने की कोशिश करती है? बुद्धि के इस गुण को जगाने के लिये आप और आपके अध्यापक क्या कर रहे हैं, प्रज्ञा जो धरती की सुंदरता को, धूल और गंदगी को तो देखती ही है, साथ ही अंदर की घटनाओं के प्रति भी सचेत है कि कैसे कोई सोचता है, कैसे विचार की सूक्ष्मता का वह निरीक्षण करता है? क्या आप यह सब कर रहे हैं? यदि नहीं तो फिर आपके शिक्षित होने का अर्थ ही क्या है?</p>
<p>Now what is the function of an educator? Is it merely to give you information, knowledge, or is it to bring about this intelligence in you? If I were a teacher here, do you know what I would do? First of all, I would want you to question me about everything - not about knowledge, that is very simple, but to question me about how to look, how to look at these hills, to look at that tamarind tree, how to listen to a bird, how to follow a stream. I would help you to look at the marvellous earth and nature, the beauty of the land, the redness of the soil. Then I would say, look at the peasants, the villagers. Look at them, do not criticize, just look at theirsqualor, their poverty, not the way you look at them at present, with utter indifference. There are those huts there, have you been there? Have the teachers been down there and looked at those huts, and if they all have, what have they done? So I will make you look, which is to make you sensitive, and you cannot be sensitive if you are careless, indifferent to everything that is happening around you. Then I would say, "To be intelligent, you must know what you are doing, the way you walk, the way you talk, the way you eat." You understand? I would talk to you about your food. I would say, "Look, discuss, do not be afraid to ask any questions, find out, learn", and in your classes I would discuss a subject with you, how to read, how to learn, what it means to pay attention. If you say you want to look out of the window, I would say look out of the window, see everything that you want to see out of the window, and after you have seen it,</p>	<p>एक शिक्षक का फिर क्या कार्य है? क्या उसका काम केवल सूचना देना, ज्ञान देना मात्र है, या आपमें इस बुद्धि को जगाना है? यदि मैं यहां अध्यापक होता तो आप जानते हैं, मैं क्या करता? सर्वप्रथम मैं चाहता कि आप प्रत्येक विषय पर मुझसे प्रश्न करते--ज्ञान के विषय में नहीं, वह तो एकदम सरल है; वरन प्रश्न करते कि कैसे देखें, इन पहाड़ियों को कैसे देखें, उस इमली को, अम्लिका वृक्ष को कैसे देखें, किसी पक्षी के संगीत को कैसे सुनें, किसी झरने के पीछे कैसे दौड़ें। मैं आपकी सहायता करता इस अद्भुत पृथ्वी और प्रकृति का देखने में, धरती के सौंदर्य को, मिट्टी की लालिमा को देखने में। तब मैं कहता, उन किसानों को, ग्रामीणों को देखें। केवल उनको देखें, आलोचना नहीं, उनकी गंदगी, उनकी गरीबी को सिर्फ देखें, ऐसे नहीं जैसे कि अब देखते हैं एकदम उदासीनता से। वहां वे झोपड़ियां हैं। क्या आप कभी वहां गये हैं? क्या अध्यापक कभी वहां गये हैं और उन्होंने उन झोपड़ियों को देखा है? और यदि उन्होंने देखा भी है तो किया क्या है? तो मैं आपको देखने के लिए बाध्य करूंगा, ताकि आप संवेदनशील हों। संवेदनशील आप हो नहीं सकते यदि आप लापरवाह हैं, जो कुछ चारों ओर हो रहा है, उसके प्रति उदासीन हैं तो। तो मैं कहूंगा कि "बुद्धिमान होने के लिये आपको जानना होगा कि आप क्या कर रहे हैं, कैसे आप चलते हैं, कैसे बातचीत करते हैं, कैसे खाते हैं।" आप समझे? मैं आपसे आपके भोजन के विषय में बात करता। मैं कहता, "देखे, विचार-विमर्श करें, प्रश्न पूछने से मत डरें, पता लगाएं, सीखें," और आपकी कक्षाओं में मैं आपसे किसी विषय पर चर्चा करता, कैसे पढ़ें, कैसे सीखें, ध्यान देने का क्या अर्थ है। यदि आप कहते कि मैं खिड़की बाहर देखना चाहता हूं तो मैं कहता, ठीक है देखें, बाहर जो भी आप देखना चाहते हैं खुलकर देखें,</p>

<p>look at your book with equal interest and pleasure. Then I would say, "Through books, through discussions I have helped you to be intelligent; let me help you to find out how to live in this world sanely, healthily, not half asleep." That is the function of a teacher, of an educator, not just to give you a lot of data, knowledge, but to show you the whole expanse of life, the beauty of it, the ugliness of it, the delight, the joy, the fear, the agony. So that when you leave this place, you are a tremendous human being who can use your intelligence in life, not just a thoughtless, destructive, callous human being.</p>	<p>और जब आप देख लें तो फिर अपनी पुस्तक को भी उसी रुचि और आनन्द के साथ देखें। तब मैं कहता, "पुस्तकों के द्वारा एवं विचार-चर्चा के द्वारा बुद्धिमान होने में मैंने आपकी सहायता की; अब इस विश्व में बुद्धिमत्ता से, स्वस्थ रूप से, कैसे जिया जाए, नींद की खुमारी में नहीं, इसमें मैं आपकी सहायता कर पाया।" यही एक अध्यापक का, एक शिक्षक का कार्य है, न कि केवल ढेरों आंकड़ों और ज्ञान से लाद देना। बल्कि वह जीवन के समस्त विस्तार को, उसके सौंदर्य, उसकी कुरूपता, सुख, आनन्द, भय, कष्ट आदि को दिखाये। ताकि जब आप इस जगह को छोड़ें तो आप एक विचारहीन, विनाशकारी, बेरुख मनुष्य न हों, वरन् एक ऐसे ज़बरदस्त इंसान हों जो जीवन में अपने दिल-दिमाग का इस्तेमाल करना जानता है।</p>
<p>Now you have listened, the teachers, the principal and students, you have all listened. What are you going to do about it? You know, it is as much your responsibility, as students, as it is the responsibility of the teachers. It is the responsibility of the students to demand, to ask, not just to say "I will sit down, teach me". It means that you must be tremendously intelligent, sensitive, alive, unprejudiced. It is also essential for the teacher to see that you are intelligent so that when you leave RishiValley you leave with a smile, with glory in your heart, so that you are sensitive, ready to cry, to laugh.</p>	<p>तो आप सबने, अध्यापकों ने, प्रधानाचार्य ने और छात्रों ने सुना, आप सब ने सुना। तो अब आप इस विषय में क्या करेंगे? मेरे ख्याल में, छात्रों के रूप में यह आपकी भी उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी है जितनी अध्यापकों की। यह छात्रों की जिम्मेदारी है कि वे मांग करें, पूछें, न कि केवल कहें, "मैं बैठा हूँ, मुझे पढ़ाइये।" इसका अर्थ है कि आप को भी अत्यधिक बुद्धिमान, समझदार, संवेदनशील, सचेत, पूर्वाग्रहों से मुक्त होना होगा। अध्यापक के लिये भी यह आवश्यक है कि वह देखे कि आप प्रज्ञाशील हों ताकि जब आप ऋषिवैली छोड़ें तो आपके मुख पर एक मुस्कराहट हो और हृदय में गौरव हो, आप संवेदनशील हों और रोने और हंसने के लिये तैयार।</p>
<p><b>Student:</b> If you are very sensitive, do you not think you are apt to become emotional?</p>	<p><b>छात्र :</b> यदि आप बहुत संवेदनशील है तो क्या आपको नहीं लगता कि आप भावुक होने लगते हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> What is wrong with being emotional? When I see those poor people living in poverty, I feel very strongly. Is that wrong? There is nothing wrong in feeling emotion when you see the squalor, the dirt, the poverty around</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> भावुक होने में क्या गलती है? जब मैं उन निर्धन व्यक्तियों को निर्धनता में रहते देखता हूँ तो मुझे बहुत शिद्दत से महसूस होता है। क्या यह गलत है? जब आप गंदगी को, कूड़े-करकट को, निर्धनता को,</p>

<p>you. But you also feel strongly if another says something ugly about you. When this happens what will you do? Because of your emotion will you hit back at him? Or because you are sensitive, emotional, will you be aware of what you are going to do? If there is an interval before your response and you observe, are sensitive to it, then in that interval intelligence comes in. Allow that interval; in it begin to watch. If you are tremendously aware of the problem there is instant action and that instant action is the right action of intelligence.</p>	<p>अपने चारों ओर देखते हैं तो भावुक होने में कुछ गलती नहीं है। परंतु बुरा आपको तब भी बहुत लगता है जब कोई आपके बारे में भद्दी बात कहता है। जब ऐसा होता है तब आप क्या करेंगे? क्या भावुकता के कारण उसे उलट कर जबाब देंगे? या फिर क्योंकि आप संवेदनशील हैं, भावुक हैं, आप इसके प्रति सचेत होंगे कि आप क्या कर रहे हैं? यदि आप पलट कर जवाब देने से पहले थोड़ा रुकते हैं और उसे देखते हैं, उसके प्रति संवेदनशील हैं तो उस विराम में प्रज्ञा को, उस गहरी समझ को विद्यमान पाएंगे। उस विराम को स्वीकार कीजिए; उसमें निरीक्षण करना आरम्भ कीजिये। यदि आप उस समस्या के प्रति अत्यधिक जागरूक हैं तो तत्काल एक्शन होता है और वह तत्काल एक्शन ही प्रज्ञा का सही कर्म है।</p>
<p><b>Student:</b> Why are we conditioned?</p>	<p><b>छात्र :</b> हम संस्कारों में क्यों बंधे हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Why do you think we are conditioned? It is very simple. You have asked the question. Now, exercise your brain. Find out why you are conditioned. You are born in this country, you live in an environment, in a culture, you grow into a young child, and then what takes place? Watch the babies around you. Watch the mothers, the fathers, if they are Hindus or Muslims or communists or capitalists; they say to the child, "Do this, do that". The child sees the grandmother going to a temple, performing rituals, and the child gradually accepts all that. Or the parents may say "I don't believe in rituals" and the child also accepts that. The simple fact is that the mind, the brain of the child is like putty or clay and on that putty, impressions are made, like the grooves in a record. Everything is registered. So in a child everything is registered consciously or unconsciously, until gradually he becomes a Hindu, Muslim, Catholic or a non-believer. He then makes divisions - as my belief, your belief, my god, your god, my country, your country. You have been conditioned to make tremendous</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> हम संस्कारों में बंधे हैं ऐसा हम क्यों सोचते हैं? यह बड़ा सरल है। आपने प्रश्न पूछा है, अब ज़रा दिमाग पर ज़ोर दें। पता लगाएं कि आप संस्कारित क्यों हैं। आप इस देश में पैदा हुए, एक संस्कृति, एक वातावरण में रहें, आप एक नन्हें से शिशु के रूप में विकसित हुए, फिर क्या होता है? अपने चारों ओर के बच्चों को देखें। मां-बाप को देखें, यदि वो हिन्दू हैं, मुसलमान, साम्यवादी या पूँजीवादी; तो वे बालक से कहते हैं “यह करो, वह करो।” बालक अपनी दादी को मंदिर जाते देखता है, कर्म-काण्ड करते और धीरे-धीरे वह यह सब स्वीकार कर लेता है। या माता-पिता यह भी कह सकते हैं कि “मैं कर्मकाण्ड में विश्वास नहीं करता” और बालक उसे भी स्वीकार कर लेता है। सच्चाई यह है कि बालक का मन, उसका मस्तिष्क, मिट्टी का गारा है, जिस पर किसी भी तरह की लकीरें खींची जा सकती हैं, किसी रिकार्ड पर पड़े निशानों की तरह। इस प्रकार में प्रत्येक वस्तु सचेत अथवा अचेत रूप में अपने निशान छोड़ती जाती है जब तक धीरे-धीरे वह हिन्दू, मुस्लिम, कैथोलिक अथवा नास्तिक नहीं हो जाता। तब वह विभाजन खड़े करता है--मेरा विश्वास, आपका विश्वास, मेरा ईश्वर, आपका ईश्वर, मेरा देश-आपका देश आदि। घोर प्रयासों में लगे रहने के</p>

<p>effort; you have to make an effort to study, to pass an examination, you have to make an effort to be good.</p>	<p>लिए आपको संस्कारित किया गया है; और अध्ययन के लिए, परीक्षा पास करने के लिए, अच्छा बनने के लिए हर चीज़ के लिए आपको घोर प्रयास करना पड़ता है।</p>
<p>So, the question is how is the mind, which is conditioned, to unravel itself, to get out of conditioning? How do you propose to get out of it? Now exercise your intelligence to find out. Do not follow somebody who says, "Do this and you will get unconditioned; find out how you will uncondition yourself. Come on, answer me, tell me, discuss with me.</p>	<p>अतः प्रश्न यह है कि मन जो कि संस्कारित है कैसे अपने को खोले, कैसे संस्कारों से अपने को मुक्त करे। आप उसे कैसे मुक्त करना चाहते हैं? बुद्धि का प्रयोग करें, पता लगाएं। "ऐसा करेंगे तो आप संस्कारों से मुक्त हो जायेंगे," कहने वाले किसी व्यक्ति का अनुसरण करके नहीं, वरन आप पता लगाएं कि आप कैसे स्वयं को संस्कारों से मुक्त करेंगे। कोशिश करें, बताएं, मेरे साथ विचार-विमर्श करें।</p>
<p><b>Student:</b> Can you tell us how to uncondition ourselves?</p>	<p><b>छात्र:</b> क्या आप बता सकते हैं कि हम अपने को कैसे संस्कारों से मुक्त कर सकते हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> To fall into the trap of another conditioning, is that it? First of all, do you know that you are conditioned? How do you know? Is it only because somebody has told you that you are conditioned that you know? Do you see the difference? That is, somebody tells you that you are hungry, that is one thing, and to know for yourself that you are hungry is altogether different. These two statements are different, aren't they? In the same way, do you know for yourself without somebody telling you that you are conditioned, as a Hindu, a Muslim? Do you know it for yourself?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> किन्हीं दूसरे संस्कारों के फँदे में पड़ने के लिए, यही न? सर्वप्रथम, क्या आप जानते हैं कि आप संस्कारित हैं? आप कैसे जानते हैं? क्या सिर्फ इसलिए कि किसी ने आपको बताया है कि आप संस्कारित हैं? क्या आप इस अंतर को समझ रहे हैं? यह तो ऐसा हुआ कि कोई आपको बताए कि आप भूखे हैं, यह एक बात है; और अपने से यह जानना कि आप भूखे हैं, यह बिलकुल दूसरी बात है। ये दोनों कथन बिलकुल ही अलग तरह के हैं, नहीं क्या? इसी प्रकार से क्या आप अपने से यह जानते हैं कि आप हिन्दू अथवा मुस्लिम के रूप में संस्कारित हैं, बिना किसी के बताये? क्या आपने खुद पता लगाया है?</p>
<p>Now I will ask you a question and see whether there is a gap before you answer it. Right? Now observe, think very clearly, unemotionally, without any prejudice. My question is, are you aware that you are conditioned without being told? Are you aware? It is not so very difficult.</p>	<p>अब मैं आपसे एक प्रश्न करूंगा और आप देखें कि उत्तर देने से पूर्व क्या भीतर कोई अंतराल है, विराम है? ठीक? अब देखें, बड़ी स्पष्टता से, बिना किसी भावुकता के, बिना किसी पूर्वाग्रह के, सोचें। मेरा प्रश्न है : क्या आप बिना किसी के बताए ही जागरूक हैं कि आप संस्कारित हैं? क्या आप जागरूक हैं? यह बहुत अधिक कठिन नहीं है।</p>

Do you know what it means to be aware? When there is a pain in the thumb, you are aware there is pain, nobody tells you there is pain. You know it. Now, in the same way do you know that you are conditioned, conditioned into thinking that you are a Hindu, that you believe in this, that you do not believe in that, that you must go to a temple, that you must not go to a temple? Are you aware of it	क्या आप जानते हैं कि जागे होने का क्या अर्थ है? जब अंगूठे में दर्द होता है तो आप जानते हैं कि वहाँ दर्द है, कोई आपको बताता नहीं कि दर्द है। आप जानते हैं। तो क्या इसी प्रकार से आप जानते हैं कि आप संस्कारित हैं, यह सोचने के लिए संस्कारित हैं कि आप एक हिन्दू हैं, कि आप इसमें विश्वास करते हैं या उसमें नहीं करते, कि आपको मंदिर में जाना चाहिये या नहीं जाना चाहिए? क्या आप उसके प्रति जागरूक है?
<b>Student:</b> Yes.	<b>छात्र:</b> हां
<b>Krishnamurti:</b> You are? Now that you are aware that you are conditioned, what next?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या आप हैं? तो जब आप जागरूक होते हैं कि आप संस्कारित हैं तो क्या होता है?
<b>Student:</b> I will then see whether I want to be unconditioned.	<b>छात्र:</b> फिर मैं देखूंगा कि क्या मैं संस्कारों से मुक्त होना चाहता हूँ।
<b>Krishnamurti:</b> You are conditioned and you become aware, then what takes place? Then I ask, what is wrong with being conditioned? Now I am conditioned as a Muslim and you are conditioned as a Hindu, right? What takes place? We may live in the same street, but because of my conditioning, my belief, my dogma, and you with your belief, with your dogma, though we may meet in the same street, we are separate, aren't we? So where there is separation there must be conflict. Where there are political, economic, social, nationalistic divisions, there must be conflict. So conditioning is the factor of division. Therefore, in order to live peacefully in	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप संस्कारित हैं और आप उसके प्रति जागरूक हो जाते हैं तो फिर क्या होता है? फिर मैं पूछता हूँ, संस्कारित होने में हानि क्या है? अब मैं एक हिन्दू के रूप में संस्कारित हूँ और आप एक मुस्लिम के रूप में। ठीक? तो क्या होता है? भले ही हम एक ही गली में रहते हों, परंतु चूंकि मेरे अपने संस्कार हैं, विश्वास और रूढ़ि-सिद्धांत हैं और आप अपने विश्वासों और रूढ़ि-सिद्धांतों में बंधे हैं, तो, यद्यपि हम उसी सड़क पर मिलते हैं, फिर भी हम एक दूसरे से अलग हैं, क्या हम नहीं है? इसलिये जहां अलगाव है वहां कलह होगी ही। जहां राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, राष्ट्रीय विभाजन है वहां कलह अवश्य होगी ही। तो संस्कार विभाजन की एक वजह हैं। तो इस संसार में

<p>this world, let us be free of conditioning, cease to be Muslim or Hindu. This is the factor of intelligence; becoming aware that one is conditioned, then seeing the effect of that conditioning in the world, the divisions, nationalistic, linguistic and so on, and seeing that where there is division there is conflict. When you see this, when you are aware that you are conditioned, that is the operation of intelligence.</p>	<p>शांति से रहने के लिये आइये हम इन संस्कारों से मुक्त हों, मुस्लिम या हिन्दू होना छोड़ें। यही बुद्धिमत्ता है, अर्थात् इसके प्रति जागरूक होना कि व्यक्ति संस्कारित है और फिर विश्व में उसके प्रभाव को देखना राष्ट्रीय और भाषागत विभाजनों को देखना और यह देख लेना कि जहां विभाजन है वहां कलह भी होगी जब आप इसे देख लेते हैं; उसके प्रति जागरूक हो जाते हैं कि आप संस्कारित हैं तो वही बुद्धिमत्ता है, प्रज्ञा है।</p>
<p>That is enough for the day. Do you want to ask more questions?</p>	<p>आज इतना ही पर्याप्त है। क्या आप और प्रश्न करना चाहते हैं?</p>
<p><b>Student:</b> How can one be free from prejudice?</p>	<p><b>छात्र:</b> कोई पूर्वाग्रह से कैसे मुक्त हो सकता है?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> When you say, "how", what do you mean by that word? How am I to get up from this place? All that I have to do is to get up. I never ask how I am to get up? Use your intelligence. Do not be prejudiced. First be aware that you are prejudiced. Do not be told by others that you are prejudiced. They are prejudiced, so do not bother what other people say about your prejudices. First be aware that you are prejudiced. You see what prejudice does - it divides people. Therefore you see that there must be intelligent action, which is that the mind must be capable of being free from prejudice, not ask "how" which means a system, a method. Find out whether your mind can be free from prejudice. See what is involved in it. Why are you prejudiced? Because part of your conditioning is to be prejudiced, and in prejudice there is a great deal of comfort, a great deal of pleasure. So first become aware, become aware of the beauty of the land, become aware of the trees, the colour, the shades, the depth of light, and the beauty of the moving trees, and watch the birds, be aware of all that is around you; then</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> जब आप कहते हैं “कैसे” तो इस शब्द से आपका क्या अर्थ है? मुझे कैसे इस स्थान से उठना है? करना तो बस यही है न कि मैं उठ जाऊं। मैं कभी नहीं पूछता कि मुझे कैसे उठना है। अपनी बुद्धि का प्रयोग करें, पूर्वाग्रही न हों। पहले तो देखें कि आप पूर्वाग्रही हैं, इसके प्रति सचेत हों। आप पूर्वाग्रही हैं ऐसा दूसरों द्वारा ही बताया हुआ न हो। वे खुद ही पूर्वाग्रही हैं इसलिये आपके पूर्वाग्रहों के विषय में वे कहते हैं, इसकी आप चिन्ता न करें। सबसे पहले खुद सचेत हों कि आप पूर्वाग्रही हैं। आप समझते हैं कि पूर्वाग्रह करते क्या हैं--वे लोगों को बांटते हैं। अतः आप देखते हैं कि बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य की आवश्यकता है, जिसका अर्थ है कि मन में पूर्वाग्रह से मुक्त होने की क्षमता हो, यह मत पूछें कि “कैसे”, क्योंकि इस का अर्थ तो है कोई व्यवस्था, कोई पद्धति। बस पता लगायें कि क्या आपका मन पूर्वाग्रह से मुक्त हो सकता है? देखें कि उसमें क्या छिपा है। आप पूर्वाग्रही क्यों हैं? क्योंकि संस्कारों का कुछ अंश यह भी है कि आप पूर्वाग्रही रहें और फिर पूर्वाग्रह में बड़ी सुविधा, बड़ा सुख है। इसलिये सबसे पहले आप जागरूक हों; पृथ्वी के सौन्दर्य के प्रति जागरूक हों; वृक्षों के, रंग के, छायाओं के, प्रकाश की गहराई के प्रति जागरूक हों; लहराते वृक्षों के,</p>

<p>gradually move in, find out, be aware of yourself, be aware how you react in your relationships with your friends - all that brings intelligence. Is that enough for this morning? Then we will do something else.</p>	<p>पक्षियों को देखें; चारों ओर जो कुछ है उसके प्रति जागरूक हों; तब धीरे-धीरे अपने अंदर प्रवेश करें, पता लगायें, अपने प्रति जागरूक हों; उसके प्रति जागरूक हों कि अपने मित्रों के साथ अपने सम्बन्ध में आप कैसी प्रतिक्रिया करते हैं--इसी सबसे बुद्धि आती है। क्या आज प्रातः के लिये यह पर्याप्त नहीं है? तो अब हम कुछ और करेंगे।</p>
<p>First of all sit completely quiet, comfortably, sit very quietly, relax, I will show you. Now, look at the trees, at the hills, the shape of the hills, look at them, look at the quality of their colour, watch them. Do not listen to me. Watch and see those trees, the yellowing trees, the tamarind, and then look at the bougainvillea. Look not with your mind but with your eyes. After having looked at all the colours, the shape of the land, of the hills, the rocks, the shadow, then go from the outside to the inside and close your eyes, close your eyes completely. You have finished looking at the things outside, and now with your eyes closed you can look at what is happening inside. Watch what is happening inside you, do not think, but just watch, do not move your eyeballs, just keep them very, very quiet, because there is nothing to see now, you have seen all the things around you, now you are seeing what is happening inside your mind, and to see what is happening inside your mind, you have to be very quiet inside. And when you do this, do you know what happens to you? You become very sensitive, you become very alert to things outside and inside. Then you find out that the outside is the inside, then you find out that the observer is the observed.</p>	<p>सबसे पहले पूर्णतया शांति से, सुविधापूर्वक, बैठें; बिल्कुल शांति से, विश्राम से बैठें। मैं आपको दिखाऊंगा। अब, वृक्षों को, पहाड़ियों को, देखें, उनकी आकृति को देखें, उनके रंगोंको देखें, गौर करें। मुझे मत सुने। उन वृक्षों को देखें, पीले पड़ते हुये वृक्षों को, उस अम्लिका वृक्ष को देखें, और फिर उस बोगनबेलिया की ओर देखें। मन-बुद्धि से नहीं वरन् आंखों से देखें। उन तमाम रंगों को, धरती के, पहाड़ियों के, चट्टानों के आकार को, उनकी परछाई को देखने के बाद फिर बाहर से अंदर की ओर चलें और अपनी आंखे बंद कर ले, अपनी आंखों को पूर्णतया बंद कर लें। बाहर की वस्तुओं को देखने की यात्रा पूरी हो चुकी और अब बंद आंखों से अंदर जो हो रहा है उसे देखें। जो अंदर हो रहा है उसको देखें, सोचें नहीं, वरन् केवल अवलोकन करें; अपनी आंख की पुतलियों को घुमायें नहीं, बस उन्हें बिल्कुल, पूर्णतया शांत रखें क्योंकि अब देखने के लिये कुछ नहीं है; आपने अपने चारों ओर की वस्तुओं को देख लिया है। और अब आप देख रहे हैं कि आपके मन के अंदर क्या हो रहा है; और यह देखने के लिये कि आपके मन में क्या हो रहा है आपको भीतर से बड़ा शांत होना होगा। और जब आप यह करते हैं तो क्या आप जानते हैं कि आपको क्या होता है? आप बड़े संवेदनशील हो जाते हैं, बाहरी तथा भीतर की वस्तुओं के प्रति बड़े सतर्क हो जाते हैं; तब आपको ज्ञात होता है कि बाहर ही भीतर है, तब आपको पता लगता है कि दृष्टा ही दृश्य है।</p>
<p><b>Talk To Students</b></p>	
<p><b>Chapter 4 On Freedom And Order</b></p>	<p><b>4. स्वतन्त्रता एवं व्यवस्था</b></p>

<p>It is a lovely morning, isn't it? Cool, fresh, and there is dew on the grass and the birds are singing. I hope you enjoyed this morning, as much as I did, looking out of the window, at the cloudless blue sky, the clear shadows, and the sparkling air and all the birds, the trees, and the earth shouting with joy. I hope you listened.</p>	<p>आज का सबेरा कितना सुन्दर है, है नै? टंडक भरा और ताजा, और घास पर ओस बिछी है और पँछी गा रहे हैं। मुझे आशा है कि आपने भी इस का उतना ही आनन्द लिया होगा जितना मैंने लिया है, खिड़की के बाहर देखते हुये, उस स्वच्छ नीले आकाश को, साफ परछाइयों को, निर्मल वायु एवं तमाम पक्षियों एवं वृक्षों को। धरती ही मानों आनन्द से पुकार रही हो। मुझे आशा है आपने भी सुना होगा।</p>
<p>I would like, this morning, to talk about something that we all must understand. To understand something, one has to listen, as you would listen to those birds. If you would hear that clear call, the song of the bird, you must listen very closely, very attentively, you must follow each note, follow each movement of the sound, see how deeply it goes and how far it reaches. And if you know how to listen, you learn a great deal; to listen is more important than anything else in life. To know how to listen, you have to be very attentive. If your mind, if your thoughts, if your heart is thinking about other things, feeling other things, you cannot listen to the birds. To listen, you have to give your whole attention. When you are watching a bird and are looking at the feathers, the colours, the beak, the size and the lovely shape of the bird, then you are giving your heart, your mind and body, everything that you have, to watch it. And then you are really part of that bird. You really enjoy it. So, in the same way, this morning, please listen, not that you must agree or disagree with what we are talking about, but just listen.</p>	<p>आज की सुबह मैं किसी ऐसे विषय पर चर्चा करना चाहूंगा जिसे हम सभी को समझना चाहिये। किसी विषय को समझने के लिए हमें सुनना होता है जिस तरह पक्षियों को सुनते हैं। यदि आप उस स्पष्ट पुकारको, पक्षी के गीत को सुनें तो आपको बिलकुल निकट से, बड़े ध्यान से सुनना होगा, प्रत्येक स्वर का, ध्वनि की प्रत्येक गति का अनुसरण करना होगा, देखना होगा कि कितनी गहराई तक वह जाती है और कितनी दूर तक पहुंचती है। और यदि आप जानते हैं कि कैसे सुना जाता है तो आप बहुत-कुछ सीख लेते हैं; जीवन में किसी भी अन्य वस्तु की अपेक्षा सुनना अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह जानने के लिये कि कैसे सुना जाय, आपको बड़ा ध्यानपूर्ण होना पड़ता है यदि आपका मन, आपके विचार, आपका हृदय दूसरी वस्तुओं के विषय में सोच रहा है, दूसरी वस्तुओं के संग है, तो आप पक्षियों के गान को नहीं सुन सकते। सुनने के लिये सम्पूर्ण ध्यान देना पड़ता है। जब आप किसी पक्षी को देखते हैं, उसके पंखों को, रंगों को, उसकी चोंच को एवं उसके सुन्दर आकार-प्रकार को देख रहे हैं तो आप अपना हृदय, तन और मन, जो कुछ आपके पास है, उसमें लगा रहे होते हैं। और तब आप वास्तव में उस पक्षी का ही अंश हो जाते हैं। आप वास्तव में उसका आनन्द लेते हैं। तो ठीक उसी तरह, आज की सुबह कृपया सुनें; यह नहीं कि इस चर्चा से आप सहमत अथवा असहमत हों, आप केवल सुनें।</p>
<p>Have you ever sat on the banks of a river and watched the water go by? You cannot do anything about the water. There is the clear water, the dead leaves, the branches. You see a dead animal go by, and you are watching all that. You see the movement of the water, the</p>	<p>क्या कभी आपने किसी नदी किनारे बैठ कर बहते हुए जल को देखा है? आप वहाँ कुछ कर नहीं सकते। स्वच्छ जल हैं सूखी पत्तियाँ, कुछ टहनियाँ। और किसी मृत पशु को बहते हुये देखते हैं और आप उस सबका अवलोकन कर रहे हैं। आप जल की गति को, उसकी</p>

<p>clarity of the water, the swift current of the water and the fullness of the water. But you cannot do anything. You watch and you let the water flow by. So in the same way listen to what I want to talk about this morning.</p>	<p>स्वच्छता को, तेज धार और उसकी भरपूरता को देखते हैं। परंतु आप कुछ कर नहीं सकते। आप देखते हैं और जल को बहने देते हैं। इसी प्रकार जिस विषय की आज सबेरे मैं चर्चा करना चाहता हूँ, उसे सुनें।</p>
<p>Freedom does not exist without order. The two go together. If you cannot have order, you cannot have freedom. The two are inseparable. If you say: "I will do what I like. I will turn up for my meals when I like; I will come to the class when I like" - you create disorder. You have to take into consideration what other people want. To run things smoothly, you have to come on time. If I had come ten minutes late this morning I would have kept you waiting. So I have to have consideration. I have to think of others. I have to be polite, considerate, be concerned about other people. Out of that consideration, out of that thoughtfulness, out of that watchfulness, both outward and inward, comes order and with that order there comes freedom.</p>	<p>स्वतंत्रता का व्यवस्था के बिना संभव नहीं है। वे दोनों साथ-साथ चलती हैं। यदि आपमें व्यवस्था नहीं है तो आप स्वतंत्रता भी नहीं प्राप्त कर सकते। इन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। यदि आप कहते हैं, 'मैं जो चाहूंगा करूंगा, जब चाहूंगा भोजन करने जाऊंगा; जब चाहूंगा कक्षा में आऊंगा'--इस प्रकार आप अव्यवस्था उत्पन्न करते हैं। आपको इसका ध्यान रखना पड़ता है कि दूसरे लोग क्या चाहते हैं। कार्य सुविधा से होता चले इसके लिये आप को समय से आना पड़ता है। यदि मैं आज सबेरे दस मिनट देर से आया होता तो आप प्रतीक्षा में बैठे रहते। अतः मुझे ध्यान रखना ही चाहिए। मुझे दूसरों के बारे में भी सोचना चाहिए। मुझे विनम्र होना ही चाहिए, दूसरों की सुविधाओं एवं असुविधाओं का ध्यान रखना ही चाहिए। ध्यान के उसी भाव में से, विचारशीलता एवं सर्तकता से ही--बाह्य और आंतरिक दोनों--व्यवस्था का सृजन होता है और इस व्यवस्था से स्वतंत्रता उदित होती है।</p>
<p>You know, soldiers all over the world are drilled every day, they are told what to do, to walk in line. They obey orders implicitly without thinking. Do you know what that does to man? When you are told what to do, what to think, to obey, to follow, do you know what it does to you? Your mind becomes dull, it loses its initiative, its quickness. This external, outward imposition of discipline makes the mind stupid, it makes you conform, it makes you imitate. But if you discipline yourself by watching, listening, being considerate, being very thoughtful - out of that watchfulness, that listening, that consideration for others, comes order. Where there is order, there is always freedom. If you are shouting, talking, you cannot hear what others have to say. You can only hear clearly when you sit quietly, when you give your</p>	<p>आप जानते हैं सारे विश्व में प्रत्येक दिन सैनिकों को ड्रिल कराई जाती है, उन्हें बताया जाता है कि उन्हें क्या करना है, कैसे लाइन में चलना है। वे बस आदेशों का पालन करते हैं, बिना सोचे-समझे। क्या आप जानते हैं कि उसका मनुष्य पर क्या असर होता है? जब आपको बताया जाता है कि आप क्या करें, क्या सोचें, आज्ञा मानें करें दूसरों के अनुसार चलें, तो इसका आप पर क्या असर होता है? आपका मन मंद हो जाता है--सुस्त, उसकी तीव्रता, पहलकदमी की क्षमता नष्ट हो जाती है। अनुशासन का यह बाहरी दबाव मन को मूर्ख बना देता है, यह आपमें लकीर पीटने एवं नकल करने की आदत डालता है। परंतु यदि आप अवलोकन के द्वारा, सुन कर के, दूसरों के सुविधाओं का ध्यान करके, विचारशील हो कर अपने को अनुशासित करते हैं तो इस अवलोकन से, सुनने से, दूसरों की सुविधा का ध्यान रखने से, व्यवस्था आती है। जहां व्यवस्था होती है वहां</p>

attention.	स्वतंत्रता सदा रहती है। यदि आप चीख रहे हैं, बातों में लगे हैं, तो दूसरों को आप सुन ही नहीं सकते। आप स्पष्टता से केवल तभी सुन सकते हैं जब आप शांत बैठें, जब आप ध्यान दें।
<p>Nor can you have order, if you are not free to watch, if you are not free to listen, if you are not free to be considerate. This problem of freedom and order is one of the most difficult and urgent problems in life. It is a very complex problem. It needs to be thought over much more than mathematics, geography or history. If you are not really free, you can never blossom, you can never be good, there can be no beauty. If the bird is not free, it cannot fly. If the seed is not free to blossom, to push out of the earth, it cannot live. Everything must have freedom, including man. Human beings are frightened of freedom. They do not want freedom. Birds, rivers, trees, all demand freedom and man must demand it too, not in half measures, but completely. Freedom liberty, the independence to express what one thinks, to do what one wants to do, is one of the most important things in life. To be really free from anger, jealousy, brutality, cruelty; to be really free within oneself, is one of the most difficult and dangerous things.</p>	<p>और यदि आप देखने के लिये स्वतंत्र नहीं है, सुनने के लिये स्वतंत्र नहीं है, दूसरों की सुविधा का ध्यान रखने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं, तो आप व्यवस्थित नहीं हो सकते। स्वतंत्रता और व्यवस्था की यह समस्या जीवन की सर्वाधिक कठिन और प्रमुख समस्याओं में से एक है। यह एक बड़ी जटिल समस्या है। इस पर गणित, भूगोल अथवा इतिहास से भी ज़्यादा विचार करने की आवश्यकता है। यदि आप सचमुच ही स्वतंत्र नहीं है तो आप कभी खिल नहीं सकते, अच्छे आदमी नहीं हो सकते, सौंदर्य आप में कभी नहीं हो सकता। यदि पक्षी स्वतंत्र नहीं है तो वह उड़ नहीं सकता। यदि बीज खिलने के लिये, पृथ्वी से बाहर फूट निकलने के लिये स्वतंत्र नहीं है, तो वह जीवित नहीं रह सकता। प्रत्येक वस्तु के लिये स्वतंत्रता आवश्यक हैं मनुष्य के लिए। मनुष्य स्वतंत्रता से भयभीत रहते हैं। वे स्वतंत्रता चाहते नहीं। पक्षी, नदियां, वृक्ष सभी तो स्वतंत्रता की मांग करते हैं और मनुष्य को भी करनी चाहिये, आधी-अधूरी नहीं वरन् पूरी। स्वतंत्रता, आजादी--व्यक्ति जो सोचता है उसको अभिव्यक्त करने की, जो वह करना चाहता है उसे करने की--जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तुओं में से एक है। क्रोध, ईर्ष्या, पाशविकता, क्रूरता, से वास्तव में स्वतंत्र होना; अपने स्वयं में सचमुच में स्वतंत्र होना, सर्वाधिक कठिन और खतरनाक काम है।</p>
<p>You cannot have freedom merely for the asking. You cannot say, "I will be free to do what I like." Because there are other people also wanting to be free, also wanting to express what they feel, also wanting to do what they wish. Everybody wants to be free, and yet they want to express themselves - their anger, their brutality, their ambition their competitiveness and so on. So there is always conflict. I want to do something and you want to do something and so we fight. Freedom is not doing what one wants,</p>	<p>केवल मांगने से स्वतंत्रता नहीं आ जाती। आप यह नहीं कह सकते, "मैं जो चाहूंगा बस वही करूंगा।" क्योंकि दूसरे भी लोग हैं जो स्वतंत्र होना चाहते हैं, जो अपनी बात को कहना चाहते हैं और अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं। हर कोई स्वतंत्र होना चाहता है और अपने को व्यक्त करना चाहता है--अपने क्रोध को, अपनी पाशविकता को, अपनी महत्वाकांक्षा को, अपनी मुकाबले बाजी को आदि आदि। इसलिये सदा कलह बना रहता है। मैं कुछ करना चाहता हूँ और आप भी कुछ करना चाहते हैं और इसलिये हम झगड़ते हैं। स्वतंत्रता</p>

<p>because man cannot live by himself. Even the monk, even the sannyasi is not free to do what he wants, because he has to struggle for what he wants, to fight with himself, to argue within himself. And it requires enormous intelligence, sensitivity, understanding to be free. And yet it is absolutely necessary that every human being, whatever his culture, be free. So you see, freedom cannot exist without order.</p>	<p>का अर्थ जो मन में आए वही करना नहीं है, क्योंकि मनुष्य अकेला तो जी नहीं सकता। एक भिक्षु भी, यहां तक कि संन्यासी भी जो चाहे करने के लिये स्वतंत्र नहीं है, क्योंकि उसे भी जो वो चाहता है उसके लिए संघर्ष करना पड़ता है, अपने आप से लड़ना पड़ता है, स्वयं अपने अंदर तर्क-वितर्क करना पड़ता है। स्वतंत्र होने के लिये अत्यधिक बुद्धिमत्ता, संवेदन शीलता, समझ की आवश्यकता होती है। और फिर भी यह अत्यंत आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य, चाहे वह किसी भी संस्कृति का क्यों न हो, स्वतंत्र हो। तो आपने देखा कि स्वतंत्रता बिना व्यवस्था के नहीं हो सकती।</p>
<p><b>Student:</b> Do you mean that to be free there should be no discipline?</p>	<p><b>छात्र:</b> क्या आपका अर्थ यह है कि स्वतंत्र होने के लिये अनुशासन की आवश्यकता नहीं है?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> I carefully explained that you cannot have freedom without order and order is discipline. I do not like to use that word "discipline" because it is laden with all kinds of meaning. Discipline means conformity, imitation, obedience; it means to do what you are told; doesn't it? But, if you want to be free</p> <p>- and human beings must be completely free, otherwise they cannot flower, otherwise they cannot be real human beings - you have to find out for yourself what it is to be orderly, what it is to be punctual, kind, generous, unafraid. The discovery of all that is discipline. This brings about order. To find out you have to examine and to examine you must be free. If you are considerate, if you are watching, if you are listening, then, because you are free, you will be punctual, you will come to the class regularly, you will study, you will be so alive that you will want to do things rightly.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> मैंने बड़ी सावधानी से स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता बिना व्यवस्था के नहीं आ सकती और व्यवस्था ही अनुशासन है। मैं "अनुशासन" शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहता क्योंकि वह विभिन्न प्रकार के अर्थों से लदा हुआ है। अनुशासन का अर्थ अनुकूलन, नकल, आज्ञापालन है; यानी कि जो तुम्हें बताया जाय वह करो। क्या ऐसा नहीं है? परंतु यदि आप स्वतंत्र होना चाहते हैं--और प्रत्येक मनुष्य को पूर्णतया स्वतंत्र होना ही चाहिये अन्यथा वे खिल नहीं सकते, वास्तविक मनुष्य नहीं बन सकते हैं--तो आपको स्वयं अपने लिये यह पता लगाना होगा कि व्यवस्थित होने का क्या तात्पर्य है; समय पर आने-जाने का, दयालुता का, उदारता का, निर्भयता का क्या तात्पर्य है। इन सब की खोज ही अनुशासन है। इसी से व्यवस्था आती है। इसका पता लगाने के लिये आपको खोजना पड़ता है और उस के लिए आपको स्वतंत्र होना चाहिये। यदि आप दूसरों का ध्यान रखते हैं, यदि आप देख-सुन रहे हैं तो फिर चूंकि आप स्वतंत्र होंगे, इसीलिए आप समय का पालन करेंगे, आप नियमित रूप से कक्षा में आयेंगे, अध्ययन करेंगे, आप इतने सजीव होंगे कि हर काम को सही ढंग से करना चाहेंगे।</p>
<p><b>Student:</b> You say that freedom is very</p>	<p><b>छात्र:</b> आप कहते हैं कि स्वतंत्रता मनुष्य के लिये बड़ी</p>

dangerous to man. Why is it so?	खतरनाक है, ऐसा क्यों है?
<b>Krishnamurti:</b> Why is freedom dangerous? You know what society is?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> स्वतंत्रता खतरनाक क्यों है? क्या आप जानते हैं कि समाज क्या है?
<b>Student:</b> It is a big group of people which tells you what to do and what not to do.	<b>छात्र:</b> समाज व्यक्तियों का एक बड़ा समुदाय है जो हमें बताता है कि क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये।
<b>Krishnamurti:</b> It is a big group of people which tells you what to do and what not to do. It is also the culture, the customs, the habits of a certain community; the social, moral, ethical, religious structure in which man lives, that is generally called society. Now, if each individual in that society did what he liked, he would be a danger to that society. If you did what you liked here in the school, what would happen? You would be a danger to the rest of the school. Wouldn't you? So people do not gently want others to be free. A man who is really free, not in ideas, but inwardly free from greed, ambition, envy, cruelty, is considered a danger to people, because he is entirely different from the ordinary man. So, society either worships him or kills him or is indifferent to him. it?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> समाज व्यक्तियों का एक बड़ा समुदाय है जो हमें बताता है कि क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये। इसमें रीति-रिवाज और संस्कृति भी है, किसी विशेष समुदाय की आदतें भी हैं; वह सामाजिक, नैतिक, धार्मिक संरचना जिसमें मनुष्य रहता है, उसे भी सामान्यतः समाज कहा जाता है। तो, यदि उस समाज में प्रत्येक व्यक्ति वही करे जो वह चाहता है तो वह उस समाज के लिए खतरनाक होगा। यदि इस स्कूल में आप जो चाहें वही करें, तो क्या होगा? आप शेष स्कूलके लिये खतरा हो जायेंगे, क्या नहीं होंगे? इसीलिये लोग प्रायः यह नहीं चाहते कि दूसरे स्वतंत्र हों, एक ऐसा व्यक्ति जो वास्तव में स्वतंत्र है, केवल विचारों में नहीं, वरन अपने अंतर में--लालच, महत्त्वाकांक्षा, द्वेष, क्रूरता आदि से भी--ऐसा व्यक्ति लोगों के लिये खतरनाक माना जाता है, क्योंकि आम-आदमी से वह पूर्णतया भिन्न है। इसलिये समाज या तो इसकी उपासना करता है या उसकी हत्या कर देता है, या फिर उदासीन रहता है।
<b>Student:</b> You said that we must have freedom and order but how are we to get	<b>छात्र:</b> आपने कहा है कि हममें स्वतंत्रता एवं व्यवस्था होनी चाहिये। परंतु उसे हम कैसे प्राप्त करें?
<b>Krishnamurti:</b> First of all, you cannot depend on others; you cannot expect somebody to give you freedom and order whether it is your father, your mother, your husband, your teacher. You have to bring it about in yourself. This is the first	<b>कृष्णमूर्ति :</b> पहली बात तो यह कि आप दूसरों पर आश्रित नहीं रह सकते; आप किसी दूसरे से यह आशा नहीं कर सकते कि वह आपको स्वतंत्रता और व्यवस्था प्रदान करेगा--चाहे वे आपके पिता हों, माता हों, पति

<p>thing to realize, that you cannot ask anything from another, except food, clothes and shelter. You cannot possibly ask, or look to anyone, your gurus or your gods. Nobody can give you freedom and order. So, you have to find out how to bring about order in yourself. That is, you have to watch and find out for yourself what it means to bring about virtue in yourself. Do you know what virtue is - to be moral, to be good? Virtue is order. So, you have to find out in yourself how to be good, how to be kind, how to be considerate. And out of that consideration, out of that watching, you bring about order and therefore freedom. You depend on others to tell you what you should do, that you should not look out of the window, that you should be punctual, that you should be kind. But if you were to say: "I will look out of the window when I want to look but when I study I am going to look at the book," you bring order within yourself without being told by others.</p>	<p>हों अथवा आपके अध्यापक। उसे आपको अपने अंदर स्वयं ही उत्पन्न करना पड़ेगा। हमें पहले यह समझना चाहिये कि हम दूसरों से भोजन, कपड़ा और निवास के अतिरिक्त कोई दूसरी चीज की उम्मीद नहीं रख सकते। किसी दूसरे से मांग नहीं सकते, किसी के हाथों की ओर नहीं देख सकते, चाहे वे आपके गुरु हों अथवा आपके देवता। कोई आपको स्वतंत्रता और व्यवस्था नहीं दे सकता। इसलिए आपको यह पता लगाना है कि अपने में व्यवस्था कैसे लाई जाय। अर्थात् आपको देखना होगा और स्वयं ही पता लगाना है कि अपने अंदर सदाचार लाने का क्या अर्थ है? क्या आप जानते हैं कि सदाचार क्या है--नैतिक होना, अच्छा होना? सदाचार ही व्यवस्था है, इसलिये आपको स्वयं पता लगाना है कि कैसे अच्छा हुआ जाये, दयालु कैसे हुआ जाये, कैसे विचारशील हुआ जाए। और इसी समझदारी से, गौर करने से आप व्यवस्था ला सकते हैं, और उसीसे स्वतंत्रता आती है। आप दूसरों पर निर्भर रहते हैं कि कोई बताये कि आपको क्या करना चाहिये, खिड़की के बाहर नहीं झांकना चाहिये, समय का पाबंद होना चाहिये, दयालु होना चाहिये। परंतु यदि आप यह कहते कि, जब मुझे खिड़की के बाहर देखना होगा तभी देखूंगा परंतु पढ़ते वक्त तो मैं पुस्तक पर ध्यान दूंगा, तो आप बिना किसी के बताये ही अपने अंदर व्यवस्था उत्पन्न करते हैं।</p>
<p><b>Student:</b> What does one gain by being free?</p>	<p><b>छात्र:</b> स्वतंत्रता से किसी को क्या मिलता है?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Nothing. When you talk about what one gains, you are really thinking in terms of merchandise. Are you not? I will do this and in return for it, please give me something. I am kind to you because it is profitable for me. But that is not kindness. So as long as we are thinking in terms of gaining something, there is no freedom. If you say, "If I get freedom, I will be able to do this and that," then it is not freedom. So do not think in terms of utility. As long as we are thinking in terms of using, there is no question of freedom at all. Freedom can only exist when there is no motive. You do not love somebody because he gives you food, or clothes or shelter. Then it is not love.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> कुछ नहीं। जब आप कुछ मिलने की बात करते हैं तो आप सचमुच किसी व्यापारी की तरह सोचते हैं। क्या ऐसा नहीं है? मैं इसे करूंगा और बदले में आप मुझे कुछ तो देंगे ही। मैं आपके प्रति दयालु हूं क्योंकि वह मेरे लिये लाभदायक है। परंतु यह तो दयालुता नहीं हुई। इसलिये जब तक हम किसी लाभ की भाषा में सोचते हैं तब तक स्वतंत्रता नहीं है। यदि आप कहते हैं, "स्वतंत्रता मिलने पर मैं यह कर सकूंगा, वह कर सकूंगा" तो यह स्वतंत्रता नहीं है। इसलिये उपयोगिता की भाषा में मत सोचिये। जब तक हम उपयोगिता की भाषा में सोचते हैं, तब तक स्वतंत्रता का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। स्वतंत्रता केवल तभी होती है जब कोई प्रयोजन नहीं होता। आप किसी से इसलिये प्रेम नहीं करते कि वह आपको भोजन अथवा कपड़ा अथवा मकान देता है। फिर तो वह प्रेम नहीं है।</p>

<p>Do you ever walk by yourself Or do you always go with others? If you go out by yourself sometimes, not too far away because you are very young, then you will get to know yourself, what you think, what you feel, what is virtue, what you want to be. Find out. And you cannot find out about yourself if you are always talking, going about with your friends, with half a dozen people. Sit under a tree quietly by yourself, not with a book. Just look at the stars, the clear sky, the birds, the shape of the leaves. Watch the shadow. Watch the bird across the sky. By being with yourself, sitting quietly under a tree, you begin to understand the workings of your own mind and that is as important as going to class.</p>	<p>क्या कभी आप अकेले टहलते हैं या सदा दूसरों के साथ ही घूमते हैं? यदि आप कभी-कभार अकेले भी जायें, बहुत दूर नहीं क्योंकि आप बहुत छोटे हैं, तब आप अपने आप को जान सकेंगे, कि आप क्या सोचते हैं, क्या महसूस करते हैं, सदाचार क्या है, आप क्या होना चाहते हैं। पता लगाइये। यदि आप हमेशा बातें करते रहते हैं, दोस्तों के साथ ही घूमते रहते हैं, आधे दर्जन लोगों में घिरे हुए तो आप अपने बारे में नहीं जान सकेंगे। किसी वृक्ष के नीचे बैठें चुपचाप, अकेले, पुस्तक ले कर नहीं। बस तारों को देखें, स्वच्छ आकाश, पंछी, पत्तियों के आकार-प्रकार को देखें। परछाईं को देखें। आकाश में उड़ते पक्षियों को देखें। अपने साथ होने से, किसी वृक्ष के नीचे शांति से बैठने पर आप स्वयं अपने मन की कार्य-विधि को समझने लगेंगे। और यह उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कक्षा में जाना।</p>
<p><b>Talk To Students</b></p> <p><b>Chapter 5 On Sensitivity</b></p>	<p><b>5. संवेदनशीलता</b></p>
<p>Some of the teachers of this school were discussing with me, the other day, how important it is to be sensitive, how necessary it is to have a sensitive body and a sensitive mind. A human being who is aware of his environment, as well as aware of every movement of thought and feeling, who is a harmonious whole, is sensitive. How does that sensitivity come about? How can there be a complete development of the body, of the emotions, of the capacity to think deeply and widely, so that the whole being becomes astonishingly alive to everything about it, to every challenge, to every influence? And is that possible, in a world like this, a world where technological knowledge is all important, where</p>	<p>इस स्कूल के कुछ अध्यापक पिछले दिनों मेरे साथ विचार-विमर्श कर रहे थे कि संवेदनशील होना कितना महत्त्वपूर्ण है, कि संवेदनशील तन और संवेदनशील मन का होना कितना आवश्यक है। जो व्यक्ति अपने वातावरण के प्रति जागरूक है और उसके साथ-साथ अपने विचार और अनुभूति की प्रत्येक गति के प्रति भी जागरूक है, जो व्यक्ति एक समरस इकाई है, वही संवेदनशील है। ऐसी संवेदनशीलता कैसे आती है? शरीर का, भावनाओं का, तथा गहराई से एवं व्यापक रूप से विचार करने की क्षमता का एक ऐसा पूर्ण विकास कैसे हो कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही आश्चर्यजनक रूप से सजीव हो जाय, प्रत्येक वस्तु के प्रति, हर चुनौती, हर प्रभाव के प्रति? और क्या इस तरह के विश्व में यह संभव है जहां टेक्निकल ज्ञान ही सब कुछ हो गया है, जहां धन कमाने, इंजीनियर या इलेक्ट्रॉनिक माहिर होने को जहाँ</p>

<p>making money, being an engineer or an electronic expert is assuming such importance? Is it possible to be sensitive? The politician, the electronics expert become marvellous human machines, but lead very narrow lives. They are sorrowful people having no depth in them. All they know is their little world, the world determined by their own field.</p>	<p>इतना अधिक महत्त्व दिया जा रहा है? क्या संवेदनशील होना संभव है? राजनीतिज्ञ, इलेक्ट्रॉनिक विशेषज्ञ, अद्भुत मानव मशीनें बन गए हैं, परंतु एकदम सिमटा हुआ जीवन जीते हैं। वे दुखी लोग हैं, उनमें कोई गहराई नहीं। जो वे जानते हैं वही बस उनका छोटा सा संसार है--संसार जो उनके अपने क्षेत्र तक ही सिमटा है।</p>
<p>A life that is held in technological knowledge is a very narrow, limited life. It is bound to breed a great deal of sorrow and misery. But can one have technological knowledge, be able to do things, make a little money and still live in the world with intensity, with intensity, with clarity, with vision? That is the real question. Life is not merely going to the office day after day. Life is extraordinarily vital, important, and for that you must be sensitive, you must have the sensitivity that appreciates beauty. You know, there is something extraordinary about beauty. Beauty is never personal, though we make it personal. We put flowers in our hair, have nice saris, wear fine shirts and trousers, look very smart and try to be as beautiful as we can; that is a very limited beauty. I do not say that you should not wear nice clothes, but merely that - that is not appreciation of beauty. The appreciation of beauty is to see a tree, to see a painting, to see a statue, to see the clouds, the skies, the birds on the wing, to see the morning star, and the sunset behind these hills. To see such immense beauty we must cut through our little personal lives.</p>	<p>टेक्नोलाजिकल ज्ञान की सीमाओं में बंधा जीवन, अत्यंत संकुचित और सीमित जीवन है। उससे तो गहन दुख और कष्ट ही पैदा होंगे। परंतु क्या कोई तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर के, कुशलता प्राप्त करके, कुछ धन कमाने के बाद भी, इस संसार में गहराई से, स्पष्टता से, व्यापक दृष्टि रखते हुए जीवित रह सकता है? और यही वास्तविक प्रश्न है। प्रतिदिन आफिस जाना मात्र ही जीवन नहीं है। जीवन अद्भुत रूप से प्राणभूत, जीवंत है, महत्त्वपूर्ण है और उसके लिये आपमें संवेदनशीलता होनी चाहिये जो सुंदरता को समझ सके। आप जानते हैं सुंदरता में कुछ अदभुत होता है। वह कभी व्यक्तिगत नहीं होती, हालांकि हम उसे व्यक्तिगत बना लेते हैं। हम अपने केशों में फूल सजा लेते हैं, सुंदर साड़ियां या सुंदर-सुंदर कमीज़-पैन्ट पहनते हैं, बड़े चुस्त और सुंदर दिखने का प्रयत्न करते हैं, यह तो बड़ा सीमित सौंदर्य है। मैं यह नहीं कहता कि आप अच्छे कपड़े न पहने, पर केवल यही करना तो सौंदर्य को समझना नहीं है। सौंदर्य को समझने का अर्थ है किसी वृक्ष को देखना, किसी पेन्टिंग को, किसी मूर्ति को, मेघों एवं आकाश को देखना, उड़ते हुए पक्षियों को, सबेरे के तारे को और इन पहाड़ियों के पीछे डूबते हुए सूर्य को देखना। ऐसे व्यापक सौंदर्य को देखने के लिये अपने छोटे से व्यक्तिगत जीवन से ऊपर उठना आवश्यक है।</p>
<p>You may have good taste. Do you know what good taste means? To know how to combine colours, how not to wear colours that jar, not to</p>	<p>आपकी अच्छी रुचि हो सकती है। जानते हैं अच्छी रुचि का क्या अर्थ होता है? कैसे रंगों का मिलाव किया जाय,</p>

<p>say something that is cruel about anybody, to feel kindly, to see the beauty of a house, to have good pictures in your room, to have a room with right proportions. All that is good taste, which can be cultivated. But good taste is not the appreciation of beauty. Beauty is never personal. When beauty is made personal it becomes self- centred. Self concern is the source of sorrow. You know, most people are not happy in the world. They have money, they have position and power. But remove the money, the position, the power and you see underneath an extreme shallowness of head. The source of their shallowness, misery, conflict and extreme anguish is a feeling of guilt and fear.</p>	<p>कैसे उन रंगों से बचें जो बुरे लगते हैं, ऐसा कुछ न कहना जो दूसरों को बुरा लगे, दया-भाव महसूस करना, किसी मकान के सौंदर्य को देख पाना, अपने कमरे के लिये अच्छी तस्वीरों का चयन करना, उचित अनुपात का कमरा बना पाना। यह सब अच्छी रुचि है, जिसका संवर्धन किया जा सकता है। परंतु अच्छी रुचि का यह अर्थ नहीं है कि आप सौंदर्य को समझते हैं। सौंदर्य कभी व्यक्तिगत नहीं होता। जब सौंदर्य को व्यक्तिगत बना लिया जाता है तो वह स्व-केन्द्रित हो जाता है। 'स्व' से इतना लगाव दुख का स्रोत है। जानते हैं विश्व में अधिकांश लोग सुखी नहीं हैं। उनके पास धन है, पद है, शक्ति है, पर इसके पीछे आपको एक अत्यंत छिछला हृदय दिखाई देगा। उनके छिछलेपन का, दुख, द्वंद और अत्यधिक पीड़ा का स्रोत अपराध और भय का एहसास ही है।</p>
<p>To really appreciate beauty is to see a mountain, to see the lovely trees without the "you" being there; to enjoy them, to look at them although they may belong to another; to see the flow of a river and move with it from beginning to end; to be lost in the beauty, in the vitality, in the rapidity of the river. But you cannot do all that if you are merely concerned with power, with money, with a career. That is only a part of life and to be concerned only with a part of life is to be insensitive and, therefore, to lead a life of shallowness and misery. A petty life always produces misery and confusion not only for itself but for others. I am not moralizing, I am just stating the facts of existence.</p>	<p>सौंदर्य के वास्तविक बोध का अर्थ है किसी पर्वत, किसी वृक्ष को देखना, बिना 'अपने-आप' को बीच में लाए; उनका आनंद लेना उनको देखना भले ही वे किसी दूसरे के ही क्यों न हों; किसी सरिता के बहाव को देखना और उसके साथ आरम्भ से अंत तक चलना; सरिता के सौंदर्य में, उसकी सजीवता में, गतिशीलता में खो जाना। परंतु यदि आप केवल शक्ति, धन एवं व्यवसाय की चिन्ता में लगे हैं तो आप यह सब नहीं कर सकते। वह सब जीवन का एक अंश मात्र है और जीवन के एक अंश मात्र से लगाव रखना संवेदना का अभाव है जो एक छिछले और कष्टप्रद जीवन की तरफ ले जाता है। एक क्षुद्र जीवन जो हमेशा दुख और भ्रांति उत्पन्न करता है न केवल अपने लिये ही वरन दूसरों के लिये भी। मैं उपदेश नहीं दे रहा हूं, केवल अस्तित्व के तथ्यों को बता रहा हूं।</p>
<p>The function of your teachers is to educate not only the partial mind but the totality of the mind; to educate you so that you do not get caught in the little whirlpool of existence but live in the whole river of life. This is the whole function of education. The right kind of education cultivates your whole being, the totality of your mind. It gives your mind and heart a depth, an</p>	<p>आपके अध्यापकों का कार्य आपके आंशिक मन को ही शिक्षित करना नहीं वरन मन का उसकी समग्रता में शिक्षित करना है; आपको इस प्रकार से शिक्षित करना है कि आप अस्तित्व के छोटे से भंवर में ही न फंस कर रह जाये, वरन जीवन की भरी-पूरी सरिता में जियें। यही शिक्षा का सम्पूर्ण कार्य है। उचित प्रकार की शिक्षा पूरे व्यक्तित्व को, मन की समग्रता को खिलाती है। वह आपके मन और हृदय को एक गहराई प्रदान करती है;</p>

understanding of beauty.	सौंदर्य का एक बोध देती है।
Probably, the girls among you will grow up and get married and the boys will have careers and that will be the end. You know, the moment you get married - I am not saying you should not get married - you have your husband, children, and responsibilities begin to crowd in like crows upon a tree. The husband, the house, your children, become a habit and you become caught in that habit. All through your life, till you die, you will be working, working in the house or going to the office, every day	सम्भवतः आपमें से जो बालिकाएं हैं वे बड़ी होंगी, और विवाह कर लेंगी और बालक किसी व्यवसाय को अपनायेंगे और यही अंत होगा। आप जानती हैं कि जब विवाह करेंगी--मैं यह नहीं कहता कि आपको विवाह नहीं करना चाहिए--आपके पति और बच्चे होंगे, और जिम्मेदारियां उसी तरह घिर आयेंगी जैसे किसी वृक्ष पर कौवे। पति, मकान, आपके बच्चे, एक आदत बन जाते हैं और आप उस आदत में फंस जाती हैं। सारा जीवन, जब तक कि मृत्यु नहीं हो जाती, आप काम करती रहेंगी, काम चाहे दफ्तर में हो या घर में, दिन प्रतिदिन।
I wondered - the other morning when I saw you all having a good time - what is going to happen to you all? Will you live a life with a fire burning in you or will you become for the rest of your life a businessman or a housewife? What are you going to do? Should you not be educated to cut through respectability, to burst through all conformity? Probably I am saying something dangerous, but it does not matter. Perhaps you will give an ear and perhaps this will sink somewhere into your consciousness and perhaps in a moment when you are about to make a decision, this may alter the course of your life.	उस दिन सबेरे जब मैंने आप सब को आनन्द में मग्न देखा तो मेरे मन में विचार आया कि आप सबका क्या होने वाला है? क्या आप एक ऐसा जीवन जिंएंगे जिसमें आपके उत्साह की ज्वाला आपके अंदर जलती रहे अथवा शेष जीवन में आप एक व्यापारी अथवा गृहिणी बन कर रह जायेंगी? आप क्या करने जा रहे हैं? क्या आपको ऐसे शिक्षित नहीं किया जाना चाहिये कि आप मान-सम्मान से ऊपर उठ सकें, नकल और लीक के कुचक्र को तोड़ देने के लिये? सम्भवतः मैं कुछ खतरनाक बात कर रहा हूं; परंतु उससे क्या होता है। शायद आप इसे सुनें, और शायद आपकी चेतना में यह कहीं पड़ी रहे, और शायद जिस क्षण आप निर्णय लेने वाले हों तो यह आपके जीवन की दिशा को बदल दे।
<b>Student:</b> How is one to be sensitive?	<b>छात्र :</b> कोई कैसे संवेदनशील हो?
<b>Krishnamurti:</b> I do not know if you noticed the other evening, it was drizzling. There was a sharp shower. There were dark, heavy, rain-laden clouds. There were also clouds that were full of light, white, with a rose-coloured light	<b>कृष्णमूर्ति :</b> पता नहीं पिछली शाम जब फुहार पड़ रही थी, आपने उसे देखा या नहीं। तेज बौछार पड़ी। बूंदों से लदे घने काले मेघ आये। ऐसे भी बादल थे जो सफेद प्रकाश से भरे थे, जिनके अंदर गुलाबी रंग का प्रकाश था और ऐसे भी बादल थे जो पंख की भांति उड़ रहे

<p>inside them. And there were clouds that were almost like feathers going by. It was a marvellous sight and there was great beauty. If you do not see and feel all these things when you are young, when you are still curious, when you are still indecisive, when you are still looking, searching, asking; if you do not feel now, then you never will. As you grow older life encloses you, life becomes hard. You hardly look at the hills, a beautiful face or a smile. Without feeling affection, kindness, tenderness, life becomes very dreary ugly, brutal.</p>	<p>थे। वह एक अद्भुत दृश्य था और अपार सौंदर्य था। यदि आप अभी जबकि आप छोटे हैं, जिज्ञासु हैं, जब आपने अभी कोई निर्णय नहीं लिया है, जबकि आप अभी देख रहे हैं, खोज रहे हैं, पूछ रहे हैं; यदि आप अब नहीं देखेंगे, अभी महसूस नहीं करेंगे, तो फिर कभी नहीं करेंगे। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं, जीवन आपको घेर लेता है, वह कठिन होता जाता है। आप मुश्किल से ही पहाड़ियों को, एक सुन्दर चेहरे अथवा मुस्कुराहट को देख पाते हैं। प्रेम, दयालुता, विनम्रता की अनुभूति के अभाव में जीवन बड़ा रूखा, कुरूप, पाशविक हो जाता है।</p>
<p>And as you grow older, you fill your lives with politics, with concern over your jobs, over your families. You become afraid and gradually lose that extraordinary quality of looking at the sunset, at clouds, at the stars of an evening. As you grow older, the intellect begins to create havoc with your lives. I do not mean that you must not have a clear, reasoning intellect, but the predominance of it makes you dull, makes you lose the finer things of life.</p>	<p>और जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं अपने जीवन को आप राजनीति से, अपने काम-धंधे, अपने परिवार की चिन्ता से भर लेते हैं। आप भयभीत रहते हैं और धीरे-धीरे डूबते हुए सूर्य को, बादलों को और रात्रि में तारों को देखने की अद्भुत क्षमता को खो देते हैं। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं आपकी तर्क-बुद्धि आपके जीवन का विनाश करना आरम्भ कर देती है। मैं यह नहीं कहता कि आपके पास एक स्पष्ट तर्क-बुद्धि नहीं होनी चाहिये परन्तु उसकी प्रमुखता आपको मंद बना देती है, उससे आप जीवन की बेहतरीन चीजों को, उसकी नज़ाकत को खो देते हैं।</p>
<p>You must feel very strongly about everything, not just one or two things, but about everything. If you feel very strongly, then little things will not fill your life. Politics, jobs, careers are all little things. If you feel strongly, if you feel vitally, vigorously, you will live in a state of deep silence. Your mind will be very clear, simple, strong. As men grow older they lose this quality of feeling, this sympathy, this tenderness for others. Having lost it they begin to invent religions. They go to temples, take drinks, drugs, to awaken this spontaneity. They become religious. But religion in the world is put together by man. All temples, churches, dogmas, beliefs are invented by man. Man is afraid</p>	<p>आपको किन्हीं एक या दो वस्तुओं के प्रति नहीं वरन प्रत्येक वस्तु के प्रति बड़ी तीव्रता से महसूस करना चाहिये। यदि आप बड़ी तीव्रता से महसूस करते हैं तो क्षुद्र वस्तुएं आपके जीवन में स्थान नहीं ग्रहण करेंगी। राजनीति, नौकरियां और व्यवसाय सब छोटी बातें हैं, अगर आप गहराई से, शिद्दत से, भरपूरता से महसूस करते हैं, तो आप एक गंभीर मौन की अवस्था में जियेंगे। आपका मन अत्यंत स्पष्ट, सरल और शक्तिशाली रहेगा। जैसे-जैसे व्यक्ति बड़े होते हैं वे महसूस करने के अपने गुण को, सहानुभूति को, दूसरों के प्रति उदारता को खो देते हैं। इसको खोने के बाद वे धर्मों का आविष्कार करना आरम्भ करते हैं। वे मंदिरों में जाते हैं, शराब पीते हैं, दवाएं खाते हैं, इस सहजता को जगाए रखने के लिए, वे धार्मिक हो जाते हैं, परंतु</p>

<p>because he is lost without a deep sense of beauty, a deep sense of affection. And, having lost this, superficial ceremonies, going to temples, repeating mantras, rituals become very important. In reality, they have no importance at all. Religion born of fear becomes ugly superstition.</p>	<p>विश्व में धर्म तो मनुष्य द्वारा बनाया गया है। सभी मंदिरों का, चर्चों का, रूढ़ियों का, विश्वासों का आविष्कार तो मनुष्य द्वारा किया गया है। मनुष्य डरा हुआ है क्योंकि उसने सौंदर्य की गहन अनुभूति को, प्रेम की गहन अनुभूति को खो दिया है। और इस एहसास को खो देने से औपचारिक कर्मकाण्ड, अर्थात् मंदिरों में जाना, मन्त्रों का उच्चारण आदि बड़े महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। वास्तव में इन सबका कोई महत्त्व नहीं है। वह धर्म जो भय से उत्पन्न होता है, एक भद्दा अंधविश्वास हो जाता है।</p>
<p>So, one has to understand fear. You know, one is afraid: afraid of one's parents, afraid of not passing examinations, afraid of one's teachers, afraid of the dog, afraid of the snake. You have to understand fear and be free of fear. When you are free of fear there is the strong feeling of being good, of thinking very clearly, of looking at stars, of looking at clouds, of looking at faces with a smile. And when there is no fear, you can go much further. Then you can find out for yourself that for which man has searched generation upon generation.</p>	<p>इसलिए हमें भय को समझना है। जानते हैं आदमी भयभीत है, माता-पिता से, परीक्षा में फेल होने से, अध्यापकों से, कुत्ते से, सांप आदि से। आपको भय को समझना है और उससे मुक्त होना है। जब आप भय से मुक्त होते हैं तब आप को शुभ होने का एक तीव्र एहसास होता है, स्पष्टता से सोच पाने का, तारों को, मेघों को, मुस्कुराते चेहरों को देख पाने का एहसास। जब भय नहीं होता, आप बहुत गहराई तक जा सकते हैं। तब आप स्वयं उसका पता लगा सकते हैं जिसकी खोज में मनुष्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी लगा रहा है।</p>
<p>In caves in the south of France and in northern Africa there are 25,000 year old paintings of animals fighting men, of deer, of cattle. They are extraordinary paintings. They show man's endless search, his battle with life and his search for the extraordinary thing called God. But he never finds that extraordinary thing. You can only come upon it darkly, unknowingly, when there is no fear of any kind. The moment there is no fear you have very strong feelings. The stronger you feel, the less you are concerned about small things. It is fear that drives away all feeling of beauty, of the quality of great silence. As you study mathematics, so you have to study fear. You must know fear and not escape from it so that you can look at fear. It is like going for a walk and suddenly coming upon a snake,</p>	<p>दक्षिणी फ्रांस और उत्तरी अफ्रीका की गुफाओं में पच्चीस हजार वर्ष पुराने चित्र हैं जिनमें मनुष्य को पशुओं से लड़ते हुए दिखाया गया है, हिरनों से, चौपायों से। वे अद्भुत चित्र हैं। वे मनुष्य की अंतहीन खोज को, जीवन के संघर्ष को और ईश्वर के नाम से पुकारी जाने वाली अद्भुत वस्तु को दिखाते हैं। परंतु मनुष्य इस अद्भुत वस्तु को पाता कभी नहीं। आप उस वस्तु तक अनजाने ही, गुपचुप ही, केवल तब पहुंचते हैं जब किसी प्रकार का कोई भय नहीं होता। जिस क्षण भय नहीं होता, बड़े तीव्र एहसास होते हैं। छोटी-मोटी वस्तुओं से जितना ही कम लगाव होता है उतना ही आप बलशाली महसूस करते हैं। भय ही है जो सौंदर्य की तमाम अनुभूति को, गहन मौन को समाप्त कर देता है। भय का आपको उसी प्रकार अध्ययन करना होता है जैसे आप गणित का अध्ययन करते हैं। भय से भागना नहीं है, ताकि आप उसे देख सकें और जान सकें। यह उसी</p>

<p>jumping away and watching the snake. If you are very quiet, very still, unafraid, then you can look very closely, keeping a safe distance. You can look at the black tongue and the eyes that have no eyelids. You can look at the scales, the patterns of the skin. If you watch the snake very closely you see and appreciate it and perhaps have great affection for that snake. But you cannot look if you are afraid, if you run away. So, in the same way as you look at a snake, you have to look at this battle called life, with its sorrow, misery, confusion, conflict, war, hatred, greed, ambition, anxiety and guilt. You can only look at life and love if there is no fear.</p>	<p>तरह है मानो आप टहलने जायें और अचानक सामने सांप आ जाय, आप कूद कर हट जायें और उसे देखते रहें। यदि आप बिल्कुल शांत हैं, अडोल, निर्भय, तो आप बड़ी निकटता से देख सकते हैं, सुरक्षित दूरी से। आप उसकी काली जीभ और उसकी आंखों को देख सकते हैं, जिन पर पलकें नहीं होती। आप उसकी त्वचा की बनावट को और उसके ऊपर की आकृतियों को भी देख सकते हैं। यदि आप सांप को बड़े गौर से देखें तो आप उसे समझ सकेंगे और सम्भवतः उस के लिए आपके मन में स्नेह जाग जाए। लेकिन अगर आप डरे हुए हैं, भाग खड़े होते हैं तो आप नहीं देख सकते। तो ठीक उसी तरह जैसे आप एक सांप को देखते हैं, आपको इस संघर्ष को देखना होगा जिसे जीवन कहते हैं--तमाम दुख, कष्ट, भ्रांति, द्वंद, युद्ध, घृणा, लालच, महत्त्वाकांक्षा, घबराहट और अपराध-बोध की बारात के साथ। केवल तभी आप जीवन को देख सकते हैं और प्रेम कर सकते हैं, जब कहीं कोई भय नहीं है।</p>
<p><b>Student:</b> Why do we all want to live?</p>	<p><b>छात्र:</b> हम सब जीना क्यों चाहते हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Don't laugh because a little boy asks, when life is so transient, why do we crave to live? Isn't it very sad for a little boy to ask that question? That means he has seen for himself that everything passes away. Birds die, leaves fall, people grow old, man has disease, pain, sorrow, suffering; a little joy, a little pleasure and unending work. And the boy asks why do we cling to all this? He sees how young people grow old before their age, before their time. He sees death. And man clings to life because there is nothing else to cling to. His gods, his temples, don't contain truth; his sacred books are just words. So he asks why people cling to life when there is so much misery. You understand? What do you answer? What do the older people answer? What do the teachers of this school answer? There is silence. The older people have lived on ideas, on words and the boy says, "I am hungry, feed me with food, not with words." He does not trust you and so he asks, "Why do we cling to all this?" Do you</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> हंसे नहीं कि एक छोटा सा बालक यह पूछ रहा है। जब जीवन इतना क्षण-भंगुर है तो हम जीना क्यों चाहते हैं? क्या यह उदास करने वाली बात नहीं है कि एक छोटा सा बालक ऐसा प्रश्न पूछे? इसका अर्थ है कि उसने खुद देखा है कि प्रत्येक वस्तु का अंत होता है। पक्षी मरते हैं, पत्ते गिरते हैं, लोग बूढ़े होते हैं, मनुष्य को बीमारी, दुख, दर्द, कष्ट होता है; थोड़ा सुख, थोड़ा आनन्द और अंतहीन काम। और यह बालक पूछता है कि हम सब क्यों इससे चिपकते हैं। वह देखता है कि युवक कैसे आयु से पहले, अपने समय से पहले ही बूढ़े हो जाते हैं। वह मृत्यु को देखता है। और मनुष्य जीवन से चिपका रहता है, क्योंकि चिपकाने के लिए कुछ और है ही नहीं। उसके देवताओं में, मंदिरों में, कोई सच्चाई नहीं; उसकी पवित्र पुस्तकें सिर्फ शब्दों का ढेर हैं। इसलिये वह पूछता है कि जब इतना कष्ट है तो क्यों लोग जीवन से चिपके रहते हैं? आप समझे? आपका क्या उत्तर देंगे, बड़े लोगों का क्या उत्तर है? इस विद्यालय के अध्यापकों का क्या उत्तर है? सभी मौन हैं। बड़े लोगों का जीवन विचारों पर, शब्दों पर टिका है और बालक कहता है, मैं भूखा हूं, मुझे भोजन दें, शब्द नहीं।" वह आपका विश्वास नहीं करता और इसलिये</p>

<p>know why you cling? Because you know nothing else. You cling to your house, you cling to your books, you cling to your idols, gods, conclusions, your attachments, your sorrows, because you have nothing else and all that you do brings unhappiness. To find out if there is anything else, you must let go what you cling to. If you want to cross the river, you must move away from this bank. You cannot sit on one bank. You want to be free from misery and yet you will not cross the river. So, you cling to something that you know however miserable it is and you are afraid to let go because you don't know what is on the other side of the river.</p>	<p>पूछता है, “हम इस सबसे क्यों चिपके रहते हैं?” क्या आप जानते हैं कि आप क्यों चिपके रहते हैं? क्योंकि आप और कुछ जानते ही नहीं। आप अपने मकान से चिपके हैं, अपनी पुस्तकों से, अपनी मूर्तियों से, देवताओं से, निर्णयों से, आपके मोह, आपके दुख जिनसे आप चिपके रहते हैं, क्योंकि आपके पास और कुछ है ही नहीं और जो भी आप करते हैं उससे दुख ही पैदा होता है। तो यह जानने के लिये कि क्या कुछ और भी है, आपको वह सब छोड़ना होगा जिससे आप चिपके हैं। यदि आपको नदी पार करनी है तो आपको यह किनारा छोड़ना ही होगा। आप एक ही छोर पर बैठे नहीं रह सकते। आप दुख से मुक्त होना चाहते हैं फिर भी आप नदी पार नहीं करेंगे। तो आप उस वस्तु से चिपके रहते हैं जिसे आप जानते हैं भले ही वह कितनी ही दुखदाई क्यों न हो और आप उसे छोड़ने को राजी नहीं क्योंकि आप नहीं जानते कि नदी के उस ओर क्या है।</p>
<p><b>Talk To Students</b></p> <p><b>Chapter 6 On Fear</b></p>	<p><b>6. भय</b></p>
<p>I am sure you have often heard from politicians, from educators, from your parents and from the public that you are the coming generation. But when they talk about you as a new generation, they really do not mean it because they make sure that you conform to the older pattern of society. They really do not want you to be a new, different kind of human being. They want you to be mechanical, to fit in with tradition, to conform, to believe, to accept authority. In spite of this, if you can actually free yourself from fear, not theoretically, not ideally, not merely outwardly but actually, inwardly, deeply, then you can be a different human being. Then you can become the coming generation. The older people are ridden with fear - fear of death, fear of losing jobs, fear of public opinion. They are completely held in the grip of fear. So their gods, their scriptures, their puja, are all within the field of fear and therefore the mind is</p>	<p>मुझे विश्वास है कि आपने अक्सर राजनीतिज्ञों से, शिक्षकों से, अपने माता-पिता से और आम लोगों से यह सुना होगा कि आप ही आने वाली पीढ़ी हैं। परंतु जब वे नई पीढ़ी के तौर पर आपकी बात वास्तव में उनका मतलब आपकी नवीनता से नहीं होता, क्योंकि वे यह यकीनी बनाते हैं कि आप समाज के प्राचीन ढांचे के ही अनुरूप ढलें। वे चाहते ही नहीं कि आप सचमुच नए हों, भिन्न प्रकार के मनुष्य। वे चाहते हैं कि आप मशीनी बने रहें, परम्परा के अनुकूल बनें, उसीका पालन करें, सत्ताधिकारों को शीश झुकाएं, उनमें विश्वास करें। फिर भी यदि आप अपने को वास्तव में भय से मुक्त कर सकें, सैद्धांतिक, आदर्श के तौर पर या केवल बाह्य रूप से ही नहीं, वरन सचमुच ही, गहराई से, भीतर से, तो आप एक भिन्न प्रकार के मनुष्य हो सकते हैं। तभी आप आने वाली पीढ़ी बन सकते हैं। पुराने लोग तो भय से पीड़ित हैं--मृत्यु का भय, नौकरी खो देने का भय, जनमत का भय। वे पूर्णतया भय से जकड़े हुए हैं। इसलिए उनके देवता, उनके धर्म-शास्त्र, उनकी पाठ-पूजा, सभी भय से घिरे हैं और तभी तो उनका</p>

<p>curiously warped, perverted. Such a mind cannot think straight, cannot reason logically, sanely, healthily, because it is rooted in fear. Watch the older generation and you will see how fearful it is of everything - of death, of disease, of going against the current of tradition, of being different, of being new.</p>	<p>मन टेढ़ा-मेढ़ा हो गया है, भ्रष्ट हो गया है। ऐसा मन सीधे सोच ही नहीं सकता, तर्क-पूर्ण ढंग से, समझदारी से, संतुलित रूपसे विचार नहीं कर सकता, क्योंकि उसकी जड़ भय में है। पुरानी पीढ़ी को ध्यान से देखें और आप देखेंगे कि कैसे वह हर चीज़ से डरी हुई है--मृत्यु से, बीमारी से, प्रचलित परम्परा के विपरीत जाने से, कुछ अलग होने से, नया होनेसे।</p>
<p>Fear is what prevents the flowering of the mind, the flowering of goodness. Most of us learn through fear. Fear is the essence of authority and obedience; parents and governments demand obedience. There is the authority of the book; the authority according to Sankara, Buddha; the authority according to Einstein. Most people are followers; they make the originator into an authority and through propaganda, through influence, through literature, they imprint on the delicate brain the necessity of obedience. What happens to you when you obey? You cease to think. Because you feel that the authorities know so much, are such powerful people, have so much money, can turn you out of the house, because they use the words "duty, love," you succumb, you yield, you begin obey, and become a slave to an idea, to an impression, to influence. When the brain is conforming to a pattern of obedience, it is no longer capable of freshness, no longer capable of thinking simply and directly.</p>	<p>भय ही है जो मन को खिलने से रोकता है; अच्छाई को पुष्पित होने से। हममें से अधिकांश भय के माध्यम से सीखते हैं। भय ही सत्ताधिकार का, हुक्म बजाने की आदत का सार है; माता-पिता और सरकारें आज्ञापालन चाहती हैं। फिर पोथियों का प्रामाण्य है, शंकराचार्य तथा बुद्ध के वचनों का सत्ता-प्रामाण्य, आइंस्टाइन के कहे का वज़न। अधिकांश व्यक्ति अनुयायी होते हैं; वे किसी भी प्रवर्तक को, कुछ नया पेश करने वाले को एक खास हस्ती में तबदील कर देते हैं और प्रचार, प्रभाव, साहित्य के द्वारा कोमल दिमाग पर ऐसी छाप छोड़ देते हैं कि लगने लगता है कि आज्ञापालन ज़रूरी है। जब आप हुक्म बजाते हैं तो वास्तव में क्या होता है? आप सोचना बंद कर देते हैं। आप सोचते हैं कि सत्ताधिकारी सब कुछ जानते हैं, वे इतने शक्तिशाली हैं, इतना धन है उनके पास कि वे आपको आपके घर से बाहर निकाल सकते हैं और चूंकि वे "कर्त्तव्य", "प्रेम" जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जिससे आप समर्पण कर देते हैं, झुक जाते हैं, हुक्म मानने लगते हैं और किसी एक विचार, एक धारणा या उसके प्रभाव के दास बन जाते हैं। मस्तिष्क जब आज्ञाकारिता के किसी ढांचे के अनुरूप ढल रहा है तो वह ताज़गी के योग्य नहीं रहता और न तो वह सरलता एवं स्पष्टता से सोच ही पाता है।</p>
<p>Now, is it possible to learn without authority? Do you know what learning is? Acquiring knowledge is one thing but learning is an altogether different thing. A machine can acquire information like a robot or like an electronic computer. A machine acquires knowledge because it is being fed certain information. it gathers more and more</p>	<p>तो क्या बिना जी-हज़ूरी के सीखना संभव है? क्या आप जानते हैं कि सीखना है क्या? ज्ञान प्राप्त करना एक बात है, परंतु सीखना एक बिलकुल ही अलग बात है। कोई मशीन किसी रोबोट या इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर की तरह सूचनाओं के ढेर लगा सकती है। एक मशीन ज्ञान का संग्रह कर लेती है क्योंकि उसमें कुछ सूचनाएं भरी गई हैं। वह अधिकाधिक सूचनाएं एकत्र करती जाती है</p>

<p>information which then becomes knowledge. It has the capacity to acquire information, store it and respond when it is asked a question. On the other hand when the human mind can learn, then it is capable of more than just acquiring and storing up. But there can be learning only when the mind is fresh, when it does not say "I know." So, one must differentiate, separate learning from acquiring knowledge. Acquiring knowledge makes you mechanical but learning makes the mind very fresh, young, subtle. And you cannot learn if you are merely following the authority of knowledge. Most educators, right through the world, are merely acquiring and imparting knowledge and so are making the mind mechanical and incapable of learning. You can only learn when you do not know. Learning only comes into being when there is no fear and when there is no authority.</p>	<p>और फिर वे ज्ञान बन जाती हैं। उसमें सूचनाओं को जमा करने की, उन्हें सुरक्षित रखने की, पूछे जाने पर जवाब देने की क्षमता होती है। दूसरी ओर मानव मन जब सीखता है तो उसमें सूचना प्राप्त करने तथा उसे सुरक्षित रखने के अलावा कुछ और भी क्षमता होती है। परंतु सीखना तभी हो सकता है जब मन ताज़ा होता है, जब वह यह नहीं कहता कि "मैं जानता हूँ"। इसलिये सीखने और ज्ञान प्राप्त करने को हमें अलग करके समझना होगा। ज्ञान प्राप्त करना आप को मशीनी बनाता है, परंतु सीखना मन को बहुत ताज़ा, तरुण तथा सूक्ष्मदर्शी बनाता है। और यदि आप ज्ञान के प्रामाण्य का ही केवल अनुसरण करते हैं तो आप सीख नहीं सकते। सारे विश्व में अधिकांश शिक्षक केवल ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं और प्रदान कर रहे हैं, और इस प्रकार मन को यांत्रिक बना रहे हैं और सीखने के अयोग्य। सीख आप केवल तभी सकते हैं जब आप नहीं जानते। सीखना तभी संभव होता है जब कोई भय नहीं होता और जब कोई सत्ताधिकार नहीं होता।</p>
<p>The question is, how do you teach mathematics, or any other subject without authority, and therefore, without fear? Fear is essentially involved in competition. Whether it is competition in a class or competition in life. To be afraid of being nobody, of not arriving, of not succeeding, is at the root of competition. But when there is fear, you cease to learn. And so it seems to me that it is the function of education to eliminate fear, to see that you do not become mechanical and at the same time to give you knowledge. To learn without becoming mechanical, which means to learn without fear, is a complex issue. It involves the elimination of all competition. In this process of competition, you conform, and gradually you destroy the subtlety, the freshness, the youth of the brain. But you cannot deny knowledge. So, is it possible to have knowledge and yet learn to be free from fear? Do you see this? When do you learn most? Have you ever watched yourself learning? Try to watch yourself sometimes and</p>	<p>प्रश्न है कि आप गणित अथवा कोई दूसरा विषय कैसे सिखाते हैं, बिना किसी पदाधिकार के और बिना किसी भय के? प्रतियोगिता में तो भय छुपा ही है, चाहे वह प्रतियोगिता कक्षा में हो अथवा जीवन में। कुछ खास न होने का भय, कहीं न पहुंच पाने का भय, सफल न हो पाने का भय ही प्रतियोगिता की जड़ है। परंतु जब भय है, सीखना बंद हो जाता है। और इसलिये मुझे ऐसा लगता है कि भय को समाप्त करना शिक्षा का कार्य है, यह देखना कि आप यांत्रिक न हों और उसके साथ ही साथ आपको ज्ञान भी देना। बिना यांत्रिक हुए सीखना अर्थात् बिना भय के सीखना एक जटिल विषय है। उसमें समस्त प्रतियोगिता का अंत निहित है। प्रतियोगिता की इस प्रक्रिया में आप किसी ढांचे के अनुरूप ढलते हैं और धीरे-धीरे अपने मस्तिष्क की युवावस्था को, सूक्ष्मता को, ताजगी को नष्ट कर डालते हैं। परंतु आप ज्ञान को अस्वीकार नहीं कर सकते। इसलिए क्या यह संभव है कि आप ज्ञान भी प्राप्त करें और साथ ही भय से मुक्त रहना भी सीखें? क्या आप समझे? सबसे ज्यादा आप कब सीखते हैं? क्या आपने अपने को कभी सीखते हुए देखा है? कभी-कभी अपना निरीक्षण करें और अपने</p>

<p>observe yourself learning. You learn most when you have no fear, when you are not threatened by authority, when you are not competing with your neighbour. Then your mind becomes extraordinarily alive. So the issue for the teacher and the issue for you, as a student, is to learn without authority, to acquire knowledge without perverting or dulling the brain and to eliminate fear. Do you see the problem? To learn there must be no conformity, no authority and yet you must acquire knowledge. To combine all this without distorting the brain, is the problem. So that when you grow older, when you pass your examinations and marry, you meet life with a freshness, without fear. Then you are learning about life all the time; not merely interpreting life according to your pattern.</p>	<p>को सीखते हुए देखें। आप सर्वाधिक सीखते हैं जब आप भय से मुक्त हैं, जब किसी के दबदबे का भय नहीं है, जब किसी पड़ोसी से कोई प्रतियोगिता नहीं। तब आपका मन विलक्षण रूप से सजीव हो जाता है। तो अध्यापक के लिये तथा एक विद्यार्थी के रूप में आपके लिये मुद्दा यही है कि बिना पदाधिकार के कैसे सीखा जाए अर्थात् मस्तिष्क को मंद अथवा पथ-भ्रष्ट किये बिना ज्ञान कैसे प्राप्त करें और भय को कैसे हटायें। क्या आप इस समस्या को देख रहे हैं? सीखने के लिये न कोई लीक, न कोई प्रभुत्व चाहिए, पर फिर भी ज्ञान तो प्राप्त करना है। मस्तिष्क को बिना विकृत किये इस सब का समायोजन करना ही समस्या है ताकि जब आप बड़े हों, परीक्षाएं पास करें, और विवाह करें तो आप जीवन का ताज़गी से, बिना भय के सामना कर सकें। तब आप हर समय जीवन के विषय में सीख रहे होते हैं, अपने किसी ढांचे के अनुसार जीवन की बस व्याख्या करने में ही नहीं उलझते।</p>
<p>Do you know what life is? You are too young to know. I will tell you. Have you seen those villagers in tattered clothes, dirty, perpetually starved, working every day of their lives? That is part of life. Then you see a man riding in a car, his wife covered with jewels, with perfume, having many servants. That is also part of life. Then there is the man who voluntarily gives up riches, lives a very simple life, who is anonymous, does not want to be known, does not proclaim that he is a saint. That is also part of life. Then there is the man who wants to become a hermit, sannyasi, and there is also the man who becomes a devotee, who does not want to think, who just blindly follows. That is also part of life. Then there is the man who carefully, logically, sanely thinks, and finding that such thoughts are limited goes beyond thought. That is also part of life. And death is also a part of life, the loss of everything. Belief in the gods and goddesses, in saviours, in paradise, in hell,</p>	<p>क्या आप जानते हैं कि जीवन क्या है? इसे जानने के लिये अभी आप बहुत छोटे हैं। मैं आपको बताऊंगा। क्या आपने उन ग्रामीणों को देखा है, फटे कपड़ों में, गंदे, सदा से भूख के सताए, जीवन भर काम की चक्की में पिसते? यह सब जीवन का अंग है। फिर आप किसी आदमी को कार में जाते देखते हैं, जिसकी पत्नी गहनों से लदी है, सुगंध से, जिसके पास ढेरों नौकर हैं। वह भी जीवन का अंग है। फिर एक और व्यक्ति है जो स्वेच्छा से अपनी सम्पत्ति त्याग देता है, बड़ा सादा जीवन जीता है, उसे कोई नहीं जानता और वह चाहता भी नहीं कि कोई उसे जाने, वह यह दावा भी नहीं करता कि वह कोई संत है। वह भी जीवन का एक अंग है। दूसरा एक और व्यक्ति है जो संन्यासी अथवा साधू होना चाहता है और एक ऐसा भी व्यक्ति है जो भक्त बन जाता है, जो सोचना नहीं चाहता, जो बस आँख मूँद कर पीछे चलता है। वह भी जीवन का एक अंग है। फिर एक और भी व्यक्ति है जो सावधानी से तर्क-सम्मत रूप से, संतुलित रूप से सोचता है और यह जानकर कि ऐसे विचार सीमित हैं, विचार के पार तक</p>

<p>is a part of life. It is a part of life to love, to hate, to feel jealous, to feel greedy, and it is also part of life to go beyond all these trivial things. it is no good growing up and accepting one part of life, the mechanical part concerned with acquiring knowledge, which is to accept the pattern of values created by the past generation. Your parents happen to have money, they send you to school and then to college, they see that you have a job. Then you get married and that is the end of it. All this is only a small segment of life. But there is this vast field of life, an incredibly vast field, to understand which there must be no fear, and that is very difficult.</p>	<p>जाता है। वह भी जीवन का एक अंग है। और मृत्यु अर्थात सब कुछ खो जाना भी जीवन का एक अंग है। देवी-देवताओं में, उद्धारकों में, नरक और स्वर्ग में विश्वास भी जीवन का एक अंग है। प्रेम करना, घृणा करना, द्वेष, लालच का एहसास जीवन का एक अंग है और इन तमाम तुच्छ वस्तुओं के परे जाना भी जीवन का एक अंग है। तो यह कोई अच्छी बात नहीं है कि हम बड़े हों और जीवन के किसी एक अंग को ही मान कर बैठ जायें, ज्ञान बटोरने से जुड़े यांत्रिक अंग को, जिसका अर्थ है अतीत की पीढ़ी द्वारा सृजित मूल्यों को ही स्वीकार कर लेना। आपके माता-पिता के पास धन है, वे आपको स्कूल और फिर कालेज भेजते हैं और ध्यान रखते हैं कि आप कोई नौकरी प्राप्त कर लें। और तब आप विवाह कर लेते हैं और बस यही अंत है। यह सब तो जीवन का एक छोटा सा हिस्सा है। परंतु वहाँ जीवन का एक और विशाल क्षेत्र है, इतना अद्भुत रूप से व्यापक कि उसे समझने के लिए यह आवश्यक है कि कोई भय न हो, और यही बड़ा कठिन है।</p>
<p>One of the more vital issues in life is the fact that one withers away, disintegrates. Fear and deterioration are related. As you grow older, unless you solve the problem of fear as it arises, immediately, without carrying it over to tomorrow, the deteriorating factor sets in. It is like a disease, like a wound which festers, destroys. Fear of not getting a better job, of not fulfilling yourself, eat into your capacity, your sensitivity, your intellectual, moral fibre. So the solving of the problem of fear and the factor of deterioration are related. Try and find out what you are afraid of and see if you cannot go beyond that fear, not verbally, not theoretically, but actually. Do not accept authority. Acceptance of authority is obedience which only breeds further fear.</p>	<p>जीवन सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से एक यह भी तथ्य है कि व्यक्ति मुरझा जाता है, बिखर जाता है। भय और पतन जुड़े हुए हैं। जैसे-जैसे आप बड़े होते जाते हैं, यदि आप भय की समस्या को तुरंत ही, जैसे ही वह खड़ी हो, हल नहीं करते, बिना दूसरे दिन तक उसे ढोए, तो पतन घुस ही आता है। वह किसी रोग की तरह है। रिसते सड़ांध मारते घाव की तरह जो बरबाद कर देता है। अच्छी नौकरी न मिलने का डर, महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति न होने का भय, आपकी क्षमता को, संवेदनशीलता को, बौद्धिक और नैतिक शक्ति को खा जाता है। इसलिये भय की समस्या का समाधान तथा पतन का मामला परस्पर जुड़े हुए हैं। कोशिश करें और पता लगायें कि आप किससे भयभीत हैं, और देखें कि क्या आप उस भय से परे नहीं जा सकते, शब्दों में नहीं, सैद्धांतिक रूप से नहीं वरन वास्तव में। आथोरिटी को आप स्वीकार न करें। आथोरिटी की स्वीकृति केवल वह जी-हजूरी है जो भय को सिर्फ बढ़ाती ही है।</p>

<p>To understand this extraordinarily complex thing called life, which is both in time and beyond time, you must have a very young, fresh, innocent mind. A mind that carries fear within itself, day after day, month after month, is a mechanical mind. And you see machines cannot solve human problems. You cannot have an innocent fresh young mind if you are ridden with fear, if from childhood until you die, you are trained in fear. That is why a good education, a true education eliminates fear.</p>	<p>इस अद्भुत रूप से जटिल वस्तु को समझने के लिए, जिसे जीवन कहा जाता है और जो काल में भी है तथा कालातीत भी है, आपके पास एक तरुण, ताज़ा, अबोध मन होना चाहिए। वह मन जो न जाने कितने दिनों से, महीनों से भय ही ढोता आया है, एक यांत्रिक मन है। और यंत्र तो मानव समस्या का समाधान नहीं कर सकते। यदि आप भय से पीड़ित हैं, बचपन से मृत्युपर्यन्त भय में ही प्रशिक्षित हुए हैं तो आपका मन अबोध, ताजा एवं तरुण नहीं हो सकता। यही कारण है कि एक अच्छी शिक्षा, एक सच्ची शिक्षा, भय को मिटाती है।</p>
<p><b>Student:</b> How can one be completely free from fear?</p>	<p><b>छात्र:</b> हम कैसे भय से पूर्णतया मुक्त हो सकते हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> First of all, you must know what fear is. If you know your wife, husband, parent, society, you are no longer afraid of them. To know about something completely makes the mind free from fear.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> सबसे पहले आपको जानना होगा कि भय क्या है। यदि आप अपनी पत्नी को जानते हैं, पति, माता-पिता, या समाज को जानते हैं, तो आप उनसे भयभीत नहीं रहते। किसी वस्तु के विषय में पूर्णतया जानने से आपका मन उसके भय से मुक्त हो जाता है।</p>
<p>How will you find out about fear? Are you afraid of public opinion, public opinion being what your friends think of you? Most of us, especially while we are young, want to look alike, dress alike, talk alike. We do not want to be even slightly different, because to be different implies not to conform, not to accept the pattern. When you begin to question the pattern there is fear. Now examine that fear, go into it. Do not say, "I am afraid", and run away from it. Look at it, face it, find out why you are afraid.</p>	<p>आप भय के बारे में कैसे पता लगायेंगे? क्या आप जनमत से भयभीत हैं--जनमत यानी कि आपके मित्र आपके विषय में सोचते हैं? हममें से अधिकांश लोग, विशेषरूप से जब हम छोटे होते हैं तो एक से दिखाई पड़ना चाहते हैं, एक से कपड़ा पहनना, एक सी बात करना। हम ज़रा भी भिन्न नहीं होना चाहते, क्योंकि भिन्न होने का अर्थ है लीक से हटना, किसी विशेष ढांचे को स्वीकार न करना। जब आप किसी विशेष ढांचे को संदेह से देखने लगते हैं तो भय होता है। तो उस भय की परीक्षा कीजिये, उसमें जाइये। 'मैं भयभीत हूँ' ऐसा कह कर भागिये नहीं। उसको देखिये, उसका सामना कीजिये, पता लगाइये कि आप क्यों भयभीत हैं।</p>
<p>Suppose I am afraid of my neighbour, my wife, my god, my country - now what is that fear? Is it actual or is it merely in thought, in time? I will</p>	<p>मान लीजिये मैं अपने पड़ोसी से भयभीत हूँ, अपनी पत्नी, अपने देवता, या अपने देश से--तो वह भय क्या है? क्या वह वास्तविकता है अथवा केवल विचार में है,</p>

<p>take a simpler example. We are all going to die some time or other. Death is inevitable for all of us and thinking about death creates fear, thinking about something which I do not know creates fear. But if it were actual, if death were there immediately and I were going to die now, there is no fear. You understand? Thought in time creates fear. But if something has to be done immediately there is no fear, because thinking is not possible. If I am going to die the next instant, then I face it, but give me an hour, and I begin say, "My property, my children, my country, I have not finished my book." I get nervous, frightened.</p>	<p>समय में? मैं एक और सरल उदाहरण दूंगा। कभी न कभी तो हम सभी मरने ही वाले हैं। मृत्यु हम सबके लिये अनिवार्य है और मृत्यु के बारे में सोचना भय उत्पन्न करता है। किसी ऐसी वस्तु के बारे में सोचना जिसे मैं जानता नहीं, भय उत्पन्न करता है। परंतु यदि वह सचमुच होती, यदि मृत्यु अभी तुरंत होने वाली होती और मैं अभी मर रहा होता तो भय न होता। आप समझे? समय में घटित विचार, भय उत्पन्न करता है। परंतु यदि तुरंत कुछ करना है तो भय नहीं होता, क्योंकि विचार वहां संभव नहीं है। यदि मेरी अगले क्षण मृत्यु हो रही है तो मैं उसका सामना करता हूं। परंतु मुझे एक घण्टे का समय दीजिये तो मैं कहने लगता हूं "मेरी सम्पत्ति, मेरे बच्चे, मेरा देश, मेरी तो पुस्तक समाप्त नहीं हुई।" मैं घबड़ा उठता हूं, डर जाता हूं।</p>
<p>So fear is always in time, because time is thought. To eliminate fear you have to consider thought as time and then enquire into this whole process of thinking. It is a little bit difficult.</p>	<p>तो भय सदा समय में होता है, क्योंकि समय ही विचार है। भय को समाप्त करने के लिये आपको विचार को काल के रूप में समझना होगा। और सोच-विचार की इस समस्त प्रक्रिया की जांच करनी होगी। यह कुछ कठिन है।</p>
<p>I am afraid of my parents, my society, of what they will say tomorrow or ten days later. My thinking about what might happen projects fear. So can I say, "I am going to look at that fear now, not ten days later"? Can I invite what they are going to say in the present and look at it and if they happen to be right, can I accept it? Why should I be frightened? And if they are wrong, I also accept that. Why should they not be wrong? Why should I be frightened? And I will listen to the teacher to learn, but I am not going to be frightened. So, when I face fear it goes away. But to face fear, I have to enquire, which is quite a complex process because it involves the problem of time.</p>	<p>मैं अपने माता-पिता से भयभीत हूं, अपने समाज से, इस बात से कि वे कल अथवा दस दिन बाद क्या कहेंगे। क्या होगा यह विचार ही भय उत्पन्न करता है। तो क्या मैं कह सकता हूं कि उस भय को मैं अभी समझूंगा दस दिन बाद नहीं? इस घड़ी वो क्या कहने जा रहे हैं इसके लिए मैं उन्हें बुला सकता हूं, गौर से उन्हें देख सकता हूं और यदि वे सही हैं तो क्या मैं उन्हें स्वीकार कर सकता हूं? मुझे डरने की क्या आवश्यकता है? और यदि वे गलत हैं, तो भी ठीक है। क्यों वे गलत नहीं हो सकते? तो क्यों मैं डरूं? तो सीखने के लिए मैं अपने अध्यापक की बात सुनूंगा, परंतु मैं डरूंगा नहीं। इसलिये जब मैं भय का सामना करता हूं तो वह भाग जाता है। परंतु, भय का सामना करने के लिये मुझे खोजबीन करनी पड़ेगी जो कि एक जटिल प्रक्रिया है क्योंकि उसमें समय की समस्या भी जुड़ी है।</p>

<p>You know, there are two kinds of time: time by the watch, the next minute, tonight, the day after tomorrow; and there is another kind of time which is created by the psyche inside one, by thought - "I shall be a great man", "I shall have a job", "I shall go to Europe" - that is the psychological future, in time and space. Now to understand chronological time by the watch and to understand time as thought and to go beyond both, is really to be free of fear.</p>	<p>आप जानते हैं समय दो प्रकार का होता है। घड़ी के अनुसार समय अर्थात अगला मिनट, आज रात्रि, परसों, और एक दूसरा भी समय है जो अपने अंदर द्वारा, विचार द्वारा उत्पन्न किया जाता है--मैं एक बड़ा आदमी बनूंगा”, “मैं एक नौकरी पाऊंगा”, “मैं योरोप जाऊंगा”--तो वह एक मनोवैज्ञानिक भविष्य है देशकाल के घेरे में। घड़ी वाले काल को समझना और विचार वाले काल को समझना तथा दोनों के परे जाना वास्तव में भय से मुक्त होना है।</p>
<p><b>Student:</b> You said if you know something, you stop feeling afraid of it. But how do you know what death is?</p>	<p><b>छात्र:</b> आप कहते हैं कि यदि आप कोई वस्तु जानते हैं तो आप उससे डरना बंद कर देते हैं। लेकिन मृत्यु क्या है इसे आप कैसे जानते हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> That is a good question. You are asking, "How do you know what death is and how can you cease to be frightened of it?" I am going to show you. You know there are two kinds of death - bodily death and death of thought. The body is going to die inevitably - like a pencil writing, it eventually wears out. Doctors may invent new kinds of medicine; you may last one hundred and twenty years instead of eighty years. But still there will be death. The physical organism comes to an end. We are not afraid of that. What we are afraid of is the coming to an end of thought, of the "me" that has lived so many years, the "me" that has acquired so much money, that has a family, children, that wants to become important, that wants to have more property, money. That "me", dying is what I am afraid of. Do you see the difference between the two? The physical dying and the "me" dying?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> यह एक अच्छा प्रश्न है। आप पूछ रहे हैं, “आप कैसे जानते हैं कि मृत्यु क्या है और उसके प्रति भय आप कैसे समाप्त कर सकते हैं?” मैं आपको दिखाता हूँ। आप जानते हैं मृत्यु दो प्रकार की होती है--शारीरिक मृत्यु और विचार की मृत्यु। शरीर तो मरेगा ही--जैसे एक पेन्सिल लिखते-लिखते घिस जाती है। डाक्टर नई प्रकार की दवाओं का आविष्कार कर सकते हैं, अस्सी वर्ष के स्थान पर आप एक सौ बीस वर्ष जी सकते हैं, परंतु मृत्यु फिर भी होगी। भौतिक शरीर का अंत होता ही है। हम उससे भयभीत नहीं हैं। हम जिससे भयभीत हैं वह है विचारणा का अंत होना, “मैं” का खत्म हो जाना, “मैं” जो इतने वर्ष जीवित रहा है, “मैं” जिसने इतना धन कमाया है, जिसका परिवार है, बच्चे हैं, जो महत्त्वपूर्ण बनना चाहता है, जो और ज़्यादा सम्पत्ति और ज़्यादा धन कमाना चाहता है। वो “मैं” मर रही है जिससे मैं भयभीत होता हूँ। क्या आप इन दोनों के अंतर को समझते हैं? जिस्मानी मृत्यु और उस “मैं” की मृत्यु में अंतर?</p>
<p>The "me" dying is psychologically much more important than the body's dying and that is what we are frightened of. Now take one pleasure, and die to it. I will explain this to you. You see I do not want to go into the whole problem; I am</p>	<p>शरीर की मृत्यु की अपेक्षा इस “मैं” की मृत्यु मानसिक रूप से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है और हम इसी से भयभीत हैं। अब किसी एक सुख को लें और उसके प्रति मर जायें। मैं इसे आपको समझाऊंगा। मैं इस सारी समस्या में नहीं जाना चाहता, मैं केवल कुछ संकेत कर</p>

<p>merely indicating something. You see the "me" is the collection of many pleasures and many pains. Can that "me", die to one thing? Then it will know what death means. That is, can I die to a wish? Can I say "I do not want that wish, I do not want that pleasure"? Can I end it, die to it? Do you know anything about meditation?</p>	<p>रहा हूँ। आप जानते हैं कि "मैं" केवल अनेक सुखों एवं अनेक दुखों का संग्रह है। क्या यह "मैं" किसी एक वस्तु के प्रति मृत हो सकता है? तभी वह जानेगा कि मृत्यु का क्या अर्थ है। अर्थात् क्या मैं किसी एक कामना के प्रति मृत हो सकता हूँ? क्या मैं कह सकता हूँ, "मैं उस कामना को नहीं चाहता, उस सुख को नहीं चाहता?" क्या मैं उसका अंत कर सकता हूँ, मृत हो सकता हूँ उसके प्रति? क्या आप ध्यान के विषय में कुछ जानते हैं?</p>
<p><b>Student:</b> No, Sir.</p>	<p><b>छात्र:</b> नहीं।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> But the older people do not know either They sit in a corner, close their eyes and concentrate, like school boys trying to concentrate on a book. That is not meditation. Meditation is something extraordinary, if you know how to do it. I am going to talk a little about it.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> बड़े-बूढ़े लोग भी नहीं जानते । वे कोने में बैठ जाते हैं, आंखें बंद कर लेते हैं और एकाग्र हो जाते हैं, जैसे स्कूल के छात्र किसी पुस्तक में ध्यान लगाने की कोशिश कर रहे हों। यह ध्यान नहीं है। यदि आप जान लें कि ध्यान कैसे होता है तो वह सचमुच ही अद्भुत वस्तु है। मैं उसके बारे में कुछ चर्चा करने जा रहा हूँ।</p>
<p>First of all, sit very quietly; do not force yourself to sit quietly, but sit or lie down quietly without force of any kind. Do you understand? Then watch your thinking. Watch what you are thinking about. You find you are thinking about your shoes, your saris, what you are going to say, the bird outside to which you listen; follow such thoughts and enquire why each thought arises. Do not try to change your thinking. See why certain thoughts arise in your mind so that you begin to understand the meaning of every thought and every feeling without any enforcement. And when a thought arises, do not condemn it, do not say it is right, it is wrong, it is good, it is bad. Just watch it, so that you begin to have a perception, a consciousness which is active in seeing every kind of thought,</p>	<p>सबसे पहले बिल्कुल शांति से बैठें, शांति से बैठने के लिये ज़बरदस्ती न करें; बिना किसी प्रकार की बाध्यता के शांति से बैठें या लेट जायें। आप समझे? तब अपने विचारों को देखें। देखें कि आप क्या सोच रहे हैं। आप देखते हैं कि आप अपने जूतों के विषय में, अपनी साड़ी के विषय में, आप जो कहने जा रहे हैं या बाहर जिस पक्षी के स्वर को आप सुन रहे हैं, उसके विषय में सोच रहे हैं, इन विचारों का अनुगमन कीजिये और पता लगाइये कि क्यों कोई विचार उठता है। अपनी विचारों को बदलने का प्रयत्न मत कीजिये। इसे देखिये कि क्यों किसी तरह के कुछ विचार आप के मन में आते हैं, ताकि बिना किसी दबाव के आप हर विचार और एहसास को समझने लगें। जब कोई विचार उठे तो उसकी निंदा न करें। न कहें कि वह सही है या गलत, अच्छा है या बुरा। सिर्फ उसे देखें, जिससे एक समझ की शुरुआत हो, एक ऐसी चेतना जगने लगे जो हर</p>

<p>every kind of feeling. You will know every hidden secret thought, every hidden motive, every feeling, without distortion, without saying it is right, wrong, good or bad. When you look, when you go into thought very very deeply, your mind becomes extraordinarily subtle, alive. No part of the mind is asleep. The mind is completely awake.</p>	<p>तरह के विचार, हर तरह की भावना को देखने में सजग हो। तो आप प्रत्येक छिपे हुए विचार को, गहरे छिपे प्रयोजनों को, प्रत्येक एहसास को बिना किसी प्रकार की छेड़खानी के समझने लगेंगे, बिना ये कहे कि वह सही है या गलत, अच्छा है या बुरा। जब आप देखते हैं, विचार की गहराइयों में जाते हैं, उसे, तो आपका मन अद्भुत रूप से सूक्ष्म हो जाता है, सजीव। मन का कोई हिस्सा सोया नहीं रहता। वो मन पूर्णतया जागरूक हो जाता है। यह तो केवल आधार हुआ। तब आपका मन विल्कुल शांत होता है। आपका पूरा वजूद पूर्णतया ठहर जाता है। तब उस स्थिरता से आगे, और गहराई में जाइये--यही सारी प्रक्रिया ध्यान है। किसी कोने में बैठ, ढेरों शब्दों को दोहराते जाना ध्यान नहीं है; न ही किसी चित्र के बारे में सोचना या किन्हीं अनोखी उन्मादपूर्ण कल्पनाओं में खो जाना ही ध्यान है।</p>
<p>That is merely the foundation. Then your mind is very quiet. Your whole being becomes very still. Then go through that stillness, deeper, further - that whole process is meditation. Meditation is not to sit in a corner repeating a lot of words; or to think of a picture and go into some wild, ecstatic imaginings. To understand the whole process of your thinking and feeling is to be free from all thought, to be free from all feeling so that your mind, your whole being becomes very quiet. And that is also part of life and with that quietness, you can look at the tree, you can look at people, you can look at the sky and the stars. That is the beauty of life.</p>	<p>अपने विचारों और भावनाओं की समस्त प्रक्रिया को समझना ही सारे विचारों से मुक्त होना है, सारी भावनाओं से मुक्ति होना है। ताकि आपका मन, आपका पूरा अस्तित्व, पूर्णतया शांत हो जाय। यह भी जीवन का अंग है और उस शांति से आप वृक्षों को देख सकते हैं, लोगों को देख सकते हैं, आकाश को और उसके सितारों को देख सकते हैं। जीवन का यही सौंदर्य है।</p>
<p><b>Talk To Students</b></p> <p><b>Chapter 7 On Violence</b></p>	<p><b>7. हिंसा</b></p>
<p>There is a great deal of violence in the world. There is physical violence and also inward violence. Physical violence is to kill another, to hurt other people consciously, deliberately, or without thought, to say cruel things, full of antagonism and hate; and inwardly, inside the skin, to dislike</p>	<p>विश्व में बहुत अधिक हिंसा है। शारीरिक हिंसा के साथ आंतरिक हिंसा भी। शारीरिक हिंसा का अर्थ है दूसरों की हत्या करना, जान-बूझ कर, सोच-समझ कर दूसरों को चोट पहुंचाना, या बिना सोचे समझे, घृणा और द्वेष से भरी क्रूर बातें कहना; और भीतर से अर्थात् मन ही मन दूसरों से नफरत करना, आलोचना करना, उन्हें</p>

<p>people, to hate people, to criticize people. Inwardly, we are always quarrelling, battling, not only with others, but with ourselves. We want people to change, we want to force them to our way of thinking.</p>	<p>पसंद न करना। भीतर हम सदा झगड़ते रहते हैं, लड़ते, न केवल दूसरों से वरन अपने से भी। हम चाहते हैं कि लोग बदलें, हम उन्हें अपने विचारों के अनुकूल होने के लिये मजबूर करना चाहते हैं।</p>
<p>In the world, as we grow up, we see a great deal of violence, at all levels of human existence. The ultimate violence is war - the killing for ideas, for so called religious principles, for nationalities, the killing to preserve a little piece of land. To do that, man will kill, destroy, maim and also be killed himself. There is enormous violence in the world; the rich wanting to keep people poor and the poor wanting to get rich and in the process hating the rich. And you, being caught in society, are also going to contribute to this.</p>	<p>ज्यों-ज्यों हम बड़े होते हैं तो विश्व में हमें बड़े पैमाने पर हिंसा नज़र आती है, मानव अस्तित्व के सभी स्तरों पर। हिंसा का चरम रूप युद्ध है--विचारों के लिए खून-खराबा, तथाकथित धर्म सिद्धांतों के लिये हो, राष्ट्रियताओं के लिये, या भूमि के किसी छोटे से टुकड़े के लिये। इसके लिये मनुष्य हत्या करेगा, बरबादी करेगा, दूसरों को अपंग बनायेगा, और स्वयं भी मरेगा। विश्व में ज़ोरों की हिंसा है। धनी व्यक्ति लोगों को निर्धन बनाये रखना चाहते हैं, जो ग़रीब हैं वे धनी होना चाहते हैं और इस दौड़ में अमीरों से घृणा करते हैं। और समाज में जकड़े होने के कारण आप भी इसी को बढ़ावा देते हैं।</p>
<p>There is violence between husband, wife and children. There is violence, antagonism, hate, cruelty, ugly criticism, anger - all this is inherent in man, inherent in each human being. It is inherent in you. And education is supposed to help you to go beyond all that, not merely to pass an examination and get a job. You have to be educated so that you become a really beautiful, healthy, sane, rational human being, not a brutal man with a very clever brain who can argue and defend his brutality. You are going to face all this violence as you grow up. You will forget all that you have heard here, and will be caught in the stream of society. You will become like the rest of the cruel, hard, bitter, angry, violent world and you will not help to bring about a new society, a new world.</p>	<p>पति, पत्नी और बच्चों के बीच भी हिंसा है। हिंसा है, द्वेष, घृणा, क्रूरता, गंदी आलोचना, क्रोध है--और यह सब मनुष्यों में, प्रत्येक मनुष्य में जन्मजात है। यह आप में भी छिपा है। और यह माना जाता है कि शिक्षा इन सबसे निकलने में आपकी सहायता करेगी, न कि केवल परीक्षा पास करके नौकरी पा लेने में। आपको शिक्षित होना है ताकि आप सचमुच ही सुंदर हो पाएं, स्वस्थ, समझदार, विवेकपूर्ण व्यक्ति बन सकें, न कि एक चतुर दिमाग वाले बर्बर व्यक्ति जो अपनी बर्बरता के समर्थन में तर्क कर सकता है। जैसे-जैसे आप बड़े होंगे, आपको इस हिंसा का सामना करना होगा। जो भी आप ने यहां सुना उसे आप भूल जायेंगे और समाज की धारा में बह जायेंगे। आप भी बाकी सब जैसे हो जायेंगे, क्रूर, कठोर, कड़वे, क्रोधी और हिंसक, और एक नये समाज, नई दुनिया बनाने में, आप सहायक नहीं होंगे।</p>

<p>But a new world is necessary. A new culture is necessary. The old culture is dead, buried, burnt, exploded, vapourized. You have to create a new culture. A new culture cannot be based on violence. The new culture depends on you because the older generation has built a society based on violence, based on aggressiveness and it is this that has caused all the confusion, all the misery. The older generations have produced this world and you have to change it. You cannot just sit back and say, "I will follow the rest of the people and seek success and position." If you do, your children are going to suffer. You may have a good time, but your children are going to pay for it. So, you have to take all that into account, the outward cruelty of man to man in the name of god, in the name of religion, in the name of self-importance, in the name of the security of the family. You will have to consider the outward cruelty and violence, and the inward violence which you do not yet know.</p>	<p>परंतु एक नया विश्व तो आवश्यक है, एक नई संस्कृति आवश्यक है। पुरानी संस्कृति मृत है, उसको दफना दिया गया है, वह भस्म हो चुकी है, धज्जीयां उड़ चुकी हैं उसकी, भाप बन उड़ गई है आपको एक नई संस्कृति का निमार्ण करना है। नवीन संस्कृति हिंसा पर आधारित नहीं हो सकती। नवीन संस्कृति आप पर निर्भर है, क्योंकि पुरानी पीढ़ी ने जो समाज बनाया है वो हिंसा पर, आक्रामकता पर आधारित है, और यही है जिसने तमाम भ्रांतियों को, तमाम कष्ट को जन्म दिया है। पुरानी पीढ़ी ने इस संसार को बनाया है और आपको इसे बदलना है। आप हाथ पर हाथ धर कर यह नहीं कह सकते “मैं दूसरे लोगों के पीछे चलूंगा और सफलता तथा पद प्राप्त करूंगा।” यदि आप ऐसा करते हैं तो आपके बच्चे कष्ट उठाने जा रहे हैं। आप मौज-मस्ती कर सकते हैं परंतु आपके बच्चों को इसका हिसाब चुकाना पड़ेगा। इसलिये आपको इस सबको ध्यान में रखना होगा। ईश्वर के नाम पर, धर्म के नाम पर, आत्म-गौरव के नाम पर, परिवार की सुरक्षा के नाम पर, मनुष्य-मनुष्य के लिये जो क्रूरता दिखाता है उसका ध्यान रखना होगा। बाह्य क्रूरता और हिंसा का ध्यान रखना होगा और साथ ही भीतर की हिंसा का भी, जिसे आप अभी नहीं जानते।</p>
<p>You are still young but as you grow older you will realize how inwardly man goes through hell, goes through great misery, because he is in constant battle with himself, with his wife, with his children, with his neighbours, with his gods. He is in sorrow and confusion and there is no love, no kindness, no generosity, no charity. And a person may have a Ph.D after his name or he may become a businessman with houses and cars but if he has no love, no affection, kindness, no consideration, he is really worse than an animal because he contributes to a world that is destructive. So, while you are young, you have to know all these things. You have to be shown all these things. You have to be exposed to all these things so that your mind begins to think. Otherwise you will become like the rest of the world. And without love, without</p>	<p>आप अभी छोटे हैं, परंतु जैसे-जैसे आप बड़े होंगे आप महसूस करेंगे कि कैसे भीतर से मनुष्य नरक भोग रहा है, घोर कष्ट से गुजर रहा है; क्योंकि वह निरंतर युद्ध में है, अपने-आप से, अपनी पत्नी से, बच्चों से, पड़ोसियों से, अपने देवताओं से। वह दुख और भ्रांति में है और उसमें प्रेम, दयालुता, उदारता, परोपकार का बिलकुल अभाव है। किसी व्यक्ति के नाम के पीछे पी०एच०डी० की डिग्री लगी हो सकती है, या वो ऐसा व्यापारी बन सकता है जिसके पास अनेक मकान हों व मोटरें हों, परंतु यदि उसके पास प्रेम, स्नेह, दयालुता, उदारता नहीं है तो वास्तव में वह एक पशु से भी बदतर है क्योंकि वह संसार को और विनाशकारी ही बना रहा है। तो बचपन में ही आपको इन सब बातों को जानना चाहिये। आपको ये सब बातें स्पष्ट करा दी जानी चाहिये। आपके सामने ये सब बातें खोल देनी चाहिये ताकि आप विचार कर सकें। अन्यथा आप सारे संसार की तरह ही</p>

<p>affection, without charity and generosity life becomes a terrible business. That is why one has to look into all these problems of violence. Not to understand violence is to be really ignorant, is to be without intelligence and without culture. Life is something enormous, and merely to carve out a little hole for oneself and remain in that little hole, fighting or everybody, is not to live. It is up to you. From now on you have to know about all these things. You have to choose deliberately to go the way of violence or to stand up against society.</p>	<p>हो जायेंगे। और बिना प्रेम के, स्नेह के, उदारता तथा परोपकार के, जीवन एक भयानक चीज़ हो जाती है। इसीलिए हमें हिंसा की इन तमाम समस्याओं को समझना होगा। हिंसा को न समझने का अर्थ है वास्तव में मूर्ख बने रहना, बुद्धि और संस्कृति से कोरे। जीवन बहुत विशाल है और उसमें अपने लिये केवल एक छोटी सी मांद बना लेना तथा उसी में बने रहना, एक दूसरे से लड़ते-झगड़ते हुए, यह तो जीना नहीं है। सब आप ही पर निर्भर है। अभीसे आपको इन सब के बिषय में जानना होगा। आपको सोच-विचार कर यह निश्चय करना होगा कि आपको हिंसा का मार्ग चुनना है अथवा समाज के विरुद्ध खड़े होना है।</p>
<p>Be free, live happily, joyously, without any antagonism, without any hate. Then life becomes something quite different. Then life has a meaning, is full of joy and clarity.</p>	<p>स्वतंत्र रहें और बिना किसी घृणा अथवा द्वेष के, आनंद से, उल्लास से जीयें। तब जीवन पूर्णतया कुछ अलग ही हो जाता है। तब जीवन का कोई अर्थ होता है, वह आनंद और निर्मलता से भरा।</p>
<p>When you woke up this morning, did you look out of the window? If you did, you would have seen those hills become saffron as the sun rose against that lovely blue sky. And as the birds began to sing and the early morning cuckoo cooed, there was a deep silence all around, a sense of great beauty and loneliness, and if one is not aware of all that, one might just as well be dead. But only a very few people are aware. You can be aware of it only when your mind and heart are open, when you are not frightened, when you are no longer violent. Then there is joy, there is an extraordinary bliss of which very few people know, and it is part of education to bring about that state in the human mind.</p>	<p>आज सबेरे जब आप जगे तो क्या आपने खिड़की के बाहर झाँका? यदि आपने देखा होता तो आपे उन पहाड़ियों को केसरिया होते देखते, जैसे-जैसे उस सुंदर नीले आकाश में वो सूर्य धीरे-धीरे ऊपर उठा और जैसे ही पक्षी गाने लगे और तड़के सबेरे की कोयल कूकने लगी, चारों ओर एक गहरी शांति, अतीव सौंदर्य और एकांत का बोध छाया था। और यदि कोई इस सबके प्रति जागा हुआ नहीं है तो वह तो बस मुर्दा ही है। परंतु बहुत थोड़े से ही लोग जागरूक हैं। जागुरक आप तभी हो सकते हैं, जब आपका मन और आपका हृदय खुला हो, जब आप भयभीत न हों, जब आप हिंसक न हों। तभी वहां आनंद है, वहां अद्भुत उल्लास है जिसका स्वाद बहुत कम लोगों को पता है और मानव मन में ऐसी अवस्था को जगाना भी शिक्षा का ही काम है।</p>
<p><b>Student:</b> Will complete destruction of society bring about a new culture, Sir?</p>	<p><b>छात्र :</b> क्या समाज का पूर्ण विनाश एक नवीन संस्कृति उत्पन्न करेगा?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Will complete destruction bring about a new culture? You know there have been</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या समाज का पूर्ण विनाश एक नवीन संस्कृति उत्पन्न करेगा? आप जानते हैं अनेक क्रान्तियां</p>

<p>revolutions - the French Revolution, the Russian Revolution, the Chinese Revolution They destroyed everything to start anew. Have they produce anything new? Every society has three stages or hierarchies the high, the middle, the low; the high being the aristocracy the rich people, the clever people; then the middle class, who are always working, then the labourer. Now each is in battle with the other. The middle wants to get to the top and the bring about a revolution and then when they get to the top they hold on to their positions, their prestige, their welfare, their fortunes, and again the new middle class tries to come to the top. The low trying to reach the middle, and the middle trying to reach the top; this is the battle going on all the time, throughout society and in all cultures. And the middle says: "I am going to get to the top and revolutionize things", and when it gets to the top, you see what it does. It knows how to control people through thought, through torture, through killing, through destruction, through fear.</p>	<p>हुई हैं--फ्रांस की क्रांति, रूस की क्रांति, चीन की क्रांति। नये सिरे से शुरू करने के लिये उन्होंने प्रत्येक वस्तु को नष्ट कर दिया। क्या उन्होंने कोई नयी चीज उत्पन्न की? प्रत्येक समाज में तीन पद-श्रेणियां होती हैं--उच्च, मध्य, निम्न। उच्च वर्ग में अभिजात, धनी और चतुर लोग होते हैं, फिर मध्यम वर्ग आता है जो सदा काम में जुटा रहता है, फिर आते हैं मजदूर। हर कोई एक दूसरे से भिड़ा हुआ है। मध्यम वर्ग चोटी पर पहुंचना चाहता है और क्रांति करता है। और जब वे चोटी पर पहुंचते हैं, तो अपने पद, अपनी प्रतिष्ठा, अपने धन, सम्पत्ति से चिपक जाते हैं और तब फिर एक नवीन मध्यम वर्ग चोटी पर आने की चेष्टा करता है। निचला वर्ग मध्य में पहुंचना चाहता है, और मध्यम वर्ग चोटी पर पहुंचना चाहता है। यही संघर्ष हर समय चलता रहता है, पूरे समाज में, सभी संस्कृतियों में। और मध्यम वर्ग कहता है, "मैं चोटी पर पहुंचने और क्रांति करने जा रहा हूं।" और जब वह चोटी पर पहुंचता है, मालूम है वह क्या करता है। वह जानता है कि कैसे लोगों पर नियंत्रण करना है, विचार द्वारा, ज़ोर-जुल्म से, खून-खराबे से, बरबादी के द्वारा, भय के द्वारा।</p>
<p>So, through destruction you can never produce anything. But if you understand the whole process of disorder and destruction, if you study it, not only outwardly but in yourself, then out of that understanding, care, affection, love, out of that comes a totally different order. But if you do not understand, if you merely revolt, it is the same pattern repeated again and again, because we human beings are always the same. You know, it is not like a house that can be pulled down and a new house built. Human beings are not made that way, because human beings are outwardly educated, cultured, clever, but inwardly, they are violent. Unless that animal instinct is fundamentally changed, whatever the outward circumstances are, the inward always overcomes the outer. Education is the change of the inner man.</p>	<p>तो विनाश से आप कभी कुछ नहीं बना सकते। परंतु यदि आप अव्यवस्था तथा विनाश की समस्त प्रक्रिया को समझते हैं, यदि आप उसका अध्ययन करते हैं, केवल बाहर से ही नहीं वरन् अंदर भी, तब उस समझ से, उस सावधानी, स्नेह और प्रेम से, एक बिलकुल भिन्न प्रकार की व्यवस्था आती है। परंतु यदि आप समझते नहीं सिर्फ विद्रोह करते हैं तो वही व्यवस्था बार-बार दोहराई जाती है। क्योंकि हम मनुष्य तो सदा वही हैं। जानते हैं, यह किसी मकान की तरह नहीं है जिसे गिरा कर कोई दूसरा मकान बना लें। मनुष्य इस प्रकार से नहीं बनते, क्योंकि मनुष्य बाहर से तो शिक्षित हैं, सुसंस्कृत, चतुर परंतु अंदर से वे हिंसक हैं। जब तक अंदर की पाशविक मूल-प्रवृत्ति को मौलिक रूप से नहीं बदला जाता तो बाहर से चाहे जो भी परिस्थितियां रहें, जो अंदर है वही बाहरी पर भारी पड़ता है। शिक्षा मनुष्य का आंतरिक परिवर्तन है।</p>

<b>Student:</b> Sir, you said you must change the world. How can you change it, sir?	<b>छात्र :</b> आप कहते हैं कि हमें संसार को हर हाल में बदलना है, हम उसे कैसे बदल सकते हैं?
<b>Krishnamurti:</b> What is the world? The world is where you live - your family, your friends, your neighbours. And your family, your friends, your neighbours can be extended and that is the world. Now, you are the centre of that world. That is the world you live in. Now how will you change the world? By changing yourself.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> संसार क्या है? संसार वही है जहां आप रहते हैं--आपका परिवार, आपके मित्र, आपके पड़ोसी। और आपके परिवार, आपके मित्र, आपके पड़ोसियों का विस्तार किया जा सकता है और यही संसार है। आप उस संसार के केन्द्र हैं। यही संसार है जिसमें आप रहते हैं, तो आप कैसे इसे बदलेंगे? अपने को बदल करके।
<b>Student:</b> Sir, how can you change yourself?	<b>छात्र:</b> आप कैसे अपने को बदल सकते हैं?
<b>Krishnamurti:</b> How can you do it? First see it. First see that you are the centre of this world. You with your family, are the centre. That is the world and you have to change and you ask, "How am I to change?" How do you change? That is one of the most difficult things - to change - because most of us do not want to change. When you are young, you want to change. You are full of vitality, full of energy, you want to climb trees, you want to look, you are full of curiosity and as you get a little older, go to college, you already begin to settle down. You do not want to change. You say, "For god's sake, leave me alone." Very few people want to change the world and still fewer want to change themselves, because they are the centre of the world in which they live. And to bring about a change requires tremendous understanding. One can change from this to that. But that is not change at all. When people say, "I am changing from this to that", they think they are moving. They think they are changing. But in actual fact they have not moved at all. What they have done	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप कैसे इसे कर सकते हैं? पहले उसे देखें। पहले देखें कि आप इस संसार के केन्द्र हैं। आप और आपका परिवार इसके केन्द्र हैं। यही संसार है और आपको उसे बदलना है और आप पूछते हैं, "मैं कैसे बदलूं?" आप कैसे बदलते हैं? यह बदलना ही एक सबसे मुश्किल सवाल है, क्योंकि हममें से अधिकांश बदलना नहीं चाहते। जब तक आप जवान हैं, तभी तक आप बदलना चाहते हैं। आप शक्ति से, ऊर्जा से भरे हैं। आप वृक्षों पर चढ़ना चाहते हैं, देखना चाहते हैं, आप जिज्ञासा से भरे हैं। परंतु जैसे ही आप कुछ बड़े होने लगते हैं, कालेज जाते हैं, आप जमने-ठहरने लगते हैं। तब आप बदलना नहीं चाहते। आप कहते हैं, "ईश्वर के लिये मुझे ऐसे ही छोड़ दो।" बहुत कम लोग विश्व को बदलना चाहते हैं और उससे भी कम लोग हैं जो खुद को बदलना चाहते हैं क्योंकि वे उस विश्व के केन्द्र हैं जिसमें वे रहते हैं और कोई परिवर्तन लाने के लिये अत्यधिक समझ की आवश्यकता होती है। हम एक अवस्था से दूसरी अवस्था में बदल सकते हैं। परंतु वह बिलकुल परिवर्तन नहीं है। जब लोग कहते हैं, "मैं एक अवस्था से दूसरी अवस्था में बदल रहा हूँ", वे सोचते हैं कि वे गतिशील हैं। वे सोचते हैं, वे बदल रहे हैं।

<p>is projected an idea of what they should be. The idea of what they "should be" is different from "what is". And the change towards "what should be" is they think, a movement. But it is not a movement. They think it is change, but what is change is first to be aware of what actually "is" and to live with it, and then one observes that the "seeing" itself brings about change.</p>	<p>परंतु वास्तव में वे लेशमात्र भी नहीं बदले। जो कुछ उन्होंने किया वह बस यही है कि उन्होंने एक आदर्श बना लिया कि उन्हें क्या होना चाहिये। “जो होना चाहिये” उसका विचार उससे भिन्न है “जो वास्तव में वे हैं”। वे समझते हैं कि “जो होना चाहिये” की ओर परिवर्तन एक गति है। परंतु वह कोई गति नहीं है। वे सोचते हैं, वह एक परिवर्तन है, परंतु परिवर्तन सगसे पहले “जो वास्तव में है” उसके प्रति जागना है और उसके साथ रहना है, और तब व्यक्ति समझ पाता है कि स्वयं को “देखना” ही परिवर्तन लाता है।</p>
<p><b>Student:</b> Is there any need for one to be serious?</p>	<p><b>छात्र :</b> क्या यह आवश्यक है कि व्यक्ति गंभीर हो?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Is there any need for one to be serious? very good question, sir. First of all, what do you mean by serious? Have you ever thought what it means to be serious? Is it the stopping of laughter? To have a smile on your face, would that indicate that you are not serious? To want to look at a tree and see the beauty of a tree, would that be lack of seriousness? To want to know why people look that way, what they wear, why they talk that way, would that be, lack of seriousness? Or would seriousness be always having a long face, always saying: "Am I doing the right thing, am I conforming to a pattern?" I should say that would not be seriousness at all. Trying to meditate is not seriousness, trying to follow the pattern of society is not seriousness - whether it is the pattern of Buddha or Sankara. Merely to conform is never to be serious. That is mere imitation. So you can be serious with a smile on your face, you can be serious when you look at a tree, you can be serious when you paint a picture, when you are listening to music. The quality of seriousness is to pursue to the very end a thought, an idea, a feeling; to go to the very end of it, not to be dissuaded by any other factor; to enquire into every thought to the very end of it whatever may happen to you, even if you have to starve in that process, lose all your property, everything; to go to the very end of</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या व्यक्ति के लिये गंभीर होने की कोई आवश्यकता है? यह एक बहुत अच्छा प्रश्न है। सर्वप्रथम गंभीर से आपका क्या अर्थ है? क्या आपने कभी सोचा है कि गंभीर होने का क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ हंसना बंद कर दें? चेहरे पर मुस्कुराहट का होना क्या यह इंगित करता है कि आप गंभीर नहीं हैं? किसी वृक्ष को, उसके सौंदर्य को देखने की इच्छा करना क्या गंभीरता का अभाव है? यह जानने की इच्छा करना कि लोग उस तरह क्यों दिखते हैं, वे क्या पहनते हैं, क्यों उस प्रकार बातें करते हैं, क्या यह सब गंभीरता का अभाव है? और क्या गंभीरता का अर्थ है कि हमेशा मुंह लटकाए रहें और हमेशा यही कहते रहें, “क्या मैं ठीक कह रहा हूँ, क्या मैं ठीक रास्ते पर हूँ?” मैं कहूँगा कि यह तो बिल्कुल गंभीरता नहीं है। ध्यान की कोशिश गंभीरता नहीं है। समाज के किसी ढांचे मुताबिक चलना गंभीरता नहीं है--चाहे वह ढांचा बुद्ध का हो या शंकराचार्य का। किसी के अनुरूप ढलना मात्र तो किसी भी प्रकार से गंभीरता नहीं है। वह सिर्फ नकल है। तो आप मुस्कुराते चेहरे के साथ भी गंभीर हो सकते हैं; किसी वृक्ष को देखते हुए आप गंभीर हो सकते हैं, संगीत सुनते हुए अथवा चित्र बनाते हुए भी। गंभीरता का लक्षण यह है कि आप किसी विचार, किसी सोच या अनुभूति की तह तक जायें, बिना किसी अड़चन के उसकी जड़ तक पहुँचें। प्रत्येक विचार का उसके अंत तक पीछा करें, उसमें आपका चाहे कुछ भी हो जाय, चाहे भूखों मरना पड़े, चाहे आप सारी सम्पत्ति, अपना सब कुछ खो दें; किसी विचार के अंत तक जाना ही गंभीर होना है क्या मैंने आपके प्रश्न का उत्तर दे दिया?</p>

thought is to be serious. Have I answered your question, sir?	
<b>Student:</b> Yes sir.	<b>छात्र :</b> हां।
<b>Krishnamurti:</b> I am afraid I have not. You have agreed very easily because you have not really understood what I said. Why do you not stop me and say: "Look, I do not understand what you are talking about." That would be straight, that would be serious. If you do not understand something, it does not matter who says it, even god himself, say, "I do not understand what you are talking about, tell me more clearly; that would be serious. But to meekly agree because a man says so, that shows lack of seriousness. Seriousness consists in seeing things clearly, in finding out, in not accepting. But later on when you get married and have children and responsibilities there is a different kind of seriousness. Then you do not want to break the pattern, you want shelter, you want to live in safe enclosure, free of all revolutions.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> मुझे तो नहीं लगता। आप बहुत आसानी से सहमत हो गये हैं, क्योंकि मैंने जो कहा उसे वास्तव में आपने समझा नहीं। आप मुझे रोक कर क्यों नहीं कहते, "देखिये, मेरी समझ में नहीं आता। आप क्या बात कर रहे हैं?" वह सीधी बात होती, गंभीरता होती। यदि कोई बात समझ नहीं आती, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता कि कौन कह रहा है, चाहे कोई देवता भी क्यों न हो, आप कहें, "मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा आप क्या बात कर रहे हैं, मुझे और स्पष्टता से समझाइये," यह गंभीरता होगी। परंतु चुपचाप सहमत हो जाना, क्योंकि कोई ऐसा कहता है, यह गंभीरता नहीं होगी। गंभीरता स्पष्ट रूप से देखने में है, पता लगाने में है, न कि स्वीकार में। परंतु जब आप विवाह कर लेते हैं, संतान और जिम्मेदारियां होती है, एक दूसरे प्रकार की गंभीरता होती है। तब आप ढर्रे को, ढांचे को नहीं तोड़ना चाहते, आप आश्रय चाहते हैं, आप एक सुरक्षित घेरे में रहना चाहते हैं, सभी क्रान्तियों से मुक्त।
<b>Student:</b> Why is one seeking to have pleasure and discard pain?	<b>छात्र:</b> व्यक्ति क्यों दुख से भागता है और सुख की कामना करता है?
<b>Krishnamurti:</b> You are rather serious this morning, aren't you? Why? Because you think pleasure is more convenient, is it not? Sorrow is painful. The one you want to avoid, and the other you want to cling to. Why? It is a natural instinct to avoid pain, is it not? If I have a toothache, I want to avoid it. I want to go for a walk which is pleasurable. The problem is not pleasure and pain, but the avoidance of one or the other. Life is both pleasure and pain, is it not? Life is both darkness and light. On a day like this, there are clouds and there is the sun shining; then there is winter and spring; they are part of life, part of existence. But why should	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आज आप कुछ गंभीर हैं, क्या नहीं है? क्यों? क्योंकि आप सोचते हैं सुखलालसा अधिक सुविधाजनक है, क्या नहीं है? दुख से कष्ट होता है। एक से आप बचना चाहते हैं और दूसरे से चिपकना। क्यों? दुख से बचना एक स्वाभाविक मूल-प्रवृत्ति है, क्या नहीं है? यदि मरे दांत में दर्द है, मैं उससे बचना चाहता हूं। मैं टहलने जाना चाहता हूं जो कि सुखप्रद है। समस्या दुख और सुख की नहीं है वरन इस या उससे बचने की है। जीवन सुख और दुख दोनों ही है, क्या नहीं है? जीवन अंधकार और प्रकाश दोनों है आज यदि बादल है और सूर्य चमकता है तो कल जाड़ा आता है, बसंत ऋतु आती है; वे जीवन के अस्तित्व के, अंग हैं, परंतु क्यों हम एक से बचें और दूसरे के पीछे भागें?

<p>we avoid one and cling to the other? Why should we cling to pleasure and avoid pain? Why not merely live with both? The moment you want to avoid pain, sorrow, you are going to invent escapes, quote the Buddha, the Gita, go to the cinema or invent beliefs. The problem is not resolved by either sorrow or pleasure. So don't cling to pleasure or escape from pain. If you cling to pleasure what happens? You get attached, do you not? And if anything happens to the person to whom you are attached or to your property or to your opinion, you are lost. So you say there must be detachment. Do not be either attached or detached; just look at the facts, and when you understand the facts, then there is neither pleasure nor pain; there is merely the fact.</p>	<p>क्यों सुख के पीछे भागें और दुख से बचें, क्यों न दोनों के ही साथ बस रहें? जैसे ही आप दुख अथवा कष्ट से बचना चाहते हैं, आप बचने के रास्ते खोजने लगते हैं, बुद्ध अथवा गीता को उद्धृत करते हैं, सिनेमा जाते हैं, अथवा विश्वासों का आविष्कार करते हैं। समस्या का समाधान न तो दुख से होता है और न सुख से ही। इसलिये न तो सुख से चिपकें और न दुख से भागें। यदि सुख से आप चिपकते हैं तो क्या होता है? आप फंस जाते हैं, नहीं? और यदि उस व्यक्ति को कुछ हो जाए जिससे आप जुड़े हैं या आपकी संपत्ति को, आपके विश्वास को, तो आप कहीं के नहीं रहते। तो आप कहते हैं कि अनासक्ति होनी चाहिये। आप न तो आसक्त हों, न तो अनासक्त हों, केवल तथ्यों को देखें, और जब आप तथ्यों को समझ लेते हैं तब न तो वहां दुख रहता है न सुख, केवल तथ्य रह जाता है।</p>
<p><b>Talk To Students</b></p> <p><b>Chapter 8 On Image-Making</b></p>	<p><b>8. छवि-निर्माण</b></p>
<p>When we are very young it is a delight to be alive, to hear the birds of the morning, to see the hills after rain, to see those rocks shining in the sun, the leaves sparkling, to see the clouds go by and to rejoice on a clear morning with a full heart and a clear mind. We lose this feeling when we grow up, with worries, anxieties, quarrels, hatreds, fears and the everlasting struggle to earn a livelihood. We spend our days in battle with each other, disliking and liking, with a little pleasure now and then. We never hear the birds, see the trees as we once saw them, see the dew on the grass and the bird on the wing and the shiny rock on a mountainside glistening in the morning light. We never see all that when we are grown up. Why? I do not know if you have ever asked that question. I think it necessary to ask it. If you do not ask it now, you will soon be caught. You will go to college, get married, have children,</p>	<p>जब हम बहुत छोटे होते हैं तो जीवन एक आनंद होता है। सबेरे पक्षियों का कलरव सुनना, वर्षा से धुली पहाड़ियों को, धूप में चमकती उन चट्टानों को, पत्तियों को, उमड़ते-धुमड़ते मेघों को देखना और निर्मल प्रभात में भावपूर्ण हृदय तथा निर्मल मन से आनंदित होना। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम उस एहसास को खो देते हैं, चिन्ताएं, परेशानियां, झगड़े, हमारे द्वेष और भय और जीविका कमाने के लिए होने वाला हमारा सतत संघर्ष आदि हमें घेर लेते हैं। हमारे दिन एक दूसरे से लड़ते-झगड़ते हुए, पसंद-नापसंद में बीतते हैं, थोड़ा बहुत आनंद वो भी बस कभी-कभार। अब हम न तो कभी पक्षियों का कलरव सुनते हैं और न वृक्षों को देखते हैं, जैसे कभी देखा करते थे, सुबह की नरम धूप में ढलान की चमकती चट्टानें, उड़ते पक्षी, घास पर पड़ी ओस के बूंदें, अब हमारा ध्यान नहीं खींचती। जब हम बड़े हो जाते हैं तो हम यह सब कभी नहीं देखते। क्यों? मैं नहीं जानता कि आपने कभी यह प्रश्न किया या नहीं। मैं सोचता हूँ कि यह प्रश्न उठाना आवश्यक</p>

<p>husbands, wives, responsibilities, earn a livelihood, and then you will grow old and die. That is what happens to people. We have to ask now, why we have lost this extraordinary feeling for beauty, when we see flowers, when we hear birds? Why do we lose the sense of the beautiful? I think we lose it primarily because we are so concerned with ourselves. We have an image of ourselves.</p>	<p>है। यदि आप अभी नहीं पूछते तो शीघ्र ही आप फंस जायेंगे। कालेज जायेंगे, विवाह करेंगे, बच्चे होंगे, पति-पत्नी, जिम्मेदारियां, रोजी-रोटी कमाओ, और फिर आप बूढ़े होंगे और मर जायेंगे। यही तो है जो लोगों के जीवन में होता है। तो हमें अभी पूछना होगा कि सौंदर्य की इस अद्भुत अनुभूति को हमने क्यों खो दिया है, अब जब हम फूल देखते हैं, पक्षियों का कलरव सुनते हैं तो क्यों कुछ भी महसूस नहीं होता? सुंदरता का बोध हमें क्यों नहीं रहा? मैं समझता हूँ कि हमने उसे खो दिया क्योंकि हम अपने विषय में बड़े चिन्तित हैं। हमारे मन में, अपनी एक छवि है।</p>
<p>Do you know what an image is? It is something carved by the hand, out of stone, out of marble, and this stone carved by the hand is put in a temple and worshipped. But it is still handmade, an image made by man. You also have an image about yourself, not made by the hand but made by the mind, by thought, by experience, by knowledge, by your struggle, by all the conflicts and miseries of your life. As you grow older, that image becomes stronger, larger, all-demanding and insistent. The more you listen, act, have your existence in that image, the less you see beauty, feel joy at something beyond the little promptings of that image.</p>	<p>क्या आप जानते हैं कि छवि क्या होती है? वह हाथ से गढ़ी हुई कोई वस्तु है, किसी पत्थर में, संगमरमर में, और उस हाथ से गढ़े पत्थर को मंदिर में स्थापित कर दिया जाता है, फिर उसकी पूजा की जाती है। परंतु है वह हाथ से बनी हुई ही, मनुष्य की बनाई हुई एक मूर्ति। आपकी अपने बारे में भी एक छवि है, हाथ से बनाई हुई नहीं वरन मनसे बनाई हुई, विचार द्वारा, अनुभव, ज्ञान द्वारा, जीवन के संघर्षों, द्वन्द्वों तथा कष्टों के द्वारा। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं वह छवि मज़बूत होती जाती है, पक्की, जिद्दी, उसकी मांगें बढ़ती चली जाती हैं। जितना आप उसकी सुनते हैं उसके अनुसार चलते हैं, जितना उस छवि में खुद को झोंकते हैं, उतना ही कम सुंदरता को देख पाते हैं, उस छवि के क्षुद्र निर्देशों के परे का जो आनंद है उसे कम ही जी पाते हैं।</p>
<p>The reason why you lose this quality of fullness is because you are so self- concerned. Do you know what that phrase "to be self-concerned" means? It is to be occupied with oneself, to be occupied with one's capacities whether they are good or bad, with what your neighbours think of you, whether you have a good job, whether you are going to become an important man, or be thrown aside by society. You are always struggling in the office, at home, in the fields; wherever you are, whatever you do, you are always in conflict, and you do not seem to be able to get out of conflict; not being able to get out of it, you create the image of a perfect state,</p>	<p>भरपूरता के इस गुण को आप क्यों खो देते हैं क्योंकि आप अत्यधिक आत्म-केन्द्रित है। क्या आप जानते हैं कि "आत्म-केन्द्रित होने" के क्या अर्थ है? इसका अर्थ है स्वयं अपने में व्यस्त रहना; अपनी क्षमताओं के बारे में कि वे अच्छी हैं या बुरी, आपके पड़ोसी आपके विषय में क्या सोचते हैं, आपको एक अच्छी नौकरी मिली है या नहीं, आप एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होने जा रहे हैं अथवा समाज द्वारा, उपेक्षित होने जा रहे हैं। दफ्तर में, घर में, खेतों में, जहाँ कहीं भी हों आप निरंतर संघर्ष में रहते हैं; जो कुछ भी कर रहे हों, आप सदा द्वंद्व में रहते हैं, और ऐसा लगता है कि आप उस द्वंद्व से निकल ही नहीं सकते और उसके बाहर न निकल पाने के कारण आपने एक पूर्ण राज्य की, स्वर्ग</p>

<p>of heaven, of God - again another image made by the mind. You have images not only inwardly but also deeper down, and they are always in conflict with each other. So the more you are in conflict - and conflict will always exist so long as you have images, opinions, concepts, ideas about yourself - the greater will be the struggle.</p>	<p>की, ईश्वर की छवियां बना ली हैं--फिर मन की ही बनाई एक और छवि। छवियां आपके चेतन मन में ही नहीं वरन् और गहराई में भी हैं और वे सदा एक दूसरे से टकराती रहती हैं। तो जितना अधिक आप द्वंद्व में रहते हैं, संघर्ष उतना ही अधिक होगा--और द्वंद्व तो तब सदा रहेगा ही जब तक आपके पास अपने विषय में छवियां हैं, अपने मत हैं, अवधारणाएं हैं, विचार हैं।</p>
<p>So the question is: Is it possible to live in this world without an image about yourself? You function as a doctor, a scientist, a teacher, a physicist. You use that function to create the image about yourself, and so, using function, you create conflict in functioning, in doing. I wonder if you understand this? You know, if you dance well, if you play an instrument, a violin, a veena, you use the instrument or the dance to create the image about yourself to feel how marvellous you are, how wonderfully well you play or dance. You use the dancing, the playing of the instrument, in order to enrich your own image of yourself. And that is how you live, creating, strengthening that image of yourself. So there is more conflict; the mind gets dull and occupied with itself; and it loses the sense of beauty, of joy, of clear thinking.</p>	<p>ते प्रश्न यह है: क्या इस विश्व में, अपने बारे में कोई छवि बनाए बिना रहना संभव है? आप एक डाक्टर, एक वैज्ञानिक, एक अध्यापक, एक भौतिकी-शास्त्री के रूप में कार्य करते हैं। इस काम का उपयोग आप अपने बारे में कोई छवि बनाने के लिए करते हैं, और इस प्रकार कार्य का उपयोग करते हुए, आप कार्य में ही द्वंद्व खड़ा कर लेते हैं। सचमुच क्या आप इसे समझ रहे हैं। मालूम है, यदि आप अच्छा नाचते हैं, या कोई साज, वीणा या वायलिन बजा लेते हैं तो उस साज का, उस डांस का उपयोग आप अपने बारे में छवि बनाने के लिए करते हैं--यह महसूस करने के लिए कि आप कितने गजब हैं, कितनी कमाल की वीणा बजाते हैं अथवा नृत्य करते हैं। नृत्य का, साज बजाने का उपयोग आप अपनी छवि को सुदृढ़ करने के लिए करते हैं। आप बस इसी तरह जीते हैं, अपनी छवि बनाते और उसे मज़बूत करते हुए। अतः द्वंद्व बढ़ता जाता है, मन मंद हो जाता है, अपने में ही उलझा रहने लगता है। वह सौंदर्य का, आनंद का, स्पष्ट चिंतन का बोध खो देता है।</p>
<p>I think it is part of education to function without creating images. You then function without the battle, the inward struggle that goes on within yourself.</p>	<p>मुझे लगता है, बिना कोई छवि बनाए ही कार्य करना शिक्षा का एक अंग है। तब आप बिना किसी आंतरिक संघर्ष से, जो भीतर निरंतर चलता ही रहता है, बिना किसी कलह-क्लेश के, मुक्त होकर अपना कार्य करते हैं।</p>
<p>There is no end to education. It is not that you read a book, pass an examination and finish with education. The whole of life, from the moment you are born till the moment you die</p>	<p>शिक्षा का कोई अंत नहीं है। ऐसा नहीं कि पुस्तक पढ़ें, परीक्षा पास करें और बस हो गई शिक्षा। समस्त जीवन, जन्म से मृत्यु तक, सीखने की प्रक्रिया है। सीखने का कोई अंत नहीं है और यही सीखने का शाश्वत गुण है।</p>

<p>is a process of learning. Learning has no end and that is the timeless quality of learning. And you cannot learn if you are in battle, if you are in conflict with yourself, with your neighbour, with society. You are always in conflict with society, with your neighbour as long as there is an image. But if you are learning about the mechanics of putting together that image, then you will see that you can look at the sky, then you can look at the river and the raindrops on the leaf, feel the cool air of a morning and the fresh breeze among the leaves. Then life has an extraordinary meaning. Life in itself, not the significance given by the image to life - life itself has an extraordinary meaning.</p>	<p>और आप सीख नहीं सकते, यदि आप संघर्षरत है, अपने-आप से, पड़ोसी से, या समाज से टकराव में हैं तो। जब तक कोई छवि बची है, आप हमेशा समाज से, अपने पड़ोसी से टकराव में रहेंगे। परंतु यदि आप उस छवि को सहेजे रखने वाले ढंग-तरीकों के बारे में सीखने लगते हैं, तो आप देखेंगे कि अब आप आकाश को निहार सकते हैं, नदी को और पत्तों पर पड़ने वाली बारिश की बूंदों को देख सकते हैं, पत्तियों के बीच से बहने वाली सुबह की शीतल एवं स्वच्छ वायु को महसूस कर सकते हैं। तब जीवन का कुछ और ही अर्थ होता है। जीवन का अपना अर्थ, न कि जीवन की किसी छवि द्वारा दिया गया कोई महत्त्व--जीवन का अपने आप में एक अद्भुत अर्थ होता है।</p>
<p><b>Student:</b> When you are looking at a flower, what is your relationship with the flower?</p>	<p><b>छात्र:</b> जब आप किसी फूल को देख रहे होते हैं तो आपका उससे क्या सम्बन्ध होता है?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> You look at a flower, and what is your relationship to the flower? Do you look at the flower or do you think you are looking at the flower? You see the difference? Are you actually looking at the flower or you think you ought to look at the flower or are you looking at the flower with an image you have about the flower - the image being that it is a rose? The word is the image, the word is knowledge and therefore you are looking at that flower with the word, the symbol, with knowledge and therefore you are not looking at the flower. Or, are you looking at it with a mind that is thinking about something else?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप किसी फूल को देखते हैं, तो आपका उस फूल के साथ क्या सम्बन्ध होता है? क्या आप फूल को देखते हैं अथवा आप सोचते हैं कि आप फूल को देख रहे हैं? फर्क समझते हैं? क्या आप सचमुच फूल को देख रहे है या आप सोचते हैं कि आपको फूल को देखना चाहिये या फिर आप उस फूल को देख रहे हैं मन में उसकी कोई छवि लिए--छवि यानी जैसे कि वह एक गुलाब है? शब्द ही छवि है, शब्द ज्ञान है और इसलिये आप उस फूल को किसी शब्द, प्रतीक, या ज्ञान के माध्यम से देखते हैं और इसलिये आप उस फूल को देखते ही नहीं। या, क्या आप उसे एक ऐसे मन से देखते हैं जो किसी और चीज़ के बारे में सोच रहा है?</p>
<p>When you look at a flower without the word, without the image, and with a mind that is completely attentive, then what is the relationship between you and the flower? Have you ever done it? Have you ever looked at a flower without saying that is a rose? Have you</p>	<p>जब बिना किसी शब्द के, बिना किसी छवि के और एक ऐसे मन से जो पूर्णतया ध्यानपूर्ण है, आप किसी फूल को देखते हैं तो आप में और फूल में क्या सम्बन्ध होता है? क्या आपने कभी ऐसा किया है? क्या आपने कभी किसी फूल को देखा, बिना यह कहे कि यह गुलाब है? क्या कभी आपने किसी पुष्प को पूर्णतया देखा है, एक</p>

<p>ever looked at a flower completely, with total attention in which there is no word, no symbol, no naming of the flower and, therefore, complete attention? Till you do that, you have no relationship with the flower. To have any relationship with another or with the rock or with the leaf, one has to watch and to observe with complete attention. Then your relationship to that which you see is entirely different. Then there is no observer at all. There is only that. If you so observe, then there is no opinion, no judgement. It is what it is. Have you understood? Will you do it? Look at a flower that way. Do it, Sir, don't talk about it, but do it.</p>	<p>ऐसे समग्र ध्यान के साथ जिसमें कोई शब्द न हो, कोई प्रतीक नहीं, फूल का कोई नामांकन न हो और यँ बस पूर्ण ध्यान हो? तब तक आप ऐसा नहीं करते आपका पुष्प से कोई सम्बन्ध नहीं होता। किसी दूसरे के साथ, चाहे वह चट्टान हो अथवा किसी वृक्ष की पत्ती, सम्बन्ध होने के लिये हमें पूरे अवधान के साथ देखना होता है, निरीक्षण करना होता है। तब जिसे आप देखते हैं उसके साथ आपका सम्बन्ध पूर्णतया भिन्न प्रकार का होता है। फिर कोई देखने वाला नहीं होता। यदि आप इस प्रकार से देखते हैं तब कोई मत अथवा कोई निर्णय नहीं होता। वह वही है जो वह है। क्या आप समझे? क्या आप ऐसा करेंगे? किसी पुष्प को इस तरह देखिए। इसे करें, उसके विषय में चर्चा न करके उसे करें।</p>
<p><b>Student:</b> If you have lots of time, how would you spend it, Sir?</p>	<p><b>छात्र :</b> यदि आपके पास पर्याप्त समय हो तो उसे आप कैसे बिताएंगे?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> I would do what I am doing. You see, if you love what you are doing, then you have all the leisure that you need in your life. Do you understand what I have said? You asked me what I would do if I had leisure. I said, I would do what I am doing; which is to go around different parts of the world, to talk, to see people and so on. I do it because I love to do it; not because I talk to a great many people and feel that I am very important. When you feel very important, you do not love what you are doing; you love yourself and not what you are doing. So, your concern should be not with what I am doing, but with what you are going to do. Right? I have told you what I am doing. Now you tell me what you will do, when you have plenty of leisure.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> मैं वही करूंगा जो मैं कर रहा हूँ। यदि जो आप कर रहे हैं उससे आपका प्रेम है तब आपके पास वह तमाम विश्रांति है, जिसकी जीवन में आवश्यकता होती है। मैंने जो कहा क्या आप उसे समझे? आपने पूछा था, यदि मेरे पास अवकाश का समय हो तो मैं क्या करूंगा; मैंने कहा मैं जो कर रहा हूँ वही करूंगा; यानी कि विश्व के विभिन्न भागों में जाऊंगा, चर्चा करूंगा, लोगों से मिलूंगा बस यही। मैं ऐसा करता हूँ क्योंकि इससे मुझे प्रेम है; इसलिये नहीं कि मैं तो इतने लोगों से बात करता हूँ और मुझे लगने लगे कि मैं तो कुछ खास हूँ। जब आप अपने को बड़ा महत्वपूर्ण समझते हैं तब आप जो कर रहे हैं उससे प्रेम नहीं करते; आप अपने से प्रेम करते हैं, न कि उससे जो आप कर रहे हैं। इसलिये आपका लगाव इससे नहीं होना चाहिये कि मैं क्या कर रहा हूँ, बल्कि उससे होना चाहिए जो आप करने जा रहे हैं, ठीक? मैंने आपको बताया कि मैं क्या कर रहा हूँ। अब आप मुझे बतायें कि आप क्या करेंगे, यदि आपके पास खूब सारा समय हो तो ?</p>

<b>Student:</b> I would get bored, sir.	<b>छात्र :</b> मैं ऊब जाऊंगा।
<b>Krishnamurti:</b> You would get bored. Quite right. That is what most people are.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप ऊब जायेंगे। बिल्कुल ठीक। आमतौर पर लोग ऐसे ही हैं।
<b>Student:</b> How do I get rid of this boredom, sir?	<b>छात्र:</b> मैं इस ऊब से कैसे बचूं?
<b>Krishnamurti:</b> Wait, listen. Most people are bored. Why? You asked how to get rid of boredom. Now find out. When you are by yourself for half an hour, you are bored. So you pick up a book, chatter, look at a magazine, go to a cinema, talk, do something. You occupy your mind with something This is an escape from yourself. You have asked a question, Now, pay attention to what is being said. You get bored because you find yourself with yourself; and you have never found yourself with yourself. Therefore, you get bored. You say: Is that all I am? I am so small, I am so worried; I want to escape from all that. What you are is very boring, so you run away. But if you say, I am not going to be bored; I am going to find out why I am like this; I want to see what I am like actually then it is like looking at yourself in a mirror. There, you see very clearly what you are, what your face looks like. Then you say that you do not like your face; that you must be beautiful, you must look like a cinema actress. But if you were to look at yourself and say, "Yes, that is what I am; my nose is not very straight, my eyes are rather small, my hair is straight." You accept it. When you see what you are, there is no boredom. Boredom comes in only when you reject what you see and want to be something else. In the same way, when you can look at yourself inside and see exactly what you are, the seeing of it is not boring. it is extraordinarily interesting, because the more you see of it, the more there is to see. You can go deeper and deeper and wider and there is no end	<b>कृष्णमूर्ति :</b> ज़रा रुकें, सुनें। अधिकांश व्यक्ति ऊब से पीड़ित हैं, क्यों? आपने पूछा, ऊब से कैसे बचा जाय। अब पता लगायें। जब आप आधे घंटे भी अकेले होते हैं तो आप ऊब जाते हैं। इसलिये आप कोई पुस्तक उठा लेते हैं, बातचीत करते हैं, किसी पत्रिका को देखने लगते हैं, सिनेमा चले जाते हैं, कुछ न कुछ करते हैं। किसी न किसी वस्तु में अपने मन को लगाए रहते हैं। यह अपने से भागने वाली बात है। आपने एक प्रश्न पूछा, अब, जो कहा जा रहा है उस पर ध्यान दें। आप ऊबते हैं क्योंकि आप अपने को अपने ही साथ पाते हैं; और अपने साथ आप कभी रहे है नहीं। इसलिये आप ऊबते हैं। आप कहते हैं क्या बस यही मैं हूं? मैं इतना छोटा हूं, इतना चिंतित; मैं उस सबसे भागना चाहता हूं। जो आप हैं वह बड़ा ऊबाने वाला है, इसलिये आप भागते हैं; परंतु यदि आप कहें, मैं ऊबूंगा नहीं, पता लगाऊंगा कि क्यों मैं ऐसा हूं, मैं देखना चाहता हूं कि वास्तव में मैं कैसा हूं; तो यह दर्पण में अपने को देखने जैसा होगा। तब आप बड़ी स्पष्टता से देखते हैं कि आप क्या हैं, आपका चेहरा कैसा दिखता है। तब आप कहते हैं कि आपको अपना चेहरा पसंद नहीं, कि आपको सुंदर होना चाहिये, सिनेमा की किसी अभिनेत्री की तरह। परंतु यदि आप अपने को देखें और कहें, “हां, यही है जो मैं हूं, मेरी नाक बहुत सीधी नहीं है, मेरी आंखे भी काफी छोटी हैं, बाल खड़े हैं,” आप उसे स्वीकार करते हैं। जब आप जो हैं उसे देखते हैं तो ऊब नहीं होती। ऊब केवल तभी होती है जब आप जो देखते हैं उसे अस्वीकार कर देते हैं तथा कुछ और होना चाहते हैं। इसी प्रकार जब आप अपने अंदर देख सकें और ठीक-ठीक देखें कि आप क्या हैं, तो उस देखने में बोरियत नहीं है। वह तो बड़ी ही दिलचस्प चीज़ है क्योंकि जितना आप उसे देखते जाते हैं, उतना ही

<p>to it. In that, there is no boredom. If you can do that, then what you do is what you love to do, and when you love to do a thing, time does not exist. When you love to plant trees, you water them, look after them, protect them; when you know what you really love to do, you will see the days are too short So you have to find out for yourself from now on, what you love to do; what you really want to do, not just be concerned with a career.</p>	<p>अधिक वह और खुलती जाती है। आप और गहराई में, और विस्तार में जा सकते हैं और उसका कोई अंत नहीं। उसमें कोई ऊब नहीं। यदि आप ऐसा कर सकते हैं तो जो आप करते हैं वह वही है जिसे आप करना चाहते हैं, और जब आप किसी वस्तु को करने से प्रेम करते हैं तो समय तो रहता ही नहीं। जब आप वृक्ष लगाने से प्रेम करते हैं, तो आप उन्हें पानी देते हैं, उनकी देखभाल करते हैं, रक्षा करते हैं; जब आप जानते हैं कि आप वास्तव में क्या करना पसंद करते हैं तो आप देखेंगे कि दिन कितने छोटे हो गये हैं। इसलिये अब से आपको अपने लिये यह पता लगाना है कि आप क्या करना पसंद करते हैं, केवल अपनी नौकरी की चिंता नहीं बल्कि वास्तव में क्या करना चाहते हैं।</p>
<p><b>Student:</b> How do you find out what you love to do, sir?</p>	<p><b>छात्र :</b> इसका पता कैसे लगाया जाए कि हम क्या करना पसंद करते हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> How do you find out what you love to do? You have to understand that it may be different from what you want to do. You may want to become a lawyer, because your father is a lawyer or because you see that by becoming a lawyer you can earn more money. Then you do not love what you do because you have a motive for doing something which will give you profit, which will make you famous. But if you love something, there is no motive. You do not use what you are doing for your own self-importance.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> इसका पता कैसे लगाया जाए कि हम क्या करना पसंद करते हैं? आपको यह समझना होगा कि वह उससे भिन्न हो सकता है जो आप करना चाहते हैं। हो सकता है कि आप एक वकील बनना चाहें, क्योंकि आपके पिता वकील हैं या फिर आपको लगता है कि वकील बन कर ज़्यादा पैसे कमाये जा सकते हैं। तब आप जो करते हैं उसे पसंद नहीं करते क्योंकि उसे करने का आपका कोई दूसरा प्रयोजन है, उससे आपको लाभ होता है, यश मिलता है। परंतु जहां जिस काम से आपको प्रेम है वहां प्रयोजन नहीं होता। आप अपने काम का प्रयोग खुद अपना महत्व बढ़ाने के लिये नहीं करते।</p>
<p>To find out what you love to do is one of the most difficult things. That is part of education. To find that out, you have to go into yourself very very deeply. It is not very easy. You may say: "I want to be a lawyer" and you struggle to be a lawyer, and then suddenly you find you do not want to be a lawyer. You would like to paint. But it is too late. You are already married. You already have a wife and children. You cannot</p>	<p>आप क्या करना पसंद करते हैं, वास्तव में इसका पता लगाना एक बड़ी ही कठिन बात है। वह शिक्षा का अंग है। उसका पता लगाने के लिये आपको अपने अंदर बड़ी गहराई में जाना पड़ेगा। यह बहुत आसान नहीं है। आप कह सकते हैं, "मैं एक वकील होना चाहता हूँ" और आप एक वकील होने के लिए संघर्ष करते हैं और तब अचानक आपको पता लगता है कि आप वकील नहीं होना चाहते। आप चित्र बनाना चाहते हैं। परंतु अब तो देर हो चुकी। अब तो आपकी शादी भी हो</p>

<p>give up your career, your responsibilities. So you feel frustrated, unhappy. Or you may say, "I really would like to paint, and you devote all your life to it, and suddenly find you are not a good painter and that what you really want to do is to be a pilot.</p>	<p>चुकी है, बीवी है, बच्चे हैं। आप अपनी नौकरी, अपनी जिम्मेदारियों को नहीं छोड़ सकते। इसलिये आप हताश एवं दुखी महसूस करते हैं। या आप कह सकते हैं, “मैं वास्तव में चित्र बनाना चाहता हूँ, और आप अपना सारा जीवन उसमें लगा देते हैं, और तब अचानक आपको पता लगता है कि आप एक अच्छे चित्रकार नहीं हैं और असल में तो आप एक पायलट होना चाहते हैं।</p>
<p>Right education is not to help you to find careers; for god's sake, throw that out of the window. Education is not merely gathering information from a teacher or learning mathematics from a book or learning historical dates of kings and customs, but education is to help you to understand the problems as they arise, and that requires a good mind - a mind that reasons, a mind that is sharp, a mind that has no belief. For belief is not fact. A man who believes in god is as superstitious as a man who does not believe in God. To find out you have to reason and you cannot reason if you already have an opinion, if you are prejudiced, if your mind has already come to a conclusion. So you need a good mind, a sharp, clear, definite, precise, healthy mind - not a believing mind, not a mind that follows authority. Right education is to help you to find out for yourself what you really, with all your heart, love to do. It does not matter what it is, whether it is to cook or to be a gardener, but it is something in which you have put your mind, your heart. Then you are really efficient, without becoming brutal. And this school should be a place where you are helped to find out for yourself through discussion, through listening, through silence, to find out, right through your life, what you really love to do.</p>	<p>सम्यक शिक्षा का अर्थ आपको नौकरी पाने में सहायता करना नहीं है; ईश्वर के लिये इस विचार को दिमाग से निकाल फेंकिए। किसी अध्यापक से सूचनायें एकत्र कर लेना अथवा किसी पुस्तक से गणित सीखना अथवा राजाओं की और संस्कृतियों की ऐतिहासिक तिथियों को जानना मात्र शिक्षा नहीं है; बल्कि शिक्षा तो जैसे ही कोई समस्या सिर उठाती है उसे समझने में आपकी सहायता करती है और उसके लिये एक अच्छे मन की आवश्यकता है--ऐसा मन जो तर्क करता है, जो तेज है, जो विश्वासों से दबा हुआ नहीं है। क्योंकि विश्वास तथ्य नहीं होते। वो जो ईश्वर में विश्वास करता है उतना ही अंधविश्वासी है जितना ईश्वर में विश्वास नकरने वाला। खोजने के लिये प्रश्न उठाना पड़ता है और यदि आपका पहले से ही कोई मत है, पूर्वाग्रह हैं, यदि आपका मन पहले ही किसी निश्चय पर पहुंच चुका है, तो आप प्रश्न तो कर ही नहीं सकते। तो आपको एक अच्छे मन की, एक तेज, निर्मल, निश्चित, सूक्ष्म, स्वस्थ मन की आवश्यकता है--विश्वासी मन की नहीं, उस मन की नहीं जो सत्ता के पीछे चलता है। सही शिक्षा वही है जो यह पता लगाने में आपकी सहायता करती है कि आप वास्तव में, सच्चे हृदय से क्या करना चाहते हैं, इससे कोई मतलब नहीं कि वह क्या है, भोजन पकाना, या एक माली बनना; परंतु वह एक ऐसी वस्तु है जिसमें आपका दिल, आपका मन रमा है। तब आपमें वास्तव में कार्य-क्षमता आती है, बिना कठोर हुए। और इस स्कूल को ऐसी जगह बनना चाहिये जहां--विचार-चर्चा के द्वारा, सुनना सिखा कर या मौन के द्वारा--यह पता लगाने में आपकी सहायता की जाय, ताकि आप जीवन में खुद यह पता लगा सकें कि वास्तव में आप करना क्या चाहते हैं।</p>

<p><b>Student:</b> Sir, how can we know ourselves?</p>	<p><b>छात्र :</b> हम कैसे अपने को जान सकते हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> That is a very good question. Listen to me carefully. How do you know what you are? You understand my question? You look into the mirror for the first time and after a few days or few weeks, you look again and say, "That is me again." Right? So, by looking at the mirror every day, you begin to know your own face, and you say: "That is me." Now can you in the same way know what you are by watching yourself Can you watch your gestures, the way you walk, the way you talk, the way you behave, whether you are hard, cruel, rough, patient? Then you begin to know yourself. You know yourself by watching yourself in the mirror of what you doing, what you are thinking, what you are feeling. That is the mirror - the feeling, the doing, the thinking. And in that mirror you begin to watch yourself. The mirror says, this is the fact; but you do not like the fact. So, you want to alter it. You start distorting it. You do not see it as it is.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> यह एक बड़ा अच्छा प्रश्न है। मुझे सावधानी से सुनें। आप कैसे जानते हैं कि आप क्या हैं। मेरे प्रश्न को समझे? आप पहली बार दर्पण में देखते हैं और कुछ दिनों या कुछ सप्ताह बाद फिर देखते हैं और कहते हैं, “यह वही मैं हूं।” ठीक? तो प्रतिदिन दर्पण में देख कर आप अपना चेहरा पहचानना शुरू करते हैं, और आप कहते हैं, “वह मैं हूं।” तो क्या उसी प्रकार स्वयं अपना निरीक्षण करके आप जान सकते हैं कि आप क्या हैं? क्या आप अपने व्यवहार का निरीक्षण कर सकते हैं, कि कैसे आप चलते हैं, कैसे बात करते हैं, कैसे व्यवहार करते हैं, कि आप कठोर हैं या क्रूर हैं, रूखे हैं या धैर्यवान हैं? तब आप खुद को जानना शुरू करते हैं। आप क्या कर रहे हैं, क्या सोचते हैं, क्या महसूस करते हैं, उसके दर्पण में देखते हुए खुद को जानते हैं। आपके एहसास, आपके काम, सोच-विचार यही दर्पण है। और उस दर्पण में आप स्वयं अपना निरीक्षण करना आरम्भ करते हैं। दर्पण कहता है, यह सच्चाई है; परंतु आप उस सच्चाई को पसंद नहीं करते, तो आप उसे बदलना चाहते हैं, आप उसमें दखल देने लगते हैं। आप उसे जैसा वह है वैसा नहीं देखते।</p>
<p>Now, as I said the other day, you learn when there is attention and silence. Learning is when you have silence and give complete attention. In that state, you begin to learn. Now, sit very quietly; not because I am asking you to sit quietly, but because that is the way to learn. Sit very quietly and be still not only physically, not only in your body, but also in your mind. Be very still and then in that stillness, attend. Attend to the sounds outside this building, the cock crowing, the birds, somebody coughing, somebody leaving; listen first to the things outside you, then listen to what is going on in your mind. And you will then see, if you listen very very attentively, in that silence, that the outside sound and the inside sound are</p>	<p>जैसा मैंने पहले कहा था कि जब मौन और ध्यान होता है तब आप सीखते हैं। सीखना तब होता है जब आप शांत होते हैं और पूरा ध्यान देते हैं। उसी अवस्था में आप सीखना आरम्भ करते हैं। अतः बिल्कुल शांति से बैठें। इसलिये नहीं कि मैं आपको शांति से बैठने के लिए कहता हूं वरन इसलिये कि वही सीखने का तरीका है। बिल्कुल शांति से बैठें। अडोल रहें, सिर्फ शारीरिक रूप में ही नहीं, दैहिक स्तर पर ही नहीं, वरन मन में भी। बिलकुल शांत हों और तब उस शांति में ध्यान दें। भवन के बाहर की जो ध्वनियां हैं, कौवे की कांव-कांव, दूसरे पक्षी, कोई खांस रहा है, कोई जा रहा है--इसकी ओर ध्यान दें। पहले बाहर की वस्तुओं को सुनें, और फिर सुनें कि मन में क्या हो रहा है। यदि आप बहुत ध्यान से सुनते हैं, तब उस मौन में आप देखेंगे, कि बाहरी आवाज़ और अंदर की आवाज़ एक ही है।</p>

the same.	
<b>Talk To Students</b>	<b>9. व्यवहार</b>
<b>Chapter 9 On Behaviour</b>	
<p>One of the most difficult things in life is to find a way of behaviour that is not dictated by circumstances. Circumstances and people dictate, or force you to behave in a certain way. The way you conduct yourself, the way you eat, the way you talk, your moral, your ethical behaviour depend on where you find yourself and so your behaviour is constantly varying, constantly changing. This is so when you speak to your father, your mother or to your servant - your voice, your words, are quite different. The ways of behaviour are controlled by environmental influences, and by analysing behaviour you can almost predict what people will do or will not do.</p>	<p>जीवन के अत्यंत कठिन कामों में से एक है व्यवहार के उस स्वरूप को सीखना जो परिस्थितियों के आधीन नहीं है। परिस्थितियां और समाज के लोग आपको मजबूर करते हैं, दिशा तय करते हैं कि आप किस तरह व्यवहार करें। आप किस प्रकार व्यवहार करते हैं, कैसे भोजन करते हैं, कैसे बातचीत करते हैं, आपकी नैतिकता, आपका व्यवहार, इस पर निर्भर करता है कि आप उस वक्त हैं कहां और इसीलिए आपका व्यवहार निरंतर बदलता रहता है, डोलता रहता है। यही होता है जब आप अपनी माता से, अपने पिता से बात करते हैं, या अपने नौकर से--आपकी आवाज़ आपके शब्द पूर्णतया बदल जाते हैं। व्यवहार के तौर-तरीके आसपास के प्रभावों से नियन्त्रित होते हैं और व्यवहार का विश्लेषण करके आप लगभग पूर्व घोषणा कर सकते हैं कि लोग कब, क्या करेंगे अथवा क्या नहीं करेंगे।</p>
<p>Now can one ask oneself if one can behave the same inwardly, whatever the circumstances? Can one's behaviour spring from within and not depend on what people think of you or how they look at you? But that is difficult because one does not know what one is within. Within, a constant change is going on also. You are not what you were yesterday. Now can one find for oneself a way of behaviour which is not dictated by others or by society or by circumstances or by religious sanctions, a way of behaviour that does not depend on environment? I think one can find that out, if one knows what love is.</p>	<p>तो क्या हम अपने से पूछ सकते हैं कि क्या यह संभव है कि हम अंदर से एक ही प्रकार का व्यवहार करें, परिस्थितियां चाहे जो भी हों? क्या हमारा व्यवहार हमारे अंदर से निकल सकता है, इस पर निर्भर ही न करे कि लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं अथवा हमें कैसे देखते हैं? परंतु यह मुश्किल है, क्योंकि हम नहीं जानते कि भीतर हम क्या हैं। भीतर भी एक सतत परिवर्तन हो रहा है। आप वह नहीं हैं जो आप कल थे। तो क्या कोई अपने लिये व्यवहार के उस स्वरूप को जान सकता है जो दूसरों द्वारा, समाज द्वारा अथवा परिस्थितियों द्वारा अथवा धार्मिक आदेशों द्वारा निर्धारित नहीं है, व्यवहार का वह स्वरूप जो माहौल पर निर्भर नहीं करता? मेरे विचार से यदि हम यह जान लें कि प्रेम क्या है तो व्यवहार के उस स्वरूप का हम पता लगा सकते हैं।</p>

<p>Do you know what love is? Do you know what it is to love people? To look after a tree, to brush a dog, comb it, feed it, means that you care for the tree, you feel great affection for the dog. I do not know whether you have noticed a tree in a street for which nobody cares; occasionally people look at it and pass it by. That tree is entirely different from a tree that is cared for in a garden, a tree you sit under, look at, on which you see the leaves, climb the branches. Such a tree grows with strength. When you look after a tree, when you give it water, manure;</p>	<p>क्या आप जानते हैं कि प्रेम क्या है? क्या आप जानते हैं कि लोगों से प्रेम करने का क्या अर्थ होता है? किसी वृक्ष की देख-भाल करना, किसी कुत्ते के बालों को साफ करना, उनमें कंघी करना, उसको भोजन देना, इसका अर्थ है आप उस वृक्ष का ध्यान रखते हैं, उस कुत्ते से आपको बड़ा स्नेह है। मैं नहीं जानता कि आपने सड़क के उस वृक्ष की ओर कभी ध्यान दिया है, जिसकी कोई परवाह नहीं करता; कभी-कभार लोग उसे देखते हैं और बस पास से निकल जाते हैं। वह वृक्ष उस वृक्ष से पूर्णतया भिन्न है जिसकी किसी बाग में देखभाल होती है, जिसके नीचे आप बैठते हैं, जिसके पत्तों को आप देखते हैं, जिसकी टहनियों पर आप चढ़ते हैं, ऐसा वृक्ष शक्तिशाली होता जाता है। जब आप एक वृक्ष की देखभाल करते हैं, उसे पानी, खाद देते हैं, उसे काटते-छांटते हैं, उस पर ध्यान देते हैं, तो उसकी अनुभूति सड़क के किनारे उगने वाले वृक्ष की तुलना में बिलकुल दूसरी ही होती है।</p>
<p>when you trim it, prune it, care for it, it has a different feeling altogether from the tree that grows by the roadside. The feeling of care is the beginning of affection. You know, the more you look after things, the more sensitive you become. So there has to be affection, a sense of tenderness, kindness, generosity. If there is such affection, then behaviour is dictated by that affection and is not dependent on environment, circumstance, or people. And to find that affection is one of the most difficult things - to be really affectionate whether people are kind to you or not kind to you, whether they talk to you roughly, or whether they are irritated with you. I think children have it. You all have it when you are young. You feel very friendly with one another, with people. You love to pat a dog. You look occasionally at things and you also smile easily. But as you grow older, all this disappears. And so to have affection right through life is one of the most difficult things and without it life becomes very empty. You may have children, you may have a nice house, a</p>	<p>ध्यान रखना ही स्नेह का आरम्भ है। जानते हैं जितना आप वस्तुओं का ध्यान रखते हैं उतने ही अधिक संवेदनशील होते जाते हैं। और तब स्नेह, करुणा, दयालुता, उदारता का बोध होना चाहिए। यदि ऐसा स्नेह है तो व्यवहार उस स्नेह द्वारा निर्धारित होता है और तब वह परिवेश पर, परिस्थिति पर अथवा लोगों पर निर्भर नहीं करता। ऐसा स्नेह बड़ा कठिन है; अर्थात् वास्तव में स्नेहपूर्ण होना, चाहे लोग आपके प्रति दयालु हों अथवा न हों, चाहे वे आप से बेखुशी से बात करें अथवा आपसे नाराज हों, यह तो अत्यधिक कठिन है। मेरे विचार से बच्चों में वह है। जब तक आप छोटे हैं, आप सबमें वह है। आप एक-दूसरे से, लोगों से, बड़ा मैत्री-भाव अनुभव करते हैं। किसी कुत्ते को थपथपाना आपको अच्छा लगता है। आप अक्सर वस्तुओं को देखते हैं और आपकी मुस्कुराहट सहज है : परंतु जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं, यह सब गायब हो जाता है। और इसलिये जीवन भर स्नेहपूर्ण होना एक बड़ी ही कठिन चुनौती है और बिना उसके जीवन खोखला हो जाता है। आपके बच्चे हो सकते हैं, आपका एक अच्छा सा मकान, एक कार और तमाम वस्तुएं हो सकती हैं, परंतु बिना स्नेह के जीवन उस फूल जैसा है जिसमें</p>

<p>car and all the rest of it, but without affection life is like a flower that has no scent. And it is part of education, is it not, to come to this affection, from which there is great joy, from which alone love can come?</p>	<p>सुगंध ही नहीं। और इस स्नेह तक पहुंचना शिक्षा का ही अंग है--उस स्नेह तक, जिसमें से महान आनंद उठता है, केवल इसी से प्रेम उठ सकता है। क्या ऐसा नहीं है?</p>
<p>With most of us love is possessiveness. Where there is jealousy, envy, it breeds cruelty, it breeds hatred, Love can only exist and flower when there is no hate, no envy, no ambition. Without love, life is like the barren earth, arid, hard, brutal. But the moment there is affection it is like the earth which blossoms with water, with rain, with beauty. One has to learn all this when one is very young, not when one is old for then it is too late. Then you become prisoners of society of environment, of husband, wife, office. Find out for yourself if you can behave with affection. Can you go to your class punctually because you feel you do not want to keep people waiting? Can you stop shouting while you are together because there are other people watching you, being with you?</p>	<p>हममें से अधिकांश के लिए प्रेम कब्ज़ा है। जहां कहीं ईर्ष्या है, डाह है, वह क्रूरता को, घृणा को उत्पन्न करती है। जब घृणा, ईर्ष्या, महत्वाकांक्षा नहीं है, प्रेम केवल तभी संभव होता है, तभी खिलता है। बिना प्रेम के जीवन बंजर भूमि के समान है, शुष्क, कठोर एवं बर्बर। परंतु जिस क्षण स्नेह होता है वह उस पृथ्वी जैसा हो जाता है जो जल, वर्षा एवं सौन्दर्य से खिल जाती है। यह सब तभी सीख लेना चाहिये जब हम छोटे हों, न कि बड़े होने पर, तब तो बहुत देर हो जाती है। तब आप समाज के, माहौल के, पति या पत्नी के, दफ्तर के कैदी हो जाते हैं, स्वयं पता लगाइये कि क्या आप स्नेहपूर्ण व्यवहार कर सकते हैं? क्या आप अपनी कक्षा में इसलिये समय पर जा सकते हैं क्योंकि आप महसूस करते हैं कि आप दूसरों को प्रतीक्षा में नहीं रखना चाहते? क्या आप भोजन के लिये समय का पालन इसलिये करते हैं कि आप दूसरों को प्रतीक्षा में नहीं रखना चाहते? क्या आप चिल्लाना बंद कर सकते हैं, जब तक सब एक साथ हैं, क्योंकि दूसरे भी हैं जो आपको देख रहे हैं, जो आपके साथ हैं?</p>
<p>When behaviour, politeness, consideration are superficial and without affection they have no meaning. But if there is affection, kindness, consideration, then, out of that, comes politeness, good manners, consideration for others, which means really that one is thinking less and less about oneself, and that is one of the most difficult things in life. When one is not concerned with oneself, then one is really a free human being. Then one can look at the skies, the mountains, the hills, the waters, the birds, the flowers, with a fresh mind, with a great sense of affection. Right? Now, ask questions.</p>	<p>जब व्यवहार, विनम्रता एवं उदारता, सब ऊपरी होते हैं और स्नेहरहित होते हैं तो उनका कोई अर्थ नहीं होता। परंतु यदि स्नेह है, दयालुता है, उदारता है, तो उससे विनम्रता एवं सद्व्यवहार आता है, दूसरे का ध्यान रखना आता है, जिसका वास्तव में अर्थ है कि व्यक्ति अपने विषय में कम-से-कम सोच रहा है, और यह जीवन की सबसे कठिन वस्तुओं में से एक है। हम वास्तव में तभी स्वतंत्र होते हैं जब हम अपनी चिंता नहीं करते। तभी कोई ताजे मन से, स्नेह की गहरी अनुभूति से, आकाश को, पर्वतों को, पहाड़ियों को, नदियों को, पक्षियों को, फूलों को देख सकता है। ठीक? अब आप प्रश्न करें।</p>
<p><b>Student:</b> If there is jealousy in love, is there not</p>	<p><b>छात्र :</b> यदि प्रेम में ईर्ष्या है तो क्या प्रेम में बलिदान भी</p>

also sacrifice in love?	नहीं है?
<p><b>Krishnamurti:</b> Is there not also sacrifice in love? Love can never sacrifice. What do you mean by using that word "sacrifice?" Giving up? Doing things you do not want to do? Is that what you mean? I sacrifice myself for my country, because I love my country. I sacrifice myself because I love my parents. Is that what you mean? Now, is that love? Can love exist when you have to force yourself to do something for others? I wonder if you understand the word "sacrifice." Why do you use that word? You know, the words, "responsibility," "duty," "sacrifice," are dreadful words. When you love somebody there is no responsibility, there is no duty, there is no sacrifice. You do things because you love. And you cannot love if you are thinking about yourself. When you are thinking about yourself, then you come first and the other is second; then, to love him, you sacrifice yourself. Then it is not love. It is a bargain. Do you understand?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या प्रेम में बलिदान भी नहीं है? प्रेम कभी बलिदान नहीं कर सकता। “बलिदान” शब्द से आपका अर्थ क्या है? त्याग देना? वो सब करना जो आप करना नहीं चाहते? क्या यही आपका अर्थ है? मैं अपने देश के लिए बलिदान करता हूँ क्योंकि मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ। मैं अपना बलिदान करता हूँ क्योंकि मैं अपने माता-पिता से प्रेम करता हूँ। क्या यही आपका अभिप्राय है? तो, क्या यही प्रेम है? क्या तब कोई प्रेम हो सकता है जब दूसरों के लिए कुछ करने के वास्ते आपको अपने को मजबूर करना पड़े? पता नहीं आप ‘बलिदान’ शब्द को समझते हैं या नहीं। आप क्यों उस शब्द का प्रयोग करते हैं? जानते हैं, “ज़िम्मेदारी”, “कर्तव्य”, “बलिदान” ये सब भयानक शब्द हैं। जब आप किसी से प्रेम करते हैं तब कोई दायित्व नहीं होता, कोई कर्तव्य नहीं होता, कोई बलिदान नहीं होता। आप जो करते हैं प्रेम के कारण करते हैं। और यदि आप अपने ही विषय में सोचते रहते हैं तो आप प्रेम नहीं कर सकते। जब आप अपने विषय में सोच रहे हैं तो पहल तो आप की ही होती है, दूसरा पीछे रहता है; तब उसको प्रेम करने में आप अपना बलिदान करते हैं। तब वह प्रेम नहीं है; वह लेन-देन है। क्या आप समझते हैं?</p>
<p><b>Student:</b> To learn and to love; are they separate or are they connected, sir?</p>	<p><b>छात्र:</b> सीखना तथा प्रेम करना, ये परस्पर सम्बन्धित हैं, या अलग-अलग हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Do you know what it means to love and do you know what it means to learn?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या आप जानते हैं कि प्रेम करने का क्या अर्थ है और सीखने का क्या अर्थ है।</p>
<p><b>Student:</b> I know what it is to learn.</p>	<p><b>छात्र:</b> मैं जानता हूँ कि सीखना क्या है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> I wonder. I do not say you do not know. I am just asking you. Do you know what it means to learn? You know what it means to acquire knowledge. You hear the teacher tell you certain facts and you store what you hear in</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या सचमुच? मेरा कहना यह नहीं है कि आप नहीं जानते। मैं केवल पूछ रहा हूँ। क्या आप जानते हैं कि सीखने का क्या अर्थ है? आप जानते हैं कि ज्ञान जमा करने का क्या अर्थ है। आप अपने अध्यापक को सुनते हैं जो आपको कुछ तथ्य बताते हैं</p>

<p>your mind, in your brain. This storing up process is what we call learning. Is that not so?</p>	<p>और आप जो सुनते हैं उसे अपने मन में, अपने दिमाग में एकत्रित कर लेते हैं। एकत्र करने की इस प्रक्रिया को ही हम सीखना कहते हैं। क्या ऐसा ही नहीं है?</p>
<p><b>Student:</b> In a way.</p>	<p><b>छात्र:</b> एक प्रकार से ऐसा ही है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> In a way. But what is the other way? You have an experience, you walk up the hills and slip and hurt yourself and you have learnt something from that. You meet a friend and he hurts you and you have learnt from that. You read a newspaper and you have learnt from that. So, your learning generally consists of adding more and more information. Now is that learning? There is another form of learning - that is, learning as you go along, never accumulating. And then from that to act, to think. Do you understand what it is to learn in doing? This does not mean having learnt and then doing. They are two different states, are they not? There is a state where I have learnt and from that knowledge I act, and there is learning as I am doing. The two are completely different. When I have learnt and then do, it is mechanical, whereas learning from doing is non- mechanical. It is always fresh. Therefore, learning as I am doing is never boring; it is never tiring, whereas to do, having learnt, becomes mechanical. That is why you all get bored with your learning. Do you understand? So now you know what learning means. Learning is doing, so that in the very act of doing you are learning. Now, what is love?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> एक प्रकार से। परंतु दूसरा प्रकार क्या है? आपको कोई अनुभव होता है, आप पहाड़ियों पर चढ़ते हैं, फिसल जाते हैं, आपको चोट लगती है और आप उससे कुछ सीखते हैं। किसी मित्र से मिलते हैं और वह आपको चोट पहुंचाता है और आप उससे कुछ सीखते हैं। आप अखबार पढ़ते हैं और उससे सीखते हैं। इस प्रकार, आपका सीखना प्रायः अधिकाधिक सूचनाएं एकत्र करना होता है। तो क्या यही सीखना है? एक दूसरे प्रकार का सीखना भी होता है--अर्थात् जीवन के साथ सीखते चले जाना, एकत्रित कभी न करना। और तब उससे कार्य करना, सोचना। क्या आप समझते हैं कि करते-करते सीखना, क्या होता है? इसका यह अर्थ नहीं है कि पहले सीख लिया जाय तब कार्य किया जाय। ये दो भिन्न अवस्थाएं हैं क्या नहीं है? एक अवस्था वह है जिसमें मैंने सीख लिया है और उस ज्ञान से मैं कार्य करता हूँ, और दूसरी अवस्था में जैसे-जैसे मैं करता हूँ वैसे-वैसे सीखता हूँ। ये दोनों पूर्णतया भिन्न हैं। जब मैं सीख लेता हूँ और तब कार्य करता हूँ तो यह मशीनीबात है, जब कि करते-करते सीखना मशीनी नहीं है। उसमें सदा ताज़गी है। अतः, करते हुए सीखने में कभी बोरियत नहीं होती; उससे कभी थकावट नहीं होती, जब कि सीखने के बाद करना मशीनी हो जाता है। यही कारण है कि आप अपने सीखने से ऊब जाते हैं। क्या आप समझ पा रहे हैं? तो अब आपने जाना कि सीखने का क्या अर्थ है। सीखना करना है, करने की प्रक्रिया में ही आप सीख रहे होते हैं। अब प्रेम क्या है?</p>
<p>Love is a feeling in which there is gentleness, quietness, tenderness, consideration, in which there is beauty. In love there is no ambition, there is no jealousy. Now you had asked whether learning and love are not</p>	<p>प्रेम एक ऐसा एहसास है जिसमें कोमलता होती है, शांति, सहृदयता एवं उदारता, जहाँ सुन्दरता होती है। प्रेम में महत्त्वाकांक्षा नहीं होती, ईर्ष्या नहीं होती। तो आपने पूछा था कि क्या प्रेम एवं सीखना एक ही नहीं है। आपने यही प्रश्न पूछा था। या नहीं?</p>

similar. You had asked that question, had you not?	
<b>Student:</b> Are they connected?	<b>छात्र:</b> क्या वे परस्पर संबद्धित हैं?
<b>Krishnamurti:</b> What do you say? You have understood what we mean by love, what we mean by learning. Are they connected?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आपको क्या लगता है? आपने समझा कि प्रेम से हमारा अर्थ क्या है, सीखने के मायने क्या हैं। क्या वे संबद्धित हैं?
<b>Student:</b> In a way.	<b>छात्र:</b> एक प्रकार से।
<b>Krishnamurti:</b> Tell me in which way. May I help you? They are connected because both require an activity which is non-mechanical. Do you understand? Learning as I am doing is non-mechanical. But in love which becomes mechanical there is no learning. Love in which there is ambition, conflict, greed, envy, jealousy, anger, ambition, is not love. When there is no ambition, no jealousy, then there is a very active principle. It is renewing itself all the time, it is fresh. There is, in both learning and love, a movement of freshness, a movement which is spontaneous, which is not held by circumstances. it is a free movement. So there is a tenuous, delicate connection between the two. But to learn and to love there must be a great deal of affection. There is a great similarity in both when there is attention, which is not merely a conclusion. So if you are attending, attending to what you are thinking, out of that, there is affection, out of that there is learning.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> किस प्रकार से, मुझे बताएं। क्या मैं सहायता करूं? वे संबद्धित हैं क्योंकि दोनों में ही एक ऐसी क्रिया होती है जो मशीनी नहीं है। आपने समझा? करते-करते सीख जाना यांत्रिक नहीं है। परंतु प्रेम जब यांत्रिक हो जाता है तो उसमें सीखना नहीं हो पाता। जिस प्रेम में महत्त्वाकांक्षा है, द्वन्द्व, लालच, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध है, वह प्रेम नहीं है। जब महत्त्वाकांक्षा नहीं होती, ईर्ष्या नहीं होती, तब वहां एक बड़ा सक्रिय तत्व होता है। वह सदा अपने को नवीन करता रहता है, वह ताज़ा बना रहता है। सीखने में और प्रेम में, दोनों में ही एक ताज़गी की लहर है; ऐसी लहर जो एकदम सहज है, जो परिस्थितियों से बंधी नहीं है, यह एक आज़ाद तरंग है। तो दोनों में एक बड़ा ही नाजुक, बड़ा कोमल सा रिश्ता है। परंतु सीखने के लिए और प्रेम करने के लिए गहन प्रीति का, स्नेह का भाव चाहिए। जब ध्यान होता है तो दोनों में बड़ी समानता होती है, यह मात्र निष्कर्ष नहीं है। अतः यदि आप ध्यान दे रहे हैं, आप जो सोच रहे हैं उसकी ओर ध्यान दे रहे हैं, तो उससे स्नेह उत्पन्न होता है, उससे सीखना होता है।
<b>Student:</b> How can we live our life, sir?	<b>छात्र:</b> हम अपना जीवन कैसे जियें?
<b>Krishnamurti:</b> First of all, do you know what your life is, to live it? I am not being funny. I am just asking. To live your life, you must know	<b>कृष्णमूर्ति :</b> पहली बात तो यह कि, क्या आप जानते हैं कि आपका जीवन क्या है, जिसे जीना कहते हैं? मैं मज़ाक नहीं कर रहा, केवल पूछ रहा हूं। जीवन जीने

<p>what your life is and to find out what your life is, you have to again examine. Your life is not what your father or mother, your society, your teacher, your neighbour, your religion, your politician tell you it is. Do not say: "No". It is so. Your life is made up of influences - political, religious, social, economic, climatic - all these influences converge in you and you say: "That is life. I must live it." You can only live your life when you understand all these influences, and I through understanding them begin to discover your own way of thinking and living. Then you do not have to ask: "How can I live my life?" Then you live it. But, first, you must understand all the influences. The influence of society, the political speeches, the politicians, the climate, the food, the books you read are influencing you all the time. You have to ask whether it is at all possible to be free of these influences. And that is one of the most demanding enquiries. And after enquiring, examining, you have to understand, to find a way of life that is neither yours nor anybody's. It is then life. Then you are living.</p>	<p>के लिए आपको यह पता होना चाहिए कि आपका जीवन क्या है, और यह पता लगाने के लिए कि जीवन क्या है आपको फिर से छानबीन करनी होगी। आपका जीवन वह नहीं है जो आपके माता-पिता, समाज, आपके अध्यापक, आपके पड़ोसी, आपका धर्म, आपके राजनीतिज्ञ आपको बताते हैं। "नहीं," न कहें। यह ऐसा ही है। आपका जीवन प्रभावों से बना है--राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, मौसमी--ये सभी प्रभाव आप में घुल-मिल जाते हैं और आप कहते हैं, "यह जीवन है, मैं इसे जीऊंगा"। आप अपना जीवन तभी जी सकते हैं, जब इन सब प्रभावों को आप समझ लेते हैं, और उनको समझते हुए स्वयं अपने विचारने और जीने के ढंग की खोज आरम्भ करते हैं। तब आपको यह नहीं पूछना पड़ता, "मैं अपने जीवन को कैसे जी सकता हूँ?" तब आप जीते हैं। परंतु पहले आपको इन सब प्रभावों को समझना होगा। समाज का प्रभाव, राजनीतिक भाषणबाज़ी, राजनीतिक लीडर, जलवायु, भोजन, पुस्तकें जो आप पढ़ते हैं, ये सभी हर समय आपको प्रभावित कर रहे हैं। तब आपको पूछना चाहिये कि इन प्रभावों से मुक्त होना क्या संभव भी है। और यह एक बड़ी ज़बरदस्त खोजबीन है, जिसमें पूरे जान-प्राण लगाने पड़ते हैं। और इस खोजबीन और जांच-पड़ताल के पश्चात्, आपको समझना होगा, जीवन का वो ढंग हासिल करना होगा, जो न तो आपका होता है, न किसी दूसरे का। बस यही जीवन है। तब आप जी रहे हैं।</p>
<p>Now, in all this, what is important? The first thing is not to lead a mechanical life. You understand what I mean by a mechanical life? It is doing something because somebody tells you to do it, or because you feel that it is the right thing to do, so you repeat, repeat, and gradually, your brain, your mind, your body becomes dull, heavy, stupid. So, do not lead a life of routine. You may have to go to the office. You may have to pass an examination, to study. But do it all with a freshness, with eagerness; and you can only do it with freshness and with vigour, when you are learning. And you cannot learn if you are not attentive.</p>	<p>तो, इस सबमें, महत्त्वपूर्ण क्या है? सबसे पहली बात है जीवन को मशीनी ढंग से न जीना। क्या आप समझते हैं कि मशीनी जीवन से मेरा क्या अर्थ है? यंत्रवत् जीवन का अर्थ है वह करना जिस के लिए कोई आपसे कहता है या आपका लगता है कि ऐसा करना ठीक है, इसलिए आप दोहराए चले जाते हैं; और धीरे-धीरे आपका दिमाग, आपका मन, आपका शरीर, बोझिल तथा मूर्ख होता जाता है। अतः एक बँधी-बंधायी परिपाटी का जीवन न जियें। आपको ऑफिस जाना हो सकता है, कोई परीक्षा पास करनी पड़ सकती है, अध्ययन करना पड़ सकता है। परंतु इस सबको एक ताज़गी के साथ, एक जोश के साथ करें; और केवल तभी आप उसे ताज़गी के साथ, जोश के साथ, कर सकते हैं जब आप सीख रहे होते हैं। और आप सीख नहीं सकते यदि आप होश और ध्यान में नहीं हैं तो।</p>

The second thing is, to be very gentle, to be very kind, not to hurt people. You have to look at people, help people, be generous, be considerate.	दूसरी बात है, एकदम सज्जन होना, एकदम दयालू, किसी को चोट न पहुंचाना। आपको लोगों को समझना है, उनकी सहायता करनी है, उदार होना है, ध्यान रखना है।
There must be love, otherwise, your life is empty. You understand? You may have everything you want: husband, cars, children, wife; but life will be like an empty desert. You may be very clever, you might have a very good position, be a good lawyer, a good engineer, a marvellous administrator, but, without love, you are a dead human being. So do not do anything mechanical. Find out what it is to love people, to love dogs, the sky, the blue hills and the river. Love and feel.	प्रेम बहुत आवश्यक है, वरनातो जीवन खोखला है। आप समझे? हो सकता है कि आपके पास वह सब हो जो आप चाहते हैं--पति, कारें, बच्चे, पत्नी; परंतु प्रेम के बिना जीवन एक उजाड़ रेगिस्तान जैसा होगा। आप बड़े चतुर हो सकते हैं, आपका बड़ा अच्छा पद हो सकता है, आप एक अच्छे वकील, अच्छे इंजीनियर, गजब के प्रशासक हो सकते हैं, परंतु प्रेम के अभाव में आप एक मृत इंसान हैं। इसलिए कोई चीज़ मशीनी ढंग से न करें। पता लगाएं कि लोगों से प्रेम करना, कुत्तों से, आकाश से, नीली पहाड़ियों से, नदी से प्रेम करना क्या है। प्रेम करें और महसूस करें।
Then you must also know what meditation is, what it is to have a very still, a very quiet mind, not a chattering mind. And it is only such a mind that can know the real religious mind. And without the religious mind, without that feeling, life is like a flower that has no fragrance, a river bed that has never known the rippling waters over it, it is like the earth that has never grown a tree, a bush, a flower.	फिर आपको यह भी जानना चाहिए कि ध्यान क्या है; एकदम शांत, एकदम अडोल मन क्या है--ऐसा मन नहीं जो हमेशा बड़बड़ करता रहे। केवल ऐसा ही मन वास्तविक धार्मिक मन को जान सकता है। बिना धार्मिक मन के, बिना उस एहसास के, जीवन उस फूल के समान है जिसमें कोई सुगंध नहीं; नदी की रेत जिसने कभी यह नहीं जाना कि लहरों का संगीत क्या होता है, उस भूमि के समान है जिसमें कभी कोई वृक्ष, कोई पौधा, कोई पुष्प नहीं उगा।
<b>- Talks to Teachers -</b>	<b>खण्ड--2</b>
<b>Chapter 1 On Right Education</b>	<b>शिक्षकों से वार्ता</b>

	<b>1. सही शिक्षा</b>
<p><b>Krishnamurti:</b> It is our intention in places like Rishi Valley in the South and Rajghat in the North to create an environment, a climate, where one can bring about, if it is at all possible, a new human being. Do you know the history of these two schools? They have been running for thirty years or more. The purpose, the aim and drive of these schools is to equip the child with the most excellent technological proficiency so that he may function with clarity and efficiency in the modern world, and far more important to create the right climate so that the child may develop fully as a complete human being. This means giving him the opportunity to flower in goodness so that he is rightly related to people, things and ideas, to the whole of life. To live is to be related. There is no right relationship to anything if there is not the right feeling for beauty, a response to nature, to music and art, a highly developed aesthetic sense.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> दक्षिण में ऋषि वैली तथा उत्तर में राजघाट जैसे स्थानों में हमारा उद्देश्य एक ऐसे परिवेश का, एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना है जहां, यदि संभव हो तो, एक नये मानव को जन्म दिया जा सके। क्या आप इन दो स्कूलों के इतिहास को जानते हैं? लगभग तीस वर्षों से कार्य कर रहे हैं। बालक को सर्वश्रेष्ठ टेक्नोलाजिकल कार्य क्षमता से सम्पन्न करना ताकि वह आधुनिक विश्व में स्पष्टता एवं कुशलता से कार्य कर सके, और इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना जिससे कि बालक एक पूर्ण मनुष्य के रूप में पूरी तरह से विकसित हो सके--यही इन विद्यालयों का उद्देश्य है, लक्ष्य है, कोशिश है, यही उनके पीछे प्रेरणा है। जिसका अर्थ है कि बालक को अच्छाई में खिलने का अवसर दिया जाय जिससे कि वह व्यक्तियों के साथ, वस्तुओं एवं विचारों के साथ, समस्त जीवन के साथ सही रूप से सम्बन्धित हो। जीने का अर्थ है सम्बन्धित होना। यदि सौंदर्य के प्रति ठीक से एहसास नहीं है, प्रकृति, संगीत और कला के प्रति संवेदनशीलता नहीं है, एक संवर्धित सौंदर्यबोध, उच्च पाए की सौंदर्यानुभूति नहीं है तो किसी भी वस्तु के साथ सही सम्बन्ध नहीं है।</p>
<p>I think it is fairly clear that competitive education and the development of the student in that process is very destructive. I do not know how deeply one has grasped the significance of this. If one has, then what is right education? I think it is clear that the pattern which we now cultivate and call education, which is conformity to society, is very, very destructive. In its ambitious activities, it is frustrating in the extreme. And what we have so far considered, both in the West and East, as a development within this process, is culture. it is the inevitable invitation to sorrow. The perception of the truth of that is essential. If it is very clear, and if one has abandoned that voluntarily, not as a reaction,</p>	<p>मुझे लगता है कि निस्संदेह मुकाबले की दौड़ और आपसी होड़ पर टिकी शिक्षा तथा उस माहौल में छात्र का विकास एकदम विनाशकारी हैं। मैं नहीं जानता कितनी गहराई से हमने इसके महत्त्व को समझा है। यदि समझा है तो क्या है सम्यक शिक्षा? मेरे विचार से यह स्पष्ट है कि वह ढांचा जिसे हमने खड़ा किया है तथा जिसे हम शिक्षा के नाम से पुकारते हैं, जिसका अर्थ समाज के मुताबिक ढलना है, वह तो बिलकुल ही विनाशकारी है। अपने तमाम महत्वाकांक्षी कार्यक्रमों समेत वह अत्यन्त निराशाजनक है। और हमने जिसे अभी तक संस्कृति समझा है, पूर्व के देशों में हों या पश्चिम के, उस दिशा में हो रहा हर विकास; वह तो बस दुखों को बुलावा देना ही है। इस सत्य को देखना आवश्यक है। यदि वह एकदम साफ है और हम स्वेच्छा से उसे छोड़</p>

<p>but just as a leaf falls away from the tree, a dropping away, then what is flowering, what is right education? Do you educate the student to conform, to adjust, to fit into the system or do you educate him to comprehend, to see very clearly the whole significance of all that and, at the same time, help him to read and write? If you teach him to read and write within the present system of frustration, then the flowering of the mind is impeded. The question then is, if one drops this competitive education, can the mind be educated at all in the ordinary accepted sense of the word? Or does education consist really in taking ourselves and the student away from the social structure of frustration and desire and, at the same time giving him information about mathematics, physics, and so on? After all, if the teacher and the student are stripped of all this monstrous confusion, what is there to be educated about? All that you can teach the student is how to read and write, how to calculate, design, remember and communicate facts and opinions about facts.</p>	<p>देते हैं, प्रतिक्रिया के रूप में नहीं, वरन् जैसे ही जैसे वृक्ष से पत्ता गिरता है, गिरने देते हैं, तो फिर खिलना क्या है, सही शिक्षा क्या है? क्या आप किसी छात्र को किसी व्यवस्था या प्रणाली के योग्य बनने, उसके अनुरूप ढलने या फिट होने के लिए ही शिक्षित करते हैं अथवा आप उसे शिक्षित करते हैं कि वह गहराई से समझ पाए, इस सबके महत्व को स्पष्टता से देखे, और साथ-साथ पढ़े-लिखे भी? यदि हम उसे निराशा के वर्तमान माहौल में ही लिखना-पढ़ना सिखाते हैं तो उससे मन का खिलना रुक जाता है। प्रश्न उठता है कि यदि मुकाबले पर टिकी इस शिक्षा को त्याग दिया जाता है तो क्या साधारण अर्थों में मन को शिक्षित किया भी जा सकता है? या शिक्षा का वास्तविक अर्थ इसी में है कि अपने को तथा छात्र को निराशा एवं इच्छाओं की सामाजिक संरचना से दूर हटा लिया जाय तथा साथ ही उसे गणित, भौतिकशास्त्र, आदि के विषय में ज्ञान भी देते रहें? आखिरकार यदि शिक्षक तथा छात्र को इन भयंकर भ्रातियों से निकाल लिया जाता है तो फिर शिक्षा और रह ही क्या जाती है? तब सिखाने को बस यही बचता है कि आप उसे लिखना-पढ़ना, गणना करना, आकृतियाँ बनाना सिखयें, तथ्यों को याद रखना और उन्हें तथा उनके बारे में बने अन्य मतों को दूसरों तक पहुँचाना सिखायें।</p>
<p>So, what is the function of education and is there a particular method of education? Do you teach the student a technique so that he becomes proficient and in that very proficiency develops a sense of ambition? By teaching him a technique in order to find a job, you also burden him with its implications of success and frustration. He wants to be successful in life and he also wants to be a peaceful man. His whole life is a contradiction. The greater the contradiction, the greater the tension. This is a fact. When there is suppression in contradiction, there is greater outward activity. You give the student a technique and at the same time develop in him this extraordinary imbalance, this extreme contradiction which leads to frustration and despair. The more he develops his capacity in technique, the greater his ambition and the greater the frustration. You are educating him</p>	<p>अतः शिक्षा का कार्य क्या है और क्या शिक्षा की कोई विशेष पद्धति होती है? क्या आप छात्र को कोई तकनीक सिखाते हैं कि वह उसमें माहिर बने और उसी महारत में से ही महत्त्वाकांक्षा पनपती है? नौकरी प्राप्त करने के लिए छात्र को किसी तकनीक की शिक्षा देते हुए उस पर सफलता तथा निराशा का बोझ भी लाद देते हैं। वह जीवन में सफल होना चाहता है और साथ ही शांति भी चाहता है। उसका समस्त जीवन ही एक अंतर्विरोध बन जाता है। वह अंतर्विरोध जितना अधिक होता है, तनाव भी उतना ही अधिक होता है। यह एक तथ्य है। जब अंतर्विरोध का दमन होता है तो उतनी ही अधिक बाहर की दौड़ होती है। आप उस छात्र को एक तकनीक सिखाते हैं और साथ ही उसमें यह अजीब सा असंतुलन विकसित कर देते हैं, यह अत्यधिक अंतर्विरोध तो हताशा तथा निराशा की तरफ ले जाती है। तकनीक में वो जितनी ज़्यादा महारत विकसित करता है, महत्त्वाकांक्षा तथा निराशा भी उतनी ही अधिक होती है। आप उसे एक तकनीक सिखाने के लिए शिक्षित करते हैं</p>

<p>to have a technique which is going to lead to his despair. So the question is, can you help him not to drift into contradiction? He will drift into it if you do not help him to love the thing which he is doing. You see, if the student loves geometry, loves it as an end in itself, he is so completely absorbed in it that he has no ambition. He really loves geometry and that is an enormous delight. Therefore he flowers in it. How will you help the student to love, in this way, a thing which the student has not yet discovered for himself?</p>	<p>जो उसे निराशा की तरफ ले जायेगी। तो प्रश्न यह है कि क्या आप उसकी सहायता कर सकते हैं कि वह अंतर्विरोध में न फंसे? वह फंसेगा ही यदि आप इसमें उसकी सहायता नहीं करते कि वह जो कर रहा है उससे प्रेम भी करे। यदि छात्र रेखागणित से प्रेम करता है, सिर्फ उसी के लिए उससे प्रेम करता है, तो वह उसमें इतनी पूर्णता से डूब जाता है कि उसे कोई महत्त्वाकांक्षा ही नहीं रहती। वह वास्तव में रेखागणित से प्रेम करता है और वह एक अतीव आनन्द है। इसलिए वह उसमें खिलता है। तो आप कैसे छात्र की सहायता करेंगे, इस तरह का प्रेम करने के लिए, एक ऐसी वस्तु से एक ऐसी चीज़ जिसे छात्र को अभी अपने लिये खोजना है?</p>
<p>If you are asked, as a teacher, what the intention of this school is would you be able to reply? I want to know what you are all trying to do, what you intend the student to be? Are you trying to shape him, condition him, force him in certain directions? Are you trying to teach the student mathematics, physics, giving him some information so that he is proficient technologically and can do well in a future career? Thousands of schools are doing this, all over the world - trying to make the student excellent technologically so that he becomes a good scientist, engineer, physicist and so on. Or are you trying to do something much more here? If it is much more, what is it?</p>	<p>यदि आपसे एक अध्यापक के रूप में पूछा जाय कि इस विद्यालय का क्या प्रयोजन है तो क्या आप इसका उत्तर दे सकेंगे? मैं जानना चाहता हूँ कि आप सब क्या करने का प्रयास कर रहे हैं, आप क्या चाहते हैं कि छात्र क्या बनें? क्या आप उन्हें किसी ढांचे में ढालने का प्रयत्न कर रहे हैं, संस्कारित कर रहे हैं अथवा किसी विशेष दिशा की तरफ जाने को बाध्य कर रहे हैं? क्या आप उसे गणित या भौतिकशास्त्र पढ़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं, कुछ सूचनाएं दे रहे हैं, जिससे वह टेकनिकल ज्ञान में कुशल हो सके तथा भविष्य में खूब तरक्की कर सके? हजारों स्कूल यही कर रहे हैं, दुनिया भर में--तकनीकी ज्ञान में छात्रों को सर्वोत्तम बनाने की कोशिश रहे हैं जिससे कि वह एक अच्छा वैज्ञानिक, इन्जीनियर, भौतिकशास्त्री, आदि बन सके। अथवा आप यहां उससे कुछ अधिक करने का प्रयत्न कर रहे हैं? यदि वह कुछ अधिक है तो वह क्या है?</p>
<p>We must be very clear in ourselves what we want, clear what a human being must be - the total human being, not just the technological human being. If we concentrate very much on examinations, on technological information, on making the child clever, proficient in acquiring knowledge, while we neglect the other side,</p>	<p>इस सम्बन्ध में हमें बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए कि हम चाहते क्या हैं, कि एक मनुष्य को क्या होना चाहिए--एक पूर्ण मनुष्य, न कि केवल एक टेकनोलोजिकल मनुष्य। यदि हम परीक्षाओं पर, टेकनिकल सूचनाओं पर ही ज्यादा जोर देते हैं, बच्चे को चतुर बनाने पर तथा ज्ञान प्राप्त करने में कुशल होने पर, किंतु दूसरे पक्ष की उपेक्षा करते हैं, तो बच्चा</p>

<p>then the child will grow up into a one-sided human being. When we talk about a total human being, we mean not only a human being with inward understanding, with a capacity to explore, to examine his inward being, his inward state and the capacity of going beyond it, but also someone who is good in what he does outwardly. The two must go together. That is the real issue in education - to see that when the child leaves the school, he is well established in goodness, both outwardly and inwardly.</p>	<p>एक एकांगी मनुष्य की तरह विकसित होगा। जब हम एक पूर्ण मनुष्य की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य केवल एक ऐसे मनुष्य से ही नहीं है जिसमें आंतरिक बोध है, खोजबीन की सामर्थ्य है, अपने आंतरिक अस्तित्व के बारे में जांच-पड़ताल करने की, आंतरिक अवस्था के अन्वेषण और उससे परे जाने की क्षमता है, बल्कि हमारा तात्पर्य उस व्यक्ति से भी है जो उसमें भी अच्छा है जिसे वह बाह्य रूप से करता है। आंतरिक एवं बाह्य दोनों को साथ-साथ चलना होगा। शिक्षा की यही वास्तविक समस्या है--यह देखना कि बालक जब विद्यालय छोड़े तो अच्छाई में उसकी जड़ें जम चुकी हों, आंतरिक एवं बाह्य दोनों ही प्रकार से।</p>
<p>There must be a starting point from which we function so that we will cultivate not only the technological side but also uncover the deeper layers, the deeper fields of the human mind. I will put it another way. If you concentrate on making the student excellent in technology and neglect the other side, as we generally do, what happens to such a human being? If you concentrate on making the student a perfect dancer or a perfect mathematician, what happens? He is not just that, he is something more. He is jealous, angry, frustrated, in despair, ambitious. So you will create a society in which there is always disorder, because you are emphasizing technology and proficiency in one field and neglecting the other field. However perfect a man may be technologically, he is always in contradiction in his social relationships. He is always in battle with his neighbour.</p>	<p>एक आरम्भिक बिन्दु तो चाहिए ही, जहां से हम कार्य आरम्भ करें ताकि केवल टेक्निकल ज्ञान ही न फले-फूले वरन् साथ ही साथ मन के गहन तलों का, उसकी गहन परतों का भी उद्घाटन हो सके। मैं इसको एक दूसरे प्रकार से रखूंगा। यदि आप छात्र को टेक्नोलाजी में ही कार्य-कुशल बनाने पर सारा ध्यान देते हैं तथा दूसरे पक्ष की उपेक्षा कर देते हैं, जैसा कि प्रायः हम करते हैं, तो उस इन्सान का क्या होता है? यदि आप केवल छात्र को एक प्रवीण नर्तक अथवा गणितज्ञ बनाने की ओर ही सारा ध्यान देते हैं, तो क्या होता है? वह केवल उतना ही तो नहीं है, कुछ और भी तो है। वह ईर्ष्यालु है, क्रोधी, हताश और निराशा से भरा हुआ, महत्त्वाकांक्षी। तो आप एक ऐसा समाज बनायेंगे जिसमें सदा अफरा-तफरी रहेगी, क्योंकि आप टेक्नोलाजी एवं कार्य-कुशलता पर ही जोर दे रहे हैं तथा दूसरे क्षेत्र की उपेक्षा कर रहे हैं। तकनीकी स्तर पर चाहे कोई कितना भी कार्य-कुशल क्यों न हो जाए, अपने सामाजिक सम्बन्धों में वह सदा अंतर्विरोध में ही रहता है। अपने पड़ोसी से वह सदा संघर्ष में ही रहता है।</p>
<p>So technology cannot produce a perfect or a good society. It may produce a great society, where there is no poverty, where there is material equality and so on. A great society is not necessarily a good society. A good society implies order. Order does not mean trains</p>	<p>अतः टेक्नोलाजी एक पूर्ण अथवा अच्छा समाज नहीं बना कर सकती। वह एक बढ़िया समाज बना सकती है, जिसमें गरीबी न हो, जिसमें भौतिक समानता आदि हो। यह आवश्यक नहीं है कि एक बढ़िया समाज एक अच्छा समाज भी हो। अच्छे समाज में व्यवस्था होती है।</p>

<p>running on time, mail delivered regularly. It means something else. For a human being, order means order within himself. And such order will inevitably bring about a good society. Now from which centre are we to start?</p>	<p>व्यवस्था का यह अर्थ नहीं है कि रेलें समय पर चलें, डाक नियमित रूप से बंटें। उसका कुछ दूसरा ही अर्थ है। व्यवस्था का अर्थ है आंतरिक व्यवस्था। और ऐसी व्यवस्था अनिवार्यतः एक अच्छा समाज बनायेगी। तो हमें किस बिन्दु से आरम्भ करें?</p>
<p>Do you understand my question? If I neglect the inner and accentuate technology, whatever I do will be one-sided. So I must find a way, I must bring about a movement which will cover both. So far, we have separated the two and having separated them, we have emphasized the one and neglected the other. What we are now trying to do is to join both of them together. If there is proper education, the student will not treat them as two separate fields. He will be able to move in both as one movement. Right? In making himself technologically perfect, he will also make himself a worthwhile human being. Does this convey something or not?</p>	<p>क्या आपने मेरे प्रश्न को समझा? यदि मैं आंतरिक की उपेक्षा करता हूँ तथा टेक्नोलाजी पर ही बल देता हूँ तो मैं जो भी करूँगा एकांगी ही होगा। तो मुझे कोई मार्ग खोजना ही होगा, कोई ऐसा तरीका जो दोनों को संभव बनाये। अब तक हमने दोनों को अलग-अलग रखा है, और उनको अलग-अलग करके, हमने एक पर बल दिया तथा दूसरे की उपेक्षा की है। अब हम जो करने का प्रयत्न कर रहे हैं, वो है दोनों को आपस में जोड़ना। उचित शिक्षा होने पर छात्र इन दोनों को दो अलग-अलग क्षेत्र नहीं मानेगा। वह दोनों में ऐसे जी पायेगा मानों वे दोनों एक ही हों। ठीक? अपने को तकनीक ज्ञान में पूर्ण करने के साथ-साथ वह अपने को एक सार्थक मनुष्य भी बनायेगा। क्या बात समझ में आती है अथवा नहीं?</p>
<p>A river is not always the same, the banks vary, and the water can be used industrially or for various other purposes, but it is still water. Why have we separated the technological world and the other world? We have said: "If we could make the technological world perfect, we would have food, clothes, shelter for everybody, so let us concern ourselves with the technological." And there are also those who are concerned only with the inner world. They emphasize the so-called inner world, and become more and more isolated, more and more self-centred, more and more vague, pursuing their own beliefs, dogmas and visions. There is this tremendous division and we say we must somehow bring these two together. So having divided life into the outer and inner, we now try to integrate them. I think that way also leads to more conflict. Whereas if we could find a centre, a movement, an approach which does not</p>	<p>एक नदी सदा एक सी नहीं रहती, तट बदलते रहते हैं और पानी को भी उद्योगों के लिए अथवा दूसरे कार्यों में भी उपयोग किया जा सकता है, परंतु है तो वह पानी ही। तो हमने टेक्नोलाजी-सम्बन्धी विश्व को एवं दूसरे विश्व को अलग क्यों कर दिया है? एक ओर वे व्यक्ति हैं जो कहते हैं, "यदि हम टेक्नोलाजीकल संसार को पूरी तरह विकसित कर सकें तो हमारे पास सभी के लिए भोजन, वस्त्र और मकान होंगे, तो आओ टेक्नोलाजी पर ही अपना सारा ध्यान लगाते हैं।" और दूसरी ओर वे व्यक्ति भी हैं जो केवल आंतरिक विश्व की ही चिंता करते हैं। वे केवल तथा-कथित आंतरिक विश्व की ही बात करते हैं और अधिकाधिक अलग-थलग होते जाते हैं, अधिकाधिक स्वयं-केन्द्रित, अधिकाधिक अस्पष्ट होते जाते हैं, अपने ही विश्वासों, रुढ़ियों एवं स्वप्नों के पीछे भागते। यह ज़बरदस्त विभाजन है और हम कहते हैं कि किसी प्रकार इन दोनों को हमें एक साथ लाना होगा। अतः जीवन को बाह्य तथा आंतरिक में विभाजित करके अब हम उन्हें एकीकृत करना चाहते हैं। मेरे विचार से यह रास्ता भी द्वन्द्व को बढ़ाता है।</p>

<p>divide, we would function in both equally.</p>	<p>यदि हम एक ऐसा केन्द्र, ऐसी गति, ऐसी दृष्टि पा सकें जो विभाजित न करती हो, तो हम दोनों में समान रूप से कार्य कर सकेंगे।</p>
<p>What is the movement that is supremely intelligent? I am using the word "intelligent," not clever, not intuitive, not derived from knowledge, information, experience. What is the movement that understands all these divisions, all these conflicts; and that very understanding creates the movement of intelligence?</p>	<p>तो वह गति कौन सी है जो परम बुद्धिमत्तापूर्ण है? मैं "बुद्धिमत्तापूर्ण" शब्द का प्रयोग चतुराई, अंतर्दृष्टि, ज्ञान, सूचनाओं या अनुभव के अर्थ में नहीं कर रहा हूँ। तो वह कौन सी लहर है जिसे इन सब विभाजनों का, इन सब द्वंद्वों का बोध है; और ठीक यही बोध है जो प्रज्ञा की लहर को घड़ता है।</p>
<p>We see in the world two movements going on, the deep religious movement which man has always sought and which has become Catholicism, Protestantism, Hinduism, and this worldly movement of technology, a world of computers and automation that give man more leisure. The religious movement is very feeble and very few are pursuing it. The technological has become stronger and stronger and man is getting lost in it, becoming more mechanical and therefore man tries to escape from this mechanism, tries to discover something new - in painting, in music, in art, in the theatre. And the religious, if there are any, say "That is the wrong way" and move away to a world of their own. They do not see the insufficiency, the immaturity, the mechanical way of both. Now, can we see that both of these are insufficient? If we can see that, then we are beginning to perceive a non-mechanistic movement which will cover both.</p>	<p>विश्व में हम देखते हैं कि दो आन्दोलन चल रहे हैं। एक तो गहन धार्मिक आन्दोलन है जिसके लिये मनुष्य ने सदा प्रयत्न किया है और जो कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट, अथवा हिन्दू हो गया है। दूसरी टेक्नोलाजी की सांसारिक लहर है, जिसमें कम्प्यूटर है, स्व-चालित यंत्र हैं, जो मनुष्य को और अधिक विश्राम देते हैं। धार्मिक आन्दोलन बड़ा कमजोर है और अब तो बहुत कम ही लोग उसमें बचे हैं। टेक्नोलाजी का आन्दोलन बढ़ता ही जा रहा है और मनुष्य उसमें अपने को खोता जा रहा है, और अधिक मशीनी होता जा रहा है और तब वह इस जाल से निकलने करने का प्रयत्न करता है, वह किसी नवीन वस्तु की खोज का प्रयत्न करता है-चित्रकारी में, संगीत में, कला में, नाटक में। और धार्मिक व्यक्ति, यदि है कोई तो, कहते हैं "यह गलत रास्ता है" और अपनी ही दुनिया में सिमट जाते हैं। वे इन दोनों की यांत्रिकता को, उनकी अपर्याप्तता को, अनुपयुक्तता को, उनकी अपरिपक्वता को नहीं देखते। अब, क्या हम देख सकते हैं कि वे दोनों ही कितने अपर्याप्त हैं? यदि हम उसे देख पाएं तो हम उस लहर को समझने लगते हैं जो मशीनी नहीं है, जो उन दोनों को ही अपने घेरे में ले लेती है।</p>
<p>If I had a child to be educated I would help him to see the mechanical and the insufficient processes of both ways and in the very</p>	<p>यदि मुझे किसी बालक को शिक्षा देनी होती तो मैं उन दोनों मार्गों की यांत्रिक तथा अधूरी पर्याप्त प्रक्रिया को देखने में उसकी सहायता करता। और इन दोनों के</p>

<p>examination of the insufficiency of both as they operate in him, there would be born the intelligence which has come into being through examination.</p>	<p>अधूरेपन की प्रक्रिया, जैसे-जैसे वह उनमें चलती है, को देखते-समझते हुए ही बालक में उस बुद्धिमत्ता का जन्म होता है जो केवल देखने-समझने से आती है।</p>
<p>Sirs, look at those flowers, the brilliancy, the beauty of them. Now, how am I, as a teacher, to help the student to see the flowers and also be very good at mathematics? If I am only concerned with the flowers and I am not good at mathematics, something is wrong with me. If I am only concerned with mathematics, then also something is wrong with me.</p>	<p>कृपया इन फूलों को देखें, उनकी विलक्षण आभा को, इनके सौन्दर्य को देखें। अब एक शिक्षक के रूप में, मैं कैसे छात्रों की सहायता करूं कि वो, इन पुष्पों को देख सकें और साथ ही साथ गणित में भी खूब अच्छे हो पायें ? यदि मेरा सम्बन्ध केवल पुष्पों से ही है और मैं गणित में अच्छा नहीं हूँ तो मुझमें कहीं कोई कमी है। यदि मेरा सम्बन्ध केवल गणित से है तो भी कोई मुझमें कमी है।</p>
<p>You cannot cultivate technological information, become perfect in it first and then say you must also study the other. By giving your heart to years of acquiring knowledge you have already destroyed something in you - the feeling and the capacity to look. By emphasizing one or the other you become insensitive and the essence of intelligence is sensitivity.</p>	<p>ऐसा सम्भव नहीं है कि आप पहले टेक्नोलाजी के ज्ञान में दक्ष हो लें और तब सोचें कि हमें दूसरे का भी अध्ययन करना है। वर्षों तक ज्ञान प्राप्त करने में ही लगे रहने के कारण आपने पहले ही अपने भीतर कुछ नष्ट कर दिया है--देखने की महसूस करने की क्षमता। किसी एक या दूसरे को पहल देकर हम असंवेदनशील हो गए हैं, जबकि संवेदनशीलता बुद्धिमत्ता का सारतत्त्व है।</p>
<p>So, the quality which we want the child to have is the highest form of sensitivity. Sensitivity is intelligence; it does not come from books. If you spend forty years in learning mathematics but cannot look at those flowers and also study mathematics. If there is a movement of that intelligence it will cover both fields. Now how are you and I, as a community of teachers, going to create that movement of sensitivity in the ` child?</p>	<p>अतः वह गुण जो हम चाहते हैं कि बालक में हो, वह है अति-सूक्ष्म संवेदनशीलता। संवेदनशीलता बुद्धिमत्ता है; वह पुस्तकों से नहीं आती। यदि आपने अपने जीवन के चालीस वर्ष गणित सीखने में व्यतीत कर दिये हैं किन्तु आप उन पुष्पों का, नीले आकाश का, दर्शन नहीं कर सके तो आप मृत हैं। यदि आप संवेदनशील हैं जो कि प्रज्ञा का सर्वश्रेष्ठ गुण है, तो आप उन पुष्पों का दर्शन कर सकेंगे और साथ में गणित भी पढ़ सकेंगे। यदि इस प्रकार की समझ की लहर होगी तो वह दोनों क्षेत्रों का समावेश कर लेगी। तो आप और मैं शिक्षकों के समुदाय के रूप में कैसे बालक में संवेदनशीलता की यह लहर उठाने जा रहे हैं?</p>

<p>The student must be free. Otherwise he cannot be sensitive. If he is not free in the study of mathematics, enjoying mathematics, giving his heart to it, which is freedom, he cannot study it adequately. And to look at those flowers, to look at that beauty, he must also be free. So there must be freedom first. That means I must help that boy to be free. Freedom implies order, freedom does not mean allowing the boy to do what he likes, to come to lunch and to class when he likes.</p>	<p>छात्र का स्वतन्त्र होना ज़रूरी है। अन्यथा वह संवेदनशील नहीं हो सकता। यदि वह गणित के अध्ययन के लिए, उसका आनंद लेने के लिये, मन से उसे चाहने के लिये, स्वतंत्र नहीं है--जिसे सचमुच स्वतंत्रता कहते हैं, तो वह उसका समुचित रूप से अध्ययन नहीं कर सकता। और उन पुष्पों को देखने के लिए, उनके सौंदर्य के अवलोकन के लिये भी उसे स्वतंत्र होना होगा। तो सबसे पहले तो स्वतंत्रता चाहिये। इसका अर्थ है कि स्वतंत्रता में मुझे बालक की सहायता करनी चाहिये। स्वतंत्रता में व्यवस्था निहित है; स्वतंत्रता का यह अर्थ नहीं है कि बालक जो चाहे करे, जब चाहे कक्षा में अथवा भोजन के लिये आये।</p>
<p>In examining, working, in learning, one understands that the highest form of sensitivity is intelligence. That sensitivity, that intelligence can come about only in freedom, but to convey that to a child requires a great deal of intelligence on our part. I would like to help him to be free and yet at the same time have order and discipline, without conformity. To examine anything one must have not only freedom but discipline. This discipline is not something from outside which has been imposed upon the child and according to which he tries to conform. In the very examination of these two processes - the technological and the religious, there is attention and therefore discipline. Therefore one asks, "How can we help that boy or girl to be free completely and yet highly disciplined, not through fear, not through conformity, not partially free but completely free and yet highly</p>	<p>खोजबीन करते हुए, काम करते हुए, सीखते हुए, हमें इसका बोध होता है कि सर्वोत्तम संवेदनशीलता ही प्रज्ञा है। वह संवेदनशीलता, वह बुद्धिमत्ता केवल स्वतन्त्रता में ही आती है, परन्तु इसको बालक तक पहुंचाने के लिये हमारे अंदर भी बड़ी बुद्धि चाहिए। वह स्वतंत्र हो इसमें मैं उसकी सहायता करना चाहूंगा, साथ-साथ मैं चाहूंगा कि उसमें व्यवस्था हो, अनुशासन हो, बिना किसी लीक से बंधे। खोजबीन के लिए केवल स्वतंत्रता ही नहीं वरन् अनुशासन भी चाहिए। यह अनुशासन कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे बालक के ऊपर बाहर से थोपा जाए और जिसके अनुरूप ढलने के लिये उसे प्रयत्न करने पड़ें। दोनों प्रक्रियाओं की खोजबीन में--टेक्नोलाजी तथा धार्मिक--सावधानी की दरकार होती है, अतः अनुशासन होता है। अतः प्रश्न उठता है, हम कैसे उस बालक अथवा बालिका को पूर्णतया स्वतंत्र होने में और फिर भी भलीभांति अनुशासित होने में सहायता कर सकते हैं, किसी भय द्वारा अथवा लीक से बांधकर नहीं, आंशिक रूप से नहीं, वरन् पूर्णतया स्वतंत्र और फिर भी, साथ-ही-साथ एकदम अनुशासित?" एक पहले और दूसरा बाद में, ऐसा नहीं। वे दोनों साथ ही चलते हैं।</p>
<p>disciplined at the same time?" Not one first and then the other. They both go together. Now, how are we to do this? Do we clearly see that freedom is absolutely essential, and that</p>	<p>तो, हमें इसे कैसे करना है? क्या हम स्पष्टता से देखते हैं कि स्वतंत्रता एकदम आवश्यक है, और स्वतंत्रता का अर्थ जो हम चाहें वही करना नहीं है? आप जो चाहें</p>

<p>freedom does not mean doing what one likes? You cannot do what you like, because you are always in relationship in life with others. See the necessity and importance of being completely free and yet highly disciplined without conformity. See that your beliefs, your ideas, your ideologies are secondhand. You have to see all that and see that you must be absolutely free. Otherwise you cannot function as a human being.</p>	<p>वह नहीं कर सकते हैं क्योंकि आपका जीवन सदा दूसरों से संबन्धित है। पूर्णतया स्वतंत्र होने की आवश्यकता तथा उसके महत्त्व को देखें, और साथ-ही-साथ पूरी तरह से अनुशासित होने की भी, बिना किसी लीक का गुलाम बने। देखें कि आपके विश्वास, आपके विचार, आपके सिद्धांत, दूसरों से लिए हुए हैं--सैकिंड हैंड। आपको यह सब देखना होगा और यह भी देखना होगा कि आप पूर्णतया स्वतंत्र हों। अन्यथा आप एक मनुष्य के रूप में कार्य नहीं कर सकते।</p>
<p>Now I wonder if you see this as an idea or as a fact, as factual as this ink pot. How will you, as a community of teachers, when you see the importance of the child being completely free and also realize that there must be discipline and order - how will you help him so that he flowers in freedom and order? Your shouting at the child is not going to do it; your beating the child is not going to do it, your comparing him to another is not going to do it. Any form of compulsion, bullying, or system of giving him marks or no marks is not going to do it.</p>	<p>पता नहीं इसको एक विचार के रूप में देखते हैं या एक तथ्य के रूप में, उतना ही ठोस तथ्य जितना कि यह दवात। जब आप इसके महत्त्व को समझ लेते हैं कि बालक पूर्णतया स्वतंत्र हो तथा यह भी अनुभव करते हैं कि अनुशासन और व्यवस्था होनी चाहिये, तो आप शिक्षकों के समुदाय के रूप में कैसे उसकी सहायता करेंगे ताकि वह स्वतंत्रता और व्यवस्था में खिल सके? बालक को डांटने-फटकारने से तो आप ऐसा कर नहीं सकते; पीटने से भी नहीं, और न ही दूसरों से उसकी तुलना करके ही आप ऐसा कर सकते हैं। किसी प्रकार का दबाव, धमकाना, उसे अंक देने या न देने से--इस सब से भी यह होने वाला नहीं।</p>
<p>If you see the importance of the boy being free and at the same time highly orderly, and if you see that punishment or cajoling him is not going to produce anything, will you completely drop all that in yourself.</p>	<p>यदि आप बालक के स्वतंत्र होने के और साथ ही भलीभांति अनुशासित होने के महत्त्व को देखते हैं, और यदि आप देखते हैं कि दण्ड तथा फुसलाने से भी कुछ नहीं होगा, तो क्या आप अपने भीतर उन सबको छोड़ नहीं देंगे?</p>
<p>The old method has not produced freedom. It has made man comply and adjust, but if you see that freedom is absolutely necessary and therefore order is essential, these methods which we have used for centuries must drop away.</p>	<p>पुरानी प्रणाली स्वतंत्रता नहीं ला सकी। उसने मनुष्य को आज्ञा-पालन तथा सांचे में ढलने के लिए बाध्य किया है; परन्तु यदि आप देख लें कि स्वतंत्रता नितांत आवश्यक है और इसलिए व्यवस्था अनिवार्य है, तो इन प्रणालियों</p>

	को जिनका हमने शताब्दियों से प्रयोग किया है छोड़ना होगा।
<p>The difficulty is that you are used to old methods and suddenly you are deprived of them. So you are confronted with a problem about which you have to think in a totally different way. It is your problem. It is your responsibility. You are confronted with this issue. You cannot possibly employ the old methods, because you have seen that the boy must be totally free and yet there must be order. So what has happened to you who have, so far, accepted and functioned with an old formula? You have thrown out the formula and are looking at the problem anew, are you not? You are looking at the problem with a fresh mind which is free.</p>	<p>कठिनाई यह है कि आप पुरानी प्रणालियों के आदी हो चुके हैं और अचानक ही आप उनसे वंचित हो जाते हैं। इसलिये आपके सामने एक ऐसी समस्या है जिसके विषय में आपको पूर्णतया भिन्न प्रकार से सोचना होगा। यह आपकी समस्या है। यह आपकी जिम्मेदारी है। इस समस्या से आपको निबटना है। सम्भवतः आप पुरानी प्रणालियों का प्रयोग भी नहीं कर सकते, क्योंकि आपने समझ लिया है कि बालकों को पूर्णतया स्वतंत्र होना चाहिए और साथ ही व्यवस्था भी होनी आवश्यक है। तो अब आप क्या करेंगे आप जो कि अब तक एक प्राचीन फार्मूले को स्वीकार किए बैठे थे तथा उसी के अंतर्गत चले जा रहे थे? आपने उस फार्मूले को फेंक दिया है तथा अब समस्या को एक नये सिरे से देख रहे हैं, क्या नहीं देख रहे? उस समस्या को अब आप स्वच्छ मन से देख रहे हैं, जो कि स्वतंत्र है।</p>
<p><b>Teacher:</b> To see, does one always have to be in that state?</p>	<p><b>शिक्षक</b>--यह सब देख पाने के लिए क्या आवश्यक है कि व्यक्ति को सदा उस अवस्था में रहना होगा?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> If you do not see it now but demand to see it always, that is nonsense. The seeing once is the seed put in the earth, that will flower. But if you say that you must see it always, then you are back to the old formula.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति</b> : यदि आप अभी, इसी समय, नहीं देखते और सदा देखने की मांग करते रहते हैं तो वह मूर्खतापूर्ण होगा। एक बार देख लेना, मानों बीज बोने जैसा है जो खिलेगा। परंतु यदि आप कहते हैं कि आपको उसे सदा देखना चाहिये तो फिर आप उसी पुराने फार्मूले पर लौट आते हैं।</p>
<p>Look what has happened: the old patterns of thinking with regard to teaching and freedom and order have been taken away from you. Therefore you are looking at problems differently. The difference is that your mind is now free to look, free to examine the issue of freedom and order. Now how will you convey to the child that you are not going to punish him,</p>	<p>जो हुआ है, उसे देखें। शिक्षण के बारे में एवं स्वतन्त्रता तथा अनुशासन के बारे में पुराने विचारों के ढांचे अब आप के पास नहीं। अतः आप उन समस्याओं को एक भिन्न प्रकार से देख रहे हैं। और भिन्नता यह है कि आपका मन अब देखने के लिए स्वतंत्र है, स्वतंत्रता और व्यवस्था की समस्या को देखने-परखने के लिये स्वतंत्र। अब आप बालक को कैसे बतायेंगे कि आप उसे</p>

<p>not going to reward him and yet he must be totally free and orderly?</p>	<p>दण्डित करने या ईनाम देने नहीं जा रहे हैं और फिर भी उसे पूर्णतया स्वतंत्र तथा व्यवस्थित होना होगा।</p>
<p><b>Teacher:</b> I think the teacher has the same problem as the child. He needs to operate from a field where he feels freedom and discipline go together. In his present thinking, he separates order and freedom. He says freedom is against order and order is against freedom.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> मेरे विचार से शिक्षक की भी वही समस्या है जो बालक की है। उसे एक ऐसे क्षेत्र से कार्य करने की ज़रूरत है जहां वह अनुभव करता है कि स्वतंत्रता तथा अनुशासन साथ-साथ चलते हैं। अपनी वर्तमान सोच में तो वह व्यवस्था और स्वतंत्रता को अलग करके देखता है। उसका मानना है कि व्यवस्था स्वतंत्रता के विरुद्ध है और स्वतंत्रता व्यवस्था के।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> I think we are missing something. When you see that the old methods of punishment and reward are dead, your mind becomes much more active. Because you have to solve this problem, your mind is alive. If it is alive, it will be in contact with the issue.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति--</b>मेरे विचार से हम कुछ भूल रहे हैं। जब आप देखते हैं कि सजा तथा ईनाम के पुराने तौर-तरीके मुरदा हो चुके हैं, तब आपका मन कहीं अधिक तरो-ताज़ा हो जाता है। क्योंकि आपको इस समस्या का समाधान खोजना है, अतः आपका मन सजीव हो जाता है। यदि वह सजीव है, तो वह समस्या के सम्पर्क में आयेगा।</p>
<p>Because you are free and understand freedom, you will be punctual in your class and from freedom you will talk to the student and not from an idea. To talk from an idea, a formula, a concept is one thing, but to talk from an actual fact which you have seen - that the student must be free and therefore orderly - is totally different. When you as a teacher are free and orderly you are already communicating it, not only verbally but non-verbally and the student knows it immediately.</p>	<p>क्योंकि आप स्वतंत्र हैं और स्वतंत्रता को समझते हैं, तो कक्षा में आप नियमित रहेंगे, और बालक से आप स्वतंत्रता के उसी एहसास में ठहरकर बात करेंगे, न कि किसी पूर्व निर्धारित विचार से। किसी विचार, फार्मूले या धारणा के आधार पर बात करना एक बात है, परंतु एक ऐसे वास्तविक तथ्य को मद्दे नज़र रख कर बात करना, जिसे आपने देख-समझ लिया है--कि छात्र को पूर्णतया स्वतंत्र और इसलिए व्यवस्थित होना चाहिए--पूर्णतया एक भिन्न बात है। जब एक अध्यापक के रूप में आप स्वतंत्र एवं व्यवस्थित होते हैं तो आप पहले ही अपनी बात पहुँचा रहे होते हैं, शाब्दिक रूप से ही नहीं वरन् अशाब्दिक रूप से भी और छात्र को तुरंत पता चल जाता है।</p>
<p>Once you see the fact that punishment and reward in any form are destructive, you never go back to them. By throwing them out, you</p>	<p>एक बार जब आप इस तथ्य को देख लेते हैं कि दण्ड तथा पुरस्कार हर हाल में विनाशकारी है, फिर आप लौट कर उनकी तरफ नहीं देखते। उन्हें दूर हटा कर</p>

<p>yourself are disciplined and that discipline has come out of the freedom of examination. You communicate to the child the fact of that and not any idea. Then you have communicated to him not only verbally, but at a totally different level.</p>	<p>आप स्वयं अनुशासित हो जाते हैं और वह अनुशासन खोजबीन की स्वतंत्रता से आता है। आप बालक को उस बात की सच्चाई संप्रेषित करते हैं न कि कोई विचार। तब आप केवल शाब्दिक स्तर पर ही उस तक नहीं पहुंचते वरन् पूर्णतया एक भिन्न स्तर पर संवाद स्थापित करते हैं।</p>
<p></p>	<p></p>
<p><b>Talk To Teachers</b> <b>Chapter 2 On The Long Vision</b></p>	<p>2. दूर-दृष्टि</p>
<p></p>	<p></p>
<p>I think most of us know what is happening in the world - the threat of war, the nuclear bomb, the many tensions and conflicts that have brought about new crises. It seems to me that a totally different kind of mind is necessary to meet these challenges. A mind that is not specialized, not trained only in technology, that is not merely seeking prosperity, but that can meet challenges adequately, completely. And it seems to me that that is the function of education, that is the function of a school.</p>	<p>मेरे विचार से हममें से अधिकांश लोग जानते हैं कि विश्व में क्या हो रहा है--युद्ध का खतरा है, अणुबम हैं अनेक प्रकार के तनाव और द्वन्द्व है जिन्होंने नए संकट खड़े कर दिए हैं। मुझे ऐसा लगता है कि इन चुनौतियों का सामना करने के लिए एक पूर्णतया भिन्न प्रकार के मन की आवश्यकता है--एक ऐसे मन की जो विशेषज्ञ नहीं है, जिसका प्रशिक्षण केवल टेक्नोलाजी में ही नहीं हुआ, जो केवल समृद्धि के ही पीछे नहीं हैं, वरन् जो चुनौतियों का ठीक से, पूरी तरह, सामना कर सके। और मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा का यही कार्य है, एक विद्यालय का भी यही कार्य है।</p>
<p></p>	<p></p>
<p>Everywhere - in Europe, Russia, America, Japan and here - they are turning out technicians, scientists, educators. These specialists are incapable of meeting the enormously complex challenge of life. They are utterly incapable and yet they are the people who rule the world as the politician, as the scientist. They are specialists in their fields and their guidance, their leadership has obviously failed and is failing.</p>	<p>यूरोप, रूस, अमेरिका, जापान और यहां, सभी जगह--टेक्नीशियन, वैज्ञानिक, प्रशिक्षक ही बनाये जा रहे हैं। ये विशेषज्ञ जीवन की अत्यंत जटिल चुनौती का सामना करने में अक्षम हैं। वे एकदम अयोग्य लोग हैं, फिर भी वही हैं जो विश्व पर शासन करते हैं, राजनीतिज्ञ के रूप में, वैज्ञानिक के रूप में। वे अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ हैं और उनका मार्गदर्शन, उनका नेतृत्व, स्पष्ट है कि असफल हो गया है, और हो रहा है। वे केवल उसी का सामना करते हैं जो एकदम सिर पर ही</p>

<p>They are merely responding to the immediate. You see, we are thinking in terms of the immediate, the immediacy of events. We are concerned with the immediate responses of a country that is very poor, like India, or the immediate responses of the enormous prosperity of the West. Everyone is thinking in terms of doing something immediately. I think one has to take a long view of the whole problem and I do not think a specialist can do this because specialists always think in terms of action which is immediate. Though immediate action is necessary, I think the function of education is to bring about a mind that will not only act in the immediate but go beyond.</p>	<p>आ पड़ता है। स्पष्ट है कि हम केवल तत्काल की भाषा में, घटनाओं की तात्कालिकता में सोचते हैं। भारत जैसे बहुत ग़रीब देश की तत्काल होने वाली प्रतिक्रिया की हमें चिन्ता है, ऐसे ही बेइंतहा अमीरी-समृद्धि वाले पश्चिम के देशों की तत्काल होने वाली प्रतिक्रिया की। प्रत्येक व्यक्ति झटपट कुछ करने की भाषा में सोच रहा है। मेरे विचार से हमें सारी समस्या को एक व्यापक-दृष्टि से देखना चाहिये, और मैं नहीं समझता कि कोई विशेषज्ञ यह कर सकता है, क्योंकि विशेषज्ञ तो सदा झटपट एक्शन की भाषा में ही सोचता है। यद्यपि तत्काल एक्शन आवश्यक है, परंतु मेरा विचार है कि शिक्षा का कार्य एक ऐसे मन को उत्पन्न करना है जो केवल तात्कालिकता की दृष्टि से ही कार्य न करें, वरन् उसके परे भी जाय।</p>
<p>Throughout the world the authoritarian governments, the priests, the professors, the analysts, the psychologists, everybody is concerned with controlling or shaping or directing the mind and, therefore, there is very little freedom. The real issue is to find out how to live in a world that is so compulsively authoritarian, so brutal and tyrannical, not only in the immediate relationships but in social relationships, how to live in such a world with the extraordinary capacity to meet its demands and also to be free. I feel education of the right kind should cultivate the mind not to fall into grooves of habit, however worthy or noble, however technologically necessary, but to have a mind that is extraordinarily alive, not with knowledge, not with experience, but alive. Because often the more knowledge one has, the less alert the brain is.</p>	<p>सारे विश्व में सत्तावादी सरकारें, पुरोहित, प्रोफ़ेसर, विश्लेषक, मनोवैज्ञानिक, हर कोई मन को नियंत्रित करने में, उसे ढालने या निर्देशित करने में लगा है, और इसीलिये स्वतन्त्रता का अभाव है। वास्तविक समस्या यह पता लगाना है कि एक ऐसे विश्व में कैसे जिया जाए जहां हर कोई सत्ता में घिरने के लिए बाध्य दिखता है, जो इतना क्रूर एवं अत्याचारी है, न केवल तात्कालिक सम्बन्धों में ही वरन् सामाजिक सम्बन्धों में भी ऐसे संसार में कैसे रहा जाय, उस अद्भुत सामर्थ्य के साथ जो उसकी चुनौतियों का सामना भी करे और फिर भी मुक्त रहे। मुझे लगता है कि सही शिक्षा मन को इस प्रकार बनायेगी कि वह आदतों की लीक में न फंसे, वे आदतें चाहे कितनी भी महान और अच्छी क्यों न हों; टेक्नोलाजी की दृष्टि से चाहे कितनी भी आवश्यक क्यों न हों; बल्कि ऐसा मन जो असाधारण रूप से सजीव हो, ज्ञान से या अनुभव से नहीं, बस सजीव। क्योंकि अक्सर व्यक्ति के पास जितना अधिक ज्ञान होता है, उसका मस्तिष्क प्रायः उतना ही कम सतर्क होता है।</p>
<p>I am not against knowledge. There is a difference between learning and acquiring knowledge. Learning ceases when there is only accumulation of knowledge. There is learning only when there is no acquisition at all. When knowledge becomes all important learning ceases. The more I add to knowledge</p>	<p>मैं ज्ञान के विरुद्ध नहीं हूँ। सीखने और ज्ञान बटोरने में अंतर है। जब ज्ञान केवल जमा होता है तब सीखना समाप्त हो जाता है। सीखना तभी होता है जब संघय बिलकुल नहीं होता। जब ज्ञान सभी प्रकार से महत्वपूर्ण हो जाता है तब सीखने का अंत हो जाता है। जितना अधिक मैं ज्ञान जोड़ता जाता हूँ मन उतना ही सुरक्षित, उतना ही आश्वस्त होता जाता है और इस लिए सीखना</p>

<p>the more secure, the more assured the mind becomes, and, therefore it ceases to learn. Learning is never an additive process. When one is learning, it is an active process. Whereas acquiring knowledge is merely gathering information and storing it up. So I think there is a difference between acquiring knowledge and learning. Education throughout the world is merely the acquisition of knowledge and therefore the mind becomes dull and ceases to learn. The mind is merely acquiring. The acquisition dictates the conduct I of life and, therefore, limits experience. Whereas learning is limitless.</p>	<p>बंद कर देता है। सीखना कभी भी जमाखोरी नहीं है। जब कोई सीख रहा होता है, तो वह एक सजीव प्रक्रिया होती है, जबकि ज्ञान का संचय केवल सूचनाएं प्राप्त करना तथा उन्हें एकत्र करना है। इसलिये मेरे विचार से ज्ञान बटोरने और सीखने में अंतर है। सारे विश्व में ही शिक्षा केवल ज्ञान का संचय है और इसलिये मन मंद हो जाता है तथा सीखना बंद कर देता है। मन केवल संचय कर रहा है। यही संचय जीवन की मैं को निर्देशित करता है, और इसलिए, अनुभव को सीमित करता है। जबकि सीखने की कोई सीमा नहीं है।</p>
<p>Can one, in a school, not only acquire knowledge, which is necessary for living in this world, but also have a mind that is constantly learning? The two are not in contradiction. In a school, when knowledge becomes all important, learning becomes a contradiction. Education should be concerned with the totality of life and not with the immediate responses to the immediate challenges.</p>	<p>क्या किसी विद्यालय में यह संभव है कि व्यक्ति केवल ज्ञान हासिल न करके, जो कि इस विश्व में जीने के लिए आवश्यक है एक ऐसा मन भी संजोए जो निरंतर सीख रहा है? इन दोनों में कोई अंतर्विरोध नहीं है। एक विद्यालय में जब ज्ञान ही सब कुछ हो जाता है, तब सीखने में विरोध खड़े हो जाते हैं। शिक्षा का सम्बन्ध जीवन की समग्रता से होना चाहिये, न कि तत्काल उत्पन्न होने वाली चुनौतियों के प्रति झटपट होने वाली प्रतिक्रिया से।</p>
<p>Let us see what is involved in the two. If one is living in terms of the immediate, responding to the immediate challenge, the immediate is constantly repeated in different ways. In one year it will be war, the next year it may be revolution, in the third year industrial unrest; if one is living in terms of the immediate, life becomes very superficial. But you may say that that is enough because that is all we need to care about. That is one way of taking life. If you live that way it is an empty life. You can fill it with cars, books, sex, drink, more clothes, but it is shallow and empty. A man living an empty life, a shallow life, is always trying to escape; and escape means delusion, more gods, more beliefs, more dogmas, more authoritarian attitudes, or more football, more</p>	<p>अब हम देखें कि इन दोनों में क्या अंतर्निहित है। यदि व्यक्ति झटपट की मानसिकता में जीता है, तत्काल होने वाली चुनौतियों के प्रति ही प्रतिक्रिया करता है, तो फिर वह तत्काल ही तरह-तरह से खुद को दोहराए चला जाता है। यदि इस वर्ष युद्ध है तो अगले वर्ष क्रांति और तीसरे वर्ष औद्योगिक अशांति; यदि व्यक्ति केवल तत्काल की समस्याओं के साथ ही जीता है, तो जीवन अत्यंत सतही हो जाता है। परंतु आप कह सकते हैं कि यही पर्याप्त है क्योंकि यही सब है जिसकी हमें चिन्ता करनी है। जीवन जीने का यह भी एक तरीका है। यदि आप इस तरह से जी रहे हैं तो वह एक खोखला जीवन होगा। आप इसे भर सकते हैं, कारों से, किताबों, यौन, शराब, अधिक वस्त्र आदि से, परंतु रहेगा वह छिछला और खोखला ही। एक मनुष्य जो खोखला जीवन जी रहा है, छिछला जीवन, वह हमेशा ही भागने की</p>

<p>sex, more television. The immediate responses of those who live in the immediate are extraordinarily empty, futile, miserable. This is not my feeling or prejudice; you can watch it. You may say that is enough, or you may say that that is not good enough. So there must be the long vision, though I must of course act in the immediate, do something about it when the house is burning, but that is not the end of action. There must be something else, and how can one pursue that something else without bringing in authority, books, priests? Can one wipe them all out and pursue the other? If one pursues the other, this immediacy will be answered in a greater and more vital way. So, what do you, as a human being and also as an educator, a teacher, what do you feel about it?</p>	<p>कोशिश में रहता है, और भागने का अर्थ है भ्रांति, और अधिक देवता, और अधिक विश्वास, अधिक रूढ़ि सिद्धांत, अधिक सत्तावादी दृष्टिकोण, या फिर और-अधिक फुटबाल, कामवासना, और टेलीविजन। उन लोगों की तात्कालिक प्रतिक्रियाएं जो केवल उसी में जीते हैं जो तत्काल है--असाधारण रूप से खोखली, व्यर्थ और दयनीय होती है। यह कोई मेरी अनुभूति या पूर्वाग्रह नहीं है! आप स्वयं इसे देख सकते हैं। आप कह सकते हैं कि यह काफी है, या कह सकते हैं कि यह उतना काफी नहीं है। अतः दूर-दृष्टि की आवश्यकता है, हालांकि क्रिया तो मुझे निःसंदेह तत्काल में ही करनी पड़ेगी, जैसे जब मकान में आग लगी हो तो तुरंत कुछ करना पड़ता है, परन्तु वही एक्शन का अंत नहीं होता। अवश्य ही कुछ और भी होगा। तो कैसे कोई बिना सत्ता को, ग्रन्थों को, पुरोहितों को, बीच में लाये उस 'कुछ और' को खोजे? क्या व्यक्ति उन सभी को हटा कर 'उस दूसरे' का अनुशीलन कर सकता है? यदि व्यक्ति 'उस दूसरे' का अनुशीलन करता है तो तात्कालिकता को अधिक व्यापक और अधिक समर्थ तरीके से प्रत्युत्तर मिलेगा। तो आप उसके बारे में क्या महसूस करते हैं, एक मनुष्य के ही नहीं वरन् एक शिक्षक के, एक अध्यापक के रूप में भी?</p>
<p>I do not want you to agree with me. But if you have exercised your brain, if you have observed world events, if you have watched your own inclinations, your own demands, persuasions, if you have seen the whole state of man and his quivering despair, how do you respond? What is your action, your way of looking at it all? Forget that you are in a school. We talking as human beings.</p>	<p>मैं नहीं चाह रहा कि आप मुझसे सहमत हों। परंतु यदि आपने अपने मस्तिष्क पर ज़ोर दिया है, यदि आपने विश्व की घटनाओं को गौर से देखा है, यदि आपने अपने रुझानों, अपनी मांगों, अपनी चाहतों का निरीक्षण किया है, यदि आपने मनुष्य की समस्त अवस्था और उसकी थरथराती-कांपती हुई निराशा को देखा है तो उस सबके प्रति आपकी क्या प्रतिक्रिया है? आपका एक्शन क्या है, देखने का ढंग क्या है? भूल जायें कि आप एक विद्यालय में हैं। हम मनुष्य के रूप में बात कर रहे हैं।</p>
<p>Teacher: In meeting an immediate challenge, especially as one grows older, one seems to bring in a sense of anxiety. Is there as one grows older, another approach?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> सामने खड़ी किसी चुनौती का सामना करने में, विशेष रूप से जब हम बड़े हो जाते हैं, हमें घबराहट का एहसास होता है। जब व्यक्ति बड़ा हो जाए, तो क्या कोई दूसरा तरीका भी है?</p>

<p><b>Krishnamurti:</b> What do you mean by "getting older?" Older in terms of doing a job? Older in terms of routine, boredom? What do you mean by age? What makes you old? The organism wears out - why? Is it due to disease, or is it because there is repetition like a machine going on over and over again? The psyche is never alive; it is merely functioning in habit. So it reduces the body quickly to old age. Why does the psyche become old, or need it ever get old? I do not think it need ever get old. And is old age only a habit? Have you noticed old people, how they eat, how they talk? And is it possible to keep the psyche extraordinarily young, alive, innocent? Is it possible for the psyche to be alive and never for a second lose its vitality through habit, through security, through family, through responsibility? Of course it is possible, which means that you must destroy everything you build. That is what I mean by the long vision. You have an experience, pleasant or unpleasant, that leaves a mark, and the mind lives in that: "I have had such a marvellous experience" or "I have had such a sad life," and there is a decaying in itself. So, experience, and the living in experience, is decay.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> “बड़े होने” से आपका क्या अर्थ है? क्या बड़े होना यानी किसी नौकरी में होना, रोजाना के काम-धँधे, ऊब? आयु से आपका क्या अर्थ है? क्या चीज़ आपको बड़ा बनाती है? शरीर कमज़ोर हो जाता है--क्यों? किसी बीमारी की वजह से या फिर बार-बार के उसी मशीनी दोहराव के कारण? मन तो कभी सजीव होता ही नहीं; वह तो केवल आदत में कार्य करता रहता है। तो वह शीघ्र ही शरीर को बुढ़ा देता है। तो मानस क्यों बूढ़ा होता है, बूढ़ा होना क्या ज़रूरी भी है। मैं नहीं सोचता कि उसे कभी भी बूढ़ा होने की आवश्यकता है। और क्या बुढ़ापा केवल एक आदत है? क्या आपने बूढ़े लोगों की तरफ कभी ध्यान दिया, कैसे वो खाते हैं, कैसे बात करते हैं? और क्या यह संभव है कि मनको असाधारण रूप से जवान, सजीव, निष्कपट रखा जा सके? क्या यह संभव है कि मन सजीव रहे और एक क्षण के लिये भी अपनी शक्ति न खोये न आदत के द्वारा, न सुरक्षा के लिए, परिवार या जिम्मेदारी के बहाने? निःसंदेह यह संभव है जिसका मतलब है कि आपको प्रत्येक उस वस्तु को नष्ट करना होगा, जिसे आपने बनाया है। दूरदृष्टि से मेरा यही अर्थ है। आपको एक अनुभव हुआ--सुखद या दुखद, और वह अपने निशान छोड़ जाता है और मन उसी में जीता है : “मुझे एक ऐसा विलक्षण अनुभव हुआ” अथवा “मेरा जीवन इतना दुःखद रहा,” और वह अपने आप में पतन है। इस प्रकार, अनुभव में जीना पतन है।</p>
<p>Let us come back to my question. As a human being, living in this society, in a world which is demanding immediate action, what is your response to the immediate challenge? The immediate challenge is always asking you to respond immediately, and you are caught in that. How do you, as a parent, as a teacher, as a citizen, respond to it? For, according to your response, you are caught in it. Whether you respond consciously or unconsciously, the effect of that will be on the psyche.</p>	<p>अब हम अपने प्रश्न पर वापस आये। एक मनुष्य के नाते, ऐसे समाज में रहते हुए, एक ऐसे विश्व में जो तत्काल एक्शन की मांग करता है; आपकी इस तात्कालिक चुनौती के प्रति क्या प्रतिक्रिया है? तात्कालिक चुनौती निरंतर आपसे तात्कालिक प्रतिक्रिया की मांग करती है; और आप उसमें फंसे हैं। मां-बाप के रूप में, अध्यापक या नागरिक के रूप में आप कैसे इसका जवाब देते हैं, क्योंकि अपने प्रत्युत्तर के अनुसार ही आप उसमें उलझते हैं। यह प्रत्युत्तर चाहे सचेत रूप से हों अथवा अचेत रूप से, उनका प्रभाव मानस पर पड़ेगा ही।</p>
<p><b>Teacher:</b> Is there a way by which this long vision becomes an actuality, as actual as the</p>	<p><b>शिक्षक :</b> क्या कोई तरीका है जिससे यह दूर-दृष्टि एक वास्तविकता बन जाय, उतनी ही वास्तविक जितनी</p>

immediate?	सामने खड़ी चुनौती होती है?
<p><b>Krishnamurti:</b> Of course. Because the immediate is the actual. There is the nuclear bomb - the Russian, the American, the French scientists are inventing ways of producing cheap atom bombs - they may blow themselves to bits. Why should you respond to it? The nuclear bomb is the result of a long series of events - nationalism, industrialism, class differences, greed, envy, hate, ambition - all these have produced the nuclear bomb. You reply without understanding it - that America or Russia should be stopped from producing nuclear bombs, and you call that an actual response. Without answering the total, what is the good of replying to the fragments of the problem?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> निःसंदेह। क्योंकि जो तत्काल है वही वास्तविक है। अणुबम है--और रूसी, अमरीकी, फ्रांसीसी वैज्ञानिक सस्ते अणुबम बनाने के तरीके खोज रहे हैं--ये वैज्ञानिक क्षण-मात्र में अपना नाश कर सकते हैं। क्यों उसके प्रति आप प्रतिक्रिया करें? यह अणुबम घटनाओं की एक लम्बी श्रृंखला का परिणाम है--राष्ट्रवाद, उद्योगवाद, वर्ग-भेद, लालच, द्वेष, घृणा, महत्त्वाकांक्षा----इन सभी ने मिलकर अणुबम किया है। बिना समझे आप उत्तर देते हैं--अमेरिका अथवा रूस को अणुबम बनाने बंद कर देने चाहिए, और उसे आप एक वास्तविक उत्तर कहते हैं। सम्पूर्णता में जवाब दिए बगैर समस्या के अंशों का उत्तर देने से क्या लाभ?</p>
<p>So, if this is the actual and you see that the actual produces such immature responses, then you must pursue the other. Knowing that you must respond to the immediate and also that you must have long vision, how do you bring this about as an educator? Nobody is concerned with the other; no educator is concerned with the long vision, the long view. Education today is concerned only with the immediate. But if you are dissatisfied with the immediate, then how would you pursue that and not neglect this? Do you see the urgency of it?</p>	<p>इसलिए यदि यही वास्तविक है और आप देख लेते हैं कि यह वास्तविकता ऐसे अधपके जवाब खड़े करती है, तो आप 'दूसरे' का अनुसरण करेंगे। तो यह जान करके कि जो तत्काल है उसका जवाब तो देना ही है, साथ ही दूर-दृष्टि भी होनी चाहिए, तो एक शिक्षक के रूप में आप यह सब कैसे करेंगे? किसी को उस 'दूसरे' की चिन्ता नहीं है; कोई शिक्षक भी उस दूर दृष्टि की चिन्ता नहीं करता। आज की शिक्षा केवल उसी की चिन्ता करती है जो तत्काल है। परंतु यदि जो तत्काल है उससे आप असंतुष्ट हैं, तो 'उसके' पीछे आप कैसे जायेंगे, बिना इस तत्काल की उपेक्षा किए? क्या आप इसकी आवश्यकता को महसूस करते हैं?</p>
<p>Shall I put the problem differently? How can one keep the mind young, never let it grow old and never say, "I have had enough," and seek a corner to stay in and stagnate? That is the tendency and that is the actual fact. To get a position is difficult, but once you have got it, you stagnate. Everything about the world is destroying the long vision. Books, newspapers,</p>	<p>क्या मैं इस समस्या को दूसरी तरह रखूं? कोई व्यक्ति कैसे मन को इस प्रकार तरुण रख सकता है कि वह कभी बूढ़ा न हो और कभी यह न कहें, "बस बहुत हो गया," और फिर एक कोना खोज ले जिसमें वह पड़ा रहे और सड़ता रहे? यह एक रुझान है, एक वास्तविक तथ्य है। किसी पदवी को प्राप्त करना कठिन है, परंतु यदि एक बार आपउसे प्राप्त कर लेते हैं तो आप जड़ हो जाते हैं। विश्व में प्रत्येक वस्तु दूर-दृष्टि को नष्ट</p>

<p>politicians, priests, everything influences you, and how does one walk out of it all? You are being contaminated and yet you have to function and you cannot walk out of it.</p>	<p>कर रही है। पुस्तकें, समाचारपत्र, राजनीतिज्ञ, पुरोहित, प्रत्येक वस्तु आपको प्रभावित करती हैं, और व्यक्ति कैसे इन सबसे बाहर निकले? आपको भ्रष्ट किया जा रहा है और फिर भी आपको कार्य करना है और आप उससे भाग नहीं सकते।</p>
<p>Life is destruction, life is love, life is creation. We know none of it. It is a tremendous thing. Now how would you translate all this into education?</p>	<p>जीवन ही विनाश है, जीवन ही प्रेम है, जीवन ही रचना है। हम इनमें से किसी को नहीं जानते। यह एक ज़बरदस्त बात है। तो आप इस सब को शिक्षा के रूप में कैसे ढालेंगे?</p>
<p><b>Teacher:</b> Is it possible to pursue one vision at the cost of another? Is it possible to do away with the short vision?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> क्या एक की कीमत पर दूसरी दृष्टि को आगे बढ़ाना संभव है? क्या यह संभव है कि हम तंग-दृष्टि का नाश कर दें?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> The problem is not to run away from all this misery or to see how to combine the two. You cannot combine the little with the big; the big has to take in the little.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> समस्या इन सब कष्टों से भाग जाने की नहीं है न ही ये कि दोनों को संयुक्त कैसे करें। जो छोटा है उसे आप विशाल में नहीं डाल सकते; विशाल को छोटे को अपने भीतर लेना होगा।</p>
<p><b>Teacher:</b> But is it not better to follow the little in the beginning and come to the big later?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> परंतु क्या छोटे से शुरू करके बाद में विशाल पर आना अच्छा नहीं होगा?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Never. If you say the little is the first step, then you are lost, you are caught in the little. Think it out for yourself. If you accept the little, then where are you? You will be caught, won't you - little family, little house, little husband, little money, little clothes? You have made the little important, the little first and so you have little responsibility in society. You are all so terribly respectable. Why do you put the</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> कभी नहीं। यदि आप कहते हैं कि छोटा पहला कदम है तो आप भ्रम में पड़ गये, उलझ गए छोटे के फंसे में, फिर आप नहीं निकल पायेंगे। इस पर आप स्वयं सोचें। यदि आप छोटे को स्वीकार कर लेते हैं, तो आप हैं कहां? आप तो फंस जायेंगे, क्या नहीं?--छोटा सा परिवार, घर-बार, पति, धन, कपड़े? आपने छोटे को महत्वपूर्ण बना दिया, छोटा आगे आ गया और इसलिये समाज में आपका कोई दायित्व नहीं रह गया। आप सभी बड़े ही सम्मानित लोग हैं, विशिष्ट हैं। क्यों</p>

little first? Because that is the easiest way.	आप छोटे को पहले रखते हैं? क्योंकि वह सबसे आसान है।
<b>Teacher:</b> How does one grasp the little and understand it?	<b>शिक्षक :</b> व्यक्ति कैसे छोटे को देखे-समझे?
<b>Krishnamurti:</b> You can only grasp the big, the little is not at all important, but you have made it important.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप केवल विशाल को ही समझ सकते हैं। छोटा तो बिलकुल भी महत्वपूर्ण नहीं है, आपने उसे महत्वपूर्ण बना दिया है।
It is a very delicate thing, a subtle thing, to have capacity and not to be a slave to it, to respond immediately to things you have to respond to, and to have this extraordinary depth and height and width.	यह बहुत ही कोमल और बारीक बात है, अंदर क्षमता का होना और फिर भी उसका दास न होना, तुरंत प्रत्युत्तर देना, जिन बातों पर भी तुरंत प्रत्युत्तर देने की ज़रूरत है, और आप में इस असाधारण गहराई और ऊंचाई और व्यापकता का होना।
Deny the little. Do you know what it is to deny? Deny not because you have got the long vision but because what is denied is false.	छोटे को अस्वीकार कीजिये। क्या आप जानते हैं कि अस्वीकार का क्या अर्थ है? अस्वीकार इसलिये नहीं कि आप के पास दूर-दृष्टि है, बल्कि इसलिये कि जिसे आप अस्वीकार कर रहे हैं वह झूठ है।
<b>Talk To Teachers</b>	
<b>Chapter 3 On Action</b>	<b>3. क्रियाशीलता</b>
<b>Krishnamurti:</b> Shall we consider the question of immediacy of action? Action is pressing on each one of us, and there must be the long vision which includes the immediacy; but the immediacy does not include the larger, the wider, the deeper. Most people throughout the	<b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या हम तुरंत क्रिया की ज़रूरत के प्रश्न पर विचार करें? तुरंत क्रिया करने का दबाव तो हम सब पर है, अतः इस तात्कालिकता में दूर-दृष्टि भी शामिल होनी चाहिये। परंतु तात्कालिकता विशालता, विस्तार एवं गहनता को शामिल नहीं करती। विश्व भर

<p>world who are intellectual and learned seem to be caught in the immediate responses to immediate challenges. More scientists, more engineers, more technicians are needed and education is geared to produce them. The immediate demand is accepted and answered and so one loses, I think, a larger perspective and therefore one's mind and body and emotions become very shallow and empty. If one actually realizes all this, not verbally, but with a direct perception, how is a teacher to educate a student to have not only technical knowledge, the know-how, but also a wider, deeper understanding of life? How will you translate this into action in education? Is that not what you have come here to do? How do you set about it, if you have not already done it? I believe, here in RishiValley, the origin of the school was to bring about a different kind of education. It was not only to provide the child with knowledge but to make him understand that knowledge is not the end of life; that it is necessary to be sensitive to trees, to beauty, to know what it is to love, to be kind, to be generous. Now how would you set about it?</p>	<p>में अधिकांश व्यक्ति जो बुद्धिजीवी हैं और विद्वान हैं, ऐसा लगता है कि वो तात्कालिक चुनौतियों की तात्कालिक प्रतिक्रियाओं में जकड़े हुये हैं। अधिक-से-अधिक वैज्ञानिकों की, इंजीनियरों की, टेकनीशियनों की आवश्यकता है और शिक्षा उन्हीं को तैयार करने में जुटी है। तात्कालिक मांग के आगे घुटने टेक दिए जाते हैं और उसे पूरा किया जाता है और यूँ मेरे विचार से आदमी व्यापक दृष्टि खो देता है; फलस्वरूप उस का मन, शरीर और भावनायें बड़े छिछले और खोखले हो जाते हैं। अगर हम वास्तव में इसे महसूस करते हैं, शाब्दिक रूप से नहीं, वरन् सीधे बोध के द्वारा, कि कैसे अध्यापक छात्र को पढ़ाये, केवल टेकनिकल ज्ञान या सूझ-बूझके लिये ही नहीं वरन् जीवन के एक व्यापक एवं गहरे बोध के लिये। आप कैसे इसे शिक्षा के दौरान व्यवहार में लायेंगे? क्या आप यहां यही करने नहीं आये हैं? और यदि आपने इसको अभी तक नहीं किया है तो आप इसे कैसे आरम्भ करेंगे? मुझे लगता है कि यहां, इस ऋषिवैली में, विद्यालय का आरम्भ एक भिन्न प्रकार की शिक्षा के लिये हुआ था। उसका लक्ष्य बालक को ज्ञान देना मात्र नहीं था, वरन् यह समझना था कि ज्ञान ही जीवन का लक्ष्य नहीं है; बल्कि वृक्षों के प्रति, सौंदर्य के प्रति संवेदनशील होना भी आवश्यक है और यह जानना भी कि प्रेम क्या है, उदारता क्या है, सहृदयता क्या है। तो आप इसे कैसे आरम्भ करेंगे?</p>
<p>It seems at first absolutely necessary that there should be a few who have this feeling, and by their enthusiasm, understanding, capacity, not only to impart knowledge but also to see beyond the hills. If I were here and I felt this urgency that a student must academically be most proficient, and also that he must know how to dance, sing, look at the trees, see the mountains, know how to look at a woman without the usual sexual attitude and consider the extraordinary beauty of life, know sorrow and go beyond sorrow - if I were here, how would I set about it?</p>	<p>सबसे पहली आवश्यकता तो यह है कि ऐसे कुछ लोग हों जिनमें यह अनुभूति हो, केवल ज्ञान ही प्रदान करने की नहीं वरन् इन पहाड़ियों के परे देखने का उत्साह हो, बोध हो, क्षमता हो। यदि मैं यहां होता और इसकी आवश्यकता का अनुभव करता कि छात्र को शैक्षिक रूप से अति प्रवीण होने के साथ ही नृत्य करना, गाना, वृक्षों का, पर्वतों का अवलोकन करना भी आना चाहिये और उसे यह भी आना चाहिये कि कैसे स्त्री को बिना सामान्य यौन भावना के देखा जाय एवं जीवन के असाधारण सौंदर्य पर विचार कैसे करना चाहिये, दुख को कैसे जानें और कैसे उसके पार जायें--यदि मैं यहां होता तो इस सबके विषय में मैं कैसे आरम्भ करता?</p>
<p>If I were here and my sole job was that, I would not leave any one of you alone. I would discuss</p>	<p>यदि मैं यहां होता और यदि मुझे यही एक काम होता तो आप में से किसी को भी नहीं छोड़ता। जिस तरह</p>

<p>with you the way you talk, dress, look, behave, eat; I would be at it all the time - and probably you would call me a tyrant and talk of democracy and freedom. I do not think it is a question of democracy, tyranny and freedom. You see, this brings up the question of authority. We have talked about it a great deal in this place, on and off, whenever I have come; but let us discuss authority again.</p>	<p>आप बात करते हैं, वस्त्र पहनते हैं, देखते हैं, व्यवहार करते हैं, भोजन करते हैं, हर विषय में मैं आपसे चर्चा करता; सारे समय मैं यही करता--और शायद आप मुझे एक तानाशाह कहते और प्रजातंत्र तथा स्वतंत्रता की बात करते। मैं नहीं समझता कि यह प्रजातंत्र, तानाशाही और स्वतंत्रता का प्रश्न है। इससे सत्ता का प्रश्न उठता है। हमने इसकी यहां खूब चर्चा की है, जब कभी मैं यहां आया हूं; फिर भी, सत्ता के इस प्रश्न पर फिर से विचार-विमर्श करते हैं।</p>
<p>To me, authority is terrible, destructive. The quality of authority is tyrannical - the authority of the priest, the police - authority of law. Those are all outward authorities. There is also the inward authority of knowledge, of one's own dignity of one's own experience which dictates certain attitudes to life. All this breeds authority and without exercising this authority, you have to look after the child, to see that he has good taste, that he puts on the right clothes, eats properly, has a certain dignity in speech, in the way he walks; you have also to teach him to play games, not competitively and ruthlessly, but for the fun of it. To awaken in him all this without authority is extremely difficult and because of its difficulty, you resort to authority.</p>	<p>मेरी दृष्टि में सत्ता बड़ी भयानक चीज़ है, विनाशकारी। सत्ता का लक्षण निरंकुशता है, चाहे वह पुरोहित की सत्ता हो, पुलिस वाले की हो अथवा कानून की हो। ये सब वाह्य सत्ताएं हैं। आन्तरिक सत्ताएं भी होती हैं--ज्ञान की सत्ता, स्वयं अपने सम्मान की गुलामी, अपने उन अनुभवों की गुलामी जो जीवन के प्रति रवैये को निर्धारित करती हैं। इन सबसे सत्ता पनपती है और बिना इस सत्ता का उपयोग किये आपको बालक की देखभाल करनी है, आपको यह देखना है कि उसकी पसंद अच्छी हो, कि वह सही कपड़े पहनता हो, ठीक से भोजन करता हो, उसकी वाणी में, उसके चलने में एक शान हो; आपको उसे खेल भी सिखाने हैं--मुकाबले और मारा-मारी के लिये नहीं--वरन् केवल खेल के लिये। बिना किसी सत्ता प्रयोग के बालक में यह सब जगाना अत्यधिक कठिन है और इसी कठिनाई के कारण आप सत्ता का सहारा लेते हैं।</p>
<p>One must have discipline in the school. Now, can you bring about discipline without exercising authority? Children must come to meals regularly, not talk incessantly at meal time, everything must be in proportion, in freedom and affection; and there must be a certain non-authoritarian awakening of self-respect.</p>	<p>विद्यालय में अनुशासन आवश्यक है। तो क्या बिना सत्ता का प्रयोग किये आप अनुशासन ला सकते हैं? बच्चों को समय पर नियम से भोजन के लिये आना चाहिये, भोजन के समय निरंतर बात नहीं करनी चाहिये, प्रत्येक वस्तु एक सही अनुपात में तथा स्वतंत्रता एवं स्नेह के भाव से होनी चाहिये; इसके साथ ही बच्चों में आत्म-सम्मान की एक ऐसी जागरूकता भी चाहिये जिसमें सत्ता की भावना न हो।</p>
<p>To give knowledge which does not become an end in itself and to educate the mind to have a</p>	<p>ऐसा ज्ञान देना जिसका लक्ष्य मात्र ज्ञान न हो और जो दिमाग को दूर दृष्टि के लिए शिक्षित करे, जीवन का</p>

<p>long vision, a wide comprehension of life, is not possible if education is based on author.</p>	<p>व्यापक बोध दे सके, सत्ताधारित शिक्षा के लिये संभव नहीं है।</p>
<p><b>Teacher:</b> It is extremely difficult to bring about an inner orderliness in the child without discipline, without restraint and authority. Adults are in a different position from children.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> बिना अनुशासन के, बिना नियन्त्रण तथा सत्ता के, बालक में एक आंतरिक व्यवस्था उत्पन्न करना अत्यधिक कठिन है। बड़ों की स्थिति बालकों से भिन्न है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> I wonder if that is so. We are conditioned and children are being conditioned. Can education bring about a revolutionary mind? The difficulty is that this has to begin at a very tender age, not when children are fourteen or older. By then they are already formed and destroyed but if they came to you very young what would you do to encourage a feeling that there are other things than mere sex, money and position?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> मुझे इसमें सदेह है। हम स्वयं तो संस्कारित हैं ही और बालकों को भी संस्कारित किया जा रहा है। क्या शिक्षा एक क्रान्तिकारी मन उत्पन्न कर सकती है? कठिनाई यह है कि इसको बहुत छोटी आयु में ही आरम्भ करना होता है, न कि जब बालक चौदह वर्ष के या उससे बड़े हो जायें। तब तक तो वे कुछ बन चुके होते हैं और नष्ट हो चुके होते हैं। परन्तु यदि वे बहुत छोटी आयु में आपके पास आये होते तो उनमें यह भावना उत्पन्न करने के लिये आप क्या करते कि केवल यौन, धन और पद के अतिरिक्त और भी कुछ है ?</p>
<p>Besides giving the child information as knowledge, how would you show him that the world is not only the immediate but that there are other things far greater? First, you and I must feel this, not merely because I talk about it or you talk about it. I must be burning with it, and if I am burning with it, how do I communicate it without influencing the child? Because when I influence, I destroy the child; I make him conform to the image I have. So I must realize, though I feel very strongly about all this, that in my relationship with the student, however young, I must not encourage an imitative attitude and action. This is all extremely difficult. If I love somebody, I want him to be different, to do things differently, to look at life, to feel the beauty of the earth. Can I show him all this without influence, without breeding the imitative instinct?</p>	<p>बालक को ज्ञान के रूप में सूचनाएं देने के अतिरिक्त आप उसे यह कैसे दिखाते कि संसार केवल जो सामने है वही नहीं है, वरन् दूसरी भीवस्तुएं हैं, कहीं ज्यादा विशाल? पहले तो आपको और मुझे इसे महसूस करना होगा ; केवल इसलिये नहीं कि मैं या आप इसके विषय में चर्चा करते हैं। बल्कि मेरे अंदर उसकी आग होनी चाहिये और यदि मेरे अंदर वह आग है तो बालक को प्रभावित किये बिना कैसे मैं उस आग को उस तक पहुँचाऊँ? क्योंकि जब मैं प्रभावित करता हूँ तो मैं बच्चे को नष्ट कर देता हूँ; उसे मैं अपनी छवि के अनुकूल बनाता हूँ। हालांकि मैं इस विषय में बहुत गहराई से महसूस करता हूँ, फिर भी मुझे समझना होगा कि छात्र के साथ अपने सम्बन्ध में--चाहे वह छात्र कितना भी छोटा क्यों न हो--मुझे उसके अंदर नकल की आदत और एक्शन को बड़ावा नहीं देना चाहिये। यह सब अत्यधिक कठिन है। यदि मैं किसी से प्रेम करता हूँ तो मैं चाहूँगा कि वह भिन्न बने, भिन्नता से काम करें, जीवन को समझे, पृथ्वी के सौंदर्य का अनुभव करे। क्या बिना प्रभावित किये, बिना नकल की प्रवृत्ति जगाये, उसे</p>

	मैं यह सब दिखा सकता हूँ?
<b>Teacher:</b> Before we come to help the child without influencing him, is there an approach which we can establish in ourselves, because in our lives there seem to be so many contradictions?	<b>शिक्षक :</b> इसके पहले कि हम बिना प्रभावित किये छात्र की सहायता करें, क्या कोई ऐसा भी दृष्टि है जिसे हम अपने में स्थापित करें, क्योंकि हमारे जीवन में भी अनेक अंतर्विरोध दिखते हैं?
<b>Krishnamurti:</b> In order to establish it - one must change, remove the contradictions, wipe out destructive feelings. That may take many days or perhaps no time at all. We say that can be done through analysis, through awareness, through questioning, enquiring, probing. All that involves time. But time is a danger. Because the moment we look to time to change, it is really a continuation of what has been. If I have to enquire into my mind and be aware of my activities and my conditioning and my demands and each day probe, all that entails time. Time as a means to mutation is illusion. And when I introduce time into the problem of mutation, then mutation is postponed, because then time is merely a further continuation of my desire to go on as I am. Time is necessary to learn French. The time taken to learn French is not an illusion, but to bring about a psychological mutation, a psychical change in myself through time is an illusion, because it encourages laziness, postponement, a sense of achievement, vanity. All that is implied in the employment of time when I use time as a means to mutation. So, if I do not look to time at all for mutation, then what happens?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> उसके लिये यह आवश्यक है कि हम बदलें, अंतर्विरोधों को दूर करें, घातक भावनाओं को मिटा दें। इसमें कितने ही दिन भी लग सकते हैं या हो सकता है कि कुछ भी समय न लगे। हम कहते हैं कि यह किया जा सकता है, विश्लेषण द्वारा, जागरूकता द्वारा, प्रश्न करके, खोजबीन करके, गहराई में जा कर। इस सबमें समय लगता है। परंतु समय एक खतरा है। क्योंकि जिस क्षण परिवर्तन के लिये हम समय की बात करने लगते हैं, तो वह जो है उसी की निरंतरता हो जाता है। यदि मुझे अपने मन की जांच करनी है, और अपनी क्रियाओं के प्रति, अपने संस्कारों के प्रति, अपनी मांगों के प्रति जागरूक होना हो तो रोजाना की इस जाँच में समय लगता है। आमूलक्रांति के लिये समय को साधन समझना भ्रम है। और आमूलक्रांति की समस्या के लिये जब मैं समय की भूमिका देखता हूँ, तो वह क्रांति टलती जाती है, क्योंकि समय फिर मेरी जस का तस बने रहने की इच्छा की निरंतरता हो जाता है। फ्रेंच सीखने के लिये समय आवश्यक है। फ्रेंच सीखने में जो समय लगता है वह भ्रम नहीं है। परंतु अपने आप में समय के माध्यम से मानसिक परिवर्तन या मनोवैज्ञानिक क्रांति लाना तो भ्रम है, क्योंकि यह आलस्य को, टालने को, उपलब्धि के बोध को, अहंकार को बढ़ावा देता है। जब आमूलक्रांति के लिये मैं समय का उपयोग एक साधन के रूप में करता हूँ तो इसमें यही सब निहित है। तो यदि मैं इस आमूलक्रांति के लिये समय की ओर बिल्कुल देखूँ ही नहीं, तो क्या होगा?
It is a marvellous thing. All religious people have seen time as a means of change and actually we find mutation can only be out of time, not through time.	यह एक अद्भुत बात है। सभी धार्मिक व्यक्तियों ने समय को परिवर्तन का एक साधन माना है और वास्तव में हम यह पाते हैं कि आमूलक्रांति केवल समय से परे ही हो सकती है--समय के माध्यम नहीं।

<b>Teacher:</b> Does that not apply to all creative action?	<b>शिक्षक :</b> क्या यह समस्त सृजनशील क्रियाओं के विषय में लागू नहीं होता?
<b>Krishnamurti:</b> Of course it does. So can my mind refuse to use time and deny time as a means to mutation? Do you see the beauty of it? Then what takes place?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> निःसंदेह होता है। तो क्या मेरा मन समय को आमूलक्रांति के साधन के रूप में प्रयोग करने से अस्वीकार कर सकता है। क्या आप इसके सौंदर्य को देखते हैं? तब क्या होता है?
The thing which I want changed has been put together through time, it is the result of time, and I deny time. Therefore I deny the whole thing and therefore mutation has taken place. I do not know if you see this. It is not a verbal trick.	जिस वस्तु में मैं परिवर्तन चाहता हूँ उसे समय द्वारा संयोजित किया गया है, वह समय का परिणाम है, और मैं समय को अस्वीकार करता हूँ। इसका अर्थ यह हुआ कि मैं उस सारी वस्तु को ही अस्वीकार करता हूँ और तभी आमूलक्रांति घटती है। पता नहीं आपने इसे देखा या नहीं । यह कोई शाब्दिक चतुराई नहीं है।
Have you understood it? If I deny my conditioning as a Hindu, which is the result of time, and I deny time, I deny the whole thing. I am out of it. If I deny ritual- the Christian, Hindu or Buddhist - deny it because it is the product of time, I am out. I do not have to ask how to bring about mutation. The thing itself is the result of time and I deny time - it is finished.	क्या आप समझे? यदि मैं एक हिन्दु के रूप में अपने संस्कारों को अस्वीकार कर दूँ, जो कि समय का परिणाम है, और मैं समय को ही अस्वीकार करता हूँ, तो मैं उस समग्र वस्तु को ही अस्वीकार करता हूँ। मैं उसके बाहर हो जाता हूँ। यदि मैं कर्मकाण्ड को अस्वीकार कर दूँ--चाहे वह ईसाई हो, हिन्दु हो, अथवा बौद्ध हो,--और इसलिए अस्वीकार करूँ कि वह समय का परिणाम है, तो मैं उससे बाहर हूँ। मुझे यह नहीं पूछना पड़ता कि कैसे आमूलक्रांति लाऊँ। जब वह वस्तु स्वयं समय का ही परिणाम है और मैं समय को अस्वीकार करता हूँ--तो वह तो समाप्त।
So the mind in which mutation has taken place, that mind can then instruct, can look, can bring about a definite series of environmental actions.	इसलिये, वह मन, जिसमें आमूलक्रांति हुई है, शिक्षा दे सकता है, देख सकता है, बाहरी तौर पर एक्शनों की एक पूरी श्रृंखला खड़ी कर सकता है। ज्ञान के संचय के

<p>One cannot deny the use of time for acquiring knowledge but does time exist anywhere else?</p>	<p>लिए हम समय को अस्वीकार नहीं कर सकते, परंतु क्या समय का कहीं और अस्तित्व है?</p>
<p><b>Teacher:</b> Even in activities we need time, we seem to do things in a sloppy way and therefore time hangs heavily. If the understanding of time in all these things is as simple as this, why are we not able to get out of it?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> क्रियाओं के लिए भी तो समय की आवश्यकता है। ऐसा लगता है कि हम कुछ बेतुके ढंग से काम करते हैं और इसलिये समय बोझल लगता है। यदि इन सभी बातों में समय का समझना इतना आसान है तो हम उससे बाहर क्यों नहीं निकल पाते?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> But if you give your whole attention, not to mutation through time but to denying time, you would then be in a position to teach in a totally different way. The boys and girls are here to acquire knowledge and if you can impart this knowledge with attention which is not using time to convey information, then you are quickening their minds.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> परंतु यदि आप अपना सारा ध्यान समय के माध्यम से आमूलक्रांति पर न देकर समय को ही अस्वीकार कर दें तो आप पूर्णतया भिन्न प्रकार से शिक्षा देने की स्थिति में होंगे कि। बालक एवं बालिकाएं यहां ज्ञान प्राप्त करने के लिए हैं और यदि आप ऐसे ध्यान से ज्ञान उन तक पहुंचा सकें जो सूचनाएं देने में समय नहीं लेता तो आप उनके मन को तीव्र बनाते हैं।</p>
<p>That is what I am interested in, which is, to awaken the mind, to keep the mind tremendously alive. We say the mind can be kept alive through knowledge and therefore we pour in knowledge which only dulls the mind. A mind that functions in time is still a limited mind. But a mind which does not function in time is extraordinarily alert, is tremendously alive and can impart its aliveness to a mind which is still seeking, enquiring, innocent. So we have discovered something new. You and I have discovered something. I have imparted something to you. Together we have found that the mind functions in time and the mind is the result of time. In that state, the mind can only give information. Such a mind is limited. But a mind that is not functioning, thinking in terms of time, though it uses time, will quicken the mind of another and therefore knowledge will not</p>	<p>मेरी रुचि है मन को जाग्रत करने में, उसे एकदम सजीव बनाये रखने में, । हम कहते हैं की मन को ज्ञान के द्वारा सजीव रखा जा सकता है और इसलिए हम ज्ञान उड़ेलते हैं, परंतु वह मन को केवल मंद बनाता है। मन जो समय की सीमा में कार्य करता है, एक सीमित मन ही है। पर वह मन जो समय के घेरे में कार्य नहीं करता वह विलक्षण रूप से सतर्क है, अत्यंत सजीव है और अपनी सजीवता वह एक ऐसे मन को भी दे सकता है जो अभी खोज में, तलाश में लगा है, सरल-सादा है। तो हमने कुछ नया खोजा । आपने और मैंने कुछ खोजा है। मैंने आपको कुछ दिया है। हमने मिलकर यह पता लगाया है कि मन समय की सीमा में कार्य करता है और वह मन समय का परिणाम है। ऐसी अवस्था में मन केवल सूचना दे सकता है। ऐसा मन सीमित है। परंतु ऐसा मन जो न तो समय की भाषा में सोचता है, न ही काम करता रहा है,, यद्यपि वह समय का उपयोग करता है तो वो दूसरे के मन को भी तीव्र</p>

<p>destroy. You see, such a mind is in a state of learning, not acquiring. Therefore it is everlastingly alive; such a mind is young.</p>	<p>बनायेगा और उस अवस्था में ज्ञान विनाशकारी नहीं होगा। आप देखते हैं कि ऐसा मन सीखने की अवस्था में है, न कि जोड़ने की, अतः ऐसा मन सदा सजीव है; ऐसा मन सदा तरुण है--जवान है।</p>
<p>Some of the boys in this school are already old, because they are merely concerned with acquiring knowledge, not with learning. And learning is out of time. Now, how will you set about quickening the mind, keeping it astonishingly alive all the time?</p>	<p>इस विद्यालय में कुछ बालक पहले से बूढ़े हो चुके हैं, क्योंकि उनका लगाव केवल ज्ञान के संचय से है न कि सीखने से। और सीखना समय के परे होता है। तो मन को तीव्र करने के लिए, उसे सदा अद्भुत रूप से सजीव रखने के लिये आप कैसे आरम्भ करेंगे?</p>
<p>You have to understand the quality of a mind in which mutation has taken place. It has taken place the moment you deny time. You have thrown the whole past out. You are no longer a Hindu, a Christian. Now how will such a mind in which mutation has taken place instruct, translate its action? How will it act in giving knowledge which involves time, and yet keep the mind of the child in a state of intense aliveness? Find out.</p>	<p>आपको उस मन के लक्षण को समझना है जिसमें आमूलक्रांति हो चुकी है। वह तो उसी घड़ी हो जाता है जब आप समय को अस्वीकार कर देते हैं। आप समस्त अतीत को निकाल बाहर फेंक देते हैं। आप न तो अब हिन्दू हैं और न ईसाई। तो ऐसा मन जिसमें आमूलक्रांति हो चुकी है कैसे शिक्षण करेगा? कैसे उसे व्यवहार में लायेगा? उस ज्ञान को वह कैसे आगे पहुँचायेगा जिसमें समय लगता है और ऐसा करते हुए कैसे वह बालक के मन की तीव्र सजीवता को बनाये रखेगा? आप पता लगायें।</p>
<p><b>Talk To Teachers</b></p> <p><b>Chapter 4 On The True Denial</b></p>	<p><b>4. सच्ची अस्वीकृति</b></p>
<p><b>Teacher:</b> In one of your talks to the children you said that when a problem arises one should solve it immediately. How is one to do this?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> बालकों से अपनी एक वार्ता में आपने कहा था कि समस्या के उत्पन्न होने पर हमें तुरंत उसका समाधान करना चाहिए। ऐसा हम कैसे करें?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> To solve a problem immediately, you have to understand the problem. Is the understanding of a problem a matter of time or is it a matter of intensity of perception, an intensity of seeing? Let us say that I have a problem: I am vain. It is a</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> समस्या के तत्काल समाधान के लिए आपको समस्या को समझना होगा। तो समस्या का समझना क्या समय की बात है या देखने-समझने की शिद्दत का प्रश्न है? मान लें मेरी एक समस्या है--मैं अहंकारी हूँ। वह मेरे लिए एक समस्या है क्योंकि वह मेरे अंदर एक दंड,</p>

<p>problem with me in the sense that it creates a conflict, a contradiction within me. It is a fact that I am vain and there is also another fact that I do not want to be vain. Firstly, I have to understand the fact that I am vain. I have to live with that fact. I must not only be intensely aware of the fact but comprehend it fully. Now, is comprehension a matter of time? I can see the fact immediately, can't I? And the immediacy of perception, of seeing, dissolves the fact. When I see a cobra there is immediate action. But I do not see vanity in the same way - when I see vanity either I like it and therefore I continue with it, or I do not want it because it creates conflict. If it does not create conflict there is no problem.</p>	<p>एक अंतर्विरोध खड़ा करती है। यह एक तथ्य है कि मैं अहंकारी हूँ और एक दूसरा भी तथ्य है कि मैं अहंकारी होना नहीं चाहता। पहले तो मुझे इस तथ्य को समझना है कि मैं अहंकारी हूँ। मुझे उस तथ्य के साथ रहना होगा। मुझे केवल उस तथ्य के प्रति तीव्रता से जागरूक ही नहीं होना बल्कि उसे पूर्णतया समझना है। तो क्या समझना समय की बात है? मैं उस तथ्य को तुरंत देख सकता हूँ; क्या नहीं देख सकता? और यह तुरंत बोध, और देखना उस तथ्य को समाप्त कर देता है। जब मैं कोई सांप देखता हूँ, तो तत्काल क्रिया होती है। परंतु मैं अहंकार को ऐसे नहीं देखता--जब मैं अहंकार को देखता हूँ तो या तो उसे पसंद करता हूँ और उसे जारी रखता हूँ, या नापसंद करता हूँ क्योंकि वह दंड खड़ा करता है यदि वह दंड न उत्पन्न करे तो फिर कोई समस्या नहीं।</p>
<p>Perception and understanding are not of time. Perception is a matter of intensity of seeing, a seeing that is total. What is the nature of seeing something totally? What gives one the capacity, the energy, the vitality, the drive, to deal with something immediately, with all one's undivided energy? The moment you have divided energy you have conflict and therefore there is no seeing, there is no perception of something total. Now, what gives you the energy to make you jump when you see a cobra? What are the processes that make the organic as well as the psychological, the whole being, jump, so that there is no hesitation, so that the reaction is immediate? What has gone into that immediacy? Several things have gone into that action which is immediate: fear, natural protection, which must be there, the knowledge that the cobra is a deadly thing.</p>	<p>समझना एवं बोध समय पर निर्भर नहीं करते। बोध तो देखने की शिद्धत का मामला है, ऐसा देखना जो कि समग्र है। किसी वस्तु को समग्रता से देखना कैसा होता है? किसी वस्तु से तत्काल निबटने की शक्ति, सामर्थ्य, प्रेरणा, व्यक्ति में कहां से आती है, अपनी समस्त अखंड शक्ति के साथ उसका सामना करने की क्षमता? जिस क्षण आपकी शक्ति विभाजित होती है, आप दंड में पड़ जाते हैं और इसलिये देखना नहीं हो पाता, किसी वस्तु का समग्रता से बोध नहीं हो पाता। तो जब आप एक कोबरा सर्प देखते हैं तो एकदम से उछलने की वह शक्ति कहां से आती है? वे कौन सी प्रक्रियाएं हैं जो, मनोवैज्ञानिक हो या शारीरिक, आपके समस्त वजूद को उछाल देती हैं, कोई हिचकिचाहट नहीं होती, इसलिए तत्काल प्रतिक्रिया होती है? तो उस तात्कालिकता में क्या होता है? उस तत्काल क्रिया में बहुत कुछ घटता है--भय, स्वाभाविक सुरक्षा, जो होनी ही चाहिए, इसका ज्ञान है कि कोबरा एकदम विषैला जीव है।</p>
<p>Now, why have we not the same energetic action with regard to the dissolution of vanity? I am taking vanity as an example. There are several reasons that have gone into my lack of energy. I like vanity; the world is based on it; it is the basis of the social pattern; it gives me a certain sense of vitality, a certain quality of dignity and</p>	<p>तो अहंकार की समाप्ति के लिये भी हमारे अंदर वैसी ही शक्तिशाली क्रिया क्यों नहीं होती? मैं अहंकार को एक उदाहरण के रूप में ले रहा हूँ। मुझमें शक्ति के अभाव के कई कारण हैं। मैं अहंकार को पसंद करता हूँ; विश्व उसी पर टिका है; वह सामाजिक ढांचे का आधार है; इससे मुझे एक तरह की शक्ति, एक विशेष</p>

<p>aloofness, a sense that I am a little better than another. All this prevents that energy which is necessary to dissolve vanity. Now, either I analyse all the reasons which have prevented my action, prevented my having energy to deal with vanity, or I see immediately. Analysis is a process of time and a process of postponement. While I am analysing, vanity continues and time is not going to end it. So I have to see vanity totally and I lack the energy to see. Now, to gather the dissipated energy requires a gathering not only when I am confronted with a problem such as vanity, but a gathering all the time, even when there is no problem. We do not have problems all the time. There are moments when we have no problems. If at those moments we are gathering energy, gathering in the sense of being aware, then, when the problem arises, we can meet it and not go through the process of analysis.</p>	<p>प्रतिष्ठा एवं विशिष्टता मिलती है, ऐसा एहसास कि मैं दूसरों की अपेक्षा कुछ बढ़िया हूँ। अहंकार की समाप्ति के लिए जो शक्ति चाहिए उसमें यह सब बाधक है। अब या तो मैं उन सब कारणों का विश्लेषण करता हूँ जो मेरी क्रिया में बाधक बने हैं, अहंकार से निपटने की मेरी शक्ति की राह में बाधा हैं; या फिर तुरंत देख लेता हूँ। विश्लेषण तो समय लेना है, एक तरह से टालने वाली बात। जब मैं विश्लेषण करता हूँ, अहंकार बना रहता है और समय उसको समाप्त करेगा। तो मुझे अहंकार को समग्रता में देखना होगा और देखने की ही शक्ति मुझमें नहीं है। तो बिखरती शक्ति को एकत्रित करने के लिये यह आवश्यक है कि मैं केवल तभी उसे एकत्र न करूँ जब अहंकार जैसी समस्या से सामना हो, वरन् उसे सदा एकत्र करता रहूँ, उस समय भी जब कोई समस्या नहीं। यदि उन क्षणों में हम शक्ति एकत्रित करते हैं; एकत्रित जागरूक होने के अर्थ में, तो जब समस्या आती है तो विश्लेषण की प्रक्रिया में उलझे बिना ही हम उसका सामना कर सकते हैं।</p>
<p><b>Teacher:</b> There is another difficulty: when there is no problem, and no gathering of this energy, some form of mentation is going on.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> एक दूसरी भी कठिनाई है : जब कोई समस्या नहीं होती और न ही इस शक्ति का संग्रह होता है, किसी-न-किसी प्रकार की मनोगति चलती ही रहती है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> There is a waste of energy in mere repetition, reaction to memory, reaction to experience. If you observe your own mind you will see that a pleasurable incident keeps on repeating itself. You want to go back to it, you want to think about it, so it gathers momentum. When the mind is aware there is no wastage, is it possible to let that momentum, to let that thought flower? Which means never to say, "This is right or wrong", but to live the thought over, to have a feeling in which the thought can flourish so that by itself it will come to an end.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> फालतू के दोहराव में, स्मृति की, अनुभव की प्रतिक्रिया में, शक्ति की बरबादी होती है। यदि आप मन का निरीक्षण करें तो आप देखेंगे कि आनंददाई घटना बार-बार खुद को दोहराती है। आप उसे बार-बार याद करना चाहते हैं, उसके विषय में सोचना चाहते हैं, और इस प्रकार वह एक प्रकार से जोर पकड़ती जाती है। जब मन सचेत होता है तो ऊर्जा व्यर्थ नहीं होती, तो क्या यह संभव है कि उस उमड़ती हुई गति-ऊर्जा को, उस विचार को खिलने दिया जाय? जिसका अर्थ है कि "यह सही है या गलत है," कुछ न कहें, बस उस विचार को पूरी तरह जीयें, एक ऐसी अनुभूति जिसमें विचार को सहज ही उठकर जाने दें, जिससे कि वह अपने-आप ही अपने अंत को प्राप्त कर ले।</p>

Should we approach the problem differently? We have been talking about creating a generation with a new quality of mind. How do we do this? If I were a teacher here, it would be my concern - and a good educator obviously has this concern at heart - to bring about a new mind, a new sensitivity, a new feeling for the trees, the skies, the heavens, the streams, to bring into being a new consciousness, not the old consciousness remolded into a new shape. I mean a totally new mind, uncontaminated by the past. If that is my concern, how do I set about it?	क्या हमें इस समस्या को भिन्न प्रकार से देखना चाहिये? हम एक ऐसी पीढ़ी के निर्माण की चर्चा करते रहे हैं जिसका मन एक नवीन गुण से सम्पन्न हो। ऐसा हम कैसे कर सकते हैं? यदि मैं यहां अध्यापक होता तो यही मेरी चिन्ता होती--और स्पष्ट है कि एक अच्छे शिक्षक के हृदय में यह चिन्ता होती है--कि कैसे एक नवीन मन को, नई संवेदना को कैसे उभारें, कैसे वृक्षों, आकाशों, स्वर्गों, झरनों के लिए एक नवीन अनुभूति को उत्पन्न किया जाए; कि कैसे एक नई चेतना को, पुरानी चेतना को नये रूप में ढाल कर नहीं, वरन् एक नवीन चेतना को उभारा जाय। मेरा तात्पर्य एक पूर्णतया नवीन मन से है जो अतीत के द्वारा भ्रष्ट नहीं हुआ है। यदि यह मेरी चिन्ता है, मेरा सरोकार है तो मैं शुरू कैसे करूंगा?
First of all, is it possible to bring about such a new mind? Not a mind which is a continuity of the past in a new mould but a mind that is uncontaminated. Is it feasible, or must the past continue through the present to be modified and be put into a new mould? In which case there is no new generation, it is the older generation repeated in a new form.	सबसे पहला प्रश्न यह है कि क्या ऐसा नवीन मन ला पाना संभव है? ऐसा मन नहीं जो किसी नई शकल में अतीत का ही बदला हुआ रूप है, वरन् एक ऐसा मन जो मलीन नहीं हुआ। क्या यह संभव है या फिर अतीत ही वर्तमान के रास्ते आगे बढ़ाते जायें किसी नए ढांचे में ढाल कर, थोड़े से सुधरे रूप में परंतु उस अवस्था में फिर वह नई पीढ़ी न होगी, वह एक नये रूप में पुरानी पीढ़ी का दोहराव होगी।
I think it is possible to create a new generation. And I ask: How am I, not only to experience this within myself, but to express it to the student?	मेरे विचार से एक नई पीढ़ी का सृजन संभव है। और मैं पूछता हूं: कैसे मैं न केवल अपने ही अंदर इसे अनुभव करूं वरन् छात्र तक इसे पहुंचाऊँ भी।
If I see something experimentally in myself I cannot miss expressing it to the student. Surely it is not a question of I and the other, but a mutual thing, isn't it?	यदि प्रयोगात्मक रूप से अपने अंदर मैं किसी वस्तु को देखता हूं, तो मैं इसे छात्रों को बताने में भी कैसे चूक सकता हूं? स्पष्ट है कि यह मेरा और दूसरे का प्रश्न नहीं है, वरन् एक आपसी बात है, क्या नहीं है?

<p>Now how do I bring about a mind that is uncontaminated? You and I are not newborn, we have been contaminated by society, by Hinduism, by education, by the family, by society, by newspapers. How do we break through the contamination? Do I say it is part of my existence and accept it? What do I do, sir? Here is a problem - that our minds are contaminated. For the older ones it is more difficult to break through. You are comparatively young and the problem is to uncontaminate the mind; how is it to be done?</p>	<p>तो मैं कैसे ऐसा मन उत्पन्न करूँ जो मलीन न हो ? आप और मैं नवजात शिशु नहीं हैं; हमें समाज द्वारा भ्रष्ट किया जा चुका है, हिन्दू मत द्वारा, शिक्षा द्वारा, परिवार और समाचार पत्रों द्वारा। इस भ्रष्टता से बाहर हम कैसे निकलें? क्या मैं यह कहूँ कि यह तो मेरे अस्तित्व का ही एक अंग है और उसे स्वीकार कर लूँ? मैं क्या करूँ? यह एक समस्या है--कि हमारे मन भ्रष्ट हैं। बड़े हो चुके लोगों के लिए इससे बाहर निकलना बहुत कठिन है। आप अपेक्षाकृत जवान हैं और समस्या यह है कि मन को भ्रष्टता से कैसे निकाला जाय; यह कैसे हो?</p>
<p>Either it is possible, or it is not possible. Now how is one to discover whether it is or not? I would like you to jump into it.</p>	<p>या तो यह संभव या संभव नहीं है। तो कैसे पता लगाया जाय कि यह संभव है या नहीं? मैं चाहूँगा कि आप इस समस्या में गहराई से प्रवेश करें।</p>
<p>Do you know what is meant by the word "denial"? What does it mean to deny the past, to deny being a Hindu? What do you mean by that word "deny"? Have you ever denied anything? There is a true denial and a false denial. The denial with a motive is a false denial. The denial with a purpose, the denial with an intention, with an eye on the future, is not a denial. If I deny something in order to get something more, it is not denial. But there is a denial which has no motive. When I deny and do not know what is in store for me in the future, that is true denial. I deny being a Hindu, I deny belonging to any organization, I deny any particular creed and in that very denial I make myself completely insecure. Do you know such a denial, and have you ever denied anything? Can you deny the past that way - deny, not knowing what is in the future? Can you deny the known?</p>	<p>क्या आप जानते हैं कि "अस्वीकृति" या इनकार शब्द का क्या अर्थ है? अतीत को अस्वीकार करने का अथवा हिन्दू होने से इनकार का, उसके निषेध का क्या अर्थ है? आप "अस्वीकृति" शब्द से क्या समझते हैं? क्या आपने कभी किसी बात से इनकार किया है? अस्वीकृति सच्ची भी होती है और मिथ्या भी होती है। जिस अस्वीकृति के पीछे कोई उद्देश्य होता है वह मिथ्या अस्वीकृति है। किसी प्रयोजन से, किसी इरादे से, अथवा भविष्य का ध्यान रखकर अस्वीकार करना, अस्वीकृति नहीं है। यदि मैं कुछ ज़्यादा पाने के लिए किसी वस्तु को अस्वीकार करूँ, तो वह अस्वीकृति नहीं है। परंतु एक ऐसी भी अस्वीकृति होती है जिसमें कोई प्रयोजन नहीं होता। जब मैं अस्वीकार करता हूँ और इसकी परवाह नहीं करता कि भविष्य में मेरे लिये क्या है, तो वह सच्ची अस्वीकृति होती है। मैं हिन्दू होने से इनकार करता हूँ। मैं किसी संगठन का होने से इनकार करता हूँ, और उस अस्वीकृति में मैं अपने को पूर्णतया असुरक्षित कर लेता हूँ। क्या आप ऐसी अस्वीकृति से परिचित हैं या क्या आपने कभी किसी वस्तु को भी अस्वीकार किया है? क्या आप अतीत को ऐसे में अस्वीकार कर सकते हैं कि आपको यह परवाह ही न हो कि भविष्य में क्या है? क्या आप ज्ञात को नकार सकते हैं?</p>

<p><b>Teacher:</b> When I deny something - say Hinduism, there is a simultaneous understanding of what Hinduism is.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> जब मैं किसी वस्तु को, मान लीजिए हिन्दू मत को ही अस्वीकार करता हूँ, तो साथ ही साथ यह बोध भी होता है कि हिन्दू मत है क्या।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> What we were discussing is the bringing about of a new mind and if it is possible. A mind that is contaminated cannot be a new mind. So we are talking of decontamination, and whether that is possible. And in relation to that I began by asking what you mean by denial, because I think denial has a great deal to do with it. Denial has to do with a new mind. If I deny cleanly, without roots, without motive, it is real denial. Now is that possible? You see, if I do not completely deny society in which is involved politics, economics, social relationships, ambition, greed - if I do not deny all that completely, it is impossible to find out what it is to have a new mind. Therefore, the first breaking of the foundation is the denial of the things I have known. Is that possible? Obviously, drugs will not bring about a new mind; nothing will bring it about except a total denial of the past. Is it possible? What do you say? And if I have felt the perfume, the sight, the taste of such denial, how do I help to convey it to a student? He must have in abundance the known - mathematics, geography, history - and yet be abundantly free of the known, remorselessly free of it.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> हम इस पर चर्चा कर रहे थे कि एक नवीन मन को कैसे उत्पन्न किया जाय और क्या यह संभव भी है? जो मन भ्रष्ट है, मलीन है, नवीन नहीं हो सकता। इसलिये हम भ्रष्टता से मुक्त होने की चर्चा कर रहे थे और उस की संभावना पर? और उसी सम्बन्ध में मैंने इस प्रश्न से शुरू किया था कि अस्वीकृति का क्या अर्थ है, क्योंकि मेरे विचार से अस्वीकृति का उससे बड़ा सीधा सम्बन्ध है। अस्वीकार का एक नवीन मन से सीधा सम्बन्ध है। यदि मैं स्पष्ट रूप से नकारता हूँ, बिना जड़ों के, पहचान के कोई निशान छोड़े, बिना प्रयोजन के, तो वह वास्तविक अस्वीकृति है। तो क्या यह संभव है? यदि मैं समाज को पूर्णतया अस्वीकार न करूँ, जिसमें राजनीति, आर्थिकता, सामाजिक सम्बन्ध, महत्त्वाकांक्षा, लालच आदि सब शामिल हैं--यदि मैं इस सबको पूर्णतया अस्वीकार न करूँ तो यह पता लगाना असम्भव है कि नए मन का अर्थ क्या है। इसलिये सबसे पहला काम है उन वस्तुओं की अस्वीकृति है जिन्हें मैं जानता हूँ। क्या यह संभव है? स्पष्ट है कि दवाईयाँ या नशे एक नया मन नहीं उत्पन्न कर सकेंगे, कुछ भी नवीन मन को उत्पन्न नहीं कर सकता, सिवाए अतीत के पूर्ण अस्वीकार के। क्या यह संभव है? आपका क्या कहना है? और यदि मैंने ऐसी अस्वीकृति की सुगंध को, उसके रूप, उसके स्वाद को अनुभव किया है, तो मैं कैसे उसे छात्र तक पहुँचाऊँ? छात्र के पास ज्ञात का भरपूर खज़ाना होना चाहिए--गणित, भूगोल, इतिहास, आदि सबका--फिर भी उसे ज्ञात से पूर्णतः मुक्त होना होगा--बिना किसी खेद अथवा पश्चाताप के।</p>
<p><b>Teacher:</b> Sir, all sensations leave a residue, a disturbance which lead to various kinds of conflict and other forms of mental activity. The traditional approach of all religions is to deny this sensation by discipline and denial. But in what you say there seems to be a heightened receptivity to these sensations so that you see the</p>	<p><b>शिक्षक :</b> हर प्रकार की संवेदना एक निशान छोड़ती है, एक हलचल जो विभिन्न प्रकार के द्वंद्व तथा दूसरी मानसिक क्रियायें उत्पन्न करती है। सभी धर्मों की परंपरागत दृष्टि अनुशासन तथा अस्वीकृति के द्वारा इस संवेदना को नकारने की रही है। परंतु जो आप कहते हैं उसमें ऐसा प्रतीत होता है कि इन संवेदनाओं के प्रति एक ऐसी तीव्र ग्रहणशीलता विद्यमान होती है कि आप</p>

<p>sensations without distortion or residue.</p>	<p>इन संवेदनाओं को, बिना किसी बिगाड़ अथवा अवशेष के देख पाते हैं।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> That is the issue. Sensitivity and sensation are two different things. A mind that is a slave to thought, sensation, feeling, is a residual mind. It enjoys the residue, it enjoys thinking about the pleasurable world and each thought leaves a mark, which is the residue. Each thought of a certain pleasure you have had, leaves a mark which makes for insensitivity. It obviously dulls the mind and discipline, control and suppression further dull the mind. I am saying that sensitivity is not sensation, that sensitivity implies no mark, no residue. So what is the question?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> यही तो मुद्दा है। संवेदनशीलता और सनसनी दो भिन्न वस्तुएं हैं। मन जो विचार, संवेदना, भावना का दास है--अवशेषों से भरा मन है। वह अवशेषों का आनन्द लेता है, वह आनन्ददाई विश्व के विचार का आनन्द लेता है और प्रत्येक विचार कुछ चिह्न छोड़ता है जो कि अवशेष है। सुख भोग का हर विचार जो भीतर से गुज़रता है, एक निशान छोड़ जाता है और वह असंवेदनशीलता उत्पन्न करता है। स्पष्ट है कि वह मन को मंद बनाता है और फिर अनुशासन, नियंत्रण और दमन मन को और सुस्त बना देते हैं। मेरे कहने का तात्पर्य है कि संवेदनशीलता सनसनी नहीं है, कि संवेदनशीलता में कोई चिह्न, कोई निशान नहीं बचता। तो प्रश्न क्या है?</p>
<p><b>Teacher:</b> Is the denial of which you are speaking different from a denial which is the restriction of sensation?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> क्या वह अस्वीकृति जिसके विषय में आप चर्चा कर रहे हैं उस अस्वीकृति से भिन्न हैं जो सनसनी को नियंत्रित करता है?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> How do you see those flowers, see the beauty of them, be completely sensitive to them so that there is no residue, no memory of them, so that when you see them again an hour later you see a new flower? That is not possible if you see as a sensation and that sensation is associated with flowers, with pleasure. The traditional way is to shut out what is pleasurable because such associations awaken other forms of pleasure and so you discipline yourself not to look. To cut association with a surgical knife is immature. So how is the mind, how are the eyes, to see the tremendous colour and yet have it leave no mark?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप कैसे उन फूलों को, उनके सौंदर्य को देखते हैं, पूर्णतया उनके प्रति संवेदनशील हो जायें ताकि कोई अवशेष न रहे, कोई स्मृति न रहे जिससे कि जब आप एक घंटे बाद पुनः उन्हें देखें तो आप एक नए फूल को देखें? जब आप एक सनसनी के रूप में देखते हैं और वह संवेदना पुष्पों के साथ, आनन्द के साथ जुड़ी होती है तो उस अवस्था में यह संभव नहीं होता। परम्परागत तरीका यह है कि जो आनन्ददाई है उसे समाप्त कर दो, क्योंकि ऐसे सम्बन्ध फिर और सुख-भोगों को जगाते हैं, तो इसलिये आप इस तरह से अपने को साधते हैं कि कुछ दिखाई ही न दे। सम्बन्ध को छूरी से काट कर पृथक नहीं किया जा सकता, यह तो बचगानापन है। तो कैसे हमारा मन और हमारी यह आंखे इस अपार सौंदर्य को देखें और फिर भी उसका कोई अवशेष न रहे?</p>

<p>I am not asking for a method. How does that state come into being? Otherwise we cannot be sensitive. It is like a photographic plate which receives impressions and is self-renewing. It is exposed, and yet becomes negative for the next impression. So all the time, it is self-cleansing of every pleasure. Is that possible or are we playing with words and not with facts?</p>	<p>मैं कोई पद्धति अपनाने के लिए नहीं कह रहा कैसे वह अवस्था वजूद में आए? अन्यथा हम संवेदनशील नहीं हो पायेंगे। वह एक फोटोग्राफी की प्लेट के समान है जो चित्र भी लेती है और जिसमें स्वतः नवीनीकरण भी होता है। एक बार चित्र लेने के बाद फिर नवीन अनुकृति के लिए वह निगेटिव बन जाती है। इस प्रकार वह निरंतर प्रत्येक विषयानंद को धो रही है। क्या यह संभव है अथवा हम केवल शब्दों के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, और तथ्यों के साथ नहीं हैं।</p>
<p>The fact which I see clearly is that any residual sensitivity, sensation, dulls the mind. I deny that fact, but I do not know what it is to be so extraordinarily sensitive that experience leaves no mark and yet to see the flower with fullness, with tremendous intensity. I see as an undeniable fact that every sensation, every feeling, every thought, leaves a mark, shapes the mind, and that such marks cannot possibly bring about a new mind. I see that to have a mind with marks is death, so I deny death. But I do not know the other. I also see that a good mind is sensitive without the residue of experience. It experiences, but the experience leaves no mark from which it draws further experiences, further conclusions, further death.</p>	<p>मुझे यह तथ्य स्पष्ट दिखाई देता है कि छाप छोड़ने वाली कोई भी संवेदनशीलता, सनसनी, मन को मंद करती है। मैं उस तथ्य को अस्वीकार करता हूँ, परंतु मैं यह नहीं जानता कि ऐसी अद्भुत संवेदनशीलता क्या है जिसमें अनुभव कोई चिह्न नहीं छोड़ता और फिर भी पुष्प को उसकी पूर्णता में देखा जाता है, अनुभूति की अत्यंत गहनता में। मेरी दृष्टि में यह एक निश्चित तथ्य है कि प्रत्येक संवेदना, प्रत्येक अनुभव, प्रत्येक विचार, एक निशान छोड़ता है, मन को रूप प्रदान करता है और ऐसे चिह्न एक नवीन मन को नहीं उत्पन्न कर सकते। मैं देखता हूँ कि एक ऐसा मन जो चिह्नों से भरा हो, मृत्यु है, इसलिये मैं मृत्यु को इनकार करता हूँ। परंतु मैं उस “दूसरी अवस्था” को, उस दूसरे छोर को नहीं जानता। मैं यह भी देखता हूँ एक अच्छा मन संवेदनशील होता है, अनुभव के अवशेषों के बिना। वह अनुभव करता है परंतु वह अनुभव कोई चिह्न नहीं छोड़ता जिससे वह कुछ और आगे निष्कर्ष निकाल सके, और ज़्यादा अनुभव, और और गहरी मृत्यु।</p>
<p>The one I deny and the other I do not know. How is this transition from the denial of the known to the unknown to come into being? How does one deny? Does one deny the known, not in great dramatic incidents but in little incidents? Do I deny when I am shaving and I remember the lovely time I had in Switzerland? Does one deny the remembrance of a pleasant time? Does one grow aware of it, and deny it? That is not dramatic, it is not</p>	<p>एक को तो मैं छोड़ देता हूँ लेकिन दूसरे को जानता नहीं। जाने हुए से इनकार करता हुआ अनजाने की तरफ ले जाने वाला यह परिवर्तन कौ हो? कैसे कोई अस्वीकार करता है? क्या व्यक्ति ज्ञात को अस्वीकार करता है, किसी बड़ी प्रभावशाली घटना में नहीं वरन् छोटी-छोटी घटनाओं में? जब मैं शेव कर रहा हूँ और याद कर रहा हूँ कि मैंने स्विटजरलैण्ड में कितना अच्छा समय बिताया था, क्या मैं उसे अस्वीकार कर सकता हूँ? क्या व्यक्ति एक आनन्दप्रद समय की याद को</p>

<p>spectacular, nobody knows about it. Still this constant denial of little things, the little wiping's, the little rubbing's off, not just one great big wiping away, is essential. It is essential to deny thought as remembrance, pleasant or unpleasant, every minute of the day as it arises. One is doing it not for any motive, not in order to enter into the extraordinary state of the unknown. You live in RishiValley and think of Bombay or Rome. This creates a conflict, makes the mind dull, a divided thing. Can you see this and wipe it away? Can you keep on wiping away not because you want to enter into the unknown? You can never know what the unknown is because the moment you recognise it as the unknown you are back in the known.</p>	<p>अस्वीकार करता है? क्या व्यक्ति उसके प्रति सचेत होता है, और अस्वीकार करता है? यह नाटकीय नहीं है, प्रदर्शनीय नहीं है, कोई इसके बारे में नहीं जानता। फिर भी छोटी-छोटी वस्तुओं की यह निरंतर अस्वीकृति, छोटा-छोटा मिटाना, छोटा-छोटा सफाई, न केवल एक बड़ी अस्वीकृति ही, आवश्यक है। स्मृति के रूप में विचार को अस्वीकार करना आवश्यक है, चाहे वह सुखद हो या दुःखद, हर क्षण हर घड़ी जैसे ही वह उठे। ऐसा हम किसी प्रयोजन से नहीं करते, इसलिये नहीं कि हमें अज्ञात की किसी अद्भुत अवस्था में प्रवेश करना है। आप रहते तो ऋषिवैली में हैं और सपने लेते हैं बम्बई अथवा रोम के। इससे एक द्वंद्व उत्पन्न होता है, जो मन को मंद तथा विभाजित करता है। क्या आप इसे देख सकते हैं और मिटा सकते हैं? क्या आप यूं ही मिटाना जारी रख सकते हैं, इसलिए नहीं कि आप अज्ञात में प्रवेश करना चाहते हैं। आप कभी यह नहीं जान सकते कि अज्ञात है क्या, क्योंकि जैसे ही आप अज्ञात के रूप में उसे पहचानते हैं, आप पुनः ज्ञात में आ जाते हैं।</p>
<p>The process of recognition is a process of the continued known. As I do not know what the unknown is I can only do this one thing, keep on wiping thought away as it arises.</p>	<p>पहचानने की प्रक्रिया ज्ञात की निरंतरता की प्रक्रिया है। चूंकि मैं यह नहीं जानता कि अज्ञात क्या है, तो मैं केवल यही कर सकता हूं, कि मैं विचार को, मिटाता जाऊं, जैसे-जैसे वह उठे।</p>
<p>You see that flower, feel it, see the beauty, the intensity, the extraordinary brilliance of it. Then you go to the room in which you live, which is not well proportioned, which is ugly. You live in the room but you have a certain sense of beauty and you begin to think of the flower and you pick up the thought as it arises and you wipe it away. Now from what depth do you wipe, from what depth do you deny the flower, your wife, your gods, your economic life? You have to live with your wife, your children, with this ugly monstrous society. You cannot withdraw from life. But when you deny totally thought, sorrow, pleasure, your relationship is different and so there must be a total denial, not a partial denial, not a keeping of the things which you like and a denying of the things which you do</p>	<p>आप उस फूल को देखते हैं, उसका अनुभव करें, उसके सौंदर्य, उसकी तीव्रता, उसके असाधारण रंग-रूप को देखें। तब आप उस कमरे में जायें जहां आप रहते हैं, जो सही ढंग से नहीं बना, जो कुरूप है। आप उस कमरे में रहते हैं परंतु आपको सौंदर्य का एक एहसास है और आप उस फूल के बारे में सोचने लगते हैं और जैसे-जैसे वह विचार उठता है, आप उसे मिटाते जाते हैं। तो आप किस गहराई से मिटाते हैं, किस गहराई से आप उस पुष्प को, अपनी पत्नी को, अपने देवताओं को, अपने आर्थिक जीवन को अस्वीकार करते हैं? आपको अपनी पत्नी के साथ, बच्चों के साथ, इस भयानक कुरूप समाज के साथ जीना है। आप जीवन से भाग नहीं सकते। परंतु जब आप विचार को, सुख-दुख को पूर्णतः अस्वीकार कर देते हैं तो आपके सम्बन्ध भिन्न प्रकार के हो जाते हैं लेकिन इसके लिये आंशिक नहीं वरन् पूर्ण अस्वीकृति होनी चाहिये, ऐसी</p>

not like.	अस्वीकृति नहीं जिसमें आप मनपसंद वस्तुओं को तो रखते हैं उन को अस्वीकार कर देते हैं जिन्हें आप नहीं चाहते।
Now, how do you translate what you have understood to the student?	तो जो आपने समझा उसे आप छात्रों तक कैसे पहुंचाएंगे?
<b>Teacher:</b> You have said that in teaching and learning, the situation is one of intensity where you do not say "I am teaching you something". Now this constant wiping away of the marks of thought, has it something to do with the intensity of the teaching-learning situation?	<b>शिक्षक :</b> आपने कहा है कि शिक्षण में और सीखने में तीव्रता की, गहनता की, स्थिति तब होती है जब आप यह नहीं कहते कि "मैं आपको कुछ शिक्षा दे रहा हूँ।" तो क्या विचार के चिन्हों को इस प्रकार निरंतर मिटाने का "शिक्षा देने एवं ग्रहण करने" की स्थिति की गहराई से कोई सम्बन्ध है?
<b>Krishnamurti:</b> Obviously. You see, I feel that teaching and learning are both the same. What is taking place here? I am not teaching you - I am not your teacher or authority, I am merely exploring and conveying my exploration to you. You can take it or leave it. The position is the same with regard to students.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> अवश्य है। मैं अनुभव करता हूँ कि शिक्षा देना तथा ग्रहण करना दोनों एक ही वस्तु है। इस स्थिति में होता क्या है? मैं आपको शिक्षित नहीं कर रहा हूँ--मैं आपका न तो अध्यापक हूँ, न कोई सत्ता-अधिकारी--मैं केवल खोज रहा हूँ और उस खोज को आप तक पहुंचा रहा हूँ। आप उसे ले सकते हैं, अथवा छोड़ भी सकते हैं। छात्रों के सम्बन्ध में भी स्थिति यही है।
<b>Teacher:</b> What is the teacher then to do?	<b>शिक्षक :</b> तो अध्यापकों को क्या करना है?
<b>Krishnamurti:</b> You can only find out when you are constantly denying. Have you ever tried it? It is as if you cannot sleep for a single minute during the day time.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप केवल पता लगा सकते हैं कि कब आप निरंतर अस्वीकार कर रहे हैं। क्या आपने कभी ऐसा किया है? यह उसी तरह है, मानों दिन में आप एक मिनट भी न सो सकें।
<b>Teacher:</b> It not only needs energy, sir, but also releases a lot of energy.	<b>शिक्षक :</b> इसके लिये न केवल ऊर्जा की आवश्यकता होती है, बल्कि इससे एक बड़ी मात्रा में ऊर्जा पैदा भी होती है।

<b>Krishnamurti:</b> But first you must have the energy to deny.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> परंतु पहले आपके अंदर अस्वीकार करने की शक्ति होनी चाहिये।
<b>Talk To Teachers</b>	<b>5. प्रतियोगिता</b>
<b>Chapter 5 On Competition</b>	
We have been talking of establishing a right communication between ourselves and the student, and in the state of communion to bring about a different atmosphere or climate, in which the student begins to learn. I do not know if you have noticed that as frivolity is contagious so is seriousness. It is a seriousness that does not arise because of a heavy face or a heavy heart but a seriousness which comes into being when we are in a state of relationship, communion.	हम अपने और छात्रों के बीच एक तरह का सही संवाद स्थापित करने के विषय में चर्चा कर रहे थे तथा संवाद में एक ऐसा भिन्न वातावरण उत्पन्न करने की, जिसमें छात्र सीखने लगें। मैं नहीं जानता आपने ध्यान दिया है अथवा नहीं कि जिस प्रकार उथलापन संक्रामक होता है उसी प्रकार गंभीरता भी होती है। वह कोई ऐसी गंभीरता नहीं है जो किसी लटके हुए चेहरे से या भारी हृदय से उत्पन्न होती है; वह ऐसी गंभीरता है जो तब आती है जब हम पारस्परिक सम्बन्ध की, संवाद की अवस्था में होते हैं।
I think learning can exist only in that state of communion between the teacher and the student, as between you and me - not that I am your teacher. You know what the word "communion" means: to communicate, to be in touch, to transmit a certain feeling, to share it, not only at the verbal level but also at an intellectual level and also to feel much more deeply, subtly. I think the word "communion" means all that, and in that state, at all levels, in that atmosphere, in that sense of togetherness, is it not possible for both the teacher and the student to learn? I think that is the only state in which to learn, not when you sit on a pedestal and pour information down the throat of the student. Could we establish that communion, not only with the speaker but with trees, with nature, with the world, with the early morning when we get up,	मेरे विचार से सीखना तभी होता है जब आपके और छात्र के बीच मेल-मिलाप की, एकात्मता की अवस्था हो, जैसी मेरे और आपके बीच है। ऐसा नहीं है कि मैं कोई आपका शिक्षक हूँ। आप जानते हैं कि मेल-मिलाप शब्द का, एकात्मता का क्या अर्थ है--बात पहुंचाना, संपर्क में आना, किसी अनुभूति को संचारित करना, सहभागी होना--न केवल शाब्दिक स्तर पर बल्कि बौद्धिक स्तर पर भी अनुभूति का और अधिक गहराई से एवं और अधिक सूक्ष्मता से अनुभव करना। मेरे विचार से "कम्यूनियन" शब्द का यही सब अर्थ है और उस अवस्था में सभी स्तरों पर, उस वातावरण में, एक साथ होने के उस बोध में, क्या शिक्षक और छात्र दोनों के लिए सीखना संभव नहीं होता? मेरे विचार से सीखना केवल उसी अवस्था में संभव होता है, उस अवस्था में नहीं होता जहां आप किसी ऊंची चौकी पर बैठकर छात्र के गले में सूचनाएं उतारते हैं। तो क्या हम वह संवाद

<p>a sense of communion in which we learn?</p>	<p>स्थापित कर सकते हैं, केवल वक्ता से ही नहीं, वरन् वृक्षों से भी, प्रकृति से, विश्व से और उषाकाल से जब हम जगते हैं--एक तरह का संवाद-समागम जिसमें हम सीखते हैं?</p>
<p>This morning could we discuss something which I feel not only the professional teacher but the human being should consider, because what we are to discuss has a great deal of significance in life? The whole of civilization, not only in India but in the rest of the world, is geared to competition, to success, to achievement. The ambitious man seems to be the respected entity - the ambitious man, the aggressive man who wants to succeed, to intrigue, to pull strings and so get to the top of the heap. There is everlasting competition not only in the class room of a school but also in daily life, in the attitude of the clerk who feels he must become the manager and the manager the director and the director the board president and so on. This is the established pattern of existence in modern civilization. You see everywhere that man is after success and it is he who is respected, politically at least, and the same attitude exists in the school. You tell the student he is not as good, not as intelligent as another student. You coax the child, goad him, encourage him to compete, to succeed, to arrive at a certain intellectual level. You are worshippers of labels.</p>	<p>आज की सुबह क्या हम ऐसे विषय पर बात कर सकते हैं जिस पर मेरे विचार से केवल शिक्षक को ही नहीं वरन् सभी मनुष्यों को विचार करना चाहिये, क्योंकि जिस पर हम चर्चा करने जा रहे हैं उसका जीवन में बड़ा महत्त्व है? भारत में ही नहीं वरन् समस्त विश्व में सारी सभ्यता को, प्रतियोगिता के, सफलता और उपलब्धियों के अनुकूल बनाया गया है। महत्त्वाकांक्षी मनुष्य यहां सम्मानित प्रतीत होता है--महत्त्वाकांक्षी मनुष्य, ऐसा आक्रामक मनुष्य जो सफलता के पीछे है और छल फरेब से, किसी भी प्रकार खींच-तान कर चोटी पर पहुंचना चाहता है। प्रतियोगिता तो अंतहीन है, केवल कक्षा में ही नहीं वरन् दैनिक जीवन में भी। उस क्लर्क के दृष्टिकोण में जो हर हाल में मैनेजर होना चाहता है, और मैनेजर जो निर्देशक होना चाहता है और निदेशक जो बोर्ड का अध्यक्ष होना चाहता है, आदि। आधुनिक सभ्यता में जीवन का यही स्वीकृत रूप है। आप सभी जगह देखते हैं कि मनुष्य सफलता के पीछे है और वही मनुष्य सम्मानित है--कम-से-कम राजनीतिक दृष्टि से--और यही दृष्टिकोण विद्यालय में भी है। आप छात्र को बताते हैं कि वह उतना अच्छा, उतना ही बुद्धिमान नहीं है जितने दूसरे छात्र। आप बालक को समझाते-बुझाते हैं, उकसाते हैं, प्रतियोगिता के लिये उसे प्रोत्साहित करते हैं, सफल होने के लिये, तथा एक निश्चित बौद्धिक स्तर पर पहुंचने के लिये। आप लेबलों के उपासक हैं।</p>
<p>So you have an inborn attitude, which is essentially competitive and aggressive. This is so not only in economic and social life but also in religious life. There is this everlasting struggle to climb, to compete, to compare at all the levels of our being. Do you question this background of the superior and the inferior or do you accept it as inevitable and carry on? And will this bring about real learning? Is</p>	<p>अतः आप में जन्मजात एक ऐसी आदत है जो मूलतः प्रतियोगी तथा आक्रामक है। केवल आर्थिक और सामाजिक जीवन में ही ऐसा नहीं है बल्कि धार्मिक जीवन में भी यही है। अस्तित्व के सभी स्तरों पर तुलना का, ऊंचे चढ़ने का, प्रतियोगिता का, यही एक सतत संघर्ष है। तो, आप बढ़िया-घटिया की इस पृष्ठभूमि पर सवाल उठाते हैं अथवा उसे अनिवार्य मानकर बस ढोये चले जाते हैं? और क्या इससे वास्तविक सीखना हो पाएगा? क्या यह जीवन के लिये स्वाभाविक है?</p>

<p>this natural to life? Natural not in the primitive sense of that word but is this a cultured life? Would you bring up your child this way? Do you think it is the right way of existence? I know it is the accepted pattern, but is it the true way? First of all, what does this competition, this comparison, do to the mind? Do you think you learn through competition? Let us examine this. You know that it is the established pattern at all levels of our being, at all stages of our existence, to compare, to have goals, to achieve. This is the whole structure of human existence.</p>	<p>स्वाभाविक शब्द के पुरातन अर्थ में नहीं, बल्कि यूं कहें कि क्या यह एक सभ्य जीवन है? क्या आप अपने बालक का इसी प्रकार पालेंगे? आपके विचार से क्या जीवन का यही सही ढंग है? मैं जानता हूँ कि यही एक स्वीकृत ढंग है, परंतु क्या यह सही है? सर्वप्रथम, यह प्रतियोगिता, यह तुलना, मन को कैसे प्रभावित करती है? क्या आपको लगता है कि प्रतियोगिता से हम सीखते हैं? हम इसकी छानबीन करेंगे। आप जानते हैं, जीवन का यही स्थापित ढांचा है कि जीवन के हर स्तर पर, जीवन की सभी दशाओं में यही है, तुलना करना, लक्ष्य बनाना, उपलब्ध करना आदि। मानव अस्तित्व की यही समस्त संरचना है।</p>
<p>When you see two pictures on the wall, your attitude is that if the name of the painter is well known, whatever he paints is excellent. But the man whose name is not known, his picture is inferior. This happens all the time. Is that right? Will that attitude bring comprehension, will that help us to learn? Not that I must not have the capacity to discriminate, but will comparison help the mind to understand, to learn? Is comparison a state of mind in which one learns?</p>	<p>जब आप दीवाल पर दो तस्वीरे देखते हैं तो आपकी दृष्टि यह होती है कि यदि चित्रकार का नाम सुपरिचित है तो जो कुछ वह चित्रित करता है बढ़िया है, परंतु उस व्यक्ति का बनाया हुआ चित्र, जिसका नाम परिचित नहीं है, घटिया है। यही सदा होता है। क्या यह ठीक है? क्या यह दृष्टि समझ उत्पन्न करेगी? क्या यह सीखने में हमारी सहायता करेगी? इसका यह अर्थ नहीं है कि हमारे अंदर सूक्ष्म-विवेचन की क्षमता नहीं होना चाहिये; परंतु क्या तुलना समझने में, सीखने में मन की सहायता करेगी? क्या तुलना मन की वह अवस्था है जिसमें हम सीखते हैं?</p>
<p>How will you proceed to help the student if both you and the student have this attitude of competition, of comparison? Let us make this very simple. What does this competition do to the mind? What happens to the mind that is always comparing, achieving success, worshipping success?</p>	<p>यदि आप में तथा छात्र दोनों में प्रतियोगिता की, तुलना की रुचि है तो कैसे आप छात्र की सहायता करेंगे? चलिए इस को एकदम सरल तरीके से देखते हैं। यह प्रतियोगिता मन पर क्या प्रभाव डालती है? उस मन का क्या होता है जो सदा तुलना करता रहता है, सफलता के फेर में, उसके पीछे-पीछे मारा-मारा फिरता है?</p>
<p><b>Teacher:</b> It is tiring itself.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> वह अपने को थका रहा है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> You are still watching the effects, the results, but you are not watching the mind itself. You are not watching the nature of</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप अब भी परिणामों को, नतीजों को देख रहे हैं, लेकिन आप स्वयं मन को नहीं देख रहे। आप</p>

<p>the mind itself which is doing this, the mind which is in movement, which is in a state of competition. Please look at the mind itself which is doing these things.</p>	<p>स्वयं मन के स्वरूप को नहीं देख रहे हैं जो यह सब कर रहा है, उस मन को जो गति में है, जो प्रतियोगिता की अवस्था में है। कृपया स्वयं उस मन को देखें जो यह सब कर रहा है।</p>
<p><b>Teacher:</b> If the mind is going to measure success by achievement, when it does not achieve, there is frustration.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> जब मन सफलता को उपलब्धियों द्वारा नापता है तो जब उपलब्धि नहीं होती तो निराशा होती है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> You are still dealing with results. I want to tackle the mind. Perhaps analogies are tiring. The seed of an oak can never become the pine tree. You say: "I do not know what seed I am but I want to become a pine, or an ash, or the oak". We do not know the seed or the state of the mind itself, but concern ourselves with what it should be.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप अब भी परिणाम को देख रहे हैं। मैं मन से निपटना चाहता हूँ। संभवतः उपमायें थकाने वाली हैं। ओक के बीज से कभी भी चीड़ का वृक्ष नहीं हो सकता। आप कहते हैं, "मैं नहीं जानता कि मैं कौन सा बीज हूँ परंतु मैं एक चीड़ अथवा अखरोट अथवा ओक बनना चाहता हूँ।" हम बीज को अथवा स्वयं मन की अवस्था को नहीं समझते बल्कि केवल इसकी चिन्ता करते हैं कि इसको क्या होना चाहिये।</p>
<p>Let us experience the thing rather than verbalize it. We compete, worship success, because we feel that if we did not compete, we would stagnate. That is merely a speculative response, it is not an actual fact. You do not know what would happen. When you see what you are, whatever it is, then you begin to learn. Water is water in all circumstances whether it is in the river or in a single drink. At present we have no foundation from which to learn. What we are doing is merely adding. The additive process is what we call learning. It is no learning.</p>	<p>तो शब्दों में ढालने की बजाए उस वस्तु का अनुभव करें। हम प्रतियोगिता में जुटे हैं, सफलता की उपासना करते हैं क्योंकि हम ऐसा लगता है कि यदि हम प्रतियोगिता में नहीं पड़ते तो जड़ हो जायेंगे। यहप्रतिक्रिया केवल काल्पनिक है, वास्तविक तथ्य नहीं है। आप नहीं जानते कि क्या होगा। जब आप देखते हैं कि आप क्या हैं, चाहे जो भी हो, तब आप सीखना आरम्भ करते हैं। सभी परिस्थितियों में पानी तो पानी ही है, चाहे वह नदी में हो अथवा एक गिलास में। इस समय हमारे पास वह आधार ही नहीं है जिससे सीखना शुरू हो। जो हम कर रहे हैं वह केवल जोड़ना है। यह जोड़ने की प्रक्रिया ही है जिसे हम सीखना कहते हैं। यह सीखना नहीं है।</p>

<p>It is only the mind that is in a state in which it is not comparing, when it has understood the absurdity of comparing, that it can establish a foundation from which it can start to learn in the true sense of the word.</p>	<p>केवल वही मन जो उस अवस्था में है जहां वह तुलना नहीं कर रहा, जब उसने तुलना की व्यर्थता को समझ लिया है, वही मन एक ऐसा आधार स्थापित कर सकता है जहां से वह शब्द के सही अर्थ में सीखना आरम्भ कर सकेगा।</p>
<p>If there is such a foundation in which there is no wandering, no longing, it is a solid foundation and on that you can build. The building is the structure of learning and from that learning there is action and never conformity, and therefore never a sense of fear, never a sense of frustration.</p>	<p>यदि कोई ऐसा आधार है जिसमें भटकना नहीं है, तृष्णा नहीं है, तो वह एक ठोस आधार है और उस पर आप निर्माण कर सकते हैं। उस पर जो भवन है वह सीखने की संरचना है और उस सीखने से एक्शन होता है, अनुरूपता कभी नहीं, और इसलिए भय का, निराशा का बोध कभी नहीं होता।</p>
<p>Can you help the student to learn in that manner? For the student to learn, you must differentiate totally between the process of addition and learning. Then, you are creating a real human being, not a machine. If you do not see that, how are you going to help the student? Can you wipe away all competition with one sweep, which means can you wipe away the so-called structure of a society?</p>	<p>क्या आप इस प्रकार से सीखने में छात्र की सहायता कर सकते हैं? छात्र सीखे, इसके लिये यह आवश्यक है कि आप जोड़ने की प्रक्रिया तथा सीखने की प्रक्रिया में भली-भांति अंतर करें। तभी आप एक वास्तविक मनुष्य का निर्माण कर रहे होंगे, न कि किसी मशीन का। यदि आप इसको नहीं देखते तो कैसे आप छात्र की सहायता करेंगे? क्या एक ही झटके में आप समस्त प्रतियोगिता को मिटा सकते हैं, जिसका अर्थ है एक ही झटके में समाज की तथा-कथित संरचना को मिटा देना, क्या आप ऐसा कर सकते हैं?</p>
<p>You are teachers; a new generation is coming into your hands. Do you want them to continue in the same way? If you feel that this society in which we have grown up is a rotten thing, how will you help the student to create a new quality of mind in which the monster of competition has</p>	<p>आप अध्यापक हैं; एक नवीन पीढ़ी आपके हाथों में आ रही है। क्या आप चाहते हैं कि वह उसी प्रकार बनी रहे? यदि आप यह अनुभव करते हैं कि यह समाज जिसमें हम बड़े हुए हैं एक सड़ी हुई वस्तु है, तो कैसे आप मन में एक नवीन गुण उत्पन्न करने में छात्र की सहायता करेंगे जिसमें प्रतियोगिता की भयानकता का</p>

<p>no part? What are the steps you will take, day after day, to see that the child is not drowned, swallowed up by society? What will you do, step by step, to help him?</p>	<p>कोई हाथ नहीं होगा? तो दिन-प्रति-दिन आप कौन से कदम उठाएंगे, यह देखने के लिये कि समाज बालक डुबो ही न दे, निगल ही न जाय? उसकी सहायता करने के लिये आप क्या-क्या उपाय करेंगे?</p>
<p><b>Teacher:</b> The child should not be brought up with luxuries.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> बालक को विलासिता में नहीं पाला जाना चाहिये।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> What is wrong with luxuries? He may wear clean clothes, he may sit in a chair, have good food. To me it is luxury, to you it is not. What has luxury to do with this? You are laying down the law, the ideal of "luxury".</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> विलासिता में क्या दोष है? वह साफ कपड़े पहन सकता है, कुर्सी पर बैठ सकता है, अच्छा भोजन कर सकता है। मेरे लिये यह विलासिता है, आपके लिये नहीं है। विलासिता का इससे क्या सम्बन्ध? आप एक नियम स्थापित कर रहे हैं, “विलासिता” का आदर्श।</p>
<p>Talk to the child not once a week, talk to him about it all the time, because he is being conditioned to compete. How will you help him not to be caught in the vicious circle of competition?</p>	<p>इस विषय पर बालकों से चर्चा करें, सप्ताह में एक बार नहीं वरन् हर समय, क्योंकि उनको प्रतियोगिता के लिये संस्कारित किया जा रहा है। आप कैसे उसकी सहायता करेंगे कि बालक प्रतियोगिता के कुचक्र में न फंसे?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> If an individual realizes he is unique, so unique that there is no other like him, is he unique factually? He comes with all the prejudices of his parents. Where is the uniqueness in that poor child? You have to strip him of all his conditioning and can you strip him of it? Is it not your function as a teacher to do that? It is your responsibility. You have to see it, to see that it is true; and you have to feel it so that you will transmit it. But the boy may not feel it is so urgent. How will you commune with the child so that he learns? How will you teach him or help him to learn without the spirit of competition?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> यदि कोई व्यक्ति यह अनुभव करता है कि वह अनुपम है, अनोखा, इतना अनुपम कि उस जैसा दूसरा कोई नहीं है, तो क्या वास्तव में वह अनुपम है? वह अपने माता-पिता के तमाम पूर्वाग्रहों के साथ आया है। उस बेचारे बालक में वह अनुपम-अपूर्व गुणवत्ता कहां है? उसके समस्त संस्कारों को आपको उसके ऊपर से उतार फेंकना होगा लेकिन क्या आप ऐसा कर सकते हैं? क्या अध्यापक के रूप में ऐसा करना आपका कार्य नहीं है? यह आपका उत्तरदायित्व है, जिम्मेदारी है। आपको उसे देखना है, उसकी सच्चाई को देखना है; और आपको स्वयं भी इसे महसूस करना है ताकि आप उसे आगे पहुँचा सकें। परंतु हो सकता है कि बालक को वह इतना आवश्यक न लगे। आप बालक से ऐसा आत्मीय संवाद कैसे करेंगे कि वह सीखे? बिना प्रतियोगिता की भावना के वह सीखे, इसमें आप उसकी कैसे सहायता करेंगे, उसे कैसे शिक्षित करेंगे?</p>
<p><b>Teacher:</b> By making him see that he should not</p>	<p><b>शिक्षक :</b> उसे यह दिखा कर कि उसे भयभीत नहीं होना</p>

<p>be afraid and that as an individual he is unique and has a contribution to make.</p>	<p>चाहिये, और यह कि एक व्यक्ति के रूप में वह अनुपम है तथा उसका अपना एक योगदान है जो उसे करना है।</p>
<p><b>Teacher:</b> I am not able to feel for the child unless the feeling is inside me, and when it is not there I feel I have already destroyed the child.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> जब तक वह एहसास स्वयं मेरे अंदर ही नहीं है तो मैं उसे बालक के लिये भी महसूस नहीं कर सकता, और जब वह मेरे अंदर नहीं है तो मुझे लगता है कि मैंने पहले ही बालक को नष्ट कर डाला।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> I will tell you. Every case has its own lesson. You do not feel it because you yourself are competing. Are you not competing for money, position prestige? As long as you do not feel strongly about this, what will you do? You cannot wait till you completely understand. So what will you do? Do not give the student marks but keep a record for yourself to see how he is behaving, how he is learning and the stage of his knowledge and so on, but do not goad him and help him to compete.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> मैं आपको बताऊंगा। प्रत्येक घटना का अपना ही एक सबक होता है। आप उसे महसूस नहीं करते क्योंकि आप स्वयं प्रतियोगिता में पड़े हैं। क्या आप दौलत के लिये, पद के लिये, सम्मान के लिये प्रतियोगिता नहीं कर रहे हैं? जब तक आप इसे तीव्रता से महसूस नहीं करते, आप क्या करेंगे? जब तक आप पूरी तरह समझ न लें तब तक प्रतीक्षा तो नहीं कर सकते। तो फिर आप क्या करेंगे? विद्यार्थी को नम्बर मत दें, परंतु थोड़ा हिसाब रखें यह देखने के लिये कि वह कैसे व्यवहार करता है, कैसे सीख रहा है तथा उसके ज्ञान का स्तर कैसा है। यह सब जानने के लिये, परंतु उस पर अंकुश न लगायें और प्रतियोगिता में उसकी सहायता न करें।</p>
<p>Let us go over what we have discussed. Real learning comes about when the competitive spirit has ceased. The competitive spirit is merely an additive process which is not learning at all. We want the child to learn and not merely add knowledge to himself like a machine. To help the child to learn basically and fundamentally he must cease to compete, with all its implications. Now, one of the ways to do this is to I see the truth of not comparing. Now, how will you help the child not to be competitive?</p>	<p>तो हमने जो चर्चा की है उसे फिर से एक बार देखें। सीखना वास्तव में तभी होता है, जब प्रतियोगी भावना समाप्त हो जाती है। प्रतियोगिता की भावना केवल एक संकलन की प्रक्रिया है, जिसमें सीखना तो होता ही नहीं। हम चाहते हैं कि बालक सीखें, न कि मशीन की भांति ज्ञान संकलित करता जाय। आधारभूत और मौलिक रूप से सीखने में उसकी सहायता के लिये आवश्यक है कि बालक प्रतियोगिता से एकदम बाहर आए, सभी निहितार्थ अर्थों में। ऐसा करने का एक ढंग यह है कि तुलना न करने में जो सच्चाई है, उसे देख लूं। तो आप कैसे बालक की सहायता करेंगे कि वह प्रतियोगी न हो?</p>
<p><b>Teacher:</b> As I teach mathematics I think of the ways I can present the subject matter so that it will be interesting. So many things operate in relationship when a thing like this is presented, and how do we communicate them? It is a very vast thing, so we can only say it in parts.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> जब मैं गणित पढ़ाता हूं तो मैं सोचता हूं कि विषय को कैसे प्रस्तुत करूं कि वह रुचिकर हो। जब इस प्रकार की वस्तु को प्रस्तुत करना होता है तो उसमें कई सारी चीजें साथ-साथ चलती हैं तो उन्हें हम कैसे दूसरों तक पहुंचायें? यह एक बड़ी व्यापक वस्तु है, अतः इसे हम केवल अंशों में ही कह सकते हैं।</p>

<p><b>Krishnamurti:</b> You are not meeting the point. When I say: "What will you do?" I mean not only in terms of action but also in terms of feeling. They are not two different things, the feeling and the action. I see very clearly that competitiveness is destructive not only in the classroom but right through life. Here is a young child; I want to help him to understand. How am I to proceed? I can talk to him and say, "Look at what is happening in life. There is misery, conflict". Talk to him so that you do not create condemnation, you do not create reaction. Look at the picture. See it very clearly as you would see London or Bombay on the map. Help the student to see very clearly, that is the first job. Convey to him the urgency of the feeling. Do not try to convince him, influence him, do not talk to him in terms of condemnation, in terms of agreement, persuasion. Show him the fact. Establish the fact. Then you are dealing with him entirely factually, scientifically, not romantically, sentimentally or emotionally. You have established between him and you right relationship. You are dealing with facts and you have established a relationship between you of mutual understanding of the fact, the corruptive fact of competition. Then he and you sit down and say "What are we going to do actually, in action?"</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप बात की तह तक नहीं पहुंच रहे । जब मैं कहता हूं, आप क्या करेंगे? तो मेरा मतलब केवल एक्शन से नहीं है वरन् एहसास से भी है। एहसास और एक्शन--ये दो भिन्न वस्तुएं नहीं हैं। मैं साफ-साफ देख लेता हूं कि प्रतियोगिता विनाशकारी है, केवल कक्षा में ही नहीं वरन् समस्त जीवन में । और यहां एक छोटा-सा बालक है और मैं इसे समझने में उसकी सहायता करना चाहता हूं। तो मैं क्या करूं ? मैं उससे बात कर सकता हूं और कह सकता हूं "देखो जीवन में क्या हो रहा है--वहां दुख है, द्वंद्व है"। उससे इस प्रकार बात करें कि उसमें निंदा न हो, आप प्रतिक्रिया न उत्पन्न करें। आप इस तस्वीर को देखिये। स्पष्टता से देखिये, जैसे नक्शे में लंदन अथवा बम्बई को देखते हैं । स्पष्टता से देखने में छात्र की सहायता करें, यही पहला काम है। यह एहसास कितना ज़रूरी है, यह उसे बताइये। उसे प्रभावित करने का या सहमत करने का प्रयत्न मत कीजिये । उससे निंदा की, सहमति या दबाव की भाषा में बात मत कीजिये। उसे तथ्य दिखाइये। तथ्य स्पष्ट कीजिये। तभी उसके साथ आपका व्यवहार पूर्णतया वैज्ञानिक एवं तथ्यात्मक होगा, अन्यथा वह काल्पनिक, भावुक अथवा जज़बाती ही रह जाएगा। तभी आपने अपने और उसके बीच सही सम्बन्ध को स्थापित किया है। आप तथ्य से निपट रहे हैं और आपने अपने बीच तथ्यों की पारस्परिक समझ का संबंध बनाया है, प्रतियोगिता के भ्रष्ट कर देने वाले तथ्य को स्थापित किया है। तब वह और आप मिलकर सोचते हैं, "हम वास्तव में, क्या करने जा रहे हैं, व्यवहार में?"</p>
<p>Translation of the feeling of communion depends entirely on the intensity of this feeling. Now, you have established the feeling, the truth, the fact, that competition is deadly, but you have not communicated this fact to the child. That is the first thing to do.</p>	<p>संवाद एवं आत्मीयता की भावना का संचार इस एहसास की तीव्रता पर ही पूरी तरह निर्भर करता है। अब आपने इस एहसास को, इस सत्य को, तथ्य को समझ लिया कि प्रतियोगिता घातक है, परंतु इस तथ्य को आपने बालक तक नहीं पहुंचाया। यही पहला काम है जो आपको करना है।</p>
<p><b>Talk To Teachers</b>  <b>Chapter 6 On Fear</b></p>	<p><b>6. भय</b></p>

<p><b>Krishnamurti:</b> How would you, as an educator, tackle the problem of the eradication of fear in the student? Can you set about it as you would set about teaching mathematics? First, you must understand fear for yourself before you can help another. You have to understand the implication of fear, how fear comes about. Just as you know Hindi or some other subject, you have to know something of fear. Society is doing everything to inculcate fear by laying down standards, religious ideals, class distinctions, ideas of success, the sense of the inferior and the superior, the rich man and the poor man. Society is doing everything possible to breed distorted values.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> एक शिक्षक के रूप में कैसे आप छात्र के अंदर से भय को समाप्त करने की समस्या को निपटारेंगे? क्या इस को आप उसी प्रकार आरम्भ करेंगे जैसे गणित को करते हैं? सर्वप्रथम, आपको स्वयं भय को समझना होगा, तभी आप दूसरे की उसमें सहायता कर सकेंगे। आपको भय के छिपे अर्थों को समझना होगा, कि कैसे भय होता है। जैसे आप हिन्दी या किसी दूसरे विषय को जानते हैं, उसी प्रकार आपको भय के विषय में भी कुछ जानना होगा। भय उत्पन्न करने के लिये जो कुछ संभव हो सकता है, समाज वह सब कर रहा है, मानदंड बना कर, धार्मिक-आदर्श, वर्ग-भेद, सफलता का विचार, हीनता तथा श्रेष्ठता के भाव अथवा धनी एवं निर्धन की भावना। विकृत मूल्यों को आगे बढ़ाने के लिए समाज हर संभव कोशिश कर रहा है।</p>
<p>The question is not only for the teacher to go deeply into fear but also to see that fear is not transmitted and for the student to be able to recognize the causes that breed fear. As teachers, would this not be a problem to you? We have very little love in our lives, not only to receive but to give; love not in any mystical sense but the actual feeling of love, pity, compassion, generosity, an action which does not emanate from a centre. And as you have very little love, what would you do with the student, how would you help him to have this flame?</p>	<p>प्रश्न केवल यही नहीं है कि अध्यापक भय के स्वरूप को गहराई से समझें बल्कि प्रश्न यह भी है कि भय संचारित न हो तथा छात्र भी इस योग्य हो कि वह भय उत्पन्न होने के कारणों को पहचान सके। एक अध्यापक के रूप में क्या आपके लिये यह एक समस्या नहीं है? हमारे जीवन में प्रेम बहुत कम है, केवल प्राप्त करने के लिये ही नहीं वरन् देने के लिये भी--कोई रहस्यवादी अर्थों में नहीं वरन् प्रेम का वास्तविक एहसास, करुणा, दया, उदारता की वास्तविक अनुभूति, अर्थात् एक ऐसा एक्शन जो किसी केन्द्र से, अहं से उत्पन्न नहीं होता। और चूंकि आपके पास प्रेम बहुत कम है तो आप छात्र के साथ क्या करेंगे, कैसे उसकी सहायता करेंगे, जिससे उसके अंदर भी यह ज्वाला प्रज्वलित हो?</p>
<p>Does religion mean anything to you? Not ceremonies, but the religious feeling, the religious benediction, the sacredness of something? Religion, fear, love - are they not very interrelated? You cannot understand the one without the other. There is fear, there is this appalling dearth of love - I mean the passion of it, the intensity of it - and then there is this feeling of benediction which is not mere</p>	<p>क्या धर्म का आपके लिये कोई अर्थ है? कर्म-काण्ड का नहीं वरन् धार्मिक अनुभूति का, धार्मिक कल्याण भावना का, किसी वस्तु की पवित्रता का? धर्म, भय, प्रेम-क्या ये सब बहुत अंतर्सम्बन्धित नहीं हैं? आप एक के बिना दूसरे को नहीं समझ सकते। सभी जगह भय है और प्रेम का इतना अधिक अभाव है--मेरा मतलब उसकी तीव्रता से, उत्साह से है--और तभी कल्याण की भी अनुभूति होगी --कल्याण जो कि कोई इनाम या</p>

<p>recompense, which is not a reward for righteous action, which has nothing to do with religious organizations.</p>	<p>मुआवजा नहीं है , जो किसी पुण्य का पुरस्कार नहीं है , जिसका किन्हीं धार्मिक संगठनों से कोई सम्बन्ध नहीं होता ।</p>
<p>Do you walk in the evening and have you noticed those villagers crossing the fields? How beautiful it all is? And the villager is totally unconscious of the beauty of the land, of the hills, of the water. For the villager returning to his unhealthy home there is nothing. There is fear, there is the immense problem of love and the feeling of sympathy when you see the poor villager go by. Don't you feel a tremendous surging in yourself, a despair at the colossal misery of it all? What can one do? There is the ability to receive and to give, to feel, and to have generosity, kindness, humility. What does it mean to you? How do you awaken this thing in yourself or awaken it in another? Can there be an approach that is not an isolated critical comprehension but an understanding that is total - of fear, love, the religious feeling?</p>	<p>क्या आप सायंकाल टहलने जाते हैं, क्या खेतों में इधर-उधर जाते हुये ग्रामीणों की ओर आपका ध्यान कभी गया है? वह सब कितना सुंदर है। और वह ग्रामीण पृथ्वी के, पहाड़ियों के, जल के सौंदर्य के प्रति पूर्णतया अचेत हैं। उस ग्रामीण के लिये अपने दम घोटने वाले घर को लौटने के सिवाय वहां कुछ नहीं है। वहां भय है। तो जब आप पास से गुज़रते किसी निर्धन ग्रामीण को देखते हैं तो वहां सहानुभूति की तथा प्रेम की बहुत कमी रहती है। क्या आप अपने अंदर एक तूफान सा उठता महसूस नहीं करते, इस घोर निर्धनता के प्रति तीव्र निराशा की अनुभूति नहीं होती आपको? तो आदमी क्या कर सकता है? हममें आदान-प्रदान की एक क्षमता है, महसूस करने की, उदारता, दयालुता और विनम्रता की। उसका आपके लिये क्या अर्थ है? कैसे आप इसे अपने भीतर जगायेंगे या फिर दूसरे के भीतर? क्या ऐसा भी कोई तरीका है जो कि कोई अलग-थलग पड़ी आलोचना भरी समझ नहीं हो, बल्कि भय, प्रेम एवं धार्मिक अनुभूति का एक समग्र और अखंड बोध हो?</p>
<p>Now how am I to approach the problem? Am I to take each problem one by one, to take fear, look at it, and then study love? How am I to capture the whole thing? If you have the feeling of a sound, you have the feeling of a song and if you have a feeling for the silence between sounds you have the delight of the movement of a song. Song is not just the word, just the sound, it is the peculiar combination of the sound, the silence and the continuation of the sound. To understand music surely there must be comprehension of the whole thing. And in the same way, is fear an isolated problem which has to be comprehended by itself and love by itself and the religious feeling by itself, or is</p>	<p>तो इस समस्या का सामना मैं कैसे करूं? क्या मैं एक-एक करके इन से निपटूं, पहले भय को लूं, उसे समझूं और फिर प्रेम को समझूं? मैं कैसे समग्र वस्तु को पकड़ूं? यदि आपको किसी स्वर का एहसास होता है तो आपको गीत की अनुभूति होती है और यदि स्वरों के बीच में होने वाले मौन को आप महसूस कर पाते हैं तो आपको गायन के लय का आनंद मिलता है। गायन केवल शब्द नहीं है, केवल स्वर-मात्र नहीं है बल्कि वह स्वर का, मौन का और स्वरों का एक विशिष्ट संयोग है। तो किसी संगीत को समझने के लिये अवश्य ही उस समस्त वस्तु को समझना होगा। और ठीक इसी प्रकार से, भय क्या एक पृथक् समस्या है, जिसे अलग करके अपने-आप में ही समझना होगा, और क्या प्रेम एवं धार्मिक भावना कोई पृथक्-पृथक् समस्याएं हैं, जिन्हें</p>

there an approach to the whole, a total thing?	अलग-अलग करके अपने-आप में समझा जाय अथवा कोई ऐसी दृष्टि भी है जो उन्हें एक समग्र वस्तु के रूप में समझे?
Have you ever watched a rain drop? The rain drop contains the whole of the rain, the whole of the river, the whole of the ocean. That drop makes the river, makes the ravines, excavates the Grand Canyon, becomes a vibrant thundering waterfall. In the same way can my mind look at fear, love, religion, god, as a movement, rather than as an isolated introspection, an analytical examination, a dissection?	क्या आपने कभी वर्षा की एक बूंद का अवलोकन किया है? वर्षा की एक बूंद में समस्त वर्षा छिपी है, समस्त सरिता, समस्त सागर निहित है। वही बूंद सरिता बनाती है, विशाल घाटियां बनाती है, कटाव करके विशाल दर्रे बनाती है, घड़घड़ाते हुए झरने बनाती है, और पहाड़ी नाले। इसी प्रकार से क्या मेरा मन भय, प्रेम, ईश्वर को अलग-अलग करके देखने की बजाए, एक विश्लेषणात्मक परीक्षण, एक विच्छेदन के रूप में देखने की बजाए एक लहर के रूप में देख सकता है?
<b>Teacher:</b> What is the relationship between fear and love?	<b>शिक्षक :</b> भय और प्रेम में क्या सम्बन्ध है?
<b>Krishnamurti:</b> If I am afraid, how can I have sympathy for anybody? An ambitious man does not know about the earth and the brotherhood of man. An ambitious man knows no love. Can a man who is afraid of death, of what his neighbours might say, of his wife, security, job, have sympathy? The one excludes the other.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> यदि मैं भयभीत हूँ तो मैं किसी के प्रति सहानुभूति कैसे रख सकता हूँ? एक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति क्या जाने पृथ्वी का सौंदर्य तथा मनुष्यों में भाईचारा क्या होता है। एक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति प्रेम को नहीं जानता। क्या कोई व्यक्ति, जो मृत्यु से भयभीत है, जो इससे भयभीत है कि उसके पड़ोसी, उसकी पत्नी क्या कहेगी, जो सुरक्षा एवं पद के लिए भयभीत है, क्या वह किसी से सहानुभूति रख सकता है? दोनों एक साथ नहीं हो सकते।
<b>Teacher:</b> We operate only in parts, we try through parts to apprehend the whole.	<b>शिक्षक :</b> हम केवल आंशिक रूप से ही कार्य करते हैं, हम अंश के द्वारा ही सम्पूर्ण को समझने का प्रयत्न करते हैं।
<b>Krishnamurti:</b> What will transform fear?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> वह क्या है जो भय को रूपांतरित करेगा?
<b>Teacher:</b> Understanding.	<b>शिक्षक :</b> बोध।

<p><b>Krishnamurti:</b> What brings the transformation and who is to transform? I have observed my mind which says, "I am afraid" and I want to get at what my mind is trying to do. What is effort and who is the maker of effort? Unless one goes into it very deeply, the mere saying "I must get rid of fear" has very little meaning.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> परिवर्तन किससे आता है और कौन परिवर्तन करता है? मैं अपने मन का निरीक्षण करता हूँ जो कहता है, "मैं भयभीत हूँ" और मैं उसे समझना चाहता हूँ जो मेरा मन करने की कोशिश कर रहा है । कोशिश क्या है और कोशिश करने वाला कौन है? तो जब तक व्यक्ति इसकी गहराई में नहीं जाता ; तो केवल यह कहने का कोई खास अर्थ नहीं कि "मुझे भय से मुक्त होना होगा ।"</p>
<p>There is fear, there is love, and this feeling of immensity. I can analyse fear step by step. I can go into the causes of fear, the effects of fear, I can go into why I am afraid, and who is the maker of effort and whether the maker of effort is different from the thing which is making effort. And I can enquire into whether there is a mind which can observe effort, the maker of effort and the thing upon which he is making an effort, not only objectively but inwardly. At the end of it all, there is still lurking fear. I can go very analytically into this question of religion, dogma, belief, superstition but at the end of this analyzing still where I am. I have learned the techniques of analysis and at the end of it, my mind is so sharp that it can follow every movement of fear. But fear still lurks.</p>	<p>भय है, प्रेम है और असीम-सघन की यह अनुभूति है । मैं भय का क्रमशः विश्लेषण कर सकता हूँ। मैं भय के कारणों का पता लगा सकता हूँ, उसके परिणामों का; मैं इसका पता लगा सकता हूँ कि मैं क्यों भयभीत हूँ, लेकिन यह प्रयत्न करने वाला कौन है और क्या प्रयत्न करने वाला उस वस्तु से भिन्न है जो प्रयत्न कर रही है । और मैं इसकी खोज कर सकता हूँ कि क्या कोई मन है जो प्रयत्न को देख सकता है, प्रयत्न करने वाले को, और उस वस्तु को जिस पर प्रयत्न किया जा रहा है--केवल बाहरी तौर पर नहीं वरन् भीतर से भी । इस सबके मूल में भी भय छिपा है। मैं धर्म के, रूढ़ि-सिद्धांत, विश्वास एवं अंध-विश्वास के इस प्रश्न का महीन विश्लेषण कर सकता हूँ, परंतु इस विश्लेषण के अंत में मैं वही का वही हूँ। मैंने विश्लेषण की टेकनीक को सीख भी लिया है और अंततः मेरा मन इतना तीव्र हो गया कि वह भय की प्रत्येक गति का पीछा कर सकता है। परंतु भय फिर भी है।</p>
<p>Now what is the nature of the mind that takes in the whole, digests it at one sweep and throws out what is not worthwhile?</p>	<p>तो उस मन का स्वभाव क्या है जो समग्रता का साक्षात् करता है, एक ही बार में उसे आत्मसात कर लेता है और जो महत्त्वहीन है उसे त्याग देता है।</p>
<p>There must be an approach which will give one a total comprehension, a total feeling with which one can approach each problem. Can I capture the whole meaning of something, of love, fear, religion, that extraordinary feeling</p>	<p>एक ऐसी दृष्टि होनी चाहिए जो व्यक्ति को एक सम्पूर्ण बोध दे, एक ऐसी समग्र अनुभूति प्रदान करे जिससे व्यक्ति प्रत्येक समस्या का सामना कर सके। क्या मैं उस शै का अर्थात् प्रेम, भय और धर्म का, विराटता की उस अनुपम अनुभूति का, सौंदर्य का सम्पूर्ण अर्थ समझ</p>

<p>of immensity, of beauty and then approach each problem individually? You have seen trees. Do you take in the whole tree or do you merely look at the branch and the leaves and the flower? Do you see the whole tree inside you? After all, a tree is the root, the branch the flower, the fruit, the sap, the whole of the tree. Can you grasp the feeling, the significance, the beauty of the whole tree and then look at the branch? Such an observation will have tremendous significance.</p>	<p>सकता हूँ ताकि हर समस्या से एक-एक करके निपट सकूँ? आपने वृक्षों को देखा है। क्या आप सम्पूर्ण वृक्ष को देखते हैं या केवल शाखाओं, पत्तों और फूलों को देखते हैं? क्या आप उस सम्पूर्ण वृक्ष को भीतर में देखते हैं? आखिरकार एक वृक्ष जड़ है, शाखा है, पुष्प है, फल है, रस है एवं समग्र पेड़ है। क्या आप समस्त वृक्ष के सौंदर्य का, उसके महत्त्व का अनुभव कर सकते हैं तब फिर उसकी शाखाओं को देखें? ऐसे निरीक्षण का बड़ा महत्त्व होगा।</p>
<p>When you look at a tree next time, see the shape of it, the symmetry of it, the depth, the feeling, the beauty, the quality of the whole thing. I am talking of the feeling of the whole. In the same way you have a body: you have feelings, emotions; there is the mind, there are memories - the conscious and unconscious traditions, the centuries of accumulated impressions, the family name - can you feel the whole of that? If you do not feel the whole of that but merely dissect your emotions, it is immature. Can you feel within yourself this whole thing and with that feeling of the whole being, attack fear?</p>	<p>अबकी बार जब आप किसी वृक्ष को देखें, आप उसके रूप-आकार को देखें, उसकी सडौलता को, उस की गहराई, सौंदर्य, एहसास और उस वजूद की गुणवत्ता को देखें। मैं समग्रता की अनुभूति की बात कर रहा हूँ। ठीक उसी प्रकार से आपका शरीर है, भावनाएं हैं, एहसास हैं, मन है, उसकी स्मृतियां हैं--सचेत एवं अचेत परम्पराएं, शताब्दियों की एकत्रित छाप है, वंश का नाम है--क्या आप समग्रता से उसे महसूस कर सकते हैं? यदि आप उनकी समग्रता का अनुभव नहीं करते और केवल अपनी भावनाओं की ही चीरफाड़ करते रहते हैं, तो यह बचपना है। क्या आप अपने अंदर इस समग्र वस्तु को महसूस कर सकते हैं और इस समग्र एहसास के साथ भय पर आक्रमण कर सकते हैं?</p>
<p>Fear is an immense problem. Can you approach it with an immensity to meet an immensity?</p>	<p>भय एक विशाल समस्या है। क्या इस विशालता का सामना आप किसी विशालता से कर सकते हैं।</p>
<p><b>Teacher:</b> It is not always possible, sir, we often get lost in our immediate problems.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> यह हमेशा संभव नहीं होता; हम प्रायः अपनी तात्कालिक समस्याओं में खो जाते हैं।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> But once you have the feeling of this immensity, life has a different colouration, it has a different quality.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> परंतु एक बार यदि आपको इस विशालता की अनुभूति हो जाय, तो जीवन का एक रंग ही दूसरा हो जाता है; उसकी गुणवत्ता ही बदल जाती है।</p>
<p><b>Teacher:</b> You are only conscious of this</p>	<p><b>शिक्षक :</b> आप केवल कभी-कभार ही इस विशालता के</p>

immensity at times.	प्रति सचेत होते हैं।
. <b>Krishnamurti:</b> I do not think you have ever thought of it, have you?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> मुझे नहीं लगता कि आपने कभी इस विषय में सोचा है; क्या कभी सोचा है?
. <b>Teacher:</b> Yes, I have, once in a way, by detaching myself from the immediate problem and looking at it	<b>शिक्षक :</b> हां, मैंने सोचा है, एक तरह से, अपने को तत्कालिक समस्याओं से हटाकर उनका निरीक्षण करके।
<b>Krishnamurti:</b> I do not mean that. I mean to have the feeling of all time, not today, tomorrow, the day after day, but the feeling of all time. To think in terms of man, the world, the universe is an extraordinary feeling. And with that feeling can one approach the particular problem? Otherwise we are going to land in an intellectual or emotional chaos.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> मेरा वह मतलब नहीं है। मेरा तात्पर्य है हर समय के एहसास से, केवल आज, कल, कभी-कभार के लिए नहीं वरन् सदा बना रहने वाला एहसास। मनुष्य, विश्व, कायनात की भाषा में सोचना एक अदभुत अनुभूति है। लेकिन क्या उस अनुभूति के साथ हम अपनी विशेष समस्याओं को देख सकते हैं? वरना हम एक बौद्धिक अथवा भावनात्मक गड़बड़ी में फंसने जा रहे हैं।
What is the difficulty in this? Is it the incapacity, the narrowness of the mind, the immediate occupation, the immediate concern for the child, the husband, the wife which so takes up your time that you have no time to think of it? Take the word, "immediate". There is no immediate, it is an endless thing. You make it into an immediate problem; that problem is the result of a thousand yesterdays and a thousand tomorrow's. There is no immediacy. There is fear, love and man's urge for the immense. Can you capture some of the quality of the feeling and say, "Let me look at fear"?	इसमें कठिनाई क्या है? क्या यह मन की अक्षमता है, संकीर्णता है; या फिर आप तात्कालिक में ही उलझे हैं; संतान की, पति की, पत्नी की तात्कालिक चिन्ताओं में डूबे हैं जो आपका सारा समय ले लेती है और आपको इस विषय में सोचने का अवसर ही नहीं मिलता? "तत्काल" शब्द को लें। तत्काल तो कुछ नहीं है; वह एक अंतहीन वस्तु है। आप ही उसे एक तत्काल समस्या में बदल लेते हैं; वह समस्या बीते हुये कल के डेर का, हजारों की संख्या में आने वाले कल का परिणाम है। तात्कालिता है ही नहीं। भय है, प्रेम है, और विराट के लिये मनुष्य की चाह है। क्या आप इस अनुभूति की गुणवत्ता को कुछ हद तक पकड़ सकते हैं और यह कह सकते हैं "चलो, भय का अवलोकन किया जाए?"
What significance has fear, and how will you proceed to help the student? You should prepare the student for the whole of life, and life is an	भय का क्या महत्त्व है, और आप छात्र की सहायता करना कैसे आरम्भ करेंगे? आपको छात्र को समस्त जीवन के लिये तैयार करना है और जीवन तो अद्भुत

<p>extraordinarily vast thing. And when you use the word "life" it is all the oceans and the mountains and the trees and all of human aspirations, human miseries, despairs, struggles, the immensity of it all. Can you help the student to apprehend that immensity of life? Must you not help the student to have this feeling?</p>	<p>रूप से विशाल है। और जब आप “जीवन” शब्द का प्रयोग करते हैं तो उसमें सभी सागर शामिल हैं, सभी पर्वत और वृक्ष और सभी मानवीय आकांक्षाएं, मानवीय कष्ट, निराशायें, संघर्ष तथा इन सब की विशालता निहित है। क्या जीवन की इस विशालता को समझने में आप छात्र की सहायता कर सकते हैं? क्या इस अनुभूति को प्राप्त करने में आपको छात्र की सहायता नहीं करनी चाहिये?</p>
<p>Do any of you meditate? Not only to sit still, not only to examine the ways of the mind but also to invite the conscious and the unconscious and to push further into silence and see what happens further and further. If you do not do this, are you not missing a lot in life?</p>	<p>क्या आपमें से कोई ध्यान करता है? केवल शांत बैठना नहीं, केवल मन के तरीकों का निरीक्षण-मात्र नहीं; वरन् चेतन और अचेतन को आमंत्रित करना और उसे एक गहरी शांति की तरफ धकेलते चले जाना और देखना कि आगे ही आगे क्या होता है? यदि आप इसे नहीं करते तो क्या जीवन में आप बहुत कुछ खो नहीं रहे हैं?</p>
<p>Meditation is a form of self-recollected awareness, a form of discovery, a form of cutting loose from tradition, from ideas, conclusions, a sense of being completely alone, which is death. With that sense of the total, can you meet the immediate?</p>	<p>ध्यान सजगता में स्वयं को समेटने सरीका है, एक तरह की खोज-प्रक्रिया, परंपरा से, विचारों से, निष्कर्षों से अलग हो जाने का एक आयाम; पूर्णतया अकेले हो जाने का बोध, जो कि मृत्यु है। क्या इस समग्र अनुभूति में ठहरकर आप तात्कालिक का सामना कर सकते हैं?</p>
<p>Let us become a little more practical. How do we set about to help the student actually to be free from fear?</p>	<p>हम कुछ और व्यावहारिक बनें। भय से वास्तव में मुक्त होने में हम छात्र की सहायता कैसे करें?</p>
<p><b>Teacher:</b> I would see that my relationship with the student is friendly. It would be stupid to discuss fear if I were not friendly with him. I would create situations, both practical and intellectual, where he would understand what fear actually means, intellectually explain the causes and effects of fear because the mind</p>	<p><b>शिक्षक :</b> मैं देखूंगा कि छात्र के साथ मेरा संबंध मित्रतापूर्ण है। यदि उसके साथ मेरा सम्बन्ध मित्रतापूर्ण नहीं है तो भय की चर्चा करना मूर्खतापूर्ण होगा। मैं व्यावहारिक और बौद्धिक दोनों ही प्रकार की ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करूंगा जहां वह समझे कि भय का वास्तविक अर्थ क्या है, बौद्धिक रूप से भय के कारणों एवं परिणामों की व्याख्या करूंगा क्योंकि मन को</p>

<p>needs to be sharpened, and I would see if I could make him experience this wholeness of outlook and feeling.</p>	<p>धारदार बनाना आवश्यक है। फिर मैं देखूंगा कि मैं उसे इस दृष्टि तथा अनुभूति की समग्रता का एहसास करा सकूँ।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Be factual. In the class, how will you teach? How will you help the student to understand? There is a gap between the child and the total feeling, how would you lead up to that?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> असली बात करें । कक्षा में आप कैसे पढ़ायेंगे? आप छात्र की कैसे सहायता करेंगे कि वह समझे? बालक में तथा समग्र अनुभूति के बीच एक खाई है, आप उसे कैसे पाटेंगे?</p>
<p><b>Teacher:</b> It should be possible to awaken in him a curiosity which is of a subtle type. The next thing I would like to do with him is to get him to appreciate quality in work, in playing a game, in mathematics or other subjects. I would find out what his interests were, how he reacted, and if I were able to progress further, I would see whether something more happened between me and the student.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> उसके अंदर एक सूक्ष्म जिज्ञासा को जगाना संभव होना चाहिये। दूसरी बात जो मैं उसके साथ करना चाहूंगा कि वह काम में, खेल में, गणित तथा अन्य विषयों में भी गुणवत्ता के महत्त्व को समझे। मैं पता लगाऊंगा कि उसकी रुचियां क्या है, वह कैसे प्रतिक्रिया करता है, और यदि मैं इसके आगे बढ़ सका तो देखूंगा कि मेरे और छात्र के बीच कुछ और घटा या नहीं।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> You have done the obvious things which are necessary. You would talk to him, you would show him how fear comes into being and all that. What next? Factually how will you help the student to be free from fear? I think that is the real issue. When there is an opportunity, would you be in a meditative, reflective self-recollected state which might help the student to see clearly what fear is? You see that is the necessary thing, but you leave that thing hanging. What would you actually do? What would you do factually?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप ने वह सब किया जो स्पष्टतया आवश्यक है। आप उससे बात करेंगे। उसे दिखायेंगे कि भय कैसे उत्पन्न होता है आदि। फिर आगे क्या? असल में भय से मुक्त होने में आप छात्र की कैसे सहायता करेंगे? मैं सोचता हूँ यही वास्तविक मुद्दा है। अवसर पाने पर क्या आप ध्यान की अवस्था में होंगे, चिंतनशील और खुद को भीतर व्यवस्थित करते हुए संभवतः छात्र को स्पष्ट रूप से यह देखने में सहायता कर सकें कि भय क्या है? आप देख रहे हैं कि यह आवश्यक है, परन्तु आप उसे टालते जाते हैं। आप वास्तव में क्या करेंगे? असल में क्या कदम उठावेंगे?</p>

<p><b>Teacher:</b> Meditation would help the mind to deal with the situation.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> ध्यान इस स्थिति से निपटने में मन की सहायता करेगा।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> I may have a feeling for all this. Now how am I to translate it into action? What am I to do with those dozen children?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> मुझे इस सबका एहसास हो सकता है। पर मैं इसे व्यवहार में लाऊंगा कैसे? उन दर्जन भर बालकों के साथ मुझे क्या करना है?</p>
<p><b>Teacher:</b> The feeling will translate itself. It is a link of love with the children which will help.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> एहसास स्वयं अपना असर दिखायेगा। बालकों के साथ जो प्रेम का सम्बन्ध है वह सहायक होगा।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> First have affection, then use every occasion to help the student to be free from fear, explain to him the causes of fear and use every incident to show how he is afraid, In the class, in the very teaching of history, mathematics, talk to him about it. But what next? Proceed.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> पहले तो प्रेम-सौहार्द होना चाहिये, तब भय से मुक्त होने में छात्र की सहायता करने के लिए प्रत्येक अवसर का उपयोग करें; उसके लिए भय के कारणों को स्पष्ट करें; उसे यह दिखाने के लिये कि वह कैसे भयभीत होता है, प्रत्येक घटना का उपयोग करें। कक्षा में, इतिहास व गणित आदि पढ़ाते हुए इसके बारे में उससे चर्चा करें। परंतु उसके आगे क्या? आगे बढ़ें।</p>
<p><b>Teacher:</b> In doing all this I am also watchful to see that what I am doing to him is not also being undone.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> यह सब करते हुए मुझे इसके प्रति भी सावधान रहना चाहिए कि जो कुछ भी मैं उसके साथ कर रहा हूं कहीं वह साथ-ही-साथ बेअसर तो नहीं हो रहा है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> What is the total effect on the child of what you have said, the fact of your affection, your explanations? Is it not making him turn inward, and what does that do?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आपके स्नेह का, आपकी व्याख्याओं का, आपने जो कुछ भी कहा उसका, छात्र के ऊपर समग्र प्रभाव क्या पड़ा? क्या वह उसे भीतर की तरफ नहीं मोड़ता, और फिर उससे क्या होता है?</p>
<p><b>Teacher:</b> It helps him face some immediate problem</p>	<p><b>शिक्षक :</b> वह कुछ तात्कालिक समस्याओं का सामना करने में उसकी सहायता करता है।</p>

<p><b>Krishnamurti:</b> You have helped the student to look at himself, you have helped him to be aware of this fear and to turn inward in the sense that he feels more conscious of the fear. You have to balance it by something else</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आपने स्वयं अपने को देखने में छात्र की सहायता की है। आपने भय के प्रति सचेत होने में उसकी सहायता की है और इन अर्थों में उसे भीतर की तरफ मोड़ा है कि वह भय के प्रति और अधिक सचेत महसूस करता है। किसी दूसरी वस्तु से इसे आपको संतुलित करना होगा।</p>
<p><b>.Teacher:</b> Do you mean, sir, that this process of internal introspection is likely to lead to some complications in the child?</p> <p><b>Krishnamurti:</b> It is bound to lead to a kind of self-conscious feeling. "Am I doing the right thing or the wrong thing?" There would be nervousness or self importance, or the showing off in "How fearless I am!" How will you balance that? Think it out, use your mind very carefully. At this stage I think the problem again requires a different kind of approach. Otherwise you will be helping the child by concentrated attention to become self-conscious, self-assertive, arrogant, and with an authoritarian outlook.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> क्या आपका मतलब है कि आत्म-परीक्षण की यह भीतरी प्रक्रिया बच्चे के अंदर कुछ उलझने भी खड़ी कर सकती है?</p> <p><b>कृष्णमूर्ति :</b> उससे निःसंदेह एक प्रकार की घबड़ाहट का, थोड़ी अस्थिरता का एहसास जगेगा। "मैं सही कर रहा हूँ या गलत?" या तो थोड़ी घबड़ाहट होगी या अपने-आप को महत्त्व देने या दिखावे की इच्छा कि देखो, "मैं कितना निडर हूँ"। आप कैसे संतुलन बिठाएंगे? सोचें, ज़रा सावधानी-पूर्वक विचार करें। मुझे लगता है कि इस पड़ाव पर समस्या को पुनः एक अलग ही दृष्टि से देखना होगा। नहीं तो आप बालक को घमंडी, दूसरों पर खुद को थोपने वाला बनाने में ही मदद कर रहे होंगे, जो सदा स्वयं के बारे में सतर्क रहता है, उसका नज़रिया एकदम निरंकुश हो जायेगा।</p>
<p><b>Teacher:</b> There should be an opportunity for the child to be sensitive to other things which are not within.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> बालक को यह अवसर मिलना चाहिये कि वह उन वस्तुओं के प्रति भी संवेदनशील हो पाये जो भीतर नहीं है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> It appears to me, you will unconsciously strengthen egotism, a sense of self-importance, a sense of being offensive, aggressive, rude.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आप अनजाने ही अहंकार को एवं आत्म गौरव के बोध को मज़बूत करेंगे, अधिकार जताने, आक्रामकता तथा उद्दण्डता के बोध को।</p>
<p>You have so far dealt with the movement of the mind. The tide is moving in, the tide also moves out. If it remains inward it is like the backwaters of a bay, but if the tide has a movement inward, then it has to have an outward movement. You have dealt so far only with an inward movement.</p>	<p>अभी तक आपने मन की गति पर गौर किया है। लहर अंदर को आती है और फिर वही बाहर भी जाती है। यदि पानी अंदर की ओर ही रुका रहे तो वह किसी खाड़ी में रुके हुए पानी जैसा हो जाता है, परंतु यदि ज्वार की गति अंदर की ओर होती है, तो उसमें बाहर की ओर भी गति होगी ही। आपने अब तक केवल</p>

How will you help the student to move out?	अंदर की ओर की गति को ही देखा है। बाहर की ओर गतिशील होने में आप छात्र की कैसे सहायता करेंगे?
<b>Teacher:</b> When you spoke of the outward movement, I felt I was not looking from the point of the whole but from the development of the partial movement.	<b>शिक्षक :</b> जब आपने बाहर की ओर गति की चर्चा की थी तो मुझे लगा कि मैं समग्र की दृष्टि से नहीं वरन् एक आंशिक गति के विकास के बिंदु से देख रहा हूँ।
<b>Krishnamurti:</b> If I had not kept on pushing and therefore made you realize it was only a partial answer, you would not have moved. You only talk of the inner movement but it is a movement of the tide both inward and outward. It is a movement you have created in one direction and you do not know how to treat the inner and the outer as one movement.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> यदि मैं आपको निरंतर आगे न ले चलता और इस प्रकार आपको यह एहसास न कराता रहता कि यह तो केवल आंशिक उत्तर है, तो आप आगे ही न बढ़ते। आप केवल अंदर की गति की ही चर्चा करते हैं, परंतु ज्वार की गति तो अंदर-बाहर दोनों ओर ही होती है। एक ही दिशा में चलती लहर तो बस आपकी ही बनाई हुई है और आप नहीं जानते कि आंतरिक और बाह्य को एक ही गति के रूप में कैसे समझा जाये?
<b>Teacher:</b> Is it not possible right from the beginning to move both inward and outward?	<b>शिक्षक :</b> क्या यह संभव नहीं है कि आरम्भ से ही हम अंदर और बाहर दोनों ओर गतिशील हों?
<b>Krishnamurti:</b> What is the outward movement that is going to give the balance?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> वह बाहर की गति क्या है जो संतुलन प्रदान करेगी ?
<b>Teacher:</b> Not only the balance, but a sense of humility that comes now and then.	<b>शिक्षक :</b> केवल संतुलन ही नहीं वरन् विनम्रता का बोध भी जो कभी-कभी आता है।
<b>Krishnamurti:</b> There are hills, trees, the river, the sands. That is the outward movement. The perception, the seeing, that is the outward movement. Nature has provided you with the beauty of all this, the rivers, trees, the arid land. So there has to be movement both outward and inward, the everlasting movement.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> वहां पहाड़ियां हैं, वृक्ष हैं, सरिता है, बालू है। यह बाहरी गति है। अनुभूति, अवलोकन यह बाहरी गति है। प्रकृति ने आपको यह सारी सुंदरता प्रदान की है, नदियां, वृक्ष, शुष्कभूमि। इसलिये दोनों ही ओर गति आवश्यक है, बाहरी भी और आंतरिक भी--एक चिरंतन गति।

<p><b>Talk To Teachers</b></p> <p><b>Chapter 7 On Teaching And Learning</b></p>	<p><b>7. शिक्षण और सीखना</b></p>
<p><b>Teacher:</b> We realize that we cannot see a fact unless the mind is empty of thought. But even if it is empty for a while, thought seems to arise again. How do we end thought? Can we discuss this?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> हमें ऐसा लगता है कि जब तक मन विचार से शून्य नहीं हो जाता तब तक हम किसी तथ्य को नहीं देख सकते। परंतु यदि एक क्षण के लिए मन विचार से शून्य हो भी जाए तो झट विचार पुनः उठने लगता है। हम विचार का कैसे अंत करें? क्या हम इस पर चर्चा कर सकते हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> I wonder if all of us understand the importance of the role of thinking? Is thought important, and at what level is it important? What is thinking? What makes us think? Where is thought important and where is it not important, and how do you answer that question? And what is the machinery that is set going when a question is asked?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> विचार की क्या भूमिका है, पता नहीं हमने कभी इसके महत्त्व को समझा है, या नहीं। क्या विचार महत्त्वपूर्ण है, और वह किस स्तर तक महत्त्वपूर्ण है? विचार करना क्या है? हम क्यों विचार करते हैं? विचार कहां महत्त्वपूर्ण है और कहां नहीं है, कैसे आप इस प्रश्न का उत्तर देंगे? जब कोई प्रश्न किया जाता है तो वह कौन सा मशीनी तानाबाना है जो चालू हो जाता है?</p>
<p>Is thinking merely the habitual response to a habitual pattern? You live here in this school in a certain groove, with certain patterns of thoughts, habits, feelings. You live, you function in those habits, patterns and systems, and the functioning of the brain, thought is very limited. And when you go out of the valley you live in a little wider field. You have certain grooves of action and you follow them. It is all a mechanical process really, but in that pattern of mechanical activity there are certain variations. You modify, change, but always in that pattern, wherever you are, whatever position you may have - minister, governor or doctor, or professor - it is always a groove with varying changes and modifications. You function in patterns. I am not saying it is right or wrong, I am just examining it. You have beliefs but they are in the background and you go on with your daily activities, with your envy, greed, jealousy. Whenever your beliefs are questioned you get</p>	<p>क्या विचार सिर्फ अभ्यस्त ढांचे के प्रति आदतवश की गई गतिविधि है? आप यहां इस विद्यालय में किसी एक निश्चित दायरे में रहते हैं, विचारों, आदतों और भावनाओं के एक निश्चित घेरे में। आप उन आदतों, और व्यवस्था-प्रणालियों में कार्य करते हैं, जीते हैं। और मस्तिष्क का, विचार का, कार्य बड़ा सीमित रहता है। जब आप घाटी के बाहर जाते हैं तो आप का क्षेत्र कुछ व्यापक हो जाता है। पर वहां भी आपके काम की कुछ लीकें होती हैं और आप उनका अनुगमन करते हैं। यह सब वास्तव में एक बड़ी यांत्रिक प्रक्रिया है यद्यपि यांत्रिक क्रिया के उस ढांचे में भी कुछ विविधतायें होती हैं। आप उसमें सुधार करते हैं, बदलाव लाते हैं, लेकिन हमेशा एक घेरे में रहते हैं, चाहे कहीं पर हों, किसी पद पर हों--मंत्री, राज्यपाल, डाक्टर अथवा प्रोफेसर--विभिन्न रूपों में विविध परिवर्तनों और सुधारों के साथ भी वहां सदा एक घेरा बना ही रहता है। आप ढरों में ही कार्य करते हैं। मैं यह नहीं कहता कि वह गलत है या सही ; मैं केवल उसका परीक्षण कर रहा हूँ। आपके अपने विश्वास हैं परंतु वे सब पृष्ठभूमि में हैं और आप</p>

<p>irritated but you go on. Children are being educated to think, to form grooves of habits and to function in those habits for the rest of their lives. They are going to get jobs, they are going to be engineers, doctors, and for the rest of their lives, the pattern will be set. Any deviation from that is what is disturbing. That disturbance is lessened through marriage, responsibility, children; and so gradually the mould is set. And all thinking is between what is convenient, what is not convenient, what is beneficial, what is worthwhile - it is always within that field.</p>	<p>अपनी दैनिकों क्रियाओं में जुटे रहते हैं, ईर्ष्या, द्वेष, लालच में। जब कभी आपके विश्वासों पर संदेह किया जाता है, आप उत्तेजित होते हैं, परंतु लगे रहते हैं। बच्चों को आदतों का एक ढर्रा खड़ा करने और फिर उम्र भर उन्हीं आदतों में कार्य करने और सोचने के लिए शिक्षित किया जाता है। वे नौकरी हासिल करेंगे, इन्जिनियर, डाक्टर बनेंगे और फिर शेष जीवन के लिए ढांचा निश्चित हो जायेगा। उसमें होने वाली हर भटकन परेशान करती है। विवाह, उत्तरदायित्व, संतान से वह परेशानी कम हो जाती है; और धीरे-धीरे एक सांचा बन जाता है। और सारी सोच-विचार सुविधाजनक सांचे में होती है, जो सुविधाजनक नहीं है, जो लाभदायक है, मूल्यवान है--वह सदा उसी सांचे में रहता है।</p>
<p><b>Teacher:</b> That is not thinking, sir, it is a repetition.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> यह सब सोच-विचार नहीं है, एक दोहराव है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> But that is how we live, that is our life. That is all we want. Everything is repetition and the mind gets duller and more stupid. Is that not a fact, sir? We do not want to be disturbed, we do not want to shatter the pattern.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> परंतु हम इसी तरह जीते हैं, यही हमारा जीवन है। यही सब है जो हम चाहते हैं। प्रत्येक वस्तु दोहराव है और मन अधिकाधिक मंद और मूर्ख होता चला जाता है। क्या यह एक तथ्य नहीं है? हम परेशानी नहीं चाहते, हम अपने ढांचे को छिन्न-भिन्न नहीं करना चाहते।</p>
<p>What makes us shatter the pattern or break through the pattern? And is it possible not to fall into a groove? But why should I end the making of patterns? I begin to think about ending them when the pattern does not satisfy me, when the pattern is no longer useful to me or when there are in the pattern certain incidents like death, the husband leaving the wife, or losing a job. In the breaking of that particular pattern there is a disturbance called sorrow and I move away from that into another pattern. I move from pattern to pattern, from one framework into which circumstances, environment, family, education have put me, to another. The disturbance makes me question a little, but I immediately fall into another groove and there I settle. That is what</p>	<p>तो हमारा ढांचा छिन्न-भिन्न कैसे होता है, कैसे उसे तोड़कर हम बाहर निकल सकते हैं? और क्या यह संभव है कि हम किसी ढर्रे में न पड़ें? परंतु क्यों मैं ढांचों को रचना छोड़ूं? उनको समाप्त करने के विषय में मैं तभी सोचता हूं जब वो मुझे संतुष्ट नहीं करते, जब वह ढांचा मेरे लिये अब उपयोगी नहीं रह जाता, अथवा जब उस में कुछ घटनाएं होती हैं, जैसे मृत्यु, पति का पत्नी को छोड़ देना अथवा नौकरी छूट जाना आदि। उस खास ढांचे के टूटने में परेशानी होती है जिसे दुख कहते हैं, और मैं उससे हट कर किसी दूसरे ढांचे में चला जाता हूं। मैं एक ढांचे से दूसरे ढांचे में जाता हूं। एक सांचे से, जिसमें परिस्थितियों ने, परिवेश, परिवार, शिक्षा ने मुझे रखा है, दूसरे में जाता रहता हूं। परेशानियां मुझे थोड़ा-सा प्रश्न करने के लिये प्रेरित करती हैं परंतु तुरंत ही मैं दूसरी लीक में चल देता हूं और उसी में जम</p>

most people want, what their parents want, what society wants. Where does this idea of ending thought come in?	जाता हूं। यही है जो अधिकांश लोग चाहते हैं, माता-पिता व समाज चाहते हैं। फिर विचार का अंत करने की यह बात कहां से आती है?
<b>Teacher:</b> Sir, there are times when one is discontented with the whole pattern and everything in it.	<b>शिक्षक :</b> ऐसा भी समय होता है जब व्यक्ति सारे ढांचों और उनमें निहित प्रत्येक वस्तु से असंतुष्ट होता है।
<b>Krishnamurti:</b> What makes us see the futility of this pattern? When do I see it and what makes me see it? A pattern is set if there is a motive. If I break from this pattern with a motive, the motive will mould the new pattern. Now, what makes me change, what makes me do something without a motive?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> इस ढांचे की व्यर्थता को देखने के लिये हम कैसे प्रेरित होते हैं? मैं इसे कब देखता हूं और कौन मुझे देखने के लिये प्रेरित करता है? किसी ढांचे की रचना के पीछे कोई प्रयोजन होता है और यदि किसी प्रयोजन से मैं उस ढांचे को तोड़ता हूं तो वह प्रयोजन ही दूसरे ढांचे को गढ़ लेता है। तो परिवर्तन मेरे अंदर कौन लाता है? बिना प्रयोजन के कौन मुझसे कोई कार्य कराता है?
<b>Teacher:</b> It is very difficult to be free from motive.	<b>शिक्षक :</b> प्रयोजन से मुक्त होना बड़ा कठिन है।
<b>Krishnamurti:</b> Who tells you to be free? If it is difficult, why bother about breaking the pattern? Be satisfied with a motive and continue with it, why bother if it is difficult?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप से मुक्त होने के लिए कहता ही कौन है? यदि वह मुश्किल है तो आप ढांचे को तोड़ने के लिए परेशान ही क्यों है? आप एक प्रयोजन से संतुष्ट रहें और उसमें बने रहें। यदि वह कठिन है तो परवाह क्यों करते हैं?
<b>Teacher:</b> It leads me nowhere, sir.	<b>शिक्षक :</b> यह मुझे कहीं ले नहीं जाता।
<b>Krishnamurti:</b> But if it led anywhere, would you pursue it?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> लेकिन अगर यह ले जाए तो क्या आप चलेंगे?
<b>Teacher:</b> Which means there is a motive again.	<b>शिक्षक :</b> इसका मतलब तो फिर एक प्रयोजन ही है।
<b>Krishnamurti:</b> What makes you break through and give up the motive? What do you mean by	<b>कृष्णमूर्ति :</b> क्यों आप प्रयोजन को छोड़ना चाहते हैं और क्यों उससे बाहर निकलना चाहते हैं? प्रयोजन से

<p>motive? You teach here because you get some money, that is a motive. You like somebody because he can give you a position or you love god because you hate life. Your life is miserable, and love of god is the escape from that. These are all motives. Now, what makes a mind, a human being, live without a motive? If you can pursue that and go into it, I am sure you will find the answer to your question.</p>	<p>आपका मतलब क्या है। आप यहां पढ़ाते हैं क्योंकि आपको कुछ पैसे मिलते हैं, यह प्रयोजन है। आप किसी को पसंद करते हैं क्योंकि वह आपको कोई पदवी दे सकता है अथवा आप ईश्वर से प्रेम करते हैं क्योंकि आपको जीवन से घृणा है। आपका जीवन दुखों से भरा है और ईश्वर से प्रेम उससे भागने का एक तरीका है। यह सब प्रयोजन है। तो वह क्या है जो मन को, एक मनुष्य को, बिना प्रयोजन के रहने के लिए प्रेरित करता है? यदि आप इसका अनुगमन करें और उसमें जायें तो मुझे विश्वास है कि आप अपने प्रश्न का उत्तर पा जायेंगे।</p>
<p><b>Teacher:</b> The question, "Do I know my motives?" seems to come before the question "Do I do something without a motive?"</p>	<p><b>शिक्षक :</b> ऐसा लगता है कि यह प्रश्न कि, "क्या मैं अपने प्रयोजनों को जानता हूँ?" इस प्रश्न से पहले आता है कि क्या मैं निष्प्रयोजन कुछ करता हूँ?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Do we know our motives? Why do I teach, why do I hold on to a husband, wife? Do I know my motives, and how do I find out? And if I do find out, what is wrong with having motives. I love somebody because I like to be with that somebody physically, sexually, as a companion, what is wrong with that?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या हम अपने प्रयोजनों को जानते हैं? मैं क्यों पढ़ाता हूँ? मैं क्यों किसी पति अथवा पत्नी से जुड़ा हूँ, क्या मैं अपने प्रयोजनों को जानता हूँ, और मैं पता कैसे लगाता हूँ? और यदि मैं पता लगाता भी हूँ तो प्रयोजनों के होने में गलत क्या है? मैं किसी से प्रेम करता हूँ क्योंकि मैं उसके साथ एक साथी के रूप में, शारीरिक रूप से, यौन संबंध बनाते हुए रहना चाहता हूँ; तो उसमें गलत क्या है?</p>
<p><b>Teacher:</b> When I teach because I must have money, motive is not a hindrance. I must have money, so I must take to some profession, and I take to teaching.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> जब मैं पढ़ाता हूँ क्योंकि मुझे धन चाहिए, तो प्रयोजन में कुछ गलत नहीं। मुझे धन चाहिए और इसलिए मुझे कोई व्यवसाय करना होगा और मैं पढ़ाने लगता हूँ।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> First of all, do we know our motives, not only the conscious but the unconscious motives, the hidden motives? Do we do anything in our lives without a motive? To do something without a motive is love of what one is doing.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> पहली बात, क्या हम अपने प्रयोजनों को जानते हैं, केवल सचेत प्रयोजनों को ही नहीं, वरन् अचेत एवं छिपे हुए प्रयोजनों को भी? क्या जीवन में बिना प्रयोजन हम कुछ भी करते हैं? बिना प्रयोजन के कुछ करने का अर्थ है उससे आपका प्रेम जो आप कर रहे हैं।</p>

<p>You asked at the beginning: "How do we end thought?" I said: "What for?" We do not even know what thinking is, we do not know how to think. We think in terms of patterns. So, unless we have investigated or understood all that, we cannot possibly ask that question: "How do we end thought?"</p>	<p>आपने आरम्भ में पूछा था, "हम कैसे विचार का अंत करें?" मैंने कहा, "किसलिए?" हम यह भी नहीं जानते कि विचार क्या है, हम नहीं जानते कि विचार किया कैसे जाता है। हम ढांचों की भाषा में सोचते हैं। इसलिए जब तक हम उस सबकी खोजबीन न कर लें अथवा समझ न लें, तब तक हम संभवतः यह प्रश्न नहीं पूछ सकते कि, "हम कैसे विचार का अंत करें?"</p>
<p><b>Teacher:</b> How can we enquire into thinking and how to think?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> हम विचार की खोजबीन कैसे करें और कैसे विचार करें?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Not only enquire into how to think but also into what is thinking. Can I, as a human being, as an individual, find out what is the way of my thinking? Is it mechanical, is it free? Do I know it as it is operating in me?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> केवल यही नहीं कि कैसे विचार करें इसकी भी खोजबीन करें कि सोच-विचार है क्या । क्या एक मनुष्य के रूप में, एक व्यक्ति के रूप में मैं यह पता लगा सकता हूँ कि मैं कैसे सोचता हूँ? क्या वह मशीनी है, या मुक्त चिंतन है? क्या मैं उसे उसी रूप में जान सकता हूँ जैसे वह मेरे अंदर चलती है?</p>
<p>To end thought I have first to go into the mechanism of thinking. I have to understand thought completely, deep down in me. I have to examine every thought, without letting one thought escape without being fully understood, so that the brain, the mind, the whole being becomes very attentive. The moment I pursue every thought to the root, to the end completely, I will see that thought ends by itself. I do not have to do anything about it because thought is memory. Memory is the mark of experience and as long as experience is not fully, completely, totally understood, it leaves a mark. The moment I have experienced completely, the experience leaves no mark. So, if we go into every thought and see where the mark is and remain with that mark, as a fact - then that fact will open and that fact will end that particular process of thinking, so that every thought, every feeling is understood. So</p>	<p>विचार के अंत के लिए मुझे सबसे पहले विचारणा की प्रक्रिया में जाना होगा। अपने अंदर विचार को मुझे गहराई में समझना होगा, पूर्णता से। मुझे प्रत्येक विचार की छानबीन करनी होगी और किसी भी विचार को बिना पूरी तरह समझे, जाने नहीं देना होगा, ताकि मस्तिष्क, मन, सारा व्यक्तित्व, एकदम सतर्क हो जाय। जिस क्षण हर विचार का मैं उसके मूल तक, ठीक उसके अंत तक पीछा करता हूँ तो मैं देखता हूँ कि विचार अपने-आप समाप्त हो जाता है। मुझे उसके लिए कुछ करना नहीं पड़ता, क्योंकि विचार स्मृति है, याद है। यादें अनुभव के निशान हैं और जब तक अनुभव को पूर्णतया, अच्छी तरह, समग्रता से समझ नहीं लिया जाता, वह निशान या संस्कार छोड़ता है। जैसे ही मुझे पूर्णतया अनुभव हो जाता है, वह अनुभव कोई निशान नहीं छोड़ता। इसलिए यदि हम प्रत्येक विचार में जायें और देखें कि वह चिह्न कहां है और तथ्य के रूप में उस के साथ रहें तो वह तथ्य खुलने लगेगा और वही तथ्य विचार की उस विशेष प्रक्रिया का अंत कर देगा ताकि प्रत्येक विचार, प्रत्येक अनुभूति को समझा जा</p>

<p>the brain and the mind are being freed from a mass of memories. That requires tremendous attention, not attention only to the trees and birds but inward attention to see that every thought is understood.</p>	<p>सके। ताकि स्मृतियों के समूह से मन और मस्तिष्क हो मुक्त सके। इसके लिए अत्यधिक ध्यान की आवश्यकता है, केवल पक्षियों और वृक्षों के प्रति ही ध्यान नहीं वरन् आंतरिक ध्यान की ताकि प्रत्येक विचार को समझा जा सके।</p>
<p><b>Teacher:</b> That seems to be a vicious circle. The mind is involved in getting rid of a pattern of thinking and in order to understand the process of thinking it needs a certain sensitivity which the mind does not have.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> यह एक कुचक्र सा लगता है। मन विचार के किसी ढांचे से पीछा छुड़ाने में लगा है और विचार की प्रक्रिया को समझने के लिए उसे एक ऐसी संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है जो मन के पास नहीं है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Take a thought, any kind of thought. Go into it. See why you have such a thought, what is involved in it, understand it, do not leave it till you have completely unearthed all the roots of it.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप एक विचार को, किसी भी प्रकार के विचार को लें। उसमें जायें। देखें कि आपके अंदर यह विचार क्यों है, उसमें क्या छिपा है, उसे समझें, जब तक कि उसकी समस्त तहों को पूरी तरह उघाड़ न लें, उसे छोड़े नहीं।</p>
<p><b>Teacher:</b> That can only be done if the instrument which is doing it, is sensitive.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> ऐसा तभी संभव है जब वह साधन जो ऐसा कर रहा है, पूरी तरह संवेदनशील हो।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> As you go into one particular thought you are beginning to understand the instrument which is examining that thought. Then what is important is not the thought but the observer who is examining the thought. And the observer is the thought which says: "I do not like that thought, I like this thought." So you attack the core of thought and not just the symptoms. And as you are a teacher, how will you create this or bring about this attentive observation, this examination without any judgement, in a student?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> जब आप किसी एक विचार की खोजबीन करते हैं तो आप उस साधन को भी समझना आरम्भ कर देते हैं जो उस विचार की खोजबीन कर रहा है। तब विचार महत्त्वपूर्ण नहीं रह जाता; वह निरीक्षक महत्त्वपूर्ण हो जाता है जो उस विचार की खोजबीन कर रहा है। और वह निरीक्षक ही वह विचार है जो कहता है, "मैं इस विचार को नहीं पसंद करता, उसको करता हूँ।" इस प्रकार आप विचार के मूल पर ही आक्रमण करते हैं न कि केवल लक्षणों पर। और चूंकि आप एक अध्यापक हैं, अतः कैसे आप एक छात्र में इस अवधानपूर्ण निरीक्षण को, इस जांच-परख के गुण को लाएंगे, जिसमें निर्णय नहीं है।</p>
<p>If I may ask: How do you teach? What is the</p>	<p>क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप कैसे पढ़ाते हैं? वह</p>

environment, the condition, the atmosphere, in which teaching and learning are possible? You teach, say, history, and the student learns. What is the atmosphere, the environment, the quality in the room in which teaching and learning are taking place?	परिवेश, वह अवस्था, वह वातावरण क्या है जिसमें सीखना-सिखाना संभव होता है? मान लीजिए आप इतिहास पढ़ाते हैं और छात्र सीखता है। तो उस कक्षा का वातावरण, उसका परिवेश, उसकी गुणवत्ता क्या होगी, जिसमें सीखना-सिखाना हो रहा है ?
<b>Teacher:</b> There is a special atmosphere when the teacher and the student are both attending.	<b>शिक्षक :</b> जब शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ध्यान दें तो एक विशेष वातावरण बनता है।
<b>Krishnamurti:</b> I do not want to use the word "attention". If you learn anything from the teacher, what is the nature of that communication, of receiving and learning? For a flower to grow it must have rain, do you understand?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> मैं "ध्यान-अवधान" शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहता। यदि आप शिक्षक से कुछ सीखते हैं तो उस संवाद का, संप्रेषण का, ग्रहण करने एवं सीखने का स्वरूप क्या है? एक फूल को बढ़ने-खिलने के लिए वर्षा चाहिए, क्या आप समझते हैं?
<b>Teacher:</b> Could we approach it negatively.	<b>शिक्षक :</b> क्या हम इसे निषेधात्मक रूप से देख सकते हैं?
<b>Krishnamurti:</b> In any way you like. I am asking you to teach science. What is the atmosphere in the room where you teach science? Where the teacher and the student are learning, teaching? What is the quality necessary, what is the atmosphere, the smell, the perfume?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> जिस तरह आप चाहें देखें। मान लीजिये मैं आपसे विज्ञान पढ़ाने को कहूँ। उस कक्षा का वातावरण क्या है जहाँ आप विज्ञान पढ़ाते हैं--जहाँ शिक्षक और विद्यार्थी सीख रहे हैं, सिखा रहे हैं? कौन सा गुण वहाँ आवश्यक है, वहाँ का वातावरण क्या है, क्या सुगंध है, कैसी सुवास है?
<b>Teacher:</b> A quiet and calm environment.	<b>शिक्षक :</b> एक मौन और शांत परिवेश?
<b>Krishnamurti:</b> You are idealistic and I am not. I have not one ideal inside me, I just want to know the fact. You are moving away from the fact, that is what I object to. When you teach and they learn, in the class room, what is the atmosphere? The atmosphere is the fact.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप आदर्शवादी हैं और मैं नहीं हूँ। मेरे अंदर एक भी आदर्श नहीं है, मैं केवल तथ्य जानना चाहता हूँ। आप तथ्य से दूर हट रहे हैं, यही मेरी आपत्ति है। जब आप पढ़ाते हैं और वे सीखते हैं, किसी कक्षा में, तो वातावरण क्या है? वह वातावरण एक तथ्य है।

<b>Teacher:</b> Friendliness between the teacher and the student.	<b>शिक्षक :</b> शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच मित्रता।
<b>Krishnamurti:</b> You are not facing the fact. You teach and you also know and when the student is to learn, there must be a certain quality, and I am asking what is that quality? Have you actually experienced the quality where this communication is mutual, where the learning is the teaching?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप तथ्यों का सामना नहीं कर रहे हैं। आप पढ़ाते हैं और आपको पता भी है, और जब छात्र को सीखना होता है तो वहां एक निश्चित गुणवत्ता चाहिए और मैं पूछ रहा हूं कि वह गुण क्या है? क्या आपने वास्तव में उस गुण का अनुभव किया है जहां पारस्परिक संवाद होता है, जहां सीखना ही सिखाना है?
<b>Teacher:</b> In the beginning I thought that when I teach, I am handing over some facts to the students, but now I understand that when I am teaching there is also a learning. This happens at rare moments when there is exploration, when both the teacher and the student are exploring together.	<b>शिक्षक :</b> आरम्भ में मेरा विचार था कि जब मैं पढ़ाता हूं तो मैं छात्रों को कुछ तथ्य ही प्रदान करता हूं, परंतु अब मैं समझता हूं कि जब मैं पढ़ाता हूं तो साथ ही कुछ सीखना भी होता है। यह किन्हीं अनोखे क्षणों में ही होता है, तभी जब कि वहां एक खोजबीन चलती है, जब शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों एक साथ खोज रहे होते हैं।
<b>Krishnamurti:</b> What is the state when that exploration together takes place? What is the atmosphere, the relationship? What is the word you would use to express that state in which communication is possible?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> वह अवस्था क्या है जहां वह खोज एक साथ मिलकर होती है? वहां वातावरण किस तरह का है, संबंध क्या है? वह शब्द क्या है जिसका आप उस अवस्था को अभिव्यक्त करने के लिए प्रयोग करेंगे, जहाँ संवाद संभव होता है?
<b>Teacher:</b> Curiosity.	<b>शिक्षक :</b> उत्सुकता।
<b>Krishnamurti:</b> What do you teach?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप क्या पढ़ाते हैं?
<b>Teacher:</b> Hindi.	<b>शिक्षक :</b> हिन्दी।
<b>Krishnamurti:</b> The children are anxious to know and you are anxious to teach. Now, what atmosphere does it create? What takes place.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> बालक जानने के लिए उत्सुक हैं और आप पढ़ाने के लिए उत्सुक हैं। तो अब इससे क्या वातावरण बनता है? क्या होता है?

<b>Teacher:</b> The children listen to me.	<b>शिक्षक :</b> बच्चे मुझे सुनते हैं।
<b>Krishnamurti:</b> You say children listen to you. You want to tell them something. What has happened, I wish you would examine this.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप कहते हैं कि बच्चे आपको सुनते हैं। आप उन्हें कुछ बताना चाहते हैं। इसमें क्या होता है? मैं चाहता हूँ कि आप इसकी खोजबीन करें।
<b>Teacher:</b> There is a state of alertness.	<b>शिक्षक :</b> सतर्कता रहती है।
<b>Krishnamurti:</b> I want to go a little bit more into the matter. The moment you say it is alertness you have already put it in a framework. I am trying to prevent you and myself from defining it.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> मैं इसमें कुछ और गहरा जाना चाहता हूँ। जिस क्षण आपने कहा कि वह सतर्कता है, आपने उसे एक ढांचे में बैठा दिया। मैं आपको और अपने को उसे परिभाषित करने से बचाने का प्रयत्न कर रहा हूँ।
<b>Teacher:</b> When the object is there, the object of learning and teaching, both operate; from this there is a fluidity, a movement; and temporarily, this state is slightly different from the other states I know.	<b>शिक्षक :</b> जब वहां प्रयोजन है--सीखने और सिखाने का प्रयोजन--तो दोनों ही कार्य हो रहे हैं; इससे एक प्रवाह, एक गति आती है; और थोड़ी देर के लिए, यह अवस्था उन दूसरी अवस्थाओं से, जिन्हें मैं जानता हूँ, कुछ भिन्न होती है।
<b>Krishnamurti:</b> There is attention when the teacher and the taught, both have a drive to learn and to teach. You have to create a feeling, an atmosphere, in the room. Just now we have created an atmosphere - because I want to find out and you want to find out. Is it possible to maintain this atmosphere, in which alone teaching and learning are possible?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> जब शिक्षक और विद्यार्थी दोनों में सीखने और सिखाने की प्रेरणा होती है तो वहां ध्यान होता है। आपको कक्षा में एक एहसास जगाना पड़ता है, वातावरण बनाना पड़ता है, जैसे अभी हमने एक वातावरण बनाया है, क्योंकि मैं पता लगाना चाहता हूँ और आप भी पता लगाना चाहते हैं। क्या इस वातावरण को बनाये रखना संभव है, क्योंकि केवल इसी वातावरण में सीखना-सिखाना संभव होता है?
We started by asking how to communicate this sense of enquiry into thinking, into motive, to the student. I asked you, how do you teach, that is, how do you convey anything? And I asked	हमने इस प्रश्न से शुरू किया था कि अपनी चेतना की, सोच की जांच-पड़ताल की प्रक्रिया को, इस खोजबीन की भावना को हम कैसे किसी छात्र को संप्रेषित कर सकते हैं। मैंने पूछा था कि आप कैसे पढ़ाते हैं अर्थात् कैसे

<p>what takes place when you actually teach. What is the atmosphere when you are teaching? Is it a slack atmosphere or a tense atmosphere? Now, if you have not examined your thinking, the mechanism of thinking, to convey the sense of enquiry to the student is impossible. But if you have done it in yourself, you are bound to create the atmosphere. And I feel that atmosphere, that attention, is the essential quality of teaching and learning.</p>	<p>अपने विचार दूसरों तक पहुंचाते हैं? और मैंने पूछा था, जब आप वास्तव में पढ़ाते हैं तो होता क्या है? जब आप पढ़ा रहे होते हैं तब वातावरण क्या होता है? वह एक ढीला-ढीला वातावरण है या तनावपूर्ण है? तो यदि आपने अपनी विचार प्रक्रिया की जांच-पड़ताल नहीं की है तो छात्र में जांच-पड़ताल की भावना जगाना असंभव है। परंतु यदि आपने अपने अंदर यह किया है तो आप उस वातावरण को अवश्य पैदा कर लेंगे। और मुझे लगता है कि वह वातावरण, वह ध्यान, सीखने-सिखाने के लिए एक अनिवार्य गुण है।</p>
<p><b>Teacher:</b> You have said that definition of a fact is something quite different from the experiencing of that fact. Now in all this there seems to be a gap between the definition and the actual doing of something. You also asked: Have you ever done something for its own sake because you love it? How does one, without examining one's motives, without all these ramifications, get to the heart of something?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> आपने कहा कि तथ्य की परिभाषा उस तथ्य के अनुभव से बिल्कुल भिन्न होती है। तो ऐसा प्रतीत होता है कि किसी वस्तु की परिभाषा तथा उसके वास्तविक व्यवहार के बीच एक खाई है। आपने यह भी पूछा था : क्या आपने कभी किसी कार्य को सिर्फ इस लिए किया है क्योंकि आप उसे करना चाहते थे, इसलिए कि आप उससे प्रेम करते हैं? अपने उद्देश्यों की जांच-पड़ताल और उनके सारे फैलाव की परीक्षा किये बगैर कैसे कोई किसी वस्तु के सार-तत्व तक पहुंच सकता है?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> That is just what I was trying to get at. To see something totally is the ending of time or the comprehending of it. Can one see if there is a motive in teaching and learning at any level? Life is a constant process of teaching and learning: To teach and to learn is not possible if there is a motive, and when we have a motive the state of teaching and learning is not possible. Now, watch this carefully: In the very nature of teaching and learning there is humility. You are the teacher and you are the taught. So there is no pupil and no teacher, no guru and no sishya, there is only teaching and learning, which is going on in me. I am learning and I am also teaching myself; the whole process is one. That is important. That gives vitality, a sense of depth, and that is prevented if I have a motive. As teaching-learning is important, everything else becomes secondary and therefore, motive</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> ठीक इसी बात पर पहुंचने का मैं प्रयत्न कर रहा था। किसी वस्तु को उसकी पूर्णता में देखना काल का अंत करना है अथवा उसको समझना है। यदि शिक्षण में और सीखने में किसी स्तर पर भी उद्देश्य है तो क्या उसे समझा जा सकता है? जीवन सीखने-सिखाने की सतत प्रक्रिया है, यदि वहां उद्देश्य है तो तो सीखना-सिखाना संभव नहीं है। जब हमारे पास कोई प्रयोजन होता है तो सीखने-सिखाने की अवस्था संभव नहीं होती। अब इसे सावधानी से देखिये, सीखने-सिखाने के मूल स्वभाव में ही विनम्रता छिपी है। आप ही शिक्षक हैं और शिक्षार्थी भी। इस प्रकार न तो कोई शिक्षार्थी है और न शिक्षक, न तो गुरु और न शिष्य; केवल सीखना और सिखाना है जो मेरे अंदर चल रहा है। मैं सीख रहा हूं और अपने को सिखा भी रहा हूं; सारी प्रक्रिया एक है। यह महत्त्वपूर्ण है। इससे शक्ति मिलती है, गहराई का एक एहसास, लेकिन यदि मेरा कोई उद्देश्य है तो सब रुक जाता है। चूंकि</p>

disappears. What is important drives away the unimportant. Therefore it is finished : I do not have to examine my motives day after day.	सीखना-सिखाना महत्त्वपूर्ण है इसलिए दूसरी सब बातें गौण हो जाती हैं और इसीलिए उद्देश्य अलोप हो जाता है। जो महत्त्वपूर्ण है वह महत्त्वहीन को हटा देता है। इसलिए वह समाप्त हो जाता है; और मुझे रोज़-रोज़ अपने प्रयोजनों की परीक्षा नहीं करनी पड़ती।
<b>Teacher:</b> It is not very clear to me, sir.	<b>शिक्षक :</b> यह मुझे बहुत स्पष्ट नहीं हुआ।
<b>Krishnamurti:</b> First of all, life is a process of learning. It is not saying "I have learned" and a settling back. Life is a process of learning and I cannot learn if there is a motive. If that is very clear, that life is a process of learning, then motive has no place. Motive has a place when you are using learning to get something. So the essential fact drives away all the unessential trivialities, in which motive is included.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> सर्वप्रथम, जीवन सीखने की एक प्रक्रिया है। ऐसा नहीं कि "मैंने सीख लिया" अब बस आराम। जीवन सीखने की एक प्रक्रिया है और यदि मेरा कोई उद्देश्य है, तो मैं सीख नहीं सकता। यदि यह एकदम स्पष्ट है कि जीवन सीखने की एक प्रक्रिया है तो उद्देश्य के लिए कोई जगह ही नहीं बचती। उद्देश्य का स्थान तभी होता है जब आप कुछ हासिल करने के लिए सीखने का उपयोग कर रहे होते हैं। इसलिए जो अनिवार्य तथ्य है वह छोटी-मोटी बातों को हटा देता है जो अनावश्यक हैं और उनमें उद्देश्य भी शामिल होता है।
<b>Teacher:</b> Should there be a concern for the essential, as a fact?	<b>शिक्षक :</b> क्या जो आवश्यक है उसकी एक तथ्य के रूप में चिंता होनी चाहिए?
<b>Krishnamurti:</b> But the fact is the essential. Life is the essential. Life is "what is". Otherwise it is not life. If motive is not, "what is" is. If you understand the fact of sorrow, the "other" comes into being. You cannot come to the "other" without understanding motive, the unessential.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> पर तथ्य ही तो मूलरूप से आवश्यक है। जीवन ही मूलरूप से आवश्यक है। जीवन 'जो है' वही है। अन्यथा वह जीवन नहीं है। यदि उद्देश्य न हो तो 'जो है' है। यदि आप दुख के तथ्य को समझ लेते हैं, तो वो 'दूसरा' अस्तित्व में आ जाता है। आप उस 'दूसरे' तक, बिना उद्देश्य को समझे, बिना अनावश्यक को समझे नहीं पहुंच सकते।
<b>Teacher:</b> So there cannot be concern for the essential.	<b>शिक्षक :</b> अतः जो आवश्यक है उसके लिए चिंता नहीं हो सकती।
<b>Krishnamurti:</b> Understand the fact, which is important, and go into it. If you are ambitious,	<b>कृष्णमूर्ति :</b> तथ्य को समझें, जो कि महत्त्वपूर्ण है, और उसमें प्रवेश करें। यदि आप महत्त्वाकांक्षी हैं, तो पूर्णतया

<p>be completely ambitious. Let there be no double thinking. Be either ambitious or see the fact of ambition. Both are facts, and when you examine one fact, go into it completely. If you go into the fact completely, the fact will begin to show what is involved in ambition. The fact of ambition will begin to unravel itself and then there is no ambition.</p>	<p>महत्त्वाकांक्षी बनें। दूसरी किसी राय के लिए जगह ही न छोड़ें। या तो महत्त्वाकांक्षी हों अथवा महत्त्वाकांक्षा के तथ्य को समझें! दोनों ही तथ्य हैं और जब किसी तथ्य की खोजबीन करें तो उसमें पूर्णतया प्रवेश करें। यदि आप उस तथ्य में पूरी तरह उतरते हैं तो वह तथ्य ही प्रगट करने लगेगा कि महत्त्वाकांक्षा में क्या छिपा है। महत्त्वाकांक्षा का तथ्य अपने को उघाड़ना शुरू कर देगा और तब वहां महत्त्वाकांक्षा नहीं रहती।</p>
<p>Most religious people have invented theories about facts. But they do not understand "the fact". Having established a theory they hope it will ward off the actual fact; it cannot. So do not try to establish any essential fact. See how you slip into wrong action. There is no essential fact, there is only fact - you see the point? And one fact does not conform to another fact. The moment it is conforming, it is not a fact. If you look at the fact with a referent, with what you can get out of that fact, then you will never see the fact. To look at the fact is the only thing that matters. There is no fact that is superior or inferior, there is only fact. That is the ruthless thing. If I am a lawyer, I am a lawyer. I do not find excuses for it. Seeing that fact, going into it, seeing the motives, the fact and its complexities are revealed, and then you are out of it. But if you say, "I must always the truth", that is an ideal. That is a false assumption. So do not move from what you consider the unimportant fact to what you consider the more important fact. There is only fact, not the less or the more. It really does something to you to look at life that way. You banish all illusion, all dissipation of energy of the mind, the brain, at one stroke. The mind then operates in precision without any deception, without hatred, without hypocrisy. The mind then becomes very clear, sharp. That is the way to live.</p>	<p>अधिकांश धार्मिक व्यक्तियों ने तथ्यों के बारे में सिद्धांत घड़ लिए हैं। परंतु वे 'तथ्य' को नहीं समझते। किसी सिद्धांत को सिद्ध करके वे आशा करते हैं कि वह उन्हें वास्तविक तथ्य से बचा लेगा; परंतु वह ऐसा नहीं कर सकता। इसलिए किसी आवश्यक तथ्य को सिद्ध करने का प्रयत्न न करें। देखें कि कितनी आसानी से आप गलत कार्य की दिशा में फिसल जाते हैं। कोई आवश्यक तथ्य नहीं है, केवल तथ्य है; क्या आपने इस अंतर को देखा? और एक तथ्य किसी दूसरे तथ्य के अनुसार नहीं होता। जैसे ही वह किसी के अनुसार ढलने लगता है वह तथ्य नहीं रहता। यदि आप तथ्य को किसी संदर्भ में देखते हैं, इस दृष्टि से कि आप उस तथ्य से क्या हासिल कर सकते हैं; तो आप उस तथ्य को कभी नहीं देख पायेंगे। तथ्य को देखना ही एकमात्र चीज़ है जिसका कुछ अर्थ है। कोई तथ्य घटिया या बढ़िया तथ्य नहीं होता। केवल तथ्य होता है। यही कठोर सच्चाई है। यदि मैं एक वकील हूं, तो वकील ही हूं। मैं उसके लिए बहाने नहीं खोज सकता। तथ्य को देखने से, उसमें उतरने से, उद्देश्यों को समझने से तथ्य और उसकी जटिलताएं प्रकट होती हैं और तब आप उससे बाहर हो जाते हैं। परंतु यदि आप कहते हैं, "मुझे सदा सत्य बोलना चाहिये," तो यह मात्र एक आदर्श है। वह एक झूठी मान्यता है। इसलिए जो तथ्य आपको महत्त्वहीन लगता है उससे मुँह मोड़ कर उस तथ्य की ओर मत भागें जो आपको अधिक महत्त्वपूर्ण समझ लगता है। केवल तथ्य ही होता है, न कि कम या अधिक। वह सचमुच आपके साथ कुछ ऐसा करता है कि आप जीवन को इस तरह से देखें। आप सारे भ्रम को झटक देते हैं, मन और दिमाग से होने वाला ऊर्जा का सारा रिसाव एक ही झटके में रुक जाता है। तब मन एकदम सुनिश्चितता से कार्य करता है, बिना किसी भ्रम के,</p>

	बिना घृणा के, बिना पाखण्ड के। तब मन अत्यन्त स्पष्ट, तेज हो जाता है। यही जीने का तरीका है।
<b>Talk To Teachers</b>	<b>8. स्वस्थ मन</b>
<b>Chapter 8 On The Good Mind</b>	
<p><b>Krishnamurti:</b> I think that most of us have a fairly comprehensive view of what is happening in the world. Looking at the historical process, the appalling travesty of peace, one must have ask oneself what life is all about. There is the enslaving of whole masses of people; there is corruption and talk of democracy; religions have failed, only superstitions remain. There is the dead weight of tradition, the innumerable gurus, soothsayers, monks, astrologers. There is poverty, degradation, the squalor of existence. And there is also a sense of deep despair. So, seeing this immense suffering, what is our answer to it all? There are people who say that what is needed is not a new system or a new philosophy, but rather a new type of leadership, a new type of man who has immense authority not only in the state but in his own idealistic strength. But do we want new leaders? What we need is freedom from leaders. When we see this vast confusion, economic strangulation and imbalance, and come to RishiValley, what is it that a school of this kind can do, and should do? Can we discuss this? Not as an ideal, for ideals of any kind are very detrimental. Ideals prevent us from looking at facts, and it is only a concern with facts and the understanding of facts which releases an energy that is the movement in the right direction. Ideals merely engender various forms of escape. Let us consider all this and see what we can do here in this school.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> विश्व में जो हो रहा है, मेरे विचार में अधिकांश लोगों को उसका भली-भांति ज्ञान है। जो ऐतिहासिक प्रक्रिया को देखते हुए, शांति का जिस भयानक तरीके से मज़ाक उड़ाया जा रहा है, उसे देख कर यह प्रश्न अवश्य उठता है कि यह जीवन है क्या। पूरे के पूरे समुदायों को गुलाम बनाया जा रहा है; चारों ओर भ्रष्टता है, परंतु चर्चा लोकतन्त्र की है; धर्म असफल हो गये हैं, रह गए हैं केवल अंधविश्वास। परम्पराओं का मुर्दा बोझ, अगणित गुरु, भविष्यवक्ता, भिक्षु, ज्योतिषि। गरीबी है, पतन है, अस्तित्व की दयनीयता है; और फिर एक गहरी निराशा का बोध है। तो, इस व्यापक दुख-दर्द को देखकर हमारे पास इस सब का क्या उत्तर है? ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं कि किसी नई व्यवस्था की अथवा नए दर्शन या फलसफे की आवश्यकता नहीं है, बल्कि एक नये प्रकार के नेतृत्व की, एक नये प्रकार के मनुष्य की आवश्यकता है, जिसके पास ज़बरदस्त सत्ता हो, सिर्फ राजसत्ता नहीं, बल्कि उसकी अपनी आदर्शवादी शक्ति। परंतु क्या हम वास्तव में नये नेता चाहते हैं? हमें नेताओं की नहीं नेताओं से मुक्ति की आवश्यकता है। जब हम इस व्यापक भ्रांति को, आर्थिक घुटन को, तथा असंतुलन को देखते हुए ऋषिवैली में आते हैं तो प्रश्न उठता है कि इस प्रकार का एक स्कूल क्या कर सकता है और उसे क्या करना चाहिए। क्या हम इस पर चर्चा कर सकते हैं? एक आदर्श के रूप में नहीं, क्योंकि आदर्श तो चाहे जिस प्रकार के हों बड़े हानिकारक होते हैं। आदर्श हमें तथ्यों को देखने से रोकते हैं, और यह केवल तथ्यों की चिंता है, तथ्यों को समझना ही है, जो एक ऊर्जा प्रवाहित करता है जो सही दिशा में चलना है। आदर्श केवल विभिन्न प्रकार के पलायन उत्पन्न करते हैं--बवने के बहाने। हम इस सब पर विचार करें और देखें कि</p>

	यहां इस स्कूल में हम क्या कर सकते हैं।
<p>This is not going from the vast to the ridiculous, for this school is a miniature of what is taking place in the world and, seeing the destructive chaos, misery, suffering, I feel there is only one answer and that is the creation of a new mind. What is essential is a different mind that will look at all problems and find a solution and not create new problems. I think the right kind of education does bring about the good mind, the total development of man, and it seems to me that is the major issue not only in this valley but also in the rest of the world.</p>	<p>इसका यह अर्थ नहीं कि हम एक व्यापक वस्तु से तुच्छ सी वस्तु की ओर आ रहे हैं क्योंकि जो सारे विश्व में हो रहा है यह स्कूल उसका एक छोटा रूप है। और इस विनाशकारी दुर्व्यवस्था, कष्ट और दुखों को देखकर मुझे लगता है कि उत्तर केवल एक ही है और वह है एक नए मन का निर्माण। आवश्यकता है एक भिन्न प्रकार के मन की जो सभी समस्याओं को देखे और एक समाधान खोजे, न कि नई समस्याएं खड़ी करे। मेरे विचार से सही प्रकार की शिक्षा एक स्वस्थ मन को, व्यक्ति के संपूर्ण विकास को, संभव बनाती है, और मुझे लगता है कि केवल इस घाटी में ही नहीं वरन् शेष सारे विश्व में भी मुख्य मुद्दा यही है।</p>
<p>How can one bring about a good mind, a mind that sees all these co-relations, not only at the superficial level but a mind that can penetrate inwardly? It seems to me that the problem of education is to see whether it is possible to cultivate an intelligence which is not the result of influence, an intelligence which is not the learning of certain techniques and the earning of a livelihood. They are part of education but surely they are not the only function of education? Now how do you educate a child so that he is able to face life and not merely conform to the established patterns of society, to certain modes of conduct? So that he can go much further, deeper into the whole problem of existence?</p>	<p>कैसे एक व्यक्ति एक स्वस्थ मन उत्पन्न करे, ऐसा मन जो इन सब सह-संबंधों को देखता है, केवल एक सतही स्तर पर ही नहीं वरन् जो भीतर तक घुस सकता है? मुझे लगता है कि शिक्षा की समस्या यह देखना है कि क्या एक ऐसी बुद्धिमत्ता को विकसित करना संभव है जो प्रभावों का परिणाम नहीं है--एक ऐसी बुद्धिमत्ता जो किन्हीं टेकनिकों को सीखना और रोज़ी-रोटी कमाना मात्र नहीं है। यद्यपि यह सब शिक्षा के भाग हैं परंतु शिक्षा के केवल वे ही तो कार्य नहीं हैं। तो आप बालक को किस प्रकार शिक्षित करेंगे कि वह जीवन का सामना कर सके, समाज में स्थापित ढांचों के, कुछ निश्चित व्यवहार प्रणालियों के ही अनुरूप ढलना न सीखे? ताकि अस्तित्व की सारी समस्या में वह और आगे तथा और गहराई में जा सके?</p>
<p>I do not know if you have ever considered what a good mind is. Is it a good mind that has the capacity to retain what it reads, and functions from memory? The electronic brain is doing this marvellously. It calculates at astonishing speed some of the most complicated mathematical problems. It functions, I have been told, in the same way as the human brain, doing the desired</p>	<p>मैं नहीं जानता कि आपने कभी इस पर विचार किया है कि एक स्वस्थ मन क्या होता है। क्या वह मन स्वस्थ है जिसमें जो वह पढ़े उसे याद रखने की क्षमता हो, और जो स्मृति से कार्य करे। एक इलेक्ट्रॉनिक दिमाग इस कार्य को अद्भुत रूप से कर रहा है। गणित की बड़ी-बड़ी जटिल समस्याओं का वह विलक्षण गति से हल कर देता है मुझे बताया गया है कि वह उसी तरह</p>

calculations.	से काम करता है जिस तरह मानव-मस्तिष्क आवश्यक हिसाब-किताब करता है।
<p>Is a good mind one that repeats, like a gramophone, what it has been told? That is our education, isn't it? The learning of facts, dates, to repeat them once a year when a boy takes his examination. Can this be called cultivating a good mind? And yet is this not what most of us are doing when we are teaching? So the mere addition to knowledge, which is really the cultivation of memory, is just an additive process. it does not engender a clear, good mind, does it? Negatively, one can see that the mere cultivation of memory does not bring about a good mind although most of our existence is based on this. And yet, one must have memory, one must have a very good memory to remember certain things, to be a good technician. So, at what point does memory interfere with a good mind capable of explanation, investigation and discovery? At what point does memory interfere with real freedom?</p>	<p>तो क्या एक स्वस्थ मन वह है जो ग्रामोफोन की तरह वही दोहराता रहे जो उसे बताया गया है? यही हमारी पढ़ाई-लिखाई है, क्या ऐसा नहीं है? तथ्यों को अथवा तिथियों को याद करना तथा वर्ष में एक बार जब परीक्षा देनी होती है उनको दोहरा देना। क्या इसे एक स्वस्थ मन का पालन-पोषण कहा जा सकता है? फिर भी क्या यही नहीं है जो हममें से ज्यादातर लोग पढ़ाने-लिखाने के नाम पर कर रहे हैं? केवल ज्ञान भंडार में बढ़ौतरी, जो कि असल में यादाश्त का ही पालन-पोषण है, बस जोड़ते चले जाना। वह एक स्वस्थ और स्पष्ट मन को पैदा नहीं करती। क्या वह करती है? निषेधात्मक रूप से हम देख सकते हैं कि केवल यादाश्त का पालन-पोषण ही एक स्वस्थ मन का जन्म नहीं होता हालांकि हमारा ज्यादातर जीवन उसी पर टिका है। पर फिर भी स्मृति तो चाहिए ही, कुछ वस्तुओं को याद रखने के लिए एक बहुत अच्छी स्मृति होनी चाहिए, एक अच्छे टेकनीशियन होने के लिए। तो वह, कौन-सा बिन्दु है जहां स्मृति एक अच्छे मन के होने में बाधक बन जाती है, मन जिसमें व्याख्या की, जांच-पड़ताल और खोजने की क्षमता है? किस बिन्दु पर स्मृति वास्तविक स्वतंत्रता में बाधा बनने लगती है।</p>
<p>I do not know if you have ever considered the man who invented the jet aeroplane. He had first to understand the whole problem of the piston-propeller engine. He had to know it, but after knowing it, he had to put it away in order to discover something new. The specialists, until they really discover something new, merely continue a better and more complicated technique, but if a man is to invent something new he has to let go of the old.</p>	<p>प्ता नहीं आपने कभी उस व्यक्ति के बारे में सोचा है या नहीं जिसने जेट वायुयान का आविष्कार किया। उसे पहले तो पिस्टन-प्रोपेलर और ईंजन की सारी समस्या को समझना पड़ा होगा। उसके विषय में उसे जानना पड़ा होगा, परंतु जानने के बाद किसी नई चीज़ को खोजने के लिए उसे उस ज्ञान को एक ओर रख देना पड़ा होगा। कोई विशेषज्ञ, जब तक कि वह वास्तव में किसी नई वस्तु को खोज नहीं लेता, केवल एक बेहतर तथा ज्यादा जटिल टेकनीक को ही जारी रखता है। परंतु यदि एक मनुष्य को किसी नवीन वस्तु का आविष्कार करना है तो उसे पुरानी को छोड़ना ही होगा।</p>
<p><b>Teacher:</b> Sir, you have said that perception of a fact leads to knowledge in the right direction,</p>	<p><b>शिक्षक :</b> आपने कहा है कि किसी तथ्य का बोध ज्ञान की सही दिशा में ले जाता है, जब कि आदर्श पलायनों</p>

<p>whereas ideals lead to escapes. Can you make the statement clearer?</p>	<p>की ओर ले जाते हैं। क्या आप इसे और स्पष्ट कर सकते हैं?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> How do ideals come into being, and what is the need for ideals? The ideal of what should be, which is away from the fact, limits the mind and makes it static. If a child merely conforms to certain ideals, to the words of certain teachers, to the words of his father, grandfather, uncle and so on, that restrains energy and limits knowledge, does it not? All conformity limits knowledge. If I am an art teacher and I teach children to copy, which is imitation, it does not really help creative perception or expression, does it? Now let us see what happens when there is perception of the fact. I perceive that I am stupid. There is perception, realization, awareness of the fact that I am stupid. That is, I do not give explanations or offer an opinion about my stupidity and thereby escape through explanation. The observation of a fact without justification or condemnation releases tremendous energy. Now is there a release of energy through conformity, through motive, through mere acceptance? And can one function in the framework of that acceptance?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आदर्श कैसे अस्तित्व में आते हैं और आदर्शों की आवश्यकता क्या है? आदर्श अर्थात् जो होना चाहिए, जो कि तथ्य से दूर है; वह मन को सीमित करता है तथा उसे जड़ बनाता है। यदि कोई बालक किन्हीं आदर्शों के, किन्हीं शिक्षकों के शब्दों के या अपने पिता के, दादा के, चाचा के शब्दों के अनुसार चलता है तो उससे ऊर्जा का बहाव रुकता है तथा ज्ञान सीमित हो जाता है, क्या नहीं होता? सभी प्रकार का पिछलग्गूपन ज्ञान को सीमित करता है। यदि मैं कला का एक अध्यापक हूँ और मैं बालकों को कापी करना सिखाता हूँ जो कि नकल है, उससे सृजनशील बोध में अथवा प्रगटव में सचमुच बालक की कोई सहायता नहीं होती, क्या होती है? तो हम देखें कि जब तथ्य का बोध होता है तो क्या होता है। मैं देखता हूँ कि मैं मूर्ख हूँ। मुझे पता चलता है कि मैं मूर्ख हूँ। एक बोध होता है, एहसास, अपनी मूर्खता के विषय में जागरूकता होती है। अर्थात् अपनी मूर्खता के बारे में न तो कोई स्पष्टीकरण देता हूँ और न कोई मत प्रगट करता हूँ और इस प्रकार किसी व्याख्या के द्वारा बचने का रास्ता नहीं ढूँढता। बिना किसी समर्थन या निंदा भाव के किसी तथ्य के निरीक्षण से अपार शक्ति प्रवाहित होती है। तो क्या अनुगमन से, उद्देश्यों के पीछे दौड़ने से, या केवल स्वीकार कर लेने से, शक्ति मुक्त होती है, ऊर्जा प्रवाहित होती है? और क्या कोई सब-स्वीकार के उस ढाँचे में कार्य कर सकता है?</p>
<p><b>Teacher:</b> Physically, there is.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> शारीरिक स्तर पर तो ऐसा होता है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Is physical energy released by conforming? What is the motive behind this extraordinary urge in most of us to conform to a pattern? What is the compulsive urge behind this? Obviously it is the desire to be secure, is it not? Security in your relationship with your wife, with your husband, in the good opinion of the public or a friend. All this indicates the desire not only for economic security but inward</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या किसी के अनुसार ढलने से शारीरिक ऊर्जा मुक्त होती है? हममें से अधिकांश के अंदर जो यह अद्भुत प्रेरणा है किसी ढाँचे के अनुकूल ढलने की, उसके पीछे उद्देश्य क्या है? कौन-सी प्रेरणा है जो इसके पीछे दबाव बनाये रखती है? स्पष्ट है कि उसके पीछे सुरक्षित होने की इच्छा है, क्या नहीं है? पत्नी या अपने पति के साथ संबंधों में सुरक्षा होना, जनता की अथवा किसी मित्र की नज़रों में अच्छे बने रहना, यह सब</p>

<p>mental security or certainty, does it not?</p>	<p>केवल आर्थिक सुरक्षा की तरफ ही नहीं वरन् अंदर की मानसिक सुरक्षा अथवा निश्चिता की इच्छा की तरफ संकेत है।</p>
<p><b>Teacher:</b> The demand for security is the desire to have peace of mind.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> सुरक्षा की मांग इसलिए है कि हम मन की शांति चाहते हैं।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> I need a certain amount of security. I must have a job. If I am uncertain of my next meal I would not be sitting here talking. Does the desire for peace mean that we should have a mind that will never be disturbed? And why should we not be disturbed? What is wrong if we are disturbed? Much of the world is disturbed. Why should we not be disturbed? And, is not the mind which says, "I must not be disturbed", really a dead mind? There can be no state of mind which says, "I am perfectly safe," there can be no mind which is so certain that it will never be disturbed. I think that is the kind of mind most of us want and that is why we conform endlessly. If you had a son, you would want him to conform to the pattern of society because you do not want him to be a revolutionary. So, I am asking what is behind this demand for security, certainty, this hope in which despair is included?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> मुझे कुछ हद तक सुरक्षा की आवश्यकता है। मुझे एक नौकरी अवश्य चाहिए। यदि मुझे दो जून की रोटी की भी चिंता होती तो मैं यहां बैठा बातें न करता होता। क्या शांति की इच्छा का यह अर्थ है कि हमारे पास एक ऐसा मन हो जो कभी भी अशांत न हो? और आखिर हमें अशांत क्यों नहीं होना चाहिए? यदि अशांत होने में आखिर बुरा क्या है? इतना बड़ा संसार अशांत है, तो हम भी अशांत क्यों न हों? वह मन जो कहता है, "मुझे अशांत नहीं होना", वास्तव में क्या वो एक मुर्दा मन नहीं है? मन की कोई ऐसी अवस्था नहीं हो सकती जो यह कहे 'मैं पूर्णतया सुरक्षित हूं'; ऐसा कोई मन नहीं हो सकता जो इतना निश्चित हो कि कभी परेशान ही न हो। मेरे विचार से हममें से अधिकांश इसी प्रकार का मन चाहते हैं और इसीलिए हम सदा अनुगमन ही करते रहते हैं--दूसरों के पीछे चलते हैं। यदि आपके पुत्र होता तो आप यही चाहते कि वह समाज के ढांचे मुताबक चले, क्योंकि आप नहीं चाहते कि वह एक क्रांतकारी बने। इसलिए मैं यह पूछ रहा हूं कि सुरक्षा की, निश्चिता की इस मांग के पीछे क्या है, आशा जिसमें कि निराशा शामिल है?</p>
<p>We will come back to it in different way. I am just asking myself, why this urge? Is it fear? I am afraid of not being able to take care of my family and therefore I hold on to my job. I am afraid my wife may not care for me, or my husband may not care for me. I possess property. I am afraid that property may be taken away from me. Behind that threat there is a sense of fear, a desire to be secure.</p>	<p>हम अब इसे दूसरी तरह से देखते हैं। मैं केवल खुद से पूछ रहा हूं कि आखिर यह ख्वाहिश है क्यों? क्या भय के कारण? मुझे भय है कि मैं अपने परिवार का भरण पोषण नहीं कर सकूंगा और इसलिए मैं अपनी नौकरी को पकड़े रहता हूं। मुझे भय है कि कहीं मेरी पत्नी मेरी परवाह ही न करे अथवा मेरा पति मेरी परवाह न करे। मेरे पास सम्पत्ति है, और मुझे भय है कि यह सम्पत्ति मुझसे छिन सकती है। इस खतरे के पीछे कहीं भय छिपा है, सुरक्षित होने की भावना।</p>

<p><b>Teacher:</b> We can only be secure when there is no fear.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> सुरक्षित हम केवल तभी हो सकते हैं जब कोई भय न हो।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Wait a minute. Is that possible? You know what fear is. If most of us were free from all fear, you know what would happen? We would do exactly what we want to do. Fear restrains us, is that not so? But we are asking if a mind that is afraid, anxious, is it ever secure? I may have a good job, I may love my wife or husband, but am I secure when this fear is going on in me? To have no fear, which is an extraordinary state, is to be free of the problem of security. Is it possible for this mind to understand fear and be free from fear? Whatever such a mind does, being free, is right action.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> एक मिनट रुकें, क्या यह संभव है? आप जानते हैं कि भय क्या है? यदि हममें से अधिकांश सभी प्रकार के भय से मुक्त हों तो आप जानते हैं क्या होगा? हम फिर वही करेंगे जो जी में आएगा । भय हमको रोकता है, क्या ऐसा नहीं होता? लेकिन हम पूछ रहे हैं कि वो मन जो भयभीत है, चिन्तित है, क्या वह सुरक्षित है? मेरे पास एक अच्छी नौकरी हो सकती है, मुझे अपनी पत्नी अथवा पति से प्रेम हो सकता है, परंतु जब तक यह भय मेरे अंदर बना हुआ है तो क्या मैं सुरक्षित हूँ? भय मुक्त होना, जो कि एक अद्भुत व्यवस्था है, यानी सुरक्षा की समस्या से मुक्त होना । क्या इस मन के लिए भय को समझना और उससे मुक्त होना संभव है? ऐसा मन फिर जो कुछ करता है स्वतन्त्र होने के कारण, वह सही होता है।</p>
<p>How will you educate a group of children to be fearless? Which does not mean that they can do what they like - but to be free from the sense of all apprehension, anxiety? Will this not release an enormous amount of energy?</p>	<p>आप कैसे बच्चों के किसी समूह को भय मुक्त होने की शिक्षा देंगे? इसका अर्थ यह नहीं कि वे जो चाहें करें --वरन् इस अर्थ में स्वतंत्र कि उन्हें कोई आशंका, कोई चिन्ता न हो । क्या इससे एक ज़बरदस्त ऊर्जा प्रवाहित नहीं होगी ?</p>
<p>How do you set about educating the child? You are afraid and you see that fear is most disturbing. It is the worst form of destruction. How do I educate a boy to be without fear? What is it a teacher can do to translate this into action? Is it to allow the child to think freely? You see the importance of being without fear, because it is death to live in a state of fear. Whether it is conscious or unconscious fear, it troubles your mind. How will you help a child not to be afraid and yet to live with others? He cannot do whatever he likes, he cannot say, "I need not go to the class because I am fearless." Then what makes a child, a student, free? What</p>	<p>आप कैसे बालक की शिक्षा आरम्भ करेंगे? आप भयभीत हैं और आप जानते हैं कि भय ही सबसे ज़्यादा परेशानी उत्पन्न करता है यही विनाश का सबसे बुरारूप है। कैसे मैं किसी बालक को भय मुक्त होना सिखाऊँ? इसको सचमुच करने के लिए कोई शिक्षक क्या कर सकता है? क्या इसका अर्थ बालक को स्वतंत्र रूप सोचने की अनुमति देना है? आप भय से मुक्त होने के महत्त्व को देखते हैं, क्योंकि भय में जीना तो मृत्यु ही है। भय चाहे सचेत हो या अचेत, वह मन में परेशानी खड़ी रखता है। कैसे आप एक बालक की इसमें सहायता करेंगे कि वह भयभीत न हो और फिर भी दूसरों के साथ जिए? वह जो चाहे नहीं कर सकता, वह ये नहीं कह सकता “मुझे कक्षा में जाने की</p>

<p>gives him the deep impression that he is free, not to do what he likes, but free. If a child feels that you are really looking after him, that you care for him, that he is completely at home with you, completely secure with you, that he is not afraid of you, then he respects you and he listens to you because you are looking after him and he has complete confidence in you. He is then at peace with what you tell him. So open the door to him to be without fear. How else will you proceed? First of all you have to establish a relationship with the student, let him know that you really care for him, that he can really feel at home with you and therefore he can be completely at ease and feel secure. It is not a theory, it is not an idea. What will you do if your student fails in an examination? One boy may not be as quick as the other boy and yet he must learn. How will you encourage learning without fear? If you say one boy is better than another, it engenders fear. How will you avoid all this and yet help the child to learn? The child comes from a home where he has been brought up differently. His whole life is geared to achievement, success, and he comes here with all his background of fear and competition. How are you to help him?</p>	<p>आवश्यकता नहीं है क्योंकि मैं तो भय-मुक्त हूँ।” तो वो क्या है जो एक छात्र को, एक बालक को, स्वतंत्र करता है? वो क्या है जो उसे गहराई से महसूस कराता है कि वह स्वतंत्र है--जो चाहे करने के लिए नहीं, लेकिन स्वतंत्र? यदि बच्चा समझता है कि आप सचमुच उसकी देख-भाल करते हैं, उसका ध्यान रखते हैं, वह आपके साथ एकदम सुरक्षित महसूस करता है, बिलकुल घस जैसा और वह आपसे भयभीत नहीं, तो वह आपका सम्मान करता है, आपकी बात सुनता है क्योंकि आप उसकी देख-भाल कर रहे हैं और उसे आप में पूरा भरोसा है! तो जो कुछ आप उसे बताते हैं उससे उसे कठिनाई नहीं होती। तो उसके लिए भय से मुक्त होने के द्वार खोलिये। दूसरा क्या तरीका हो सकता है? सबसे पहले तो आपको छात्र से एक सम्बन्ध स्थापित करना होगा, उसे महसूस होने दें कि आप वास्तव में उसकी देख-भाल करते हैं, और वह सचमुच आपके साथ सहज महसूस कर सकता है, इस प्रकार वह पूर्णतया सुरक्षित महसूस कर सकता है। यह कोई सिद्धांत नहीं है, और न ही कोई कल्पना है। आप क्या करेंगे यदि आपका छात्र किसी परीक्षा में असफल हो जाता है? हो सकता है कि एक छात्र दूसरे जैसा तेज न हो, फिर भी सीखना तो उसे भी है। बिना डराये आप सीखने के लिए कैसे प्रोत्साहित करेंगे? यदि आप कहते हैं कि एक बालक दूसरे से अच्छा है तो इससे भय पनपता है। इस सबसे आप कैसे बचेंगे और कैसे फिर भी बालक की सहायता करेंगे कि वह सीखे? बच्चा एक ऐसे माहौल से आता है जहां उसका पालन-पोषण भिन्न प्रकार से हुआ है। उसका समस्त जीवन उपलब्धि और सफलता के ढांचे में ढाला गया है, और वह यहां भय तथा प्रतियोगिता की अपनी तमाम पृष्ठभूमि के साथ आया है। आप उसकी सहायता कैसे करेंगे?</p>
<p><b>Teacher:</b> You can help him learn according to his individual capacity.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> सीखने में उसकी सहायता उसकी व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार ही हो सकती है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Let us go slowly. How is it to be done? This school is in your hands. You have to create something out of it. Teaching is a creative thing, it is not merely something you can learn and repeat. How are you going to teach the children in your class for whom you have a</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> हम ज़रा धीरे चलें। प्रश्न है कि इसको कैसे किया जाय? यह स्कूल आपके हाथों में है। आपको उसमें से कुछ बनाना है। पढ़ाना-लिखाना एक सृजनशील काम है, वह कुछ ऐसा नहीं है जिसे आप सीख लें और फिर दोहरा दें। अपनी कक्षा में आप उन बच्चों को कैसे शिक्षित करेंगे जिनके लिए आपके अंदर प्रेम है? याद</p>

<p>feeling of love. Remember they are not interested in learning. They want to have a good time. They want to play cricket, watch birds, and occasionally look at a book. The fact is they want to do the easiest thing. If you leave it to them the more they are secure with you, the more they will exploit you. How will you help them to learn? You have to find ways to teach them and that is going to release your energy to devise mean of making subjects interesting for the child.</p>	<p>रहे, उन्हें आपकी शिक्षा में रुचि नहीं। वे तो मौज-मस्ती करना चाहते हैं। क्रिकेट खेलना, पक्षियों को देखना और कभी-कभार किसी पुस्तक में झांक लेना। वास्तविकता यह है कि वे वही करना चाहते हैं जो सबसे आसान हो। यदि उनके ही ऊपर आप छोड़ देंगे तो जितना ही आपके साथ वे सुरक्षित महसूस करेंगे उतना ही आपका फायदा उठायेंगे। तो सीखने में आप कैसे उनकी सहायता करेंगे? आपको उन्हें पढ़ाने के लिए तरीके ढूँढने होंगे उसमें ही आपकी ऊर्जा खिलेगी, जब आप बच्चे के लिए विषय को दिलचस्प बनाने में लगेंगे।</p>
<p>Before you proceed with a child, what is the state of your mind which wants to help the child to learn subjects in which he is not interested?</p>	<p>इससे पहले कि किसी बालक के साथ आप आगे बढ़ें, आपके मन की क्या अवस्था है जो बच्चे को वो कुछ सीखने में सहायक होना चाहती है जिसमें उसकी रुचि ही नहीं?</p>
<p><b>Teacher:</b> It is the urge to share your learning with the child.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> यह बच्चे के साथ अपना हुनर बांटने की चाह है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> I want these children to learn because learning is part of existence and the child can only learn if there is no fear. I must teach the child so that he learns without fear, which means I have to explode with this feeling of wanting to share with that boy. Do you know the state of mind that wants to share with another? That itself seems to be the right feeling. Do you know what that implies? The fact is I know more, the child knows less, and I have a feeling that he must learn, that he must be capable of sharing. We both are learning, which means we are going through an experience together. The child and I are then already in a state of communication. Once I have established the right relationship or communication between myself and the child, he</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> मैं चाहता हूँ कि ये बालक सीखें, क्योंकि सीखना जीवन का अंग है और बच्चा सीख तभी सकता है जब भय न हो। मुझे इस प्रकार बालक को सिखाना चाहिए कि वह बिना भय के सीखे, जिसका अर्थ है कि बच्चे के साथ साझा करने की इच्छा मेरे अंदर कूट-कूट कर भरी होनी चाहिए। क्या आप मन की उस अवस्था को जानते हैं जो दूसरों के साथ साझा करना चाहती है? अपने-आप में वह चीज़ लगती है? उसे क्या आप जानते हैं कि उसका अर्थ क्या है? तथ्य यह है कि मैं अधिक जानता हूँ, बालक कम जानता है, और मेरे अंदर यह चाह है कि वह सीखे, उसे इसे साझा करने के योग्य होना चाहिये। हम दोनों सीख रहे हैं, मतलब कि हम दोनों किसी अनुभव से साथ-साथ गुज़र रहे हैं। तो बालक और हम पहले से ही संवाद की एक अवस्था में होते हैं। एक बार अपने और बालक के बीच मैंने सही संबंध अथवा संवाद स्थापित कर लिया, तो वह</p>

is going to learn because he has confidence in me.	सीखेगा क्योंकि उसे मुझमें विश्वास है।
<b>Teacher:</b> The teacher may be very fond of the child, but still the child is not willing to learn, the child is not interested.	<b>शिक्षक :</b> शिक्षक को बालक चाहे बड़ा प्रिय हो फिर भी यदि बालक सीखने के लिए तैयार नहीं हो रहा है, उसे रुचि ही नहीं है।
<b>Krishnamurti:</b> I question it. When the child has confidence in you, do you think he will not learn any subject you want him to? What we are trying to do is to establish relationship. If that is possible, then will I not convey to the child the importance of learning a subject?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> मुझे इस में संदेह है। जब बालक को आपमें विश्वास है तो क्या आपको लगता है कि जो विषय भी आप उसे पढ़ाना चाहेंगे उनमें से किसी को भी वह नहीं सीखेगा। जो हम चाहते हैं वह है सम्बन्ध बनाना। यदि वह सम्भव है तो फिर क्या मैं किसी विषय को सीखने के महत्त्व को उस तक नहीं पहुंचा पाऊंगा?
This morning when we began to talk there was no communication between the speaker and the audience. Now we have established some kind of communication and we are trying to work the thing out together. Can we not do the same thing with children?	सुबह जब हमने चर्चा आरम्भ की थी तो वक्ता और श्रोता के बीच कोई संवाद नहीं था। अब हमने एक प्रकार का संवाद स्थापित कर लिया है और हम मिल कर कुछ समाधान निकालने की कोशिश कर रहे हैं। क्या हम ऐसा ही बच्चों के साथ नहीं कर सकते?
<b>Talk To Teachers</b>  <b>Chapter 9 On The Negative Approach</b>	<b>9. निषेधात्मक दृष्टि</b>
<b>Krishnamurti:</b> What do you think is right education, not for any particular group of children, the children of the rich or the poor, the children of the village or of the town, but children? How would you bring up a child knowing that walls of destructive nationalism divide people?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आपके विचार में सही शिक्षा क्या है, बच्चों के केवल किसी खास वर्ग की नहीं--धनी अथवा निर्धन बच्चे, नगर अथवा गाँव के बच्चे नहीं, बस बच्चे? यह जानते हुए कि विनाशकारी राष्ट्रवाद की दीवारें लोगों को विभाजित करती हैं, आप कैसे किसी बालक का पालन-पोषण करेंगे?
Machines are taking over man's labour and man	मशीने मनुष्य की मेहनत का स्थान ले रही हैं जिससे

is going to have more leisure. There will be electronic brains, machines which will run by themselves. Man is going to have a great deal of leisure, perhaps not immediately, but in fifty or a hundred years time. Taking into account the advance of technology, growing systematization, the acceptance of authority and tyranny in the world, what do you consider is the direction of education? What would you consider is the direction of the whole development of man? What is it you want the student to discover for himself? Are these vain questions? If you consider them seriously what would be your reaction? Machines are going to take over. The perfect teacher, who is really excellent in his subject, can teach a class and his instructions can be recorded through tapes and distributed throughout the world and the ordinary teacher can utilize them and instruct the student. So, the responsibility for good teaching may be taken out of individual hands, though you may need a teacher. You may say that what happens in fifty years is not your immediate problem. But a really good educator must be concerned not only with the immediate but be prepared for the future - future not in the sense of the day after, or a thousand days after tomorrow, but the tendency of this extraordinary development of the mind. I suppose you exist from day to day. The immediate is brutal, tiring and you say: "Why should I bother with what is going to happen?" But if you have a child if you are a teacher with students, unless you have a total comprehension of all this, you cannot see and understand the meaning of education. What will happen after you educate all these girls and boys? The girls are going to get married and disappear into the vast world. They will be sucked into society. What is the point of educating them? And the boys will get jobs. Why should you educate them to fit into this rotten society? To teach them how to behave, how to be gentle and kind, is that the end of education? Take the total picture of what is happening in the world, not only in India. Seeing this whole picture, comprehending it, what is it

मनुष्य को और भी अधिक अवकाश का समय मिलने जा रहा है। इलेक्ट्रानिक दिमाग एवं मशीनें होंगी जो अपने-आप ही कार्य करेगी। इस प्रकार मनुष्य को एक बड़ी मात्रा में अवकाश मिलने वाला है। शायद तुरंत नहीं, परंतु पचास अथवा सौ वर्ष में ऐसा होगा। विश्व में टेक्नालाजी की उन्नति और निरंतर बढ़ती जा रही व्यवस्था-प्रणाली को ध्यान में रखते हुए, और जिस तरह से सत्ता एवं अधिनायकवाद को स्वीकार कर लिया गया है, उसे ध्यान में रखते हुए आपके विचार में शिक्षा की दिशा क्या है? आपके विचार में मनुष्य के समग्र विकास की दिशा क्या है? वह क्या है जिसे आप चाहेंगे कि बच्चे अपने लिए खोजें? क्या ये सब व्यर्थ के प्रश्न हैं? यदि आप उन्हें गम्भीरता से लेते हैं तो आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी? मशीनें सब संभालने जा रही हैं। आप कल्पना करें कि एक ऐसा निपुण अध्यापक जो अपने विषय में सचमुच कमाल का है किसी एक कक्षा को पढ़ाये और उसकी हिदायतों को रेकार्ड करके सारे विश्व में भेज दिया जाय तो एक साधारण अध्यापक भी उनका प्रयोग कर सकता है और बच्चों को पढ़ा सकता है। इस प्रकार हालांकि शिक्षकों की आवश्यकता तो रहेगी परंतु अच्छे शिक्षण की जिम्मेदारी व्यक्तिगत हाथों से निकल सकती है। आप यह कह सकते हैं कि पचास वर्ष बाद जो होगा वह हमारी तात्कालिक समस्या नहीं है। परंतु एक सचमुच अच्छे शिक्षक को केवल तात्कालिक की ही चिंता नहीं होनी चाहिए बल्कि उसे भविष्य के लिए भी तैयार होना चाहिए--भविष्य आने वाले कल या वो हज़ार कल जो आने वाले हैं, इन अर्थों में नहीं वरन् इस अर्थ में कि मन के इस अद्भुत विकास की प्रकृति क्या होगी, रुझान क्या होगा। मुझे लगता है कि आप केवल आज में ही सिमट कर जीते रहते हैं। जो तत्काल है वह तो क्रूर है, बेरहम और थकाने वाला और आप कहते हैं "मैं इसकी चिंता क्यों करूं कि क्या होने वाला है? परंतु यदि आपके पास कोई बच्चा है, या आप छात्रों को पढ़ाते हैं, तो जब तक आपके पास इस बारे में एक व्यापक दृष्टि न हो तो आप शिक्षा के अर्थ को देख और समझ नहीं सकते। जब आप इन बालक और बालिकाओं को शिक्षित कर लेते हैं तो क्या होगा? बालिकाएं विवाह कर लेंगी और इस बड़े से संसार में खो जायेंगी। समाज उन्हें निगल जायेगा। तो उन्हें पढ़ाने से फिर क्या लाभ? लड़कों को नौकरियां मिल जाएंगी। तो इस सड़े हुए समाज में फिट होने के लिए आप उन्हें शिक्षित क्यों करें? कैसे व्यवहार करना है, सहृदय और दयालु कैसे बनना है, क्या यही सिखाना शिक्षा का अंत

you are trying to do?	हैं? केवल भारत में ही नहीं, विश्व में जो कुछ हो रहा है, उसको समग्रता से देखिए। तो इस सारी तस्वीर को देखते हुए, उसे समझते हुए, आप क्या करने का प्रयत्न कर रहे हैं?
Unless you have a total response to this whole issue the mere tinkering with it to improve teaching methods has very little meaning. The world is on fire, and being an educated man you must have the right answer to this; being a human being you must have an answer to this, and if you have an answer, a feeling of this totality of evil, then, when you teach mathematics, dancing, singing, it has a significance.	जब तक इस सारी समस्या के प्रति आपकी कोई समग्र प्रतिक्रिया नहीं है तो पढ़ाने के ढंग-तरीकों में यहां वहां छोटे-मोटे सुधारों का कोई महत्त्व नहीं है। विश्व में आग लगी हुई है, और एक शिक्षित मनुष्य होने के नाते आपके पास इस का सही उत्तर होना चाहिए; मनुष्य होने के नाते आपके पास इसका उत्तर होना चाहिए और यदि आपके पास इसका उत्तर है, इस समूची बुराई के प्रति एक एहसास है तो फिर जब आप गणित, नृत्य, गायन, पढ़ाते हैं तो उसका एक महत्त्व होता है।
<b>Teacher:</b> Sir, if I do not have this whole feeling towards something, do you think it is likely to come into being when I do something and do it well?	<b>शिक्षक :</b> यदि किसी वस्तु के प्रति मेरे अंदर यह समग्र अनुभूति नहीं है तो क्या आपको लगता है कि जब मैं कुछ करता हूं और उसे अच्छी तरह से करता हूँ तो उस अनुभूति के उत्पन्न होने की संभावना बनती है?
<b>Krishnamurti:</b> I want you to be factual.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> मैं चाहता हूँ कि आप तथ्य के साथ रहें।
<b>Teacher:</b> By being punctual, learning the technique, studying before I teach and doing the thing perfectly, would that help to bring about the quality of total feeling?	<b>शिक्षक :</b> समय के पाबंद रहना, टेकनीक सीखना, पढ़ाने से पहले खुद अध्ययन करना और किसी कार्य को पूर्णता से करना--क्या यह समग्र एहसास को जगाने में सहायक होगा?
<b>Krishnamurti:</b> Would it? It is essential that I be punctual, that I study my subject before I teach - that is understood. And you are asking if that will lead to the total feeling of all this?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या इससे ऐसा होगा? यह आवश्यक है कि मैं समय का पाबंद रहूँ, पढ़ाने से पहले अध्ययन करूँ--यह समझ में आता है। और आपका प्रश्न है कि क्या इस सबसे समग्र अनुभूति उत्पन्न होगी?
<b>Teacher:</b> I feel there is a likelihood - it is not a certainty - when I study something with	<b>शिक्षक :</b> मुझे लगता है कि जब मैं किसी वस्तु का अटेंशन से, ध्यान से अध्ययन करता हूँ तो इसकी

attention.	सम्भावना बनती है--यद्यपि यह एक निश्चितता नहीं है।
<b>Krishnamurti:</b> You have moved away from doing something, from being punctual and all the rest of it, to "attention". What do you mean by attention? I may give a certain meaning to attention and you may not. I will work on mathematics and I will be punctual. I will be very quiet and very tender and affectionate, encourage the student, discourage him from being competitive. Would you call that an attentive mind?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप कुछ करने से हट कर, जैसे समय का पालन आदि करने से अब सीधे 'ध्यान-अवधान' पर चले गये। आपका 'अटेंशन' से क्या अर्थ है? मैं ध्यान को एक अर्थ से देखता हूँ और आप इसे कोई दूसरा अर्थ देते हैं। मैं गणित का अध्ययन-अध्यापन करूँगा और समय का पाबंद रहूँगा। मैं एकदम शांत, विनम्र और स्नेहपूर्ण रहूँगा, छात्रों को प्रोत्साहित करूँगा, उसे प्रतियोगिता के लिए हतोत्साहित करूँगा। क्या आप इसे एक 'अटेंटिव माइंड' या ध्यानपूर्ण मन कहेंगे?
<b>Teacher:</b> I think so, sir. By helping the student not to compete, there is a quality of attention.	<b>शिक्षक :</b> मुझे तो लगता है। किसी छात्र को प्रतियोगिता से मुक्त होने में सहायक होना, यह ध्यान-अवधान का एक गुण है।
<b>Krishnamurti:</b> What does that mean? Not only are you attentive to your subject and to your relationship with the student but also attentive to nature, to world events and world tendencies, not only to the individual corruptions and individual aspirations but to the collective. But if you say you are attentive because you go to the class punctually, it has no meaning.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> उसका अर्थ क्या है? आप सिर्फ अपने विषय पर ही ध्यान नहीं रखते, छात्र के साथ अपने संबंध का भी ध्यान रखते हैं; प्रकृति के प्रति, विश्व की घटनाओं और रुझानों का भी ध्यान रखते हैं; केवल व्यक्तिगत भ्रष्टाचार और उसकी महत्त्वाकांक्षों के प्रति ही नहीं वरन् समूहों द्वारा किए गये भ्रष्टाचार और महत्त्वाकांक्षाओं के प्रति भी ध्यानपूर्ण हैं। परंतु यदि आप कहते हैं कि आप ध्यानपूर्ण हैं क्योंकि आप अपनी कक्षा में ठीक समय से जाते हैं, तो इसका कोई अर्थ नहीं।
Can you put the question differently? Is it possible to have this total comprehension without fear? In discussing the possibility of such a comprehension, and discovering it, can we then turn to the everyday activities and not the other way round? Now how would you discuss it?	क्या आप इस प्रश्न को दूसरी तरह से रख सकते हैं? क्या इस समग्र बोध को बिना किसी भय के प्राप्त करना सम्भव है? इस प्रकार के बोध की संभावना पर विचार करते हुए और उसकी खोज करते हुए, क्या हम प्रतिदिन की क्रियाओं की तरफ लौट सकते हैं, न कि उससे उल्टे क्रम में?
From what do we derive our energy? If we eat a	हम किससे अपनी शक्ति प्राप्त करते हैं? यदि हम कुछ

<p>certain amount of food we have a certain vitality but the vitality is not the thing that makes us live, function and be conscious. How do we derive energy, psychological energy, the driving energy? Most people get that energy by having an end in view, an ego, by maintaining a vision, an ideal, a thing that must be done, a result. That gives one an astonishing energy. Look at all the saints and politicians; the wish for success gives them enormous energy. The man who has an ideal in view and thinks that it must be established on earth, will walk the earth. He gets his psychological energy in spite of his body because that is the thing he must do, because he thinks it is good for the people and from that he derives an abundant energy. And when he does not succeed he feels disappointed, depressed, unhappy, but he covers it up and goes on. Most people derive energy from wanting a result through the desire to achieve a position, to fulfil an ambition or an ideal. They get energy with its accompanying disappointments, frustrations, despair. In this is the destruction of energy.</p>	<p>भोजन करते हैं तो हमें कोई शक्ति मिलती है, परंतु यह वह शक्ति नहीं है जो जीवित रखती है, हमसे कार्य कराती है और हमें सचेत रखती है। कैसे हमें मानसिक ऊर्जा प्राप्त होती है? अधिकांश व्यक्ति किसी लक्ष्य से शक्ति को प्राप्त करते हैं अथवा 'स्व' से, किसी दृष्टिकोण के अनुसार चलते हुए अथवा कोई आदर्शजिस तक हर हाल में पहुंचना है, या कोई फल तो होना ही चाहिए। वह एक अद्भूत शक्ति प्रदान करता है। संतों और राजनीतिज्ञों को देखें; सफलता की इच्छा उन्हें ज़बरदस्त शक्ति देती न। वह व्यक्ति जिसका कोई आदर्श है और जो सोचता है कि उसे पृथ्वी पर स्थापित होना ही चाहिए, वह सारी पृथ्वी का चक्कर लगायेगा। अपने कमजोर शरीर के बावजूद भी वह मानसिक शक्ति हासिल कर लेता है, क्योंकि वही कार्य है जिसे उसको करना है, क्योंकि उसे लगता है कि उसी में लोगों का हित है और उसी से उस को अपार शक्ति मिलती है। और जब वह सफल नहीं हो पाता तो वह निराश, हतोत्साहित, दुखी अनुभव करता है, परंतु उसे छिपा कर वह फिर आगे बढ़ता है। अधिकांश व्यक्ति किसी पद को हासिल करने, किसी महत्त्वाकांक्षा अथवा आदर्श को पूरा करने की इच्छा से कुछ फल चाहते हैं और उससे शक्ति प्राप्त करते हैं। उसीसे वे शक्ति प्राप्त करते हैं, जिसके साथ निराशाएं और हताशाएं भी जुड़ी रहती हैं। उसी में शक्ति की बरबादी है।</p>
<p>If you are interested in god, you want to create the most beautiful god in the world and you drive yourself, you exhaust yourself, and when the drive becomes a futility, a despair, you become depressed. So you meet a living energy with a negative energy which is depression, sorrow; so there is a contradiction going on.</p>	<p>यदि आपकी ईश्वर में रुचि है, तो आप संसार में सर्वाधिक सुंदर ईश्वर का सृजन करना चाहते हैं और उसी में आप अपने को झोंक देते हैं, थका देते हैं, और जब आपकी सारी दौड़-भाग बेकार हो जाती है, निराशा में बदल जाती है तो आप हताश हो जाते हैं। तो आप एक जीवित शक्ति को एक नकारात्मक शक्ति से मिला देते हैं जो कि घोर उदासी है, दुख है; इस प्रकार एक अंतर्विरोध चलता रहता है।</p>
<p><b>Teacher:</b> Sir, is energy not destroyed when there is no interest in what one is doing? For example, when a gardener is interested in gardening, there is energy. Is this not real energy and the other one no energy at all?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> जब कोई व्यक्ति कोई ऐसा काम करता है जिसमें उसकी रुचि ही नहीं तो क्या उससे ऊर्जा का नाश नहीं होता? उदाहरण के लिए, जब माली बागवानी में रुचि है तो वहां ऊर्जा होती है। क्या यही वास्तविक ऊर्जा नहीं है और दूसरी तो ऊर्जा है ही नहीं ?</p>

<p><b>Krishnamurti:</b> The poor gardener is also depressed if he cannot get what he wants. You are connecting interest with energy and the lack of interest with lack of energy. There are very few of us who are really interested in what we are doing.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> बेचारा माली भी हताश होता है जब उसे मन चाहा फल नहीं मिलता। आप रुचि को ऊर्जा से जोड़ रहे हैं और अरुचि को ऊर्जा के अभाव से। हममें से बहुत कम ऐसे हैं जो वास्तव में उसमें रुचि रखते हैं जिसे वे कर रहे हैं।</p>
<p>Most of us derive our energy from the desire for security, from ideals, from seeking a result, fulfilment of ambition and so on. For most of us that is energy. For the man who goes about doing good, his activity gives him enormous energy and when he does not succeed he is in despair, the two always go together. That energy always brings with it depression, frustration.</p>	<p>हममें से अधिकांश व्यक्ति सुरक्षा की इच्छा से, आदर्शों से, किसी फल के अथवा महत्त्वाकांक्षा के पूर्ण होने की आशा आदि से ऊर्जा प्राप्त करते हैं। अधिकांश लोगों के लिए वही शक्ति है। वह आदमी जो दूसरों का भला करता फिरता है, उसका कार्य उसे बड़ी ऊर्जा देता है। और जब वह सफल नहीं होता तो उसे निराशा होती है। दोनों चीजें हमेशा साथ-साथ चलती हैं। वह ऊर्जा हमेशा अपने साथ हताशा और निराशा लाती है।</p>
<p>In realizing that this form of energy is very destructive, would you not enquire to discover an energy which is not accompanied by depression, by despair, by frustration? Is there such energy? One knows the ordinary energy with its entanglements and one sees that energy which is brought about by seeking a result; and if, seeing it, one pushes it aside, then would that in itself not bring about an enquiry as to whether there is any other form of energy which is not accompanied by despair? That is the problem. Look at that for a little while, consider it, and let us go back to the first question. Seeing this world in flames, the world in utter confusion, an every politician trying to patch it up and every patch having a hole in it - seeing this total state, we must have a total answer. And how do you, as an educator, respond to this? Do you respond with the energy which is destructive or with the energy which is not destructive?</p>	<p>यह जानकर कि ऐसी ऊर्जा बड़ी विनाशकारी है क्या आप किसी ऐसी ऊर्जा की खोज के लिए नहीं बढ़ेंगे जिसके साथ निराशा, हताशा और कुण्ठा न हो? क्या ऐसी कोई ऊर्जा है? साधारण ऊर्जा को आदमी उसके तमाम उलझावों के साथ ही जानता है और वह उस शक्ति को जो किसी फल के पीछे दौड़ने से आती है; और यदि कोई उसे समझ-बूझ कर एक तरफ कर दे तो क्या उससे अपने-आप ही एक ऐसी खोज शुरू नहीं हो जाएगी कि क्या वहां कोई दूसरी तरह की ऊर्जा भी है जो निराशा से न जुड़ी हो? यही समस्या है। कुछ देर तक उसे देखें, गौर करें, और तब पुनः पहले प्रश्न पर लौट चलें। संसार को जलता देखकर, भ्रांतियों में उलझा देख कर, प्रत्येक राजनेता उसको सुधारने की कोशिश करता है, उसमें पैबंध लगाने की और प्रत्येक पैबंध में छिद्र हैं--इस सारी दशा को देखते हुए हमारे पास कोई संपूर्ण उत्तर होना चाहिए। तो एक शिक्षक के नाते आप इसे कैसे लेंगे? आप इसका सामना क्या उस ऊर्जा से करेंगे जो कि विनाशकारी है अथवा उस शक्ति से जो कि विनाशकारी नहीं है?</p>
<p><b>Teacher:</b> What is that energy which has no</p>	<p><b>शिक्षक :</b> वह शक्ति क्या है जिस पर विनाश की छाया</p>

shadow of destruction in it?	भी नहीं पड़ती।
<b>Krishnamurti:</b> Do not ask that question. Never put a positive question. Always put a negative question in order to find a positive answer which is not the response of the opposite.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> ऐसे प्रश्न न पूछें। एक पाज़िटव, विध्यात्मक प्रश्न कभी न करें। एक ऐसा विध्यात्मक या पाज़िटव उत्तर पाने के लिए सदा निषेधात्मक प्रश्न करें जो किसी विपरीत की प्रतिक्रिया नहीं है।
Now, what is negative thinking? What is this energy which is not destructive? That is a positive question.	तो, निषेधात्मक सोच-विचार क्या है? वह ऊर्जा जो कि विनाशकारी न हो, क्या है? यह एक विध्यात्मक यानी पाज़िटव प्रश्न है।
What is this total energy? Would it be right for us to describe this total energy which is not destructive, and can I describe it? If I were to describe it, would it not be merely verbal, theoretical to other	यह संपूर्ण शक्ति क्या है? क्या इस समग्र शक्ति का जो कि विनाशकारी नहीं है, वर्णन करना हमारे लिए सही होगा? और क्या मैं इसका वर्णन कर सकता हूँ? यदि मैं उसका वर्णन करता तो क्या वह वर्णन दूसरों के लिए महज़ शब्दिक, और सैद्धांतिक ही नहीं होगा?
Energy becomes a destructive thing the moment you want to achieve it. The desire to achieve it becomes the end for which you strive and if you do not achieve it, you are in despair. So your question was a wrong question and if one is not very careful, a wrong answer will ensue. So, what should the next question be: "How will you help me to experience this total energy?" If I were able to help you, you would be depending on the helper and the helper may be wrong. So how would you put the question?	जैसे ही आप ऊर्जा को हासिल करना चाहते हैं, वह एक विनाशकारी वस्तु हो जाती है। उसे हासिल करने की इच्छा ही लक्ष्य बन जाती है, जिसके लिए आप प्रयत्न करते हैं। और यदि वह प्राप्त नहीं होती तो निराशा होती है। तो यूँ आपका प्रश्न एक गलत प्रश्न था और यदि हम एकदम सावधान नहीं तो गलत उत्तर सामने आयेगा। तो अगला प्रश्न क्या होना चाहिए कि "इस संपूर्ण शक्ति को महसूस करने में आप मेरी कैसे सहायता करेंगे?" यदि मैं आपकी सहायता कर पाऊँ, तो आप सहायक पर निर्भर होने लगेंगे और फिर सहायक गलत भी तो हो सकता है। इसलिए आप इस प्रश्न को कैसे रखेंगे?
<b>Teacher:</b> Is it possible in communication to experience this total energy in the present?	<b>शिक्षक :</b> क्या संवाद में इस संपूर्ण ऊर्जा का एहसास संभव है, वर्तमान में?

<p><b>Krishnamurti:</b> You can ask the same question in a different way. You are asking a positive question all the time about something you do not know. Your question is unrelated to the problem. Now how would you put the question?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप इसी प्रश्न को एक दूसरे तरीके से भी पूछ सकते हैं। जिस चीज़ को आप नहीं जानते आप बराबर उसके बारे में विध्यात्मक प्रश्न ही पूछ रहे हैं। आपका प्रश्न समस्या से संबंधित नहीं है। तो अब इस प्रश्न को आप कैसे करेंगे?</p>
<p><b>Teacher:</b> Do you mean to say that the right question should be "When I see the destructive nature of this energy...."</p>	<p><b>शिक्षक :</b> क्या आपके कहने का मतलब है कि सही प्रश्न इस प्रकार का होना चाहिए कि "जब मैं ऊर्जा के इस विनाशकारी रूप को देखता हूँ...।"</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> See the falseness of this energy which is destructive, that in itself is the answer. You cannot go beyond the destructive nature of this energy and say what the other is.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> विनाशकारी ऊर्जा के झूठ को देखें वह अपने में ही उत्तर है। इस ऊर्जा के विनाशकारी रूप के आगे जा कर आप यह नहीं कह सकते कि वह क्या है।</p>
<p>Can you cease to revolve in creating destructive energy? You will not then ask what the other is. All you can ask is, "Is it possible to stop this self-created destructive energy?" You cannot enquire positively into energy, it must be a negative approach - the comprehending of the fact negatively, not positively, in order to get to the other - because you do not know the other. So your approach must be negative in the sense that you see the factual nature of this energy which is self-destructive.</p>	<p>क्या आप विनाशकारी ऊर्जा को पैदा करना बंद कर सकते हैं, जिसमें आप लगे हुए हैं? तब आप यह नहीं पूछेंगे कि वो 'दूसरा' क्या है। जो कुछ आप पूछ सकते हैं वह इतना ही है, "क्या इस विनाशकारी शक्ति को रोकना सम्भव है, जिसे खुद हमने ही बनाया है?" आप सकारात्मक रूप से इस शक्ति की खोजबीन नहीं कर सकते, वहां एक निषेधात्मक पहुंच ही चाहिए--किसी तथ्य को सकारात्मक रूप से नहीं वरन् निषेधात्मक रूप से समझना ताकि सकारात्मक पर पहुंचा जा सके--क्योंकि आप उस 'दूसरे' को जानते नहीं। इसलिए आपकी पहुंच इन अर्थों में निषेधात्मक होनी चाहिए कि आप उस शक्ति की वास्तविकता को देखें जो कि आत्म-विनाशकारी है।</p>
<p>Can I comprehend negatively? Can I learn a technique, and can the mind liberate itself from the technique without recompense? Then the mind is open to a different pattern of energy.</p>	<p>क्या मैं निषेधात्मक रूप से समझ सकता हूँ? क्या मैं किसी टेकनीक को सीख सकता हूँ और क्या मन इस टेकनीक से अपने को मुक्त कर सकता है, बिना किसी भरपाई के? तभी मन एक दूसरे प्रकार की शक्ति के प्रति खुलता है।</p>

<p>The entire world is in a vast mess, in confusion. To have a total response to that, you must have energy of a different quality from the usual energy which you apply to a problem. The usual approach to a problem is in terms of hope, fear, success, fulfilment and so on, with its accompanying despair. This is obvious. These are all psychological facts. Here we have a world issue and you have to approach it not with the energy of despair but with an energy which is not contaminated by despair. To come upon that energy which is not destructive, the mind must be free from the energy of despair. This is a world problem, how do you answer it? Do you answer it idealistically with the intention, the desire and the feeling, "This is the right thing to do"? If you do, you answer it with the energy of despair. Or do you look at it with a different energy altogether? If you look at the total problem with that new kind of energy, you will have the right answer.</p>	<p>सारा संसार एक बड़ी भयानक दुर्व्यवस्था में फंसा है, भ्रांति में। उसका पूरी तरह से जवाब देने के लिए आपके पास एक अलग ही तरह की ऊर्जा चाहिए, उस साधारण ऊर्जा से भिन्न जिसे आप प्रायः किसी समस्या के हल में लगाते हैं। आम तौर पर किसी समस्या के प्रति आशा, भय, सफलता, तृप्ति की नज़र से ही सोचा जाता है और उसके साथ ही जुड़ी रहती है निराशा। यह बिल्कुल स्पष्ट है। ये सब मनोवैज्ञानिक तथ्य हैं। यहां हमारे सामने एक विश्व समस्या है और आपको उसे निराशा की ऊर्जा के साथ नहीं बल्कि एक ऐसी शक्ति से देखना है जो निराशा द्वारा भ्रष्ट नहीं हुई। उस ऊर्जा तक पहुंचने के लिए जो विनाशकारी नहीं है, मन को निराशा की ऊर्जा से मुक्त होना होगा। यह एक वैश्विक समस्या है; आप इसका उत्तर कैसे देंगे? क्या आप उसका उत्तर एक आदर्शवादी रूप में देते हैं जिसके साथ कुछ इरादे, इच्छायें एवं भावनाएं जुड़ी हैं कि "ऐसा करना उचित है?" यदि आप ऐसा करते हैं तो आप इसका उत्तर निराशा की ऊर्जा के साथ देते हैं। यदि इस सारी समस्या को आप उस नवीन ऊर्जा से देखें, तो आपको ठीक उत्तर मिलेगा।</p>
<p><b>Teacher:</b> I would like to talk a little more about the communication of this feeling you are hinting at: that we are perpetuating through our education the energy of despair and hence the hopelessness of such education. Can we educate in I the accepted sense of the word, and yet have the other? Can a person who is engaged in teaching a certain subject teach that perfectly and yet get the whole, total feeling? Can he do it without a motive, with a total attention to the thing that he is doing and with a feeling of love? Will that help to keep the I mind open to the new source of energy?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> जिस एहसास की ओर आप संकेत कर रहे हैं उसके बारे में मैं कुछ और चर्चा करना चाहूंगा--हम अपनी शिक्षा के द्वारा निराशा की शक्ति को कायम रख रहे हैं और इसलिए ऐसी शिक्षा निराशाजनक है। क्या शिक्षा के स्वीकृत अर्थ में शिक्षित होते हुए भी हम 'दूसरे' को प्राप्त कर सकते हैं? क्या कोई व्यक्ति जो किसी विषय को पढ़ा रहा है और बढिया ढंग से पढ़ा रहा है, फिर भी क्या वह उस सम्पूर्ण, उस समग्र, अनुभूति को प्राप्त कर सकता है? क्या वह बिना किसी मकसद के ऐसा कर सकता है, उस चीज़ में सम्पूर्ण ध्यान लगाते हुए जिसे वह कर रहा है, प्रेम से भरे हुए? क्या इससे ऊर्जा के नए स्रोतों के प्रति मन को खोलने में सहायता मिलेगी ?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> You are introducing suppositions, they are not facts. You see, you</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप अनुमानों को बीच में ला रहे हैं, वे</p>

<p>have no love. Occasionally there is an opening in the cloud and you see the bright light, but only occasionally. You are not dealing with facts, you are dealing with suppositions. If you were dealing with facts, then you could have answered.</p>	<p>तथ्य नहीं है। आप देखें, आप के भीतर प्रेम नहीं है। कभी-कभार मेघों के बीच से आप को चमकता हुआ प्रकाश दिखाई दे जाता है, परंतु ऐसा केवल कभी-कभी होता है। आप तथ्यों का सामना कर रहे होते तो आप उत्तर दे सकते थे।</p>
<p>The main statement is not good enough, "I do pay attention sometimes, I do love without wanting something in return." You may do this occasionally, but you have to do it on all the three hundred and sixty five days, not just one day.</p>	<p>यह कथन ही काफी नहीं है कि "कभी-कभी मैं ध्यान देता हूँ, बिना किसी फल की आशा किये मैं प्रेम करता हूँ" आप उसे कभी-कभी करते होंगे; परंतु आप को साल के तीन सौ पैंसठ दिन ही ऐसा करना होगा, एक ही दिन से काम नहीं चलेगा।</p>
<p><b>Teacher:</b> As I see it, whatever I do, I want to fit the "plus" into this.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> जैसा कि मैंने देखा, जो कुछ भी मैं करता हूँ, इसमें कुछ न कुछ 'जोड़ना' चाहता हूँ।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> You cannot put the plus into the minus, you cannot put the creative thing into the destructive. The destructive energy has to cease for the creative thing to come in.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> जो चीज़ खुद में ऋणात्मक है, नैगिटिव है, उसमें आप कुछ जोड़ नहीं सकते, जो विनाशकारी है उसमें कुछ सृजनशील नहीं डाल सकते। सृजनशील के आने के लिए विनाशकारी ऊर्जा का अंत होना लाज़िमी है।</p>
<p>You have time, you have leisure to meditate, and without becoming sentimental you have to discover the destructive energy in yourself. It is a continuous process of awareness, keeping the window open for the other. This is a total process all the time.</p>	<p>आपके पास समय है, ध्यान के लिए सुविधा है, और बिना किसी भावुकता के आपको खुद में इस विनाशकारी ऊर्जा की खोज करनी है। यह जागरूकता की एक सतत प्रक्रिया है, 'दूसरे' के लिए निरंतर द्वार खोले हुए। यह सदा एक संपूर्ण प्रक्रिया है।</p>
<p>There is a psychological climate that is necessary, which means relationship in teaching and that requires subtlety. You cannot have subtlety and pliability if you have an end in mind. If you are thinking from a conclusion, from an experience of knowing a great many techniques, you cannot have pliability, subtlety.</p>	<p>इसके लिए एक मानसिक माहौल की आवश्यकता है, जिसका अर्थ है शिक्षण में एक पारस्परिक संबंध, और उस के लिए चाहिए बारीक नज़र। यदि आपके मन में कोई लक्ष्य है तो आप में सूक्ष्मदर्शिता और लचीलेपन की खूबी नहीं रह सकती। यदि आप किसी निष्कर्ष पर पहुंचकर सोच रहे हैं, अथवा ढेर सारी तकनीकों के ज्ञान के अनुभव से तो आपमें वह लचक, वह बारीकी तो नहीं हो सकती।</p>

<p>Have you ever talked to anybody who is entrenched deep in some ideal, in some dogma? He has no pliability, no subtlety. To bring about subtlety, pliability, the mind must have no anchorage.</p>	<p>क्या आपने कभी उस व्यक्ति से बात की है जो किसी आदर्श में, किसी रूढ़ि-सिद्धांत में पूरी तरह धंसा हुआ है? उसमें कोई कोमलता, कोई सूक्ष्मदर्शिता नहीं होती। कोमलता, लचीलापन, बारीक नज़र तभी संभव हैं जब मन से हर जकड़-पकड़ विदा हो गयी हो।</p>
<p><b>Teacher:</b> Is it possible to arrange circumstances so that this pliability and subtlety come into being? It is not always possible to create this within organization</p>	<p><b>शिक्षक :</b> क्या उस माहौल को बनाना संभव है जिसमें यह कोमलता और बारीकी आ सके? संगठनों की सीमा में ऐसा करना सदा संभव नहीं होता।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> How can one create neither antagonism nor resistance in relationship? How is a sense of equality to be brought about? If you can establish that feeling then what is the next step? Is there a next step?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> कैसे व्यक्ति ऐसे संबंध बनाए जिनमें न विरोध हो और न प्रतिरोध? समानता का बोध कैसे लाया जाए? यदि आप उस एहसास को मज़बूत कर लेते हैं तो फिर अगला कदम क्या है? क्या कोई अगला कदम है भी?</p>
<p>First of all, is it possible to establish mutual confidence within an organization? To establish that requires a great deal of intelligence on my part and on the part of others.</p>	<p>सबसे पहले, किसी संगठन में रहते हुए परस्पर भरोसा कर पाना क्या संभव है? उसके लिए मेरे और दूसरों के अंदर गहरी समझ की आवश्यकता होती है।</p>
<p><b>Teacher:</b> As you said, the problem is how to establish relationship without the sense of high and low and with the awareness of this total feeling.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> जैसा कि आपने कहा समस्या यह है कि वह संबंध कैसे स्थापित किया जाय जिसमें ऊँच-नीच का एहसास न हो और इस संपूर्णता के एहसास के प्रति जागरूकता हो।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> We do not know anything about this total feeling. But we know the destructive nature of certain forms of energy and the mind tries to disentangle itself from that.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> संपूर्णता के इस एहसास के बारे में हम कुछ नहीं जानते। परंतु ऊर्जा के कुछ रूपों के विनाशकारी स्वभाव को हम जानते हैं और मन खुद को उनके फंदों से छुड़ाना चाहता है।</p>

<p>We know there must be equality and that equality is denied when there are divisions, cliques, when we are functioning merely on an economic level and when there is no comprehension of the nature of destructive energy. It is not an economic equality that has to be established but an equality at every level. If we do not establish that right from the beginning and establish it also in ourselves, we have no contact. Can we spend time in considering how to establish an equality in that sense, not the equality of technique? Can we come together to establish between ourselves this feeling of equality in which all differences are gone? Then we are free. We must be quite sure that at least a few of us are walking along the road. Some of us then may walk slowly, some may walk fast but it is in the same direction and the direction is the quality. It is really a turning of one's back to the world. If you see the crippling effects of the energy of despair, you have to renounce it. If you are alive to this, it means that your relationship with the world is entirely different and that opens a great many doors.</p>	<p>हम जानते हैं कि समानता होनी चाहिए और जब विभाजन होता है, गुटबाजी होती है, जब हम आर्थिक स्तर तक सिमट कर कार्य कर रहे होते हैं और जब विनाशकारी ऊर्जा के स्वरूप का हमें बोध नहीं होता, तो समानता भी नहीं होती। प्रश्न केवल आर्थिक समानता की स्थापना का ही नहीं है बल्कि हर स्तर पर समानता की स्थापना का है। यदि हम इसकी शुरूआत बिल्कुल शुरू से ही नहीं करते तथा अपने अंदर इसे नहीं स्थापित करते तो हमारा परस्पर कोई संपर्क ही नहीं होता। तो क्या हम इसमें अपना समय लगा सकते हैं कि इन अर्थों में समानता को कैसे स्थापित करें, तकनीक की समानता नहीं? अपने बीच समानता की इस भावना को स्थापित करने के लिए, जिसमें सभी विषमतायें समाप्त हो गई हैं क्या हम करीब आ सकते हैं? फिर हम स्वतंत्र हैं। हमें कम से कम इतना तो पक्का होना चाहिए कि हममें से कुछ लोग तो उस मार्ग पर हों। तब हममें से कुछ धीमें चल सकते हैं, कुछ तेज चल सकते हैं, परंतु दिशा वही रहेगी और वह दिशा ही गुणवत्ता है, यह वास्तव में संसार से मुँह फेर लेने वाली बात होगी। यदि आप देख लेते हैं कि निराशा की ऊर्जा किस प्रकार पंगु बनाती है तो आप उसे छोड़ देते हैं। यदि इसके प्रति आप सजग हैं तो इसका अर्थ है कि विश्व के साथ आपका सम्बंध पूर्णतया भिन्न है और इससे अनेक द्वार खुल जाते हैं।</p>
<p><b>Talk To Teachers</b></p> <p><b>Chapter 10 meditation and education</b></p>	<p>10. ध्यान और शिक्षा</p>
<p>Are we human beings or professionals? Our professions take the whole of our lives and we give very little time to the cultivation or the understanding of the mind, which is living. The profession comes first, then living. We approach life from the point of view of the profession, the job, and spend our lives in it and at the end of our lives we turn to meditation, to a</p>	<p>हम मनुष्य हैं या केवल व्यवसायी व्यक्ति? हमारा व्यवसाय ही हमारा समस्त जीवन निगल लेता है और मन को समझने में, कि कैसे वो फूले-फले, हम बहुत कम समय देते हैं जबकि जीना तो यही है। परंतु हमारे लिए व्यवसाय पहले आता है, जीना बाद में। हम जीवन को व्यवसाय की दृष्टि से अथवा नौकरी की दृष्टि से देखते हैं और उसी में अपना जीवन बिता देते हैं। फिर जीवन के अंत में हम ध्यान की ओर मुड़ते हैं, मन के</p>

contemplative attitude of mind.	एक ध्यानपूर्ण रवैये की ओर।
<p>Are we only educators or are we human beings who see education as a significant and true way of helping human beings to cultivate the total mind? Living comes before teaching. The man who is a specialist - a nose and throat specialist - spends all his days in the examination of noses and throats and obviously his mind is filled with throats and noses and only occasionally can he think about meditation or look at truth.</p>	<p>क्या हम केवल शिक्षक ही हैं या फिर मनुष्य भी हैं जो शिक्षा को मनुष्यों की सहायता करने तथा संपूर्ण मन के विकास में एक महत्त्वपूर्ण तथा सच्चे मार्ग के रूप में देखते हैं। जीना शिक्षण के पहले आता है। वह मनुष्य जो एक विशेषज्ञ है, माहिर है--गले का या फिर नाक का--जो अपना सारा जीवन गले या नाक की जाँच करते-करते ही बिता देता है, स्पष्ट है कि सारा समय उस के दिमाग में वही गला और नाक ही घूमते रहते हैं, केवल कभी-कभार ही ध्यान का ख्याल उसके मन आता है अथवा सत्य को देखने का।</p>
<p>Can we go into the question of meditation, as a comprehensive total approach to life which implies the understanding of what meditation is? I do not know if any of you meditate and I do not know what meditation means to you. What part has meditation in education and what do we mean by meditation? We give so much importance to the getting of a degree, the getting of a job, to financial security; that is the entire I design of our thinking. And meditation, the real enquiry into whether there is god, the observing, experiencing of that immeasurable state, is not part of our education at all. We will have to find out what we mean by meditation, not how to meditate. That is an immature way of looking at meditation. If one can unravel what is meditation, then the very process of unravelling is meditation.</p>	<p>जीवन के प्रति एक व्यापक दृष्टि के रूप में क्या हम ध्यान के प्रश्न पर विचार कर सकते हैं, जिसका मतलब है ध्यान क्या है उसे समझना, उसके स्वभाव को समझना? मैं नहीं जानता कि आप में से कोई ध्यान करता है या नहीं, और यह भी नहीं जानता कि ध्यान का आपके लिए क्या अर्थ है। शिक्षा में ध्यान का क्या स्थान है और ध्यान से आपके क्या अर्थ हैं? हम डिग्री हासिल करने को, नौकरी प्राप्त करने को, आर्थिक सुरक्षा को बहुत ज़्यादा महत्त्व देते हैं; हमारा सोच-विचार का सारा तानाबाना यही है। और ध्यान क्या है, क्या ईश्वर है भी, इस मामले में एक सचमुच की खोज, उस असीम के अनुभव का तथा उसके बारे में छानबीन का, हमारी शिक्षा में कोई स्थान ही नहीं। ध्यान कैसे करें, हमें पता लगाना होगा कि ध्यान से हमारा क्या अर्थ है, यह नहीं कि ध्यान कैसे करें, यह तो ध्यान को समझने का एक बचकाना तरीका है। यदि हम इस गुत्थी को सुलझा सकें कि ध्यान क्या है तो सुलझाने की वह प्रक्रिया ही ध्यान है।</p>
<p>What is meditation and what is thinking? If we enquire into what meditation is, we have to enquire into what thinking is. Otherwise, merely to meditate when I do not know the process of thinking is to create a fancy, a delusion, which has no reality whatsoever. So to really</p>	<p>ध्यान क्या है और सोच-विचार क्या है? यदि हम खोजबीन करें कि ध्यान क्या है तो हमें पता लगाना होगा कि विचार क्या है, सोचना क्या है। अन्यथा बिना सोच-विचार की प्रक्रिया को जाने केवल ध्यान करना एक कल्पना को हवा देना है, ऐसे भ्रम को जिसमें कोई</p>

<p>understand or to discover what meditation is, it is not enough to have mere explanations which are only verbal and therefore have little significance; one has to go into the whole process of thinking.</p>	<p>वास्तविकता नहीं। तो ध्यान को वास्तव में समझने के लिए अथवा इसका पता लगाने के लिए ध्यान क्या है, केवल शाब्दिक व्याख्याओं का कोई महत्त्व नहीं। इसके लिए व्यक्ति को सोच-विचार की समस्त प्रक्रिया में जाना पड़ेगा।</p>
<p>Thinking is a response of memory. Thoughts become the slave of words, the slave of symbols, of ideas, and the mind is the word and the mind becomes slave to words like god, communist, the principal, the vice-principal, the prime minister, the police inspector, the villager, the cook. See the nuances of these words and the feelings that accompany these words. You say sannyasi and immediately there is a certain quality of respect. So the word for most of us has immense significance. For most of us the mind is the word. Within the conditioned, verbal, technical symbolic framework, we live and think; that framework is the past, which is time. If you observe this process taking place in yourself, then it has significance.</p>	<p>सोच-विचार यादों की ही एक प्रतिक्रिया है। विचार शब्दों के, प्रतीकों के, आदर्शों के दास हो जाते हैं। मन शब्द ही है, और वह ईश्वर, कम्युनिस्ट, प्रिंसीपल, वाइस-प्रिंसीपल, प्रधानमंत्री, पुलिस इंस्पेक्टर, ग्रामीण, बावर्ची आदि शब्दों का दास बना रहता है। इन शब्दों के सूक्ष्म-रंगों को देखिए तथा इनसे जुड़े भावों को। आप कहें सन्यासी और तुरंत भीतर एक आदर का भाव आ जाता है, तो यूँ हममें से अधिकांश के लिए शब्द का बड़ा महत्त्व है। अधिकांश लोगों के लिए मन शब्द ही है। हम एक ऐसे ढांचे में जीते और सोचते हैं जो संस्कारों में बंधा है, तकनीकी और संकेतक लफ्फाज़ी से लदा है; वह ढांचा अतीत है जो कि समय है। यदि आप अपने अंदर इस प्रक्रिया को चलता देखें तो उसका बड़ा महत्त्व है।</p>
<p>Now is there thought without word? Is there thinking without word and therefore out of time? The word is time. And if the mind can separate the word, the symbol, from itself, then is there an enquiry which does not seek an end and is therefore timeless?</p>	<p>तो, क्या बिना शब्द के विचार होता है? क्या बिना शब्द के कोई सोच-विचार है जो कि समय की जकड़ से बाहर हो? शब्द काल है, समय है। और यदि मन शब्द से, प्रतीक से, अपने को अलग कर सके तो क्या कोई ऐसी खोजबीन है जो किसी फल के पीछे न दौड़े और इसीलिए, जो काल से परे हो?</p>
<p>First, let us look at the whole picture. A mind that has no space in which to observe has no quality of perception. From thinking, there is no observation. Most of us see through words, and is that seeing? When I see a flower and say it is a rose, do I see the rose or do I see the feeling, the idea that the word invokes? So, can the mind which is of time and space, explore into a non-spatial, timeless state because it is only in that state that there is creation? A technical mind which has acquired specialized knowledge can invent, add to, but it can never create. A mind</p>	<p>सर्वप्रथम हम इस सारी तस्वीर को देखें। मन जिस के पास स्पेस या अवकाश ही नहीं, जहाँ से वह देख-समझ सके, उस में समझ-बूझ का गुण नहीं होता। सोच-विचार से देखना-समझना नहीं होता। हममें से अधिकांश शब्दों के द्वारा देखते हैं, क्या वह देखना है? जब मैं एक फूल को देखता हूँ और कहता हूँ कि वह एक गुलाब है, तो क्या मैं उस गुलाब को देखता हूँ या उस अनुभूति को ही देखता हूँ, उस विचार को, जिसे वह शब्द उत्पन्न करता है? तो क्या वह मन जो देश और काल का बना है, किसी ऐसी अवस्था की खोजबीन कर सकता है, जो देश और काल से परे है, क्योंकि</p>

<p>that has no space, no emptiness from which to see, is obviously a mind that is incapable of living in a spaceless, timeless state. That is what is demanded. So a mind that is merely caught in time and space, in words, in itself, in conclusions, in techniques, in specialization, such a mind is a very distressed mind. When the world is confronted with something totally new, all our old answers, codes, traditions are inadequate.</p>	<p>सिर्फ उसी अवस्था में सृजन होता है? एक टेकनिकल मन, जिसके पास एक विशेष तरह का ज्ञान है, आविष्कार कर सकता है, उसमें कुछ जोड़ सकता है, परंतु वह सृजन नहीं कर सकता। वह मन जिसके भीतर जगह ही नहीं, शून्यता नहीं जहाँ से वह देख सके, स्पष्ट ही एक ऐसा मन है जो एक देश काल की सीमाओं से परे की अवस्था में रहने के अयोग्य है और आवश्यकता उसी की है। तो वो मन जो कि देश और काल में फंसा है, शब्दों में, स्वयं अपने में, निष्कर्षों में, तकनीकों में, महारत में, वह अत्यंत पीड़ित मन है। जब विश्व किसी ऐसी स्थिति का सामना कर रहा है जो एकदम नई है तो हमारे सारे पुराने उत्तर, शास्त्र, परम्परायें नाकाफी हो जाती हैं।</p>
<p>Now what is thinking? Most of our lives are spent in the effort to be something, to become something, to achieve something. Most of our lives are a series of connected and disconnected constant effort and in these efforts the whole problem of ambition and contradiction brings about a certain exclusive process which we call concentration. And why should we make an effort? What is the point of effort? Would we stagnate if we failed to make an effort and what does it matter if we stagnate? Are we not stagnating with our immense efforts - now? What significance has effort any more? If the mind understands effort will it not release a different kind of energy which does not think in terms of achievement, ambition, and so contradiction? Is not that very energy action , itself.</p>	<p>तो सोच-विचार क्या है? हमारा अधिकांश जीवन कुछ होने में, कुछ बनने में, कुछ हासिल करने में व्यतीत होता है। हमारा अधिकांश जीवन इन प्रयत्नों का एक सिलसिला है जो कहीं जुड़ता है, तो कहीं नहीं जुड़ता, और इन प्रयत्नों में छिपी महत्त्वाकांक्षा और अंतर्विरोध एक ऐसी विशेष प्रक्रिया को सामने लाते हैं, जिसे हम एक एकाग्रता कहते हैं। फिर हमें कोई प्रयत्न करना ही क्यों चाहिए? प्रयत्न का प्रयोजन ही क्या है? यदि हम प्रयत्न न कर पाये तो क्या हम गतिहीन हो जायेंगे और मान लीजिए हो भी जायें तो उससे क्या अंतर पड़ता है? अपने तमाम प्रयत्नों के बाद भी क्या हम पड़े-पड़े सड़ नहीं रहे हैं; तो प्रयत्न का और महत्त्व ही क्या है? यदि मन प्रयत्न को समझ लेता है तो क्या वह एक नई प्रकार की ऊर्जा प्रवाहित नहीं करेगा जो उपलब्धि, महत्त्वाकांक्षा और अंतर्विरोध की भाषा में नहीं सोचती? क्या वह ऊर्जा स्वयं ही एक्शन नहीं है?</p>
<p>In effort there is involved idea and action and the problem of how to bridge idea and action. All effort implies idea and action and the coming together of these two. And why should there be such division, and is not such a division destructive? All divisions are contradictory and in the self-contradictory state there is inattention. The greater the contradiction the greater the inattention and the greater the resultant action. So life is an endless battle from</p>	<p>प्रयत्न में विचार और एक्शन शामिल हैं और समस्या यह है कि विचार और एक्शन के बीच की खाई को पाटा कैसे जाय। हर प्रयत्न में विचार और एक्शन दोनों साथ-साथ चलते हैं। ऐसे विभाजन की आवश्यकता ही क्या है, और क्या ऐसा विभाजन विनाशकारी नहीं है? सभी विभाजनो में विरोध होता है और अंतर्विरोध की अवस्था में अवधान बिखरता है। जितना ही अधिक विरोध होता है उतना ही अधिक ध्यान-अवधान का विचलन और उससे उत्पन्न कर्म भी होता है। इसलिए</p>

<p>the moment we are born to the moment we die.</p>	<p>जन्म से मृत्यु तक जीवन एक ऐसा संघर्ष होता है जिसका कोई अंत नहीं है।</p>
<p>Is it possible to educate both ourselves and students to live? I do not mean to live merely as an intellectual being but as a complete human being, having a good body and a good mind, enjoying nature, seeing the totality, the misery, the love, the sorrow, the beauty of the world.</p>	<p>क्या अपने को तथा छात्रों को यह सिखाना संभव है कि कैसे जियें? जीवन से मेरा मतलब केवल एक बौद्धिक मनुष्य के रूप में जीवित रहने से नहीं वरन् एक पूर्ण मनुष्य से है जिसके पास एक अच्छा शरीर हो, अच्छा मन हो, जो प्रकृति का आनंद लेता हो, जो विश्व की संपूर्णता, प्रेम, दुख-क्लेश, सौंदर्य को देख पाता हो।</p>
<p>When we consider what meditation is, I think one of the first things is the quietness of the body. A quietness that is not enforced, sought after. I do not know if you have noticed a tree blowing in the wind and the same tree in the evening when the sun has set? It is quiet. In the same way, can the body be quiet, naturally, normally, healthily? All this implies an enquiring mind which is not seeking a conclusion or starting from a motive. How is a mind to enquire into the unknown, the immeasurable? How is one to enquire into god? That is also part of meditation. How do we help the student to probe into all this? Machines and the electronic brains are taking over, automation is going to come in about fifty years to this country and you will have leisure and you can turn to books for knowledge. Our intelligence, not merely the capacity to reason but rather the capacity to perceive, understand what is true and what is false, is being destroyed by the emphasis on authority, acceptance, imitation, in which is security. All this is going on but in all this what part has meditation? I feel the quality of meditation as I am talking to you. It is meditation. I am talking but the mind that is communing is in a state of meditation.</p>	<p>जब हम विचार करते हैं कि ध्यान क्या है, तो सबसे पहली चीज़ है शरीर का शांत होना। लादी गई या प्रयत्न से लायी गई शांति नहीं। पता नहीं आपने कभी किसी वृक्ष को देखा हो हवा में झूमते हुए और फिर उसी वृक्ष को शाम के वक्त जब सूर्य छिप चुका हो देखा है या नहीं? वह शांत होता है। उसी प्रकार क्या शरीर भी स्वाभाविक रूप से, सामान्य रूप से, स्वस्थपूर्ण ढंग से शांत हो सकता है? इस सब के पीछे है एक ऐसा खोजी मन जो न तो किसी निष्कर्ष की खोज में है और न ही किसी प्रयोजन से प्रेरित है। कैसे मन अज्ञातकी, असीम की खोज कर सकता है? कैसे कोई ईश्वर की खोजबीन करे? यह सब ध्यान का हिस्सा है। कैसे इस सब की जाँच में विद्यार्थियों की मदद करें? मशीनें और इलेक्ट्रॉनिक दिमाग भारी पड़ते जा रहे हैं। लगभग पचास वर्षों में स्वचालित यंत्र इस देश में भी आने वाले हैं और तब आपके पास अवकाश होगा और ज्ञान के लिए आप पुस्तकों की शरण में जा सकते हैं। हमारी बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा, न केवल तर्क की क्षमता वरन् प्रत्यक्ष-बोध की क्षमता भी, सच-झूठ में फर्क करने की क्षमता भी सत्ता, स्वीकृति और नकल पर ज़ोर दे कर बरबाद की जा रही है जिनमें सुरक्षा है। यह सब तो हो ही रहा है परंतु इस सब में ध्यान का क्या स्थान है? आपसे बात-चीत करते हुए मुझे ध्यान का एहसास होता है। यही ध्यान है। मैं बात कर रहा हूँ, परंतु, मन, जो कि संवाद में है, संगत में है, वो ध्यान की अवस्था में है।</p>

<p>All this implies an extraordinarily pliable mind, not a mind that accepts, rejects, acquiesces or conforms. So meditation is the unfolding of the mind and through it perception, the seeing without restraint, without a background and so an endless emptiness in which to see. The seeing without the limitation of thought which is time requires a mind that is astonishingly quiet, still.</p>	<p>इस सबके लिए एक असाधारण रूप से लचकदार मन की आवश्यकता है न कि ऐसे मन की जो स्वीकार-अस्वीकार में अटका है, जो चुपचाप मान लेता है अथवा अनुकूल ढल जाता है। तो ध्यान मन का खुलना है और उसी के द्वारा बोध होता है, देखना बिना किसी बंधन के, बिना किसी पृष्ठभूमि के, ताकि एक अनन्त शून्य हो, जिसमें देखना है। और ऐसे अवलोकन के लिए, विचार की सीमाओं के बिना--विचार जो कि काल है--देखने के लिए एक ऐसे मन की ज़रूरत है जो अनुपम रूप से शांत है, मौन है।</p>
<p>All this implies an intelligence which is not the result of education, book learning, acquisition of techniques. Obviously, to observe a bird you must be very quiet; otherwise at the least movement on your part the bird flies away; the whole of your body must be quiet, relaxed, sensitive to see. How you create that feeling? Take that one thing which is part of meditation. How will you bring this about in a school like this? First of all, is it necessary at all to observe, to think, to have a mind that is subtle, a mind that is still, a body that is responsive, sensitive, eager?</p>	<p>इस सबका मतलब है एक ऐसी समझ जो शिक्षा का, पुस्तक-ज्ञान का, तकनीक उपलब्धि का परिणाम नहीं है। स्पष्ट है कि यदि आपको किसी पक्षी को देखना है तो आपको पूर्णतया शांत होना होगा; अन्यथा आप जरा भी हिले नहीं कि पक्षी उड़ जाता है; देखने के तो आपके समस्त शरीर को शांत, तनाव रहित तथा संवेदनशील होना होगा। आप उस एहसास को कैसे जगायेंगे? यह अनुभूति ध्यान का ही अंग है। अपने इस विद्यालय में आप इसको कैसे लायेंगे? इसके लिए पहली बात तो यह कि देखना, सोचना, एक ऐसा मन जो सूक्ष्म है, शांत है, ऐसा शरीर जो कि संवेदनशील है, उत्सुक है, जगा हुआ है, क्या यह सब ज़रूरी है ?</p>
<p>We are only concerned with helping the student to get a degree and to get a job and then we allow him to sink into this monstrous society. To help him to be alive it is imperative for a student to have this extraordinary feeling for life, not his life or somebody's else's life, but for life, for the villager, for the tree. That is part of meditation - to be passionate about it, to love - which demands a great sense of humility. This humility is not to be cultivated. Now how will you create the climate for this, because children are not born perfect? You may say that all we have to do is to create the environment and they will grow into marvellous beings; they will not. They are what they are, the result of our past with all our anxieties and fears and we have created the society in which they live and</p>	<p>हमारी चिंता केवल यही है कि कैसे छात्र बस डिग्री प्राप्त करके नौकरी लग जाय और तब हम उसे इस राक्षसी समाज में डूब जाने देते हैं। परंतु वह जीवन शक्ति से वास्तव में परिपूर्ण हो इसमें उसकी सहायता के लिए यह आवश्यक है कि हम उसे जीवन के लिए एक अद्भुत एहसास से भरें, केवल अपने अथवा किसी दूसरे के जीवन के प्रति ही नहीं बल्कि जीवन के प्रति, ग्रामीणों के प्रति, वृक्षों के प्रति। जीवन के प्रति जोश होना, प्रेम होना, यही सब ध्यान है, और इसके लिए गहरी विनम्रता चाहिए। इस विनम्रता को पाला-पोसा नहीं जा सकता। तो फिर इसके लिए आप वातावरण कैसे बनायेंगे, क्योंकि बालक जन्म से तो पूर्ण होते नहीं? आप कह सकते हैं कि हम तो बस यही कर सकते हैं कि एक माहौल बनायें जिसमें वे एक शानदार व्यक्तित्व के रूप में विकसित हों; परंतु ऐसा नहीं होगा! वे वही हैं जो वे हैं; चिंताओं तथा आंशकाओं से भरे हमारे अतीत</p>

<p>children have to adjust themselves and are conditioned by us How will you create the climate in which they see all these influences, in which they look at the beauty of this earth, look at the beauty of this valley? Just as you devote time to mathematics, science, music, dance, why do you not give some time to all this?</p>	<p>के परिणाम और हमने ही उस समाज को बनाया है जिसमें वे जीते हैं और जिसके अनुकूल उन्हें ढलना पड़ता है, वे हमारे द्वारा संस्कारित हैं। आप वो वातावरण कैसे बनायेंगे जिसमें वो इन तमाम प्रभावों को देख सकें? जिसमें वे इस धरती की, इस घाटी की सुंदरता को देख सकें? जिस प्रकार आप अपना समय गणित, विज्ञान, संगीत, नृत्य को देते हैं उसी प्रकार कुछ समय इस सबके लिए क्यों नहीं देते?</p>
<p><b>Teacher:</b> I was thinking about practical difficulties and how it is not always possible.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> मेरे मन में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयां आ रही थी, कि कैसे यह सब सदा सम्भव नहीं होता।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Why do you give time to dance, to music Why not give time to this as you give to mathematics? You are not interested in it. If you saw that it was also necessary you would devote time to it. If you saw that it was as essential as mathematics, you would do something.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप नृत्य को, संगीत को क्यों समय देते हैं? क्यों नहीं आप इसके लिए समय निकालते जैसे आप गणित के लिए निकालते हैं? आपकी इसमें रुचि ही नहीं है। यदि आपको लगता कि यह भी आवश्यक है तो आप इसके लिए समय देते। यदि आपको लगता कि यह भी उतना आवश्यक है जितना गणित तो आप कुछ-न-कुछ करते।</p>
<p>Meditation implies the whole of life, not just the technical, monastic, or scholastic life, but total life and to apprehend and communicate this totality, there must be a certain seeing of it without space and time. A mind must have in itself a sense of the spaceless and the timeless state. It must see the whole of this picture. How will you approach it and help the student to see the whole of life, not in little segments, but life in its totality? I want him to comprehend the enormity of this.</p>	<p>ध्यान का अर्थ है संपूर्ण जीवन, न कि केवल टेकनिकल, मठों-मठांतरों वाला अथवा शास्त्रीय जीवन, बल्कि समग्र जीवन और इस संपूर्णता को समझने और समझाने के लिए एक ऐसी झलक की आवश्यकता होती है जो देश-काल से परे हो। मन को अपने अंदर इस देश-कालविहीन अवस्था का कुछ बोध होना चाहिए। संपूर्ण चित्र उसके सामने होना चाहिए। आप इसे कैसे करेंगे, जीवन को उसकी संपूर्णता में देखने के लिए, छोटे-छोटे टुकड़ों में नहीं, कैसे आप छात्र की सहायता करेंगे? मैं चाहता हूँ कि वह इसकी विशालता को महसूस करे।</p>
<p><b>Chapter 11</b></p>	
<p><b>On Flowering</b></p>	<p><b>11. खिलना</b></p>

<p><b>Teacher:</b> I wonder whether we could go into the problem of how to ask the right question? We generally ask a question to find an answer, to arrive at a method, to discover the reason for things. We question to find out why one is jealous, why one is angry. Now, can the quality of questioning be engendered in oneself and in the child so that there is only enquiry without a method or without merely finding reasons? Is not the problem of right questioning of prime importance in our approach to the child?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> सही प्रश्न कैसे किया जाय, क्या इस समस्या पर हम विचार कर सकते हैं? हम प्रायः किसी उत्तर को पाने के लिए, किसी विधि तक पहुंचने के लिए, किसी के कारण की खोज के लिए, प्रश्न करते हैं। हम प्रश्न करते हैं इस बात का पता लगाने को कि हम ईर्ष्या क्यों करते हैं, क्यों क्रोधित होते हैं? तो, क्या प्रश्न उठाने की कला अपने अंदर तथा बालक के अंदर विकसित की जा सकती है ता कि केवल खोजबीन हो, न तो कोई विधि या प्रणाली और न खाली कारणों की खोज? क्या बालक के प्रति हमारे दृष्टि-कोण में यह समस्या सर्वाधिक महत्त्व की नहीं है कि उचित प्रश्न कैसे उठाए जाएं ?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> How do we question anything? When do we question ourselves or question authority or question the educational system? What does the word "question" mean? I wonder if a self-critical awareness is lacking in us. Are we aware of what we are doing, thinking, feeling? How do we awaken or question, so as to bring about this critical awareness? If we go into this it might help to arouse in the child a self-critical capacity, a critical awareness. How do we set about it? What makes me question? Do I ever question myself. Do I see how mediocre I am? Or do I question, find an explanation and move on? It is very depressing to discover one's mediocrity and therefore one does not question, and one never goes beyond.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> हम कैसे किसी के बारे में प्रश्न करते हैं? कब हम अपने-आप पर, सत्ता पर, अथवा शिक्षण-व्यवस्था पर प्रश्न करते हैं? 'प्रश्न' शब्द का अर्थ क्या है? मुझे ऐसा लगता है कि हमारे अंदर एक आत्म-आलोचनात्मक जागरूकता की कमी है। क्या हम इसके प्रति जागरूक हैं कि हम क्या करते हैं, क्या सोचते हैं, क्या महसूस करते हैं। इस आलोचनात्मक जागरूकता को लाने के प्रति हम कैसे सचेत हों अथवा प्रश्न उठायें? यदि हम इसको ठीक से समझें तो बालक में आत्म-आलोचना की क्षमता को, आलोचनात्मक जागरूकता को उभारने में यह सहायक हो सकता है। हम इसे आरम्भ कैसे करें? मैं प्रश्न क्यों करता हूं? क्या कभी मैं अपने-आपको प्रश्न करता हूं? क्या कभी मैं देखता हूं कि मैं कितना साधारण व्यक्ति हूं, आधे-अधूरेपन में कैद, या फिर मैं प्रश्न उठाता हूं पर उसका स्पष्टीकरण टूटकर बस आगे बढ़ जाता हूं? अपने मामूलीपन का एहसास होना बड़ा हताश करने वाला होता है और इसलिए कोई प्रश्न ही नहीं उठाता, और अपने से पार नहीं जा पाता।</p>
<p>Let us put it differently. Very little of us is alive. A small part of us is throbbing, the rest is asleep. The little part that is throbbing, gradually grows dim, falls into a rut and is finished.</p>	<p>इसे दूसरी तरह से देखते हैं। हम भीतर से बस आंशिक रूप से ही सजीव हैं। हमारा बहुत थोड़ा-सा ही अंश है जो सही में धड़कता है, शेष तो बस सोया है और वह थोड़ा-सा अंश भी जो धड़कता है, धीरे-धीरे बुझता जाता है, एक ढर्रे में ढलता जाता है और फिर खो जाता है।</p>

Does one know what it means to be a full human being? The fact is, one is not alive. The question is to be totally alive, to be physically alive, to be in very good health, not to overeat, to be sensitive emotionally, to feel, to have a quality of sympathy, and to have a very good mind. Otherwise, one is dead.	एक पूर्ण मानव होने का क्या अर्थ है, इसे क्या हम जानते हैं? सच्चाई तो यही है कि हम सजीव हैं ही नहीं। समस्या यहां पूर्णतया सजीव होने की है, शारीरिक रूप से सजीव होने की अर्थात् अच्छे स्वास्थ्य की, पेटू नहीं, बल्कि भावनात्मक रूप से संवेदनशील होने की, महसूस करने और सहानुभूति के गुण को जगाने की और एक बहुत भला-स्वस्थ मन चाहिए, नहीं तो आदमी मरा ही हुआ है।
How would you awaken the mind as a whole? It is your problem. How would you see that you are completely alive inside, and outside; in your feelings, in your taste in everything? And how would you awaken in the student this feeling of non- fragmented living?	इस मन को उसकी संपूर्णता में आप कैसे जागृत करेंगे? यह आपकी समस्या है। कैसे आप देखेंगे कि आप अपने अंदर और बाहर पूर्णतया सजीव हैं; अपने हर भाव-एहसास में तथा प्रत्येक वस्तु के प्रति अपने सौंदर्यबोध में? और कैसे आप छात्र में अखंड जीवन के इस एहसास को जगायेंगे?
There are only two ways of doing it: either there is something within you which is so urgent that it burns away all contradiction; or you have to find an approach which will watch all the time, which will deliberately set about investigating everything you are doing, an awareness which will ceaselessly ask the question to find out in yourself so that a new quality comes into being which keeps all the dirt out. Now, which is it that you are doing as a human being as well as a teacher?	ऐसा करने के केवल दो ही तरीके हैं, या तो आपके भीतर में कुछ ऐसा हो जो इतना तीव्र हो कि सभी अंतर्विरोधों को भस्म कर दे; या फिर आपको एक ऐसी दृष्टि प्राप्त करनी होगी जो प्रतिक्षण जागरूक रहे, जो प्रति क्षण जो कुछ भी आप कर रहे हों सावधानी से उसकी जांच-पड़ताल करती रहे--एक ऐसी जागरूकता जो निरंतर आपके अंदर प्रश्न करती रहे, खुद ही में खोजने के लिए प्रेरित करती रहे और ताकि ऐसी नई गुणवत्ता वजूद में आए जो सारी गंदगी को बाहर रखे। तो, क्या यही है जो एक मनुष्य के रूप में और एक शिक्षक के रूप में आप कर रहे हैं?
<b>Teacher:</b> Is one to question constantly, or is there a questioning which has its own momentum?	<b>शिक्षक :</b> प्रश्न क्या हमें ही निरंतर करना होता है अथवा प्रश्न का अपना कोई वेग है जो स्वयं सजीव रखता है?

<p><b>Krishnamurti:</b> If there is no momentum, then you have to start with little things, haven't you? Start with the little things, not the big things. Start observing how you dress, what you say, how you watch the road, without the operation of criticism. And, watching, listening, how are you going to get to the other, which will be the momentum, which carries all by itself?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> यदि वहाँ कोई वेग नहीं है तो फिर आपको ही उसे छोटी-छोटी बातों से आरम्भ करना होता है, क्या नहीं करना होता? छोटी-छोटी बातों से आरम्भ करें न कि किसी बड़ी चीज़ से। इसे देखने से शुरू करें कि आप कैसे वस्त्र पहनते हैं, क्या कहते हैं, सड़क को कैसे देखते हैं, बिना किसी आलोचना के। और देखते-सुनते हुए, कैसे आप उस दूसरी वस्तु तक पहुँचेंगे जो कि स्वतः में वेग लिए होगी, जो स्वयं ही गतिशील होगी।</p>
<p>There is a momentum to which you do not have to pay attention, but you cannot come to it except by watching little things; and yet you have to see that you are not caught in this everlasting watching. To watch one's dress, the sky, and yet be out of it, so that your mind is not only watching little things but absorbing the wider issues, such as the good of the country, and the much wider issues also, such as authority, such as this perpetual desire to fulfil, this constant concern whether one is right or wrong, and fear. So, can the mind observe the little things and without being caught in the little things, can it move out so that it can record much greater issues?</p>	<p>यह एक ऐसा वेग है जिसकी ओर आपको ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती, परंतु छोटी-छोटी वस्तुओं की तरफ ध्यान दिए बगैर आप उस तक कभी नहीं पहुँच सकते; और फिर भी आपको यह ध्यान रखना होता है कि कहीं आप निरंतर चलने वाली निगरानी के फंदे में तो नहीं पड़ गये। अपनी पोशाक का, आकाश का निरीक्षण करना और फिर भी उसके बाहर बने रहना, ताकि आपका मन छोटी-छोटी बातों को ही देखने में न लगा रहे बल्कि व्यापक समस्याओं में भी दिलचस्पी ले, जैसे कि देश की भलाई में और उससे भी बड़ी समस्याएं हैं; जैसे सत्ताधिकार यानी अथारटी का मामला, अथवा पूर्ण होने की इच्छा जो कभी पीछा नहीं छोड़ती अथवा निरंतर बनी रहने वाली यह चिन्ता कि मैं सही हूँ या गलत, और भय। तो क्या मन इन छोटी-छोटी चीज़ों को ध्यान में रख सकता है और उन छोटी-छोटी बातों में उलझे बिना, क्या वह बाहर आ सकता है जिससे कि वो कहीं बड़ी समस्याओं को ध्यान में ले सके?</p>
<p><b>Teacher:</b> What is the state of mind, the approach in which there is this everlasting watching, the understanding of little things, without being caught in the little things?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> मन की वह अवस्था, वह दृष्टि क्या है जिसमें यह सतत देखना चलता रहता है, छोटी-छोटी वस्तुओं की समझ-बूझ, बिना उनमें फंसे?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Why are you caught in the little things? What is the thing that makes you a prisoner of the little?</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> क्यों आप छोटी-छोटी बातों में फंसे रहते हैं? वह कौन सी शय है जो आपको छोटी-छोटी बातों का दास बना देती है?</p>

<b>Teacher:</b> My opinions. And yet I do not want to be caught in little things.	<b>शिक्षक :</b> मेरी धारणाएं। हालांकि मैं इन तुच्छ बातों में पड़ना तो नहीं चाहता।
<b>Krishnamurti:</b> But I have to pay attention to little things. Most people are caught in them the moment they pay attention. To pay attention and yet not to be prisoner to little things, is the issue. Now, what makes the mind or the brain a prisoner?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> परंतु हमें इन छोटी बातों की ओर ध्यान तो देना ही पड़ता है। अधिकांश व्यक्ति जैसे ही वे ध्यान देते हैं उनमें फंस जाते हैं। मुद्दा यही है कि कैसे इन छोटी वस्तुओं की ओर ध्यान भी दें और उनमें उलझें भी न। तो वह क्या है जो मन अथवा मस्तिष्क को बन्दी बना लेता है?
<b>Teacher:</b> Concern with the immediate.	<b>शिक्षक :</b> तात्कालिक वर्तमान के सरोकार।
<b>Krishnamurti:</b> What do you mean, sir? Do you mean not having a long vision? You are not looking at the problem.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप कहना क्या चाहते हैं? क्या आपका मतलब दूर-दृष्टि न होने से है? आप समस्या को देख नहीं रहे हैं।
<b>Teacher:</b> My attachment to little things.	<b>शिक्षक :</b> छोटी वस्तुओं के प्रति मेरा लगाव।
<b>Krishnamurti:</b> Are you not a prisoner of little things?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या आप छोटी-छोटी वस्तुओं के बन्दी नहीं हैं?
<b>Teacher:</b> I am. With me it is probably a deep unconscious sense that I am preparing myself for something great, an illusion like that.	<b>शिक्षक :</b> मैं हूँ। मेरे अंदर सम्भवतः एक गहन अचेतन एहसास है कि मैं किसी महान वस्तु के लिए अपने को तैयार कर रहा हूँ, ऐसा ही कोई भ्रम।
<b>Krishnamurti:</b> Are you aware that you are a prisoner of little things? Examine why you are a prisoner. Take the fact that you are a prisoner of little things, and possibly of many little things, ask why, go into it, question it, find out. Do not give an explanation and run oR with the explanation which you did just now. You must actually take one thing and look at it. In tackling inwardly the frustration, the conflict, the resistance, you correct the outer. The	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप छोटी-छोटी बातों के बन्दी हैं, क्या इसके प्रति आप सचेत हैं? पता लगाएं कि आप बन्दी क्यों हैं। इस तथ्य को लें कि आप छोटी-मोटी बातों में फंसे हैं और शायद अनेक छोटी-छोटी बातों में, और पूछें कि ऐसा क्यों है, उसमें तह तक जाएं, प्रश्न करें, पता लगाएं। कोई सफाई न दें और न ही स्पष्टीकरण दे कर उससे भागने की कोशिश करें जैसा आपने अभी-अभी किया। आपको वास्तव में बस किसी एक मामले को लेकर उसे गौर से देखना चाहिए। अपने

<p>psychological conflict within expresses itself outwardly in your becoming a prisoner of little things and then you try to correct them. Without understanding the inward conflict, the misery, life has no meaning. If you discover that you are frustrated, then go into it; and if you have gone deeply into it, it will correct the anger, the overeating, the over-dressing.</p>	<p>भीतर निराशा, द्वंद्व, प्रतिरोध से निपटते हुए, आप बाहरी त्रुटियों को भी सुधार डालते हैं। भीतर का मनोवैज्ञानिक द्वंद्व ही है जो बाहरी तौर पर आपके महत्त्वहीन वस्तुओं के बन्दी बनने के रूप में सामने आता है और तब आप उसे ठीक करने का प्रयत्न करते हैं। भीतरी द्वंद्व को, कष्ट को, बिना समझे जीवन का कोई अर्थ नहीं है। यदि आप को लगता है कि आप हताश हैं तो उसमें गहराई तक जायें; यदि आप उसकी गहराई तक जायेंगे तो वह क्रोध को, पेटूपन को, दिखावटी तड़क-भड़क को ठीक करेगा।</p>
<p>The way you question frustration is important. How do you question? So that frustration unfolds, so that frustration flowers? It is only when thought flowers that it can naturally die. Like the flower in a garden, thought must blossom, it must come to fruition and then it dies. Thought must be given freedom to die. In the same way there must be freedom for frustration to flower and die. And the right question is whether can there be freedom for frustration to flower and to die?</p>	<p>आप हताशा पर किस प्रकार से प्रश्न उठाते हैं, यह महत्त्वपूर्ण है। आप प्रश्न कैसे करते हैं? जिससे कि हताशा की परतें खुलने लगे, वह खिलने लगे, जब कोई विचार पूरी तरह से खिल जाता है, उद्घाटित हो जाता है, केवल तभी वह स्वाभाविक रूप से झर सकता है। किसी बगीचे के फूल की भांति विचार को भी खिलना चाहिए, उसमें फलना-फूलना चाहिए और तभी उसकी मृत्यु होती है। विचार को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए, ताकि वह मर सके। उसी प्रकार हताशा को भी फलने-फूलने तथा मरने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। और सही प्रश्न यह है कि क्या हताशा को फलने-फूलने की और यूनं मृत्यु को प्राप्त करने की स्वतंत्रता हो सकती है?</p>
<p><b>Teacher:</b> What do you mean by flowering, sir?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> फलने-फूलने से आपका क्या तात्पर्य है?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Look at the garden, the flowers in front over there! They come to bloom and after a few days they wither away because it is their nature. Now, frustration must be given freedom so that it blossoms. You have to understand the reason of frustration, but not in order to suppress it, not to say, "I must fulfil". Why should I fulfil? If I am a liar I can try to stop lying, which is what people generally do. But can I allow that lie to flower and die? Can I refuse to say it is right or wrong, good or bad? Can I see what is behind the lie? I can only find out spontaneously why I lie if there is freedom to find out. In the same way, in order not to be a prisoner of little things, can I find out why I am</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> उस बगीचे को देखें, सामने खिले उन फूलों को। वे खिलते हैं और कुछ दिन बाद मुरझा जाते हैं, क्योंकि यही उनका स्वभाव है। तो हताशा को भी स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वे खिल सके। आपको हताशा के कारण को समझना है, परंतु उसका दबाने के लिए नहीं या यह कहकर कि "मुझे तो पूर्ण होना है।" क्यों मुझे पूर्ण होना चाहिए? यदि मैं झूठा हूं तो मैं कोशिश कर सकता हूं कि झूठ बोलना बंद कर दूं, जो कि आम तौर पर सब करते हैं। परंतु क्या मैं उस झूठ को खिलने और यूनं मरने की अनुमति दे सकता हूं? क्या मैं यह कहने से रुक सकता हूं कि वह अच्छा है या बुरा, सही है या गलत? क्या इसे मैं देख सकता हूं कि झूठ के पीछे क्या है? क्यों मैं झूठ बोलता हूं, तभी मैं सहज</p>

<p>a prisoner? I want that fact to flower. I want it to grow and to expand, so that it withers and dies without my touching it. Then I am no longer a prisoner though I watch the little things.</p>	<p>रूप से इसका पता लगा सकता हूँ अगर इस प्रकार पता लगाने की, ढूँढने की स्वतंत्रता हो। उसी प्रकार छोटी-छोटी चीजों की कैद से छूटने के लिए क्या मैं इसका पता लगा सकता हूँ कि मैं बन्दी क्यों हूँ? मैं चाहता हूँ कि यह तथ्य खिले। मैं चाहता हूँ कि वह फले-फूले, विकसित हो जिससे बिना मेरे कुछ किए ही वह मुरझा जाय, मृत हो जाय। तब फिर मैं उन महत्त्वहीन वस्तुओं का बन्दी नहीं रहता, बस देखता हूँ।</p>
<p>Your question was: "Is there a momentum which keeps moving, keeping itself clean, healthy?" That momentum, that flame which burns, can only be when there is freedom for everything to flower - the ugly, the beautiful, the evil, the good and the stupid - so that there is not a thing suppressed, so that there is not a thing which has not been brought up and examined and burnt out. And I cannot do that if through the little things I do not discover frustration, misery, sorrow, conflict, stupidity, dullness. If I only discover frustration through reasoning I do not know what frustration means. So, from little things I go to something, wider and in understanding the wider, the other things flower without intervention.</p>	<p>आपका प्रश्न था "क्या ऐसा कोई वेग है जो अपने को स्वच्छ-स्वस्थ रखते हुए गतिशील बना रहता है?" वह वेग, वह जलती मशाल तभी संभव है जब प्रत्येक वस्तु को--चाहे वह कुरूप हो या सुंदर, चाहे बुरी हो अथवा अच्छी, या मूर्खतापूर्ण--खिलने की स्वतंत्रता हो, किसी का भी दमन न हो, कोई भी वस्तु छिपी न रह जाय, जिसकी जाँच-पड़ताल न की गई हो और जो भस्म न हो गई हो। और मैं ऐसा नहीं कर सकता यदि इन छोटी-छोटी वस्तुओं के माध्यम से मैं हताशा, दुख, द्वंद्व, मूर्खता, मूढ़ता की खोज नहीं कर लेता। यदि मैं केवल तर्कके द्वारा ही हताशा की खोज करता हूँ तो मैं नहीं जानता कि हताशा का क्या अर्थ है। तो इन छोटी-छोटी वस्तुओं से मैं किसी व्यापक वस्तु की ओर जाता हूँ और व्यापक को समझते हुए तमाम वस्तुएं बिना किसी बाधा के खिलने लगती हैं।</p>
<p><b>Teacher:</b> I seem to catch a glimpse of what you say, I am going to examine it.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> शायद आप जो कहते हैं मैंने उसकी एक झलक पा ली है, अब मैं उसकी परीक्षा करना चाहता हूँ।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> You are examining it while I am examining it. You are examining your own little things in which you are caught</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> आप भी मेरे साथ-साथ ही इसकी परीक्षा कर रहे हैं। आप अपनी छोटी-छोटी चीजों की जांच-परख कर रहे हैं जिनमें आप जकड़े हुए हैं।</p>
<p><b>Teacher:</b> In the flowering of conflict, there should be freedom to flower and die. The little mind does not give itself that freedom. You are</p>	<p><b>शिक्षक :</b> द्वंद्व के खिलने के लिए उसके खिलने तथा मर जाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। हमारा छोटा सा मन खुद को वह स्वतंत्रता नहीं देता। आप कह रहे हैं कि</p>

<p>saying that the inward conflict should flower and die and again you said that this flowering and dying is happening as we are examining it now. There is one difficulty, which is, that I seem to project something into this floration and that itself is a hindrance.</p>	<p>आंतरिक द्वंद को खिलकर सहज ही मृत्यु को प्राप्त होने दें और फिर आपने कहा कि यह खिलना तथा मृत होना अभी हो रहा है जैसे-जैसे हम उसकी परीक्षा कर रहे हैं। यहां एक कठिनाई यह है कि ऐसा लगता है कि इस खिलने में मैं अपनी ओर से कुछ जोड़ रहा हूं और वह स्वयं ही एक बाधा है।</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> That is the real crux. You see, to you flowering is an idea. You do not see the fact, the symptom, the cause, and allow that cause to blossom right now. The little mind always deals with symptoms and never with the fact. It does not have the freedom to find out. It is doing the very thing which indicates the little mind, because it says, "It is a good idea, I will think about it," and so it is lost for it is then dealing with ideation, not with fact. It does not say, "Let it flower, and let us see what happens." Then it would discover. But, it says, "It is a good idea; I must investigate the idea".</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> यही वास्तविक समस्या है। आपने देखा कि खिलना आपके लिए एक विचार है। आप उस तथ्य को, उस लक्षण को, उस कारण को नहीं देखते और उस कारण को अभी खिलने की अनुमति नहीं देते। हमारा छोटा सा मन सदा लक्षणों में उलझा रहता है तथ्यों का सामना नहीं करता है। उसे खोजबीन की स्वतंत्रता है ही नहीं। वह ठीक उन्हीं कामों में उलझा रहता है जो इसके क्षुद्र मन होने के सूचक हैं; क्योंकि वह कहता है, “यह एक अच्छा विचार है, मैं इसके बारे में सोचूंगा”, और इस प्रकार वह भुलावे में पड़ जाता है क्योंकि वह तथ्य से नहीं विचारों से निपटने लगता है। वह यह नहीं कहता, “उसे पुष्पित होने दो और देखें कि क्या होता है।” तब वह पता लगा लेगा। परंतु वह कहता है, “वह एक अच्छा विचार है। मुझे इस विचार का अन्वेषण करना चाहिए।”</p>
<p>Now, we have discovered a great many things. First of all, we are unaware of the little things. Then, becoming aware of them, we are caught in them and we say, "I must do that, I must do this".</p>	<p>तो हमने बहुत सारी चीजों की खोज कर ली है। पहली बात तो यह है कि हम छोटी-छोटी बातों के प्रति ही जागरूक नहीं हैं। और फिर, जब जागरूक होते हैं तो उनमें फंस जाते हैं और कहने लगते हैं, “हमें यह करना चाहिए, वह करना चाहिए।”</p>
<p>Can I see the symptom, go into the cause, and let the cause flower? But I want it to flower in a certain direction, which I means I have an opinion on how it should flower. Now can I go after that? That becomes my major issue. And I see that I prevent the cause flowering because I am afraid I do not know what will happen if I allow frustration to flower. So I go after why I am afraid? What am I afraid of? I see, that so long as fear exists there can be no flowering. So</p>	<p>क्या मैं लक्षण को देख सकता हूं, उसके कारण में जा सकता हूं, फिर उस कारण को खिलने दे सकता हूं? परंतु मैं चाहता हूं कि वह एक निश्चित दिशा में खिले। जिसका अर्थ है कि वह कैसे खिले इस विषय में मेरी कोई धारणा है। तो क्या मैं उसकी तह तक जा सकता हूं? यही मेरी मुख्य समस्या हो जाती है और मैं देखता हूं कि कारण को खिलने से रोकता हूं, क्योंकि मुझे भय है कि यदि मैंने हताशा को खिलने दिया तो पता नहीं क्या होगा। तो मैं पता लगाता हूं कि मैं भयभीत क्यों हूं,</p>

<p>I have to tackle fear, not through the idea, but tackle it, as a fact which means I will allow fear to blossom. I will let fear blossom, and see I what happens. All this requires a great deal of inward perception. Allow fear to blossom - do you know what that means? It may mean I may lose my job, be destroyed by my wife, my husband.</p>	<p>किससे भयभीत हूँ? तो मैं देखता हूँ कि जब तक भय है खिलना संभव नहीं है। तो मुझे भय से निबटना होता है, विचार के द्वारा नहीं, बल्कि निबटना, एक तथ्य के रूप में, जिसका अर्थ है कि मैं भय को खिलने दूंगा। मैं भय को खिलने देता हूँ और देखता हूँ कि क्या होता है। इस के लिए एक ज़बरदस्त आंतरिक बोध की आवश्यकता है। भय को खिलने देना--आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है? इसका मतलब है कि मेरी नौकरी जा सकती है, मैं अपनी पत्नी अथवा पति के हाथों बरबाद हो सकता हूँ।</p>
<p>Can I allow everything to blossom? It does not mean I am going to murder, rob somebody, but can I just allow "what is" to blossom.</p>	<p>क्या मैं प्रत्येक वस्तु को खिलने दे सकता हूँ? उसका अर्थ यह नहीं है कि मैं किसी को लूटने या हत्या करने जा रहा हूँ, वरन् "जो है" क्या मैं उसे खिलने दे सकता हूँ?</p>
<p><b>Teacher:</b> Could we go into this, then allowing a thing to blossom?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> क्या हम उसकी तह तक जा सकते हैं, किसी वस्तु को खिलने का मौका देते हुए?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> Do you really see the fact? What does it mean, to allow a thing to blossom, to allow jealousy to blossom? First of all, how unrespectable, how unspiritual. How do you allow jealousy to blossom, to achieve a full life? Can you do it so that you are not caught in it? Can you let that feeling have its full vitality, without obstruction? Which means you do not identify yourself with it, which means you do not say it is right or wrong, you do not have an opinion about it; these are all methods of destroying jealousy. But you do not want to destroy jealousy. You want it to blossom, to show all its colours, whatever they may be.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या सचमुच आप तथ्य को देखते हैं? किसी वस्तु को खिलने देने का क्या अर्थ है, ईर्ष्या को खिलने देना? पहली बात तो यह कितना असम्मानजनक है, कितना बे-रूहानी है यह! पूर्ण जीवन को प्राप्त करने के लिए आप कैसे ईर्ष्या को खिलने देते हैं? क्या आप ऐसा कर सकते हैं ताकि आप उसमें फंस न जायें? क्या आप उस एहसास को उसकी पूरी शक्ति प्राप्त करने दे सकते हैं, बिना कोई रुकावट डाले? जिसका अर्थ यह हुआ कि आप उसके साथ अपनी पहचान नहीं जोड़ते, आप उसे सही या गलत नहीं कहते, उसके बारे में कोई धारणा नहीं बनाते, क्योंकि ये सब तो ईर्ष्या को नष्ट करने के तरीके हैं। परंतु आप ईर्ष्या को नष्ट नहीं करना चाहते। आप चाहते हैं कि वह खिले और अपने सभी रंगों को प्रगट करे, चाहे वे जैसे भी हों।</p>
<p><b>Teacher:</b> it is not very clear to me, sir.</p>	<p><b>शिक्षक :</b> यह मुझे बहुत स्पष्ट नहीं हुआ।</p>

<b>Krishnamurti:</b> Have you grown a plant? How do you do it?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> क्या आपने कभी कोई पौधा लगाया है? आपने यह कैसे किया?
<b>Teacher:</b> Prepare the ground, put in manure....	<b>शिक्षक :</b> भूमि को तैयार करना, उसमें खाद डालना.... ।
<b>Krishnamurti:</b> Put in the right manure, use the right seed, put it in at the right time, look after it, prevent things from happening to it. You give it freedom. Why do you not do the same with jealousy?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> सही खाद डालना, सही बीज का प्रयोग करना; सही समय से उसे लगाना, उसकी देखभाल करना, खतरों से बचाना। आप उसे स्वतन्त्रता देते हैं। आप ईर्ष्या के साथ भी ठीक वैसा ही क्यों नहीं करते?
<b>Teacher:</b> The flowering here is not expressed outside like the plant.	<b>शिक्षक :</b> खिलना यहां उसी प्रकार बाहर प्रकट नहीं होता जिस प्रकार पौधे के संदर्भ में होता है।
<b>Krishnamurti:</b> It is much more real than the plant you are planting outside in the field. Do you not know what jealousy is? At the moment of jealousy, do you say it is imagination? You are burning with it, are you not? You are angry, furious. Why do you not pursue it, not as an idea but actually, take it out and see that it flowers, so that each flowering is a destruction of itself and therefore, there is no "you" at the end of it who is observing the destruction. In that is real creation.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> परंतु उस पौधे की तुलना में, जिसे आप बाहर मैदान में लगाते हैं, यह कहीं अधिक वास्तविक है, असली है। क्या आप नहीं जानते कि ईर्ष्या क्या है? ईर्ष्या के क्षणों में क्या आप कहते हैं कि वह कल्पना है? आप उससे जल रहे हैं, क्या नहीं? आप क्रोध में हैं, गुस्से से भरे हैं। आप उसका पीछा क्यों नहीं करते, एक विचार के रूप में नहीं वरन् सचमुच, उस पर ध्यान दें और देखें कि वो फले-फूले, क्योंकि खिलना हर बार अपना ही नाश कर डालता है? और अंत में विनाश का निरीक्षण करने वाली कोई 'मैं' बचती ही नहीं। उसी में वास्तविक सृजन है।
<b>Teacher:</b> When the flower blossoms, it reveals itself. What exactly do you mean, sir, when you say that when jealousy blossoms it will destroy itself?	<b>शिक्षक :</b> जब खिलता है तो वह अपने आप को प्रकट करता है। पर आप कहते हैं कि ईर्ष्या जब खिलेगी तो वह खुद को नष्ट कर लेगी। इसका ठीक-ठीक क्या अर्थ है?

<p><b>Krishnamurti:</b> Take a bud, an actual bud from a bush. If you nip it, it will never flower, it will die quickly. If you let it blossom, then it shows you the colour, the delicacy, the pollen, everything. It shows what it actually is without your being told it is red, it is blue, it has pollen. It is there for you to look at. In the same way, if you allow jealousy to flower, then it shows you everything it actually is - which is envy, attachment. So in allowing jealousy to blossom, it has shown you all its colours and it has revealed to you what is behind jealousy, which you will never discover if you do not allow it to blossom</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> एक कली को लें, किसी शाख की एक वास्तविक कली। यदि आप उसे मसल दें तो वह नहीं खिलेगी और शीघ्र ही मर जायेगी। यदि आप उसे खिलने देते हैं तो उसका रंग-रूप, उसकी कोमलता, बूर सब निखर कर सामने आयेगा। वह आपको सब दिखायेगी जो भी वो असल में है, बिना आपको बताये कि वह लाल है, नीली है, या कि उसमें पराग है। वह वहां है आपके सामने। इसी प्रकार यदि आप ईर्ष्या को खिलने देते हैं तो वह जो सच में है उसे प्रकट करती है--यानि कि जलन, मोह। जब आप ईर्ष्या को खिलने का मौका देते हैं, तो वह अपने सब रंग दिखाती है और जो भी उसके पीछे छिपा है सब उजागर कर देती है। यदि आपने उसे खिलने का मौका ही न दिया होता तो आप इस सब का कभी पता न लगा पाते।</p>
<p>To say that jealousy is the cause of attachment is mere verbalization. But in actually allowing jealousy to flower, the fact that you are attached to something becomes a fact, an emotional fact, not an intellectual, verbal idea and so each flowering reveals that which you have not been able to discover; and as each fact unveils itself, it flowers and you deal with it. You let the fact flower and it opens other doors, till there is no flowering at all of any kind and, therefore, no cause or motive of any kind.</p>	<p>यह कहना कि ईर्ष्या मोह का कारण है केवल लपफाज़ी है, परंतु ईर्ष्या को वास्तव में खिलने देना, यह देखना कि आपको किसी वस्तु से मोह है, वह एक तथ्य बन जाता है, एक भावनात्मक सच्चाई, न कि कोरे बौद्धिक शब्द या विचार। तो खिलने का प्रत्येक मौका वो सब सामने लाता है जिसे आप कभी न खोज पाते; और जैसे-जैसे प्रत्येक तथ्य प्रकट होता है, वह खिलता है और आप उससे निपटते हैं आप उसे खिलने का मौका देते हैं और वह आगे द्वार खोलता जाता है, जब तक कि वहाँ कुछ भी ऐसा रहे ही न जिसका खिलना बाकी हो और इस प्रकार कोई कारण अथवा प्रयोजन रह ही नहीं जाता।</p>
<p><b>Teacher:</b> Psychological analysis will help me to find out the causes of jealousy. Between analysis and the flowering in which a flower reveals itself, is there a vital difference?</p>	<p><b>शिक्षक :</b> ईर्ष्या के कारणों का पता लगाने में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण मेरी सहायता करेगा। इस विश्लेषण में तथा फूल के फलने-फूलने में क्या कोई महत्त्वपूर्ण अंतर है?</p>
<p><b>Krishnamurti:</b> One is an intellectual process, the observer operating on the thing observed, which is analysis, which is correction, the altering and the adding. The other is the fact without the observer, it is what the fact is itself.</p>	<p><b>कृष्णमूर्ति :</b> इसमें से एक बौद्धिक प्रक्रिया है। निरीक्षक किसी निरीक्षित वस्तु पर काम करता है, जो कि विश्लेषण है, संशोधन है, बदलना या कुछ जोड़ना है। परंतु दूसरी बात एक तथ्य है बिना किसी निरीक्षक के, बस वह तथ्य ही है।</p>

<b>Teacher:</b> What you say is totally non-verbal. There is no relationship between the observer and the observed.	<b>शिक्षक :</b> आप जो कहते हैं वह पूर्णतया अशाब्दिक है--भाषा से परे की बात। निरीक्षक और निरीक्षित वस्तु में कोई संबंध नहीं होता।
<b>Krishnamurti:</b> Once you get the feeling that everything in you must blossom, which is a very dangerous state, if you understand this thing, that everything must flower in you, which is a marvellous thing, in that there is real freedom. And, as each thing flowers, there is neither observer nor the observed; therefore there is no contradiction. So all the things blossom in you and die.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> एक बार जब आपको यह एहसास हो जाए कि आपके अंदर प्रत्येक वस्तु का खिलना लाज़िमी है तो यह एक बड़ी खतरनाक अवस्था हो जाती है। यदि आप इसे समझ लेते हैं कि आपके अंदर प्रत्येक वस्तु को खिलना चाहिए, जो कि एक कमाल की चीज़ है, तो उसी में वास्तविक स्वतन्त्रता है। और जैसे-जैसे प्रत्येक वस्तु खिलती है तो न तो देखने वाला रह जाता है न कोई दृश्य। तो वहां कोई विरोध रह ही नहीं जाता। इस प्रकार प्रत्येक वस्तु आपके अंदर खिलती है और झर जाती है।
<b>Teacher:</b> Why should I allow it to blossom if I can nip it in the bud?	<b>शिक्षक :</b> यदि मैं उसे आरम्भ में ही खत्म कर सकता हूं तो क्यों मैं उसे खिलने का मौका दूं?
<b>Krishnamurti:</b> What is going to happen to the flower if you kill the bud? If you kill the bud, it will not flower any more. In the same way, you say, "I must kill jealousy or fear" but it is not possible to kill jealousy and fear. You can suppress them, alter them, offer them to some god, but they will always be there. But if you really understand the central fact, to allow everything to flower without interference, it will be a revolution.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> यदि आप कली को ही नष्ट कर डालेंगे तो फूल का क्या होगा? कली को मसल देंगे तो वह कभी खिल नहीं पायेगी? उसी प्रकार आप कहते हैं "मैं ईर्ष्या को, भय को नष्ट कर डालूंगा", परंतु ईर्ष्या और भय को नष्ट करना संभव नहीं है। आप उनको दबा सकते हैं, थोड़ी फेर-बदल कर सकते हैं, उन्हें ईश्वर को भेंट कर सकते हैं परंतु वो सदा बने रहेंगे। परंतु यदि आप इस मूलभूत तथ्य को समझ लेते हैं, प्रत्येक वस्तु को निर्बाध रूप से खिलने का मौका देते हैं--तो वह एक क्रांति होगी।
<b>Teacher:</b> Jealousy is a complex thing.	<b>शिक्षक :</b> ईर्ष्या, जलन एक पेचीदा मामला है।
<b>Krishnamurti:</b> Let it flower. Jealousy, in	<b>कृष्णमूर्ति :</b> उसे खिलने दीजिये। खिलने में ईर्ष्या अपनी

flowering, reveals its complexity. And in understanding the complexity, in watching the complexity, it reveals some other factor, and let it blossom, so that everything is blossoming in you, nothing is denied, nothing is suppressed, nothing is controlled. It is a tremendous education, is it not?	जटिलता को उजागर करती है। और जटिलता को समझने में, उसके निरीक्षण में, वह कुछ दूसरे तथ्यों को भी सामने लाती है तो उन्हें भी खिलने दीजिये, ताकि आपके अंदर हर चीज़ खिलने लगे, किसी को नकारा न जाय, दबाया न जाए, न कुछ कंट्रोल किया जाय। यह एक गहन शिक्षा है, नहीं क्या?
<b>Teacher:</b> There is great significance in what you are saying. But is it possible?	<b>शिक्षक :</b> आप जो कह रहे हैं उसका बड़ा महत्त्व है। परंतु क्या यह संभव है।
<b>Krishnamurti:</b> It is possible, otherwise there is no point in saying it. If you see that, how will you help the student to flower? How will you help him to understand?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> यह संभव है, वरना उसे कहने का कोई अर्थ ही न होता। यदि आप इसे समझते हैं तो आप छात्र की खिलने में कैसे सहायता करेंगे? आप समझने में उसकी कैसे सहायता करेंगे।
<b>Teacher:</b> I would start with myself. By a certain psychological approach I can see the cause. What you are saying is that in flowering, the problem unfolds itself. There is a great deal of difference between the two. But even if I have a glimpse of it, to convey it to the student is difficult.	<b>शिक्षक :</b> मैं अपने से आरम्भ करूंगा। किसी मनोवैज्ञानिक तरीके से मैं कारण को देख सकता हूँ। आप कह रहे हैं कि खिलते वक्त समस्या अपने को प्रकट करती है। इन दोनों में बहुत बड़ा अंतर है। परंतु इसकी एक झलक मेरे भीतर हो तो भी इसे छात्र तक पहुंचाना कठिन है।
<b>Krishnamurti:</b> It is a non-verbal communication which I have communicated to you verbally. How have I come to a flowering of thought which takes place in communication?	<b>कृष्णमूर्ति :</b> यह एक शब्द-विहीन संवाद है जिसे मैंने आप तक शब्दों में पहुंचाया। संवाद में विचार जैसे खिलता है उस तक मैं कैसे पहुंचा?
<b>Teacher:</b> Before one can investigate into this floriation or even into the space in which floriation can take place, there is a quality of equilibrium which has to be established to allow anything to flower in me.	<b>शिक्षक :</b> इसके पहले कि कोई खिलने की तह तक जाए, उस धरातल में गहराई तक उतरे जहाँ यह खिलना होता है, वहाँ एक संतुलन होना चाहिए ताकि हर शै मेरे अंदर खिल सके।
<b>Krishnamurti:</b> I do not accept it. I do not	<b>कृष्णमूर्ति :</b> मैं इसे स्वीकार नहीं करता। मैं नहीं समझता

believe you can do it that way. Take the idea of jealousy. I say make it flower. But you will not let it flower.	कि आप उसे ऐसे कर सकते हैं। ईर्ष्या के विचार को लें। मैं कहता हूँ कि उसे खिलने दें। परंतु आप उसे खिलने नहीं देंगे।
<b>Teacher:</b> When I am dealing with a child, is not the first factor this awakening of the quality of perception, which is equilibrium?	<b>शिक्षक :</b> जब मैं एक बालक के बारे में बात कर रहा हूँ तो क्या सबसे पहला कार्य बोध के इस गुण को जाग्रत करना नहीं है, जो कि संतुलन है?
<b>Krishnamurti:</b> I will tell you what it is. If you listened, really listened, the flowering would actually take place. If you listened, observed, understood, immediately after the listening, it has taken place if that has taken place, then the other things are very simple to the child. You will find different ways to watch the child, to help the child, to communicate with the child at the verbal level. The very act of listening is the following.	<b>कृष्णमूर्ति :</b> मैं बताऊंगा कि वह क्या है। यदि आप सुनते हैं, सचमुच सुनते हैं, तो खिलना वास्तव में होगा। यदि आपने सुना, देखा और समझा तो सुनने के तुरंत बाद, यह घटित हो गया यदि ऐसा हुआ है तो, फिर अन्य वस्तुएं, बालक के लिए बड़ी आसान हो जाती हैं। आप बालक का निरीक्षण करने के लिए, उसकी सहायता के लिए, अपनी बात उस तक पहुंचाने के लिए, कई तरीके ढूंढ लेंगे। सुनना ही खिलना है।
<b>Teacher:</b> Is that listening a quality, sir?	<b>शिक्षक :</b> क्या यह सुनना एक गुण है?
<b>Krishnamurti:</b> You are listening. Why do you call it a quality? You have listened to what I have to say this morning: "Let everything flower."	<b>कृष्णमूर्ति :</b> आप सुन रहे हैं। आप उसे गुण क्यों कहते हैं? आपने वह सुना जो आज मुझे कहना था, "प्रत्येक वस्तु को खिलने दें।"
If you listen, it will take place. It is not a quality. A quality is a thing already established. This is a living thing, a burning thing, a furious thing. You cannot make it a quality, a practice. Can you practice seeing colour? You cannot. You can see the beauty and the glory of the flower only when there is a flowering.	यदि आप सुनते हैं, तो वह घटित होगा। वह कोई गुण नहीं है। गुण तो एक स्थापित वस्तु है, परंतु यह तो सजीव वस्तु है, जलती मशाल, जीवंत, फड़कती हुई। आप उसे गुण नहीं बना सकते, अभ्यास नहीं बना सकते उसका। क्या रंग को देखने का आप अभ्यास कर सकते हैं? नहीं कर सकते। फूल के सौंदर्य को, उसकी शोभा को आप तभी देख सकते हैं, जब प्रस्फुटन होता है, खिलना होता है।